CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य

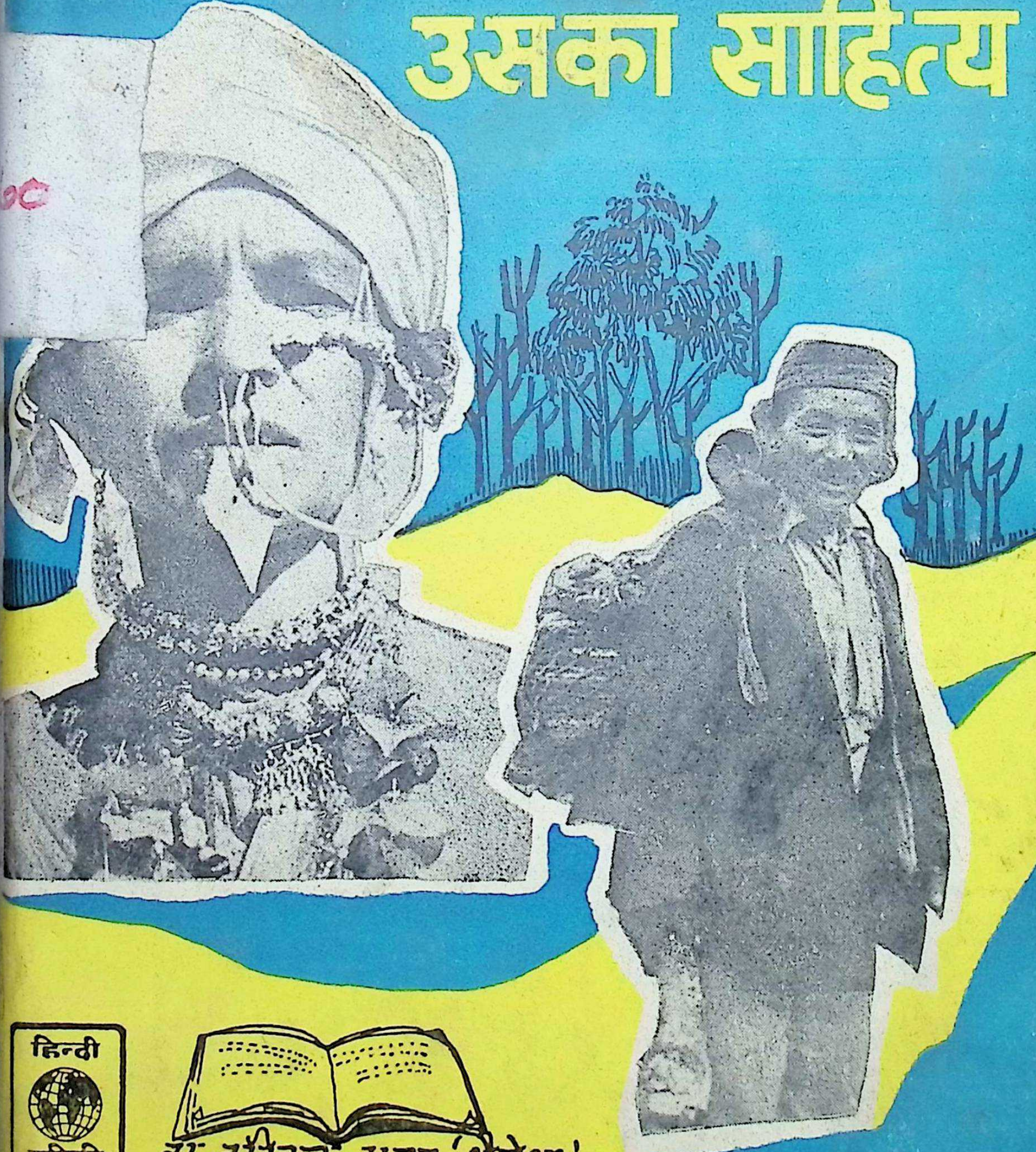

हिन्दी समिति

डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी समिति ग्रंथमाला—२४४

गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य

डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

●

हिन्दी
समिति

उत्तर प्रदेश शासन
'राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिंदी भवन',
महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी ६६०

विद्यापीठ-पु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी समिति ग्रंथमाला—२४४

गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य

डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

•

हिन्दी समिति

उत्तर प्रदेश शासन
'राजर्षि पुरुषोत्तमदास टण्डन हिन्दी भवन',
महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ-१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य

महाशिवरात्रि, २०३२ वि०
फरवरी, १९७६ ई०

वाल्मीकि विद्यापीठ-पुस्तकालयः
ए. नं. १८०७९

मूल्य : १३ रुपये

प्रकाशक : हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश शासन, लखनऊ
मुद्रक : शिवलाल प्रिन्टर्स, के. ४४/१७ बी. नायक बाजार, वाराणसी-१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रकाशकीय

हिन्दी भाषा और उसके वाङ्मय के सर्वांगीण विकास और समृद्धि में भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त प्रदेश की उपभाषाओं अर्थात् आंचलिक भाषाओं का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। वस्तुतः हिन्दी की सतत् प्रवहमान धारा में आंचलिक भाषाओं की अनेकानेक धाराएँ मिलकर उसे सार्वजनीन और मंगलकारी बनाने का उपक्रम प्रारम्भ से करती चली आयी हैं और यह क्रम अविच्छिन्न रूप से चलता रहेगा।

हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश शासन ने राष्ट्रभाषा हिन्दी के उन्नयन के लिए अब तक ज्ञान-विज्ञान के अनेकानेक प्रकाशन हिन्दी जगत् को समर्पित किये हैं और साथ ही विभिन्न प्रादेशिक भाषाओं यथा, बंगला, गुजराती, तेलुगु, मलयालम आदि भाषाओं के साहित्य पर भी पुस्तकें प्रकाशित की हैं। अन्य शेष प्रादेशिक भाषाओं पर भी पुस्तकें प्रकाशन के क्रम में हैं।

अब इस तथ्य को भी दृष्टिगत रखते हुए कि हिन्दी भाषा के उन्नयन की दिशा में किये जाने वाले प्रयास तब तक पूर्ण न होंगे जब तक हिन्दी को सम्पुष्ट और परिपुष्ट बनाने वाली आंचलिक भाषाओं और उनकी साहित्यिक गतिविधियों पर भी परिचयात्मक पुस्तकों का प्रणयन और प्रकाशन न किया जाय। प्रदेश की इन भाषाओं की भी अपनी निजी विशेषताएँ हैं और उनका साहित्य भी समृद्ध है और उनके विषय में जानकारी प्राप्त करने की लालसा अथवा जिज्ञासा सामान्यतया साहित्य-रसिकों एवं हिन्दी के छात्रों में समान रूप से पायी जाती है।

'गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य' नामक यह पुस्तक हमारे इसी प्रयास का प्रथम पुष्प है। हम इसे जिज्ञासु पाठकों के समक्ष आदर और प्रसन्नता के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं। इसके माध्यम से उत्तराखण्ड की इस सशक्त आंचलिक भाषा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

और उसके साहित्य से परिचित कराने का सफल प्रयास किया गया है। इसके लेखक डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश' सुप्रसिद्ध साहित्यकार और गढ़वाली भाषा के भी विद्वान और लेखक हैं। उन्होंने बड़े श्रम, श्रद्धा और समर्पण की भावना से 'गढ़वाली भाषा' के सम्बन्ध में गागर में सागर भरने का जो उपक्रम किया है, उसका यथेष्ट समादर होगा, ऐसा हमारा विश्वास है। इस ग्रन्थ की पाण्डुलिपि देखकर हमारे सम्मान्य सदस्य और कानपुर विश्वविद्यालय के कुलपति श्री भक्तदर्शन जी ने भी प्रसन्नता व्यक्त की।

आंचलिक भाषाओं और उनके साहित्य पर पुस्तकों के प्रकाशन के क्रम में अब हमारे अन्य प्रयास होंगे कुमाउँनी, ब्रज, अवधी, भोजपुरी बुन्देलखण्डी आदि के सम्बन्ध में भी यथाशीघ्र ग्रन्थ प्रस्तुत करना।

आशा है, प्रस्तुत पुस्तक 'गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य' से समग्र रूपेण परिचित कराने में न केवल साहित्य और भाषा-विज्ञान के छात्रों के लिए अपितु अन्य सभी साहित्य प्रेमियों के लिए सहायक सिद्ध होगी।

हिन्दी भवन, लखनऊ
महाशिवरात्रि, २०३२ वि०
फरवरी, १९७६ ई०

काशीनाथ उपाध्याय 'भ्रमर'
सचिव, हिन्दी समिति
उत्तर प्रदेश शासन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपनी बात

गढ़वाली भाषा और उसके साहित्य की ओर आरम्भ से ही मेरी विशेष रुचि रही है। अनेक अधिवेशनों और गोष्ठियों में यह अनुभव हुआ कि गढ़वाली भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन कई दृष्टियों से बड़ा उपादेय सिद्ध होगा। फलतः सन् १९५३ से हीं मैंने इस क्षेत्र में कार्यारम्भ कर दिया था। गढ़वाल की अनेक यात्राएँ कीं। गाँव-गाँव में जाकर लोकगीत, लोकगाथाएँ, लोककथाएँ और दन्त-कथाएँ एकत्र कीं, जो लेखों के रूप में समय-समय पर पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहीं।

लोककथाओं और लोकगीतों के दो-तीन संग्रह भी प्रकाशित किये। व्याकरण का छात्र होने के कारण गढ़वाली के भाषा-वैज्ञानिक अध्ययन की ओर मेरा ध्यान विशेष रूप से आकर्षित हुआ है।

वैसे, अभी तक गढ़वाली भाषा का न तो कोई अच्छा व्याकरण ही लिखा गया है, न वैज्ञानिक दृष्टि से उसका भाषा-शास्त्रीय अध्ययन ही हुआ और न लोकगीतों और लोककथाओं का समुचित वर्गीकरण ही। वैसे भी, पहाड़ी भाषाओं का अध्ययन अपेक्षाकृत कठिन विषय है, क्योंकि अभी तक इस दिशा में न कोई विशेष शोध-कार्य ही हुआ और न अधिक लिखित साहित्य ही उपलब्ध होता है।

जार्ज ग्रियर्सन ने 'लिंग्विस्टिक सर्वे आव् इण्डिया' के नौवें भाग के चौथे खंड में गढ़वाली पर अवश्य कुछ प्रकाश डाला, परन्तु उनके अध्ययन का आधार मूलतः अनुवाद पद्धति ही रही और अनुवाद में भी कई भूलें हुई हैं, क्योंकि वे स्वयं गढ़वाली नहीं जानते थे। उन्होंने वहीं के कुछ लोगों से, जो भाषा-विशेषज्ञ भी न थे, एक-दो कहानियों के अनुवाद करवाये और उसी आधार पर उन्होंने गढ़वाली के विषय में लिखा। फिर भी भाषा-विज्ञान की दृष्टि से उनकी देन बहुत ही महत्त्वपूर्ण है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIB

गढ़वाली मेरी मातृभाषा है। प्रत्येक पट्टी और परगने को मैंने अपनी आँखों से देखा है। बड़े-बूढ़ों से लोककथाएँ और लोकगीत अपने कानों से सुने हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में गढ़वाली भाषा का भाषा-शास्त्रीय तुलनात्मक अध्ययन, गढ़वाली व्याकरण की रूप-रेखा, लोकगीतों, लोकगाथाओं, लोककथाओं और लोकोक्तियों का सोद्धरण वर्गीकरण तथा उसके शब्दकोष के निर्माण में कार्य करनेवाली प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाला गया है। साथ ही सामाजिक तत्त्वों के आधार पर गढ़वाली भाषा का शब्द-सामर्थ्य और ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के आधार पर गढ़वाली भाषा का विकास दिखाया गया है। इस क्षेत्र में इस प्रकार का यह अपने ढंग का पहला प्रयास है, जो आगे के अध्येताओं के लिए कम-से-कम आधार-भूमि का काम तो देगा ही, ऐसा मेरा विश्वास है।

मैं इस ग्रन्थ की रचना का श्रेय हिन्दी समिति, उत्तर प्रदेश शासन को तथा उसके सम्मान्य अध्यक्ष और वरेण्य साहित्यकार श्री अमृतलाल नागर जी को ही समर्पित करना चाहता हूँ, जिनकी प्रेरणा से ही यह कार्य सम्पन्न हो सका है। समिति के सचिव भ्रमरजी मेरे अनन्य हैं, उन्होंने इसके प्रकाशन में जो रुचि और तत्परता प्रदर्शित की, वह उनकी जागरूकता और निष्ठा के योग्य है। मैं उनका आभारी हूँ।

गढ़वाल के जिन मित्रों और बड़े-बूढ़ों से मुझे सहयोग मिला है, उन्हें धन्यवाद के अतिरिक्त और दे ही क्या सकता हूँ?

—हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

गढ़वाली भाषा और उसका साहित्य

हिन्दी
समिति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MHRD

विषय सूची

गढ़वाली भाषा

अध्याय	पृष्ठ
१. भूमिका	१–१४
२. गढ़वाली भाषा का विकास	१५–३१
३. गढ़वाली भाषा का व्याकरण	३२–६१
४. गढ़वाली भाषा के शब्द-स्रोत और अर्थ-भेद	६२–८२

गढ़वाली साहित्य

५. गढ़वाली का प्रतिनिधि प्रकाशित साहित्य	८५–१४०
६. गढ़वाली लोक-गीत	१४१–१७९
७. गढ़वाली लोक-गाथाएँ	१८०–३०९
८. गढ़वाली लोक-कथाएँ	३१०–३५७
९. गढ़वाली लोकोक्तियाँ	३५८–३६६
१०. गढ़वाली पहेलियाँ	३६७-३६८
११. परिशिष्ट	
(क) गढ़वाली के कुछ प्रसिद्ध शब्द	३७१–४०३
(ख) ग्रियर्सन का भाषा वर्गीकरण	४०४–४०५
(ग) डॉ० चाटुर्ज्या का भाषा वर्गीकरण	४०६–४०८
(घ) सहायक ग्रंथ-सूची	४०९–४११
१२. शब्दानुक्रमणिका	४१२–४२६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

गढ़वाली भाषा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIB

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१

भूमिका

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

देवतात्मा हिमालय की गोद में बसा गढ़वाल अपने ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व तथा प्राकृतिक सौंदर्य में अद्भुत है। ग्यारह लाख वर्ग-मील और लगभग पन्द्रह लाख जनसंख्या-वाला **गढ़वाल-जनपद** चमोली, पौढ़ी, टिहरी और उत्तर काशी, इन चार जिलों में विभक्त है।

उत्तर में भोट (तिब्बत), दक्षिण में देहरादून, पूर्व में कुमाऊँ और पश्चिम में हिमाचल से घिरा उत्तर प्रदेश का यह भू-भाग अनेक दृष्टियों से बड़ा महत्त्वपूर्ण है। प्राचीन काल[1] में यह प्रदेश **ब्रह्मावर्त** (ब्रह्मदेश या ब्रह्मर्षिदेश) के नाम से विख्यात था। पुराणों[2] में **केदार-खण्ड** के नाम से और पालि[3]-साहित्य में **हिमवन्त** के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

पन्द्रहवीं शताब्दी के बाद जब[4] पंवार-वंशज महाराजा अजयपाल ने यहाँ के सब ठकुरी राजाओं और सरदारों को जीत कर एक सुविस्तीर्ण राज्य स्थापित किया, तब अधिक गढ़ों (५२ गढ़) के होने के कारण लगभग सन् १५००-१५१५ के बीच इस प्रदेश का नाम 'गढ़वाल' पड़ा। वैसे गढ़वाल के पांचाल-देश, देवभूमि, तपोभूमि, बदरिकाश्रम आदि कई नाम मिलते हैं।

यहाँ के हिममंडित ऊँचे-ऊँचे पर्वत, हरे-भरे विस्तृत बुग्याल या पयार (चरागाह), दूर-दूर तक फैले चीड़, देवदार और बाँज के जंगल, सारे प्रदेश को

१. डॉ० राधाकुमुद मुकर्जी : हिन्दू सभ्यता, पृ० ७०-७१।
२. वेदव्यास : स्कन्दपुराण, 'खंडा पंच हिमालयस्य कथिता नेपाल-कूर्माचलौ, केदारोऽथ जलंधरोऽथ रुचिर कश्मीर संज्ञोऽन्तिम'।
३. डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल : धुँयाल, पृ० २, प्राक्कथन।
४. हरिकृष्ण रतूड़ी: गढ़वाल का इतिहास, पृष्ठ १।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संगीतमय बनानेवाली नदियाँ, लहलहाते सीढ़ी-नुमा खेत, रूड़ (गर्मी), बसग्याल (बरसात) और ह्यूंद (शीतकाल)—तीनों मौसमों में एक स्वर से बहने-वाली बस्तियों की जलधाराएँ, उबलते पानी के स्रोत और कुण्ड, दर्पण के समान स्वच्छ जल के विस्तृत ताल, विचित्र हिमानियाँ और देवी-देवताओं के असंख्य मन्दिर—सभी अनुपम हैं।

गढ़वाल की ऐतिहासिक परम्परा में यक्ष, किन्नर, नाग, किरात, कोल, खश, गुर्जर, हूण, कुमयु, आर्य आदि अनेक जातियों का उल्लेख मिलता है और यहाँ की भाषा और संस्कृति पर सभी अपना थोड़ा-बहुत प्रभाव छोड़ गये हैं। वैसे, डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या[1] ने भारतीय संस्कृति की मूलाधार चार जातियाँ मानी हैं—निषाद, द्रविड़, किरात और आर्य। प्रागैतिहासिक काल में गढ़वाल मुख्यतया यक्ष, किन्नर, नाग और किरातों से सम्बन्धित रहा है। इनके सम्बन्ध में अनेक किंवदन्तियाँ और दन्तकथाएँ मिलती हैं।

कुबेर यक्षों का राजा था। अलकनन्दा के तट पर 'अलका' उसकी राजधानी थी। गढ़वाल में यक्षों को 'जग्स' या 'जाख' कहा जाता है। बाद में 'जग्स' अनिष्टकारी भूतों के रूप में माने जाने लगे और 'जाख' देवता के रूप में। आज भी गढ़वाल में जाख, जाखाल, जाखनी, जगोठ आदि नामों के कई गाँव हैं।

किन्नरी भाषा का देवतावाचक 'शू' (सू) शब्द गढ़वाल में बहुत ही व्यापक है। जौनसार का 'महासू' सबसे बड़ा देवता है। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि आर्यों ने 'सू' के पहले 'महा' जोड़ दिया होगा। गढ़वाल[2] के बहुत-से गाँवों, परगनों और पट्टियों के नामों में 'सू' या 'स्यूँ' आते हैं। जैसे, घरासूँ, लंगासूँ, बारहस्यूँ, रावतस्यूँ आदि। वैसे, डॉ०पातीराम[3] ने 'स्यूँ' को 'सिंह' का अपभ्रंश माना है और शालिग्राम वैष्णव[4] ने 'सीमा' का, किन्तु महापंडित राहुल सांकृत्यायन[5] ने 'स्यूँ' को किन्नर शब्द 'शू' (सू) का ही रूप माना है।

गढ़वाल पर नागों का भी पर्याप्त प्रभाव पड़ा है। वहाँ के लोकगीतों और लोक-विश्वासों में इनके अनेक प्रसंग मिलते हैं।

१. डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या : भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी, पृ० १४।
२. राहुल सांकृत्यायन : हिमालय परिचय (१), पृ० ५०।
३. डॉ० पातीराम : गढ़वाल, एंश्यंट एण्ड मॉडर्न, पृ० २२०।
४. शालिग्राम वैष्णव : भूगोल जिला गढ़वाल, पृ० ३७।
५. राहुल सांकृत्यायन : हिमालय परिचय (१), पृ० ५०।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अलकनन्दा की उपत्यका में नागों की अनेक बस्तियाँ थीं। नागपुर और उरगम (पैनखंडा) पट्टियाँ विशेषतः नागों से ही सम्बन्धित मानी जाती हैं। गढ़वाल में नागरजा, नगेलों, नाग, दूधाधारीनाग आदि अनेक नामों से नागों की पूजा होती है। आज भी पांडुकेश्वर में शेषनाग, नागनाथ में पुष्करनाग, रथगाँव में भेंकलनाग, सेम-गाँव में नागरजा, पौढ़ी में नागदेव, खाई में कालिंगनाग; दसोली[1] में तक्षकनाग, तलोर में मंगलनाग, नेलन (नीती घाटी) में लोदियानाग[2], टकनौर में स्यूरिया नाग, मरगाँव में बनपुरनाग, थातीकइड़ में महासागरनाग, उरगम (पैनखंडा) में बोरचानाग, नागपुर में वासुकिनाग, और भदूरा में हूणनाग पूजा जाता है।

गढ़वाल में किरातों के भी कुछ प्रसंग मिलते हैं। महर्षि वेदव्यास ने गढ़वाल का विस्तृत वर्णन करने के लिए केदारखंड नाम से स्कन्दपुराण का एक अलग भाग रचा। उसमें केदारखंड का विस्तार[3] और किरातों[4] का पर्याप्त उल्लेख मिलता है। महाभारत[5], कुमारसंभव[6] और किरातार्जुनीय में भी किरातों के सम्बन्ध में संदर्भ हैं।

१. राहुल सांकृत्यायन : हिमालय परिचय (१), पृ० ५१ (उद्धृत)।
२. महीधर शर्मा बड़थ्वाल : गढ़वाल में कौन कहाँ ?, पृ० १०।
३. वेदव्यास : स्कन्दपुराण (केदारखण्ड), अध्याय ४०, श्लोक २७, २८, २९—

पञ्चाशद् योजनायाम् त्रिंशद्योजन-विस्तृतम्।
इदं वै स्वर्ग-गमनं न पृथ्वीं तां महाविभो। २७
गंगाद्वारमर्यादं श्वेतान्तं वर-वर्णिनि।
तमसातटतः पूर्वभागे वौद्धाचलं शुभम्। २८
केदार-मंडलं ख्यातं भूम्यास्तद् भिन्नकं स्थलम्।
वात्सल्यात् तव देवेशि कथितं देशमुत्तमम्। २९

४. वेदव्यास : केदारखण्ड, अध्याय २०६, श्लोक १, २, ३—

तस्मिन्नेव महाक्षेत्रे हिमवदाश्रमे मुनेः।
वशिष्ठो मुनिशार्दूलो अरुंधत्या च समन्वितः। ११
ययौ महादेवमनाः संयतात्मा दृढव्रतः।
चकार वसतिं तत्र भिल्लानां निचयैर्युतः। २
रेमे सोऽपि किरातैश्च सन्ध्या-स्नान-पराङ् मुखः
मृगमांसाशनो नित्यं कृष्णकंबलकंचुकः। ३

५. वेदव्यास : महाभारत, वनपर्व, अध्याय १४०, श्लोक २५—

किरात-तंगणाकीर्णं पुलिन्द-शत-सेकुलम्।
हिमवत्यवरे जुष्टं पिकाश्चर्यसमाकुलम्।

६. कालिदास : कुमारसंभव, सर्ग १, श्लोक ७—

→

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ने अपनी विजय के दो अभिलेख छोड़े हैं। पहला गोपेश्वर[१] में १६ फुट लम्बे विशाल के त्रिशूल पर। काचल्लदेव (१२२३ ई०) का भी एक अभिलेख बालेश्वर में ताम्रपत्र की पीठ पर उत्कीर्ण मिला है।

सन् १४०० के बाद गढ़वाल में पंवार वंश की स्थापना हुई और इन्हीं के समय (पन्द्रहवीं शताब्दी के बाद से) इस प्रदेश का नाम 'गढ़वाल' पड़ा।

पंवार लोग स्यात् गुर्जर थे। ग्रियर्सन[२] ने यह माना है कि गुर्जर हिमालय की तराई से होकर गढ़वाल में फैले। कुछ समय पश्चात् वे राजस्थान जाकर पुनः गढ़वाल लौट आये। पंवार वंश का शासन गढ़वाल में सबसे अधिक रहा। गढ़वाल में मुसलमानों का आधिपत्य तो न रहा किन्तु, प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उनसे सम्पर्क अवश्य रहा है।

गढ़वाल के इतिहास में एक भयंकर दुर्घटना गोरखों के आक्रमण के कारण घटी। सन् १८०३ में अमरसिंह थापा और हस्तीदल चौतरिया के नेतृत्व में गोरखा सेना ने गढ़वाल की ओर प्रयाण किया। राजा प्रद्युम्नशाह ने डटकर उनका मुकाबला किया। उनकी मृत्यु हो गयी और गढ़वाल प्रायः गोरखों के हाथ में चला गया। बाद में अंग्रेजों की सहायता से सन् १८१५ में गढ़वाल गोरखों के पंजे से तो मुक्त हो गया, पर गढ़वाल का आधा भाग (पौढ़ी-गढ़वाल) अंग्रेजों के अधिकार में चला गया। आधे भाग (टिहरी) में पंवार राजाओं का ही आधिपत्य रहा।

स्वाधीनता के बाद टिहरी का भी उत्तर प्रदेश में विलीनीकरण हो गया और सन् १९६० में **गढ़वाल जनपद** शासन की सुविधा के लिए पौढ़ी, चमोली, टिहरी और उत्तरकाशी, इन चार जिलों में विभक्त हो गया है।

गढ़वाली भाषा के अध्ययन की रूपरेखा

गढ़वाल की ऐतिहासिक परम्परा से यह स्पष्ट हो गया है कि कत्यूरियों के शासन से पहले (अर्थात् नौवीं शताब्दी से पूर्व) गढ़वाल का कोई क्रमबद्ध लिखित इतिहास नहीं मिलता है। इसलिए पहले का इतिहास—आदिवासियों की स्थिति, जाति, परम्परा, स्वरूप आदि के ज्ञान के लिए एकमात्र आधार यहाँ की भाषा ही है।

१. ग्रियर्सन : लिंग्विस्टिक सर्वे आव् इण्डिया, भाग ६, खण्ड ४, पृ० ११।
२. राहुल सांकृत्यायन : हिमालय परिचय (१), पृ० १११।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रियर्सन[१] ने भी यह माना है कि नृ-विज्ञान के लिए भाषा का अध्ययन बहुत ही आवश्यक है। उन्होंने मध्यप्रदेश के 'नहाल' लोगों का उदाहरण देते हुए कहा कि ये लोग मूलतः मुंड़ा भाषा-भाषी थे, फिर इन पर द्रविड़ भाषा का प्रभाव पड़ा और ये मिश्रत भाषा-भाषी बन गये। बाद में आर्यभाषा का प्रभाव पड़ने पर इनकी भाषा बहुत-कुछ आर्य बन गयी।

गढ़वाली पर भी यह बात कुछ अंश में लागू होती है। यहाँ के आदिवासी यक्ष, किन्नर, नाग, किरात आदि थे। किरान्ती भाषा के डाँडापाखा[२] (पहाड़, पहाड़ियाँ), कुड़ो (कुडु=मकान)[३] आदि अनेक शब्दों का आज भी गढ़वाल में व्यापक रूप से प्रयोग होता है।

फिर यहाँ कोल, भील, द्रविड़ आये। गढ़वाली में कोली, कोलटा (कोल), भिलंगना, वेड़ा (भील), डोमड़ा, डोम[४], धुण (द्रविड़) आदि अनेक शब्द आज भी विद्यमान हैं। आर्यों के सम्पर्क से यहाँ की भाषा पूर्णतः आर्य-भाषा बन गयी।

भाषा-विज्ञान[५]-सम्बन्धी सिद्धान्तों या नियमों का पता लगाने के लिए बोलियों के अध्ययन की बड़ी आवश्यकता है। गढ़वाली के अध्ययन से हमें भाषा-विज्ञान-सम्बन्धी कई महत्त्वपूर्ण बातों का पता लगता है। प्राचीन समय से हमारे यहाँ भाषा-विज्ञान का बड़ा महत्त्व माना गया है। ऋग्वेद का 'वागाम्मृणी सूक्त' (१०/१२५), यास्क का 'निरुक्त', पाणिनि की 'अष्टाध्यायी', पतंजलि का 'महाभाष्य', भर्तृहरि का 'वाक्यपदीय' कात्यायन के 'वार्तिक', कैयट का 'महाभाष्यप्रदीप', हेमचन्द्र का 'शब्दानुशासन', मार्कण्डेय का 'प्राकृतसर्वस्व' आदि अनेक ग्रन्थ इस बात के प्रमाण हैं। **एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुष्टुः प्रयुक्तः स्वर्गे लोके च कामधुग् भवति**[६] कैयट का यह कथन, **वाग् वै सर्वान् कामान् दुहे**[७] ऐतरेय आरण्यक की यह उक्ति आदि इसके साक्षी हैं

१. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग १, खण्ड १, पृ० ५१।
२. हंटर : ए कम्परेटिव डिक्शनरी आव् नोन ऐरियन लैंग्वेजेज, पृ० १४४।
३. हंटर : वही, पृ० १३४।
४. डोमों के विषय में ग्रियर्सन (भारत का सर्वेक्षण, भाग १, खण्ड १, पृ० ३५१) का मत है कि डोम आदिम युग की जाति है, जिसका मूल सम्भवतः द्रविड़ है। —'रोम' शब्द जिसे यूरोपीय जिप्सी के लिए प्रयुक्त किया जाता है, प्रायः निश्चित रूप से यही (डोम) शब्द है, जो पश्चिमी देशों में जा पहुँचा है।
५. डॉ० मंगलदेव शास्त्री : भाषा-विज्ञान, पृ० ५।
६. यस्तु प्रयुङ्क्ते (महाभाष्य) पर कैयट का प्रदीपः महाभाष्य ६/१/८४।
७. ऐतरेय आरण्यक, १/३/२।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कि भारत में भाषा-विज्ञान का पहले से ही मूल्यांकन किया गया है। भाषा-विज्ञान[१] के द्वारा ही भारत-यूरोपीय जातियों की मूल-जाति और भाषा का पता लगा है।

गढ़वाली का अध्ययन

गढ़वाली भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन, उसकी उत्पत्ति, स्वरूप, विकास आदि के ज्ञान के लिए उसका अध्ययन प्रयोजनीय है। शब्द और अर्थ के वास्तविक सम्बन्ध का ज्ञान भाषा के अध्ययन के लिए बड़ा महत्त्वपूर्ण विषय है। शब्द[२] के सच्चे स्वरूप का ज्ञान उसके अर्थ से ही होता है, क्योंकि भावाभिव्यक्ति[३] के लिए ही शब्द का प्रयोग किया जाता है। गढ़वाली में प्रयुक्त अनेक शब्दों के अर्थबोध, अर्थभेद आदि के लिए उसका वैज्ञानिक अध्ययन वांछनीय है। ग्रियर्सन[४] ने भी यह तथ्य स्वीकार किया है कि भाषा-सर्वेक्षण के लिए जनपदीय भाषाओं का आधार परम आवश्यक है।

पार्श्ववर्ती भाषाओं और बोलियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन के लिए गढ़वाली का अध्ययन परम आवश्यक है। भाषाविशेषज्ञ ग्रियर्सन[५] ने अपव्ययी पुत्र (**प्रोडिगल सन**) की कथा का भारत की सभी भाषाओं में अनुवाद करवा कर तुलनात्मक अध्ययन से ही भाषा-विज्ञान के अनेक नये तथ्यों का पता लगाया। टर्नर ने नेपाली शब्दकोष के निर्माण में तुलनात्मक रूप को ही प्रश्रय दिया है। गढ़वाली का पार्श्ववर्ती भाषाओं या बोलियों से क्या सम्बन्ध है, इसके लिए भाषा-विज्ञान की दृष्टि से उसका वैज्ञानिक अध्ययन आवश्यक है। गढ़वाली की कुमाऊँनी, नेपाली, हिन्दी, राजस्थानी, गुजराती, मराठी, पंजाबी, सिन्धी, बंगाली आदि कई भाषाओं से तुलना करने पर अनेक तथ्यों का पता लगता है।

आधुनिक युग में जनपद-साहित्य या लोक-साहित्य का महत्त्व सभी ने स्वीकार किया है। गढ़वाल जनपद के लोकगीतों, लोककथाओं, लोकोक्तियों आदि के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए गढ़वाली का अध्ययन जरूरी है।

१. डॉ० मंगलदेव शास्त्री : भाषा विज्ञान, पृ० १०।
२. यास्क : निरुक्त, अध्याय २, खंड १, 'अर्थनित्यः परीक्षेत'।
३. क—पतञ्जलि : महाभाष्य ३/१/७ 'अर्थगत्यर्थ (शब्द-प्रयोग)'।
   ख—भर्तृहरि : वाक्यपदीय १/११३—'अथेदमान्तरं ज्ञानं सूक्ष्मवागात्मना स्थितम्
   व्यक्तये स्वस्य स्वस्य शब्दत्वेन विवर्तते।'
४. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग १, खंड १, पृ० ३३।
५. ग्रियर्सन : वही, भाग १, खंड १, पृ० ३४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

हिमालयान्तर्गत प्रदेशों के सांस्कृतिक नवोत्थान तथा प्राथमिक शिक्षा के संगठन के लिए गढ़वाली भाषा के अध्ययन की बड़ी आवश्यकता है। प्राथमिक शिक्षा का माध्यम सभी प्रदेशों में जनपदीय भाषा होनी चाहिए। इसे सभी शिक्षा-विशेषज्ञ मानते हैं। अतः गढ़वाल-जनपद में अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार के लिए इसकी आवश्यकता है। राष्ट्रभाषा हिन्दी की श्रीवृद्धि और प्रचार-प्रसार में गढ़वाली महत्त्वपूर्ण योगदान कर सकती है।

गढ़वाली में ऐसे अनेक शब्द हैं, जिनसे हिन्दी का शब्दकोष बढ़ सकता है। जैसे, गढ़वाली में ऊनी, सूती और ऊनी-सूती (मिश्रित), तीनों कपड़ों के जलने के लिए किकर्याण, कुतराण और विकिल्याण, तीन अलग शब्द हैं। इतना सूक्ष्म भेद किया गया है।

गढ़वाली के दिदा, भुला, और दीदी, भुली के हिन्दी में पर्याय बड़ा भाई, छोटा भाई और बड़ी बहिन, छोटी बहिन हैं, किन्तु हिन्दी में बड़ा और छोटा लगाने की समस्या है। 'अग्रज' और 'अनुज' का प्रयोग भी बोलचाल में अटपटा लगता है। ऐसे ही हिन्दी का 'कल' भूत और भविष्यत् दोनों के लिए प्रयुक्त होता है, जब कि गढ़वाली में 'भोल' (आगामी दिन), और 'व्याले' (गत दिन), दो अलग शब्द हैं। ऐसे शब्दों से हिन्दी की अभिव्यक्ति को बहुत बल मिलेगा।

कुछ शब्द ऐसे हैं, जो गढ़वाल की विशिष्ट वस्तुओं की ध्वनियों, रूपों और रंगों के लिए प्रयुक्त होते हैं। इनसे हिन्दी का निस्सन्देह विकास होगा, क्योंकि राष्ट्रभाषा की अभिवृद्धि के लिए जनपदीय भाषाओं का सर्वांगीण अध्ययन बहुत आवश्यक है।

तुलनात्मक पद्धति

गढ़वाली भाषा के स्वरूप, सिद्धान्त, शब्द-सामर्थ्य, व्याकरणिक नियम आदि के लिए तुलनात्मक पद्धति को अपनाया गया है। भाषा-विषयक सामान्य सिद्धान्तों का निश्चय करने के लिए यत्र-तत्र नव्य-भारतीय आर्यभाषाओं से गढ़वाली की तुलना की गयी है। डा० मंगल-देव शास्त्री[१] ने इस पद्धति को 'तुलनात्मक प्रक्रिया' कहा है। इसका महत्त्व बताते हुए उन्होंने कहा है कि तुलना के बिना किसी विषय से सम्बन्ध रखने-वाले सिद्धान्तों या नियमों की खोज हो ही नहीं सकती है। इसमें सन्देह नहीं है कि भाषाओं के अध्ययन के लिए तुलनात्मक पद्धति बड़ा महत्त्व रखती है। इसीलिए भाषा-विशेषज्ञों ने आरम्भ से ही इस प्रणाली का सहारा लिया।

१. डॉ० मंगलदेव शास्त्री : भाषा विज्ञान, पृ० १५१।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर विलियम जोन्स[1] ने १७८६ ई० में संस्कृत के तुलनात्मक अध्ययन से भाषाओं के एक भा-यूरोपीय परिवार के अस्तित्व की स्वीकृति दी। उन्होंने ग्रीक, लैटिन आदि से संस्कृत की तुलना की थी। बोप[2] ने १८३३ ई० में तुलनात्मक व्याकरण द्वारा भाषा-शास्त्रीय अध्ययन प्रस्तुत किया। उनके तुलनात्मक वैज्ञानिक अध्ययन का ही बाद में ग्रिम, पाट, श्लाइखर, ह्विटने, ब्रगमान, डेलब्रुंक मेइए, जेसपर्सन आदि ने अनुसरण किया है।

बीम्स[3] ने अपने **कम्परेटिव ग्रेमर आव् द मोडर्न एरियन लैंग्वेजेज आव् इण्डिया** (१८७२ से १८७९ ई०) में, जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन[4] ने अपने **लिंग्विस्टिक सर्वे आव् इण्डिया** (१८९४ से १९२७ ई०) में, डा० चाटुर्ज्या ने **इण्डो ऐरियन एंड हिन्दी** में, डॉ० बाबूराम सक्सेना[5] ने **एवोल्यूशन आव् अवधी** में और डा० धीरेन्द्र वर्मा ने **ले लांग ब्रज** में इसी तुलनात्मक वैज्ञानिक पद्धति को प्रश्रय दिया है।

भाषा के वाक्य, पद, ध्वनि और अर्थ—ये चार अंग होते हैं। तुलनात्मक पद्धति के द्वारा इन्हीं चार अंगों का वैज्ञानिक अध्ययन होता है। गढ़वाली का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन करने के लिए (क) वाक्य-विज्ञान, (ख) पद-विज्ञान, (ग) ध्वनि-विज्ञान और (घ) अर्थ-विज्ञान का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

वाक्य-विज्ञान[6] में वाक्यों का स्वरूप, परस्पर सम्बन्ध, वाक्यान्तर्गत शब्दों का परस्पर सम्बन्ध तथा आपेक्षिक क्रम और सानिध्य पर विचार किया जाता है। वैसे हिन्दी की तरह गढ़वाली में भी पहले कर्ता, फिर कर्म और अन्त में क्रिया आती है। अंग्रेजी में पहले कर्ता, फिर क्रिया और बाद में कर्म आदि आते हैं। संस्कृत में (**ते विद्यालयं गच्छन्ति, गच्छन्ति ते विद्यालयम्, विद्यालयं गच्छन्ति ते**) क्रम की कोई विशेष समस्या ही नहीं है।

गढ़वाली में परसर्ग प्रायः शब्दों से मिले रहते हैं, जैसे 'तैन बोले' (उसने कहा) जबकि हिन्दी में सर्वनामों को छोड़कर अन्यत्र परसर्गों को अलग ही लिखते हैं। संस्कृत में अनिवार्य रूप से विभक्तियाँ मिल जाती हैं (**रामस्य पुस्तकम् इदम्**)।

१. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग १, खंड १, पृ० २०।
२. ग्रियर्सन : वही, भाग १, खंड १, पृ० २१।
३. ग्रियर्सन : वही, भाग १, खंड १, पृ० ३०।
४. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० ६।
५. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० १०।
६. डॉ० मंगलदेव शास्त्री : भाषा विज्ञान, पृ० १२।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पद-विज्ञान में शब्दों के स्वरूप, प्रकृति, प्रत्यय, उपसर्ग आदि के परस्पर सम्बन्ध, संज्ञा, क्रिया, विशेषण आदि के पारस्परिक भेद पर विचार किया जाता है। पद-विज्ञान[1] का भी ऐतिहासिक और तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन किया जाता है। ध्वनि-विज्ञान[2] में ध्वनियों का अध्ययन होता है। भाषा परिवर्तनशील हैं, क्योंकि देश-भेद[3] और काल-भेद से उसमें परिवर्तन होते हैं। ध्वनि-विकार, बलाघात, मात्राओं आदि पर विचार होता है। अर्थ-विज्ञान में अर्थ और शब्द का पारस्परिक सम्बन्ध, शब्दार्थ में परिवर्तन के कारण आदि का अध्ययन किया जाता है। गढ़वाली भाषा का अध्ययन करते हुए उल्लिखित विषय तुलनात्मक और ऐतिहासिक ढंग से प्रस्तुत किये गये हैं।

ऐतिहासिक प्रणाली

गढ़वाली भाषा के क्रमिक विकास के अध्ययन के लिए भाषा-शास्त्रीय ऐतिहासिक पद्धति अपनायी गयी है। आरम्भ से अब तक गढ़वाली के विकास में कौन-कौन-सी मुख्य प्रवृत्तियाँ काम करती रही हैं, इनके परिचय के लिए ऐतिहासिक प्रणाली का सहारा लिया गया है। लोकगीतों, लोककथाओं, लोकोक्तियों आदि के अध्ययन के लिए मुझे 'गढ़वाल जनपद' की प्रायः सभी पट्टियों और परगनों की यात्राएँ करनी पड़ीं।

गढ़वाली भाषा के प्रकरण में इस बात का उल्लेख किया गया है कि उच्चारण की दृष्टि से यहाँ के परगने-परगने की बोली में कुछ अन्तर आ गया है। जार्ज ग्रियर्सन[4] ने भी इस तथ्य को माना है।

स्थान-स्थान के औजी, हुड़क्या, वादी, घडियाल्या आदि से मैंने गीत और वार्ताएँ सुनीं, बूढ़ियों से लोककथाएँ सुनीं और उन्हें उसी रूप में लिपि-बद्ध किया है। आगे कुछ के अनुवाद और कुछ के मूलरूप ही दिये गये हैं। गढ़वाली मातृभाषा होने के कारण प्रत्यक्ष पद्धति से अध्ययन करने में भाषा के सम्बन्ध में अनेक अनुभव प्राप्त किये हैं।

अध्ययन के आधार

गढ़वाली भाषा के अध्ययन के लिए प्रमुख आधार हैं—यहाँ के असंख्य लोक-गीत, लोक-कथाएँ और लोकोक्तियाँ। लोकगीतों में मांगल, जाग, पंवाड़े आदि बहुत

१. डॉ० बाबू राम सक्सेना : सामान्य भाषा विज्ञान, पृ० २४।
२. वही, पृ० २४।
३. डॉ० मंगल देव शास्त्री : भाषा विज्ञान, पृ० १३।
४. जार्ज ग्रियर्सन : भारत का भाषा-सर्वेक्षण, भाग १, खंड १।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ही पुराने हैं। इनसे गढ़वाली भाषा का पुराना स्वरूप स्पष्ट रूप से विदित हो जाता है। शताब्दियों से प्रचलित लोक-कथाओं और लोक-गाथाओं में भाषा के सौष्ठव, शब्द-सामर्थ्य, अभिव्यंजना आदि के रूप मिलते हैं।

लोकोक्तियाँ[१] जनता-जनार्दन की उक्तियाँ मानी गयी हैं। समय की कसौटी पर खरी उतरी इन उक्तियों में भाषा के अर्थ-गौरव, अभिव्यक्ति और चमत्कार के सूत्र उपलब्ध होते हैं। इनके विषय में विस्तारपूर्वक आगे के प्रकरणों में लिखा गया है। जार्ज ग्रियर्सन[२] ने भी अपने भाषा-सर्वेक्षण-कार्य के लिए विशेषतः लोकगीत, मुहावरों आदि को ही चुना था।

गढ़वाल में कुछ पुराने लेख भी उपलब्ध हुए हैं। इनमें (क) देवप्रयाग के मन्दिर में महाराजा जगतपाल के (सन् १३३५ के) दानपत्र का लेख; (ख) देवलगढ़ में महाराजा अजयपाल का पन्द्रहवीं शताब्दी का लेख, (ग) देवप्रयाग के उसी मन्दिर में महाराजा पृथ्वीशाह के (सन् १६६४ के) ताम्रपत्र का लेख और (घ) मालद्यूल, टिहरी-गढ़वाल में लक्ष्मीनारायण के मन्दिर की बुनियाद के पत्थर पर सन् १७८५ का लेख विशेष उल्लेखनीय हैं। इन लेखों से गढ़वाली भाषा की गद्यशैली का सामान्य स्वरूप देखने को मिलता है।

ढोल सागर : ढोल के ताल, बोल और मंत्रों* के ज्ञान के लिए 'ढोल सागर' गढ़वाली भाषा का अमूल्य ग्रन्थ है। इसका संग्रह[3] महाराजा अजयपाल (१५००-१५१९)[४] के समय के बाद ही किसी गोरखपंथी द्वारा किया गया है। इसी तरह के (क) 'घट-थापना', (ख) 'इन्द्रजाल' आदि गोरखपंथी ग्रन्थ गढ़वाली भाषा में मिलते हैं।

*** ढोल-मंत्र**

वन्‌मो आदेस[१], माता पिता गुरु देवता को आदेस,
रण कू दली[२] ठोकत ताल, फुट-फुट रे बाबा बजर सी ताल।
पूड नी फुटे डोर नी खुले मंत्र नी चले,
देणा नरसी बाबा हण्‌मान, तेरी आण[3] पडे परथमें[४]। →

१. ओं नमो आदेश, २. रण का दलन करने-वाले, ३. शपथ, ४. पूड़ा,

१. कन्हैया लाल सहल : राजस्थानी कहावतें—एक अध्ययन, पृ० २।
२. जार्ज ग्रियर्सन : भारत का भाषा-सर्वेक्षण, भाग १, खंड १।
३. अबोध बहुगुणा : धुँयाल, पृष्ठभमि।
४. राहुल सांकृत्यायन : हिमालय परिचय १, पृ० १२२; पृ० ४६३-६४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन के **लिंग्विस्टिक सर्वे ग्राव् इंडिया** (सन् १८९४ से १९२७) के नौवें भाग के चौथे खण्ड में गढ़वाली भाषा का सीमित तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। यद्यपि ग्रियर्सन द्वारा प्रस्तुत अधिकतर उदाहरण उच्चारण की दृष्टि से अंकित नहीं किये गये हैं, तथापि भाषा-शास्त्रीय पद्धति से जितना प्रयत्न किया गया है, वह बहुत ही उपादेय और प्रशंसनीय है।

कैलाग के **ए ग्रैमर ग्राव् द हिन्दी लैंग्वेज** (सन् १८७६) में मध्य पहाड़ी भाषाओं के अध्ययन में गढ़वाली के सम्बन्ध में बहुत संक्षिप्त-सी सामग्री दी गयी है।

गढ़वाली जन-साहित्य-परिषद् के प्रकाशन गढ़वाली भाषा के अध्ययन में कुछ सहायक सिद्ध हुए हैं। (क) 'गढ़वाली साहित्य की भूमिका', (प्र० संपादक : डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश') (ख) 'गढ़वाली को नयो कदम' (सम्पादक : डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश') और (ग) 'गढ़वाली का निबन्ध' (सं०: गोपेश्वर कोठियाल)—इन तीन पुस्तकों में गढ़वाली के सम्बन्ध में कुछ शोधपूर्ण निबन्ध हैं।

गढ़वाली भाषा का प्रतिनिधि साहित्य बहुत ही कम है। गढ़वाली में कुछ खंड-काव्य, कुछ नाटक और कुछ मुक्तक गीत लिखे गये हैं, जिनसे गढ़वाली की आधुनिक गद्य-पद्य शैलियों के अध्ययन में कुछ सहायता मिली है। प्रतिनिधि प्रकाशित साहित्य का उल्लेख अन्यत्र किया गया है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा पदार्थपरक, वर्गीकरण के अध्ययन के लिए गढ़वाल के कुणिंद, गढ़तांग मानोशाही, फतेहशाही आदि कुछ पुराने सिक्के, देवी-देवताओं के मठ-मन्दिर, नापतौल के पैमाने, जातियों, गाँवों, पट्टियों और

→ जत खोलु, सत खोलु, कंकणी[५] खोलु,
मुंदडे[६] खोलु, हार खोलु डोर खोलु,
तामा रोदन खोलु, कोन्ती[७] का सत न खोलु[८],
सीताका सत न खोलु, दुरपतीका खाड़ा न खोलु,
नकोल[९] की छडी न खोलु, सहदेवकी छडी न खोलु ,
अर्जनका धनक न खोलु, भीमकी गजा[१०] न खोलु ,
दुद्ध्या[११] की वाचा न खोलु, मंत्र नी चले अंजनीका पुत्र,
नरसी वीर तेरी आण पड़े, पंच पंडव तेरी आण पड़े।

५. ढोल की मेखला, ६. मुद्रा, ७. कुन्ती, ८. खोलना, ९. नकुल, १०. गदा, ११. दुधिया बाबा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़ों के नाम, हाकिमों के फरमान और सनद आदि कुछ सीमित सामग्रियाँ उपलब्ध हैं, जिनसे अध्ययन के लिए थोड़ा-बहुत आधार मिल जाता है। सहायक पुस्तकों के नाम यत्र-तत्र दिये गये हैं, किन्तु जिन पुस्तकों से इतिहास आदि की विशेष सामग्री उपलब्ध हुई हैं, वे हैं— 'गढ़वाल-परिचय' (हरिकृष्ण रतूड़ी), 'गढ़वाल का इतिहास' (हरिकृष्ण रतूड़ी) , 'गढ़वाल, एंश्येंण्ट एंड मॉडर्न' (डॉ० पातीराम), 'हिमालयन डिस्ट्रिक्ट्स'—भाग २ (एटकिन्सन), 'गढ़वाल गजेटियर', 'गढ़वाल' (श्यामचन्द नेगी) और 'हिमालय परिचय' (राहुल सांकृत्यायन)। ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२

गढ़वाली भाषा का विकास

'गढ़वाल जनपद' में चमोली, पौढ़ी, टिहरी और उत्तरकाशी,—ये चार जिले आते हैं। भारत के चारों पावनधाम—बदरी, केदार, गंगोत्री और यमनोत्री इसी जनपद में हैं।

ग्यारह लाख वर्ग-मील और पन्द्रह लाख जनसंख्या-वाले इस क्षेत्र की भाषा गढ़वाली है। वैसे, 'गढ़वाल जनपद' और देहरादून आदि स्थानों में बसे गढ़वालियों की कुल संख्या पच्चीस लाख[1] है।

गढ़वाली का उद्‌गम

ग्रियर्सन[2] ने भारतीय आर्य-भाषाओं का वर्गीकरण करते हुए पहाड़ी समुदाय की भाषाओं की स्थिति आर्य-भाषाओं की 'भीतरी उपशाखा' के अन्तर्गत निर्धारित की है और पहाड़ी समुदाय की भाषाओं का क्रमशः पूर्वी पहाड़ी (नेपाली), केन्द्रीय पहाड़ी (गढ़वाली और कुमाऊँनी) और पश्चिमी पहाड़ी (जोनसारी, सिरमौरी, क्योंठाली, कुल्लई और चमआली)—ऐसा वर्गीकरण किया है तथा इनकी उत्पत्ति 'आवन्त्य अपभ्रंश'[3] से मानी है, जो राजस्थानी[4] की भी जननी है।

ग्रियर्सन ने वैसे उत्तरी समुदाय की आधुनिक भाषाओं के सम्बन्ध में लिखते हुए कहा कि ये हिमालय प्रदेश में, पूर्वी पंजाब से नेपाल तक बोली जाती हैं और हमें इस क्षेत्र की किसी विशिष्ट प्राकृत अथवा अपभ्रंश का पता नहीं है। इनके बोलने-वालों की अधिकांश जनसंख्या का आधार तिब्बती-बर्मी जातियाँ थीं, जो बाद के युगों में आर्यों से मिश्रित हो गयीं। पंजाब के उत्तर में 'टक्क' अपभ्रंश ने उन्हें अवश्य ही प्रभावित किया था। इसके बाद तो दर्दीय मूल की भाषाएँ बोलने-वाली खश तथा अन्य

१. श्याम चन्द नेगी : गढ़वाली, पृ० ६।
२. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग १, खंड १, पृ० ३३३।
३. ग्रियर्सन : वही, भाग १, खंड १, पृ० २३५।
४. ग्रियर्सन : वही, भाग २, खंड १, पृ० २३४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जातियों के इधर कई आक्रमण हुए और मध्य एशिया से आनेवाली गुर्जर जाति भी संभवतः अपने साथ आर्यभाषा ले आयी थी। अन्ततः यहाँ राजपूताना से भी निष्क्रमण-कारी आये और इनकी भाषा पूर्वागत लोगों की भी भाषा से मिश्रित हो गयी और मोटे तौर पर यही भाषा प्रसारित भी हुई।

इस प्रकार इस समुदाय की भाषाओं में विभिन्न तत्वों का मिश्रण मिलता है, यद्यपि मुख्य रूप से उनकी गठन राजपूताने में बोली जानेवाली भाषाओं के रचना-विधान का स्मरण दिलाती है। सभी बातों पर विचार करते हुए यह कहा जा सकता है कि उनकी उत्पत्ति 'आवन्त्य अपभ्रंश' से हुई[1]।

आवन्त्य अपभ्रंश शौरसेनी (नागर) का ही एक रूप है, क्योंकि ग्रियर्सन[2] के कथनानुसार दक्षिणी भाषाएँ—मराठी, कोंकणी आदि यद्यपि मागधीप्रसूत हैं, तथापि इन पर शौरसेनी का प्रभाव है। इसी प्रकार उत्तरी भाषाएँ—गढ़वाली, कुमाऊँनी, नेपाली आदि यद्यपि शौरसेनी-प्रसूत हैं, तथापि इन पर मागधी का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है, यह सिद्ध होता है। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा[3] ने पहाड़ी भाषाओं का सम्बन्ध शौर-सेनी अपभ्रंश से ही माना है। कैलाग[4] ने गढ़वाली को हिन्दी की बोली के रूप में माना है। डा० उदयनारायण तिवारी[5] भी गढ़वाली को शौरसेनी-प्रसूत मानते हैं।

डॉ० भोलाशंकर व्यास ने गढ़वाली भाषा की प्रस्थापना में लिखा है कि "मुझे डॉक्टर टी० एन० दवे की स्थापना विशेष समीचीन जँचती है। वे पहाड़ी भाषाओं को शोरसैनी से ही विकसित मानते हैं। उन्होंने शौरसैनी प्राकृत से विकसित परवर्ती अप-भ्रंश को चार वर्गों में विभक्त करते हुए 'हिमाचल अपभ्रंश' की स्वतन्त्र परिकल्पना की।" डॉ० व्यास ने अपना मत व्यक्त करते हुए यही कहा कि "मेरा ऐसा अनुमान है कि गढ़वाली आदि की मूल भित्ति शुद्ध शौरसैनी की ही रही होगी, तथा इस पर बाहरी तत्त्व केवल ऊपर से थोपे गये हैं।"

डॉ० भंडारकर[6] गढ़वाली को 'पहाड़ी हिन्दी' के अन्तर्गत मानते हैं और उन्होंने यहाँ तक कहा कि राजस्थानी की उत्पत्ति 'पहाड़ी हिन्दी' से ही हुई है।

१. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग १, खंड १, पृ० २३४-२३५।
२. डॉ० उदयनारायण तिवारी : हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० २९६।
३. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० ४८-४९।
४. कैलोग : ए ग्रैमर आव् द हिन्दी लैंग्वेज, पृ० ६९।
५. डॉ० उदयनारायण तिवारी : भोजपुरी भाषा और साहित्य, पृ० १७१।
६. ग्रियर्सन : लिंग्विस्टिक सर्वे आव् इंडिया, भाग ९, खंड ४, उद्धरण पृ० १२।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या[१] का पहाड़ी भाषाओं के सम्बन्ध में एकदम भिन्न मत हैं। वे ग्रियर्सन के बाहरी और भीतरी उपशाखा-वाले विचार को नहीं मानते हैं। वे इनकी उत्पत्ति और सम्बन्ध 'दरद' या 'खश' से मानते हैं।

ग्रियर्सन[२] ने इतना अवश्य लिखा है कि "चम्बा से नेपाल तक, हिमालय के तराई प्रदेश की भारतीय आर्य-भाषाओं में स्पष्ट रूप से दरद भाषा के अवशेष मिलते हैं। खश[3] लोग दरद-वंशीय थे। उन्होंने इस समूचे प्रदेश को किसी समय जीत लिया था और इसे अपनी भाषा से प्रभावित भी किया था", किन्तु ग्रियर्सन ने यह स्वीकार नहीं किया कि ये पहाड़ी भाषाएँ दरदीय या पिशाच शाखा की हैं। उन्होंने **लिंग्विस्टिक सर्वे आव इंडिया**, भाग १, खण्ड १ के दशवें अध्याय में दरदीय भाषाओं का वर्गीकरण करते हुए लिखा कि दरद[४] भाषाओं का वर्तमान देश दरदिस्तान, पूर्व से पश्चिम, गिलगित तथा कश्मीर, सिन्ध और स्वात, कोहिस्तान, चित्राल और फिरिस्तान को अपनी सीमाओं में समाविष्ट करता है।

उन्होंने यह भी लिखा कि भारतीय विद्वान् 'दरदों' या 'दारदों' (संस्कृत में इन्हें 'दारद' या 'दरद' कहा गया है) को 'बर्बर' या 'नष्ट आर्य' कह कर पुकारते थे। उनके रीतिरिवाज भी बड़ी घृणा की दृष्टि से देखे जाते थे। उनके मनुष्यभक्षी होने की कथाएँ भी लोक प्रचलित थीं। इसीलिए उन्हें 'पिशाच' भी कहा जाता था। यह निश्चित है कि हिन्दूकुश और भारत का पश्चिमी सीमान्त प्रदेश (अब पाकिस्तान) 'दरदिस्तान' कहलाता था और वहीं के लोग 'पिशाच' भी कहलाते थे।

वास्तव में डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या की इस स्थापना का आधार मात्र यही है कि खश भी गढ़वाल के निवासी थे और खश 'दरद' वंशीय माने गये हैं, किन्तु यदि गढ़वाली भाषा और दरद भाषाओं[५] का तुलनात्मक वैज्ञानिक अध्ययन किया जाय तो दोनों में आकाश-पाताल का अन्तर मिलेगा।

पैशाची या दरद भाषाओं और गढ़वाली में साम्य के आधार प्रायः नहीं के के बराबर हैं। कश्मीर आदि दरद भाषाओं और मध्य पहाड़ी में किसी भी प्रकार की समानता के चिह्न नहीं दिखाई देते हैं। इसलिए डॉ० चाटुर्ज्या की ऐसी धारणा की

१. डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या : द ओरिजिन एण्ड डेवलपमेंट आव द बंगाली लैंग्वेज, पृ० ६।
२. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग १, खंड १, पृ० २०१।
३. ग्रियर्सन : लिंग्विस्टिक सर्वे आव इण्डिया, भाग ६, खंड ४, पृ० २।
४. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग १, खंड १, पृ० २००।
५. ग्रियर्सन : वही, भाग १, खंड १, पृ० १९९।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्थापना के लिए कोई ठोस या ठीक आधार नहीं मिलता है।

मैक्समूलर[१] ने अपनी पुस्तक **साइन्स आव लैंग्वेज** में गढ़वाली को प्राकृतिक भाषा का एक रूप माना है। बालकृष्ण शास्त्री[२] ने अपनी 'बनक वंश' पुस्तक में यह उल्लेख किया कि गढ़वाल में संस्कृत बहुत दिनों तक रही। हरिराम धस्माणा ने यह उल्लेख किया कि आर्य गढ़वाल के ही रहनेवाले थे, क्योंकि वेदमाता[३] में उन्होंने गढ़वाली और वैदिक शब्दों की एक सूची दी है, जिसमें दिखाया है कि गढ़वाली में कई शब्दों का प्रयोग वैदिक रूप में ही होता है, जैसे—

वैदिक	गढ़वाली	वैदिक	गढ़वाली
कतमत	कतमत (हड़बड़ाहट)	गाध	गाड (नदी)
स्या	स्या (स्त्री)	गौरी	गौड़ी (गाय)
समेति	समेत (सहित)	पाथो	पाथो (एक माप)

ऐसे ही 'बीठ' शब्द है, जिसका गढ़वाल में व्यापक रूप से प्रयोग होता है, क्योंकि गढ़वाली समाज बीठ (ब्राह्मण, राजपूत आदि) और डोम (हरिजन) इन दो श्रेणियों में विभक्त है। बीठ[४] शब्द का इसी अर्थ में प्रयोग वैदिक काल के 'विट' (द्विजाति) से भी होता था।

स्वामी दयानन्द[५] ने यह माना है कि आर्य लोग भोट (तिब्बत) से सबसे पहले गढ़वाल में आये।

डा० चाटुर्ज्या[६] इस बात को मानते हैं कि भारत में आर्यों की अनेक शाखाएँ प्रवेश करती रहीं और प्रत्येक शाखा की बोली की अपनी विशेषताएँ थीं। इस बात की पूर्ण संभावना है कि उत्तर के रास्ते से भी आर्यों का कोई दल आया होगा।

वास्तव में उत्तर भारत की सभी भाषाओं का उद्गम स्थल 'मध्य देश[७]' ही है और प्रारम्भ में केवल कुरु, पांचाल, हिमालय प्रदेश के लिए ही इस शब्द का प्रयोग होता था। बाद में "आर्यावर्तः **पुण्यभूमिर्मध्यं विन्ध्य-हिमालयोः**" हिमालय और विंध्य

१. श्यामचन्द नेगी : गढ़वाली अर संस्कृत, गढ़वाली साहित्य की भूमिका, पृ० ३७।
२. गढ़वाली साहित्य की भूमिका : सम्पादक—हरिदत्त भट्ट 'शैलेश', पृ० ३७।
३. हरिराम धस्माणा : वेदमाता, पृ० ७७।
४. भगवती प्रसाद पांथरी : गढ़वाली का निबन्ध, पृ० ५३।
५. श्यामचन्द नेगी : गढ़वाली का निबन्ध, पृ० १६।
६. डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या : भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, पृ० ६३।
७. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० ४४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

के बीच का भूभाग 'मध्यदेश' या 'आर्यावर्त' कहलाया। इस भूभाग[1] में बसने-वाले लोग उत्तम माने गये हैं और उनकी भाषा प्रामाणिक मानी गयी है।

'मध्यदेश' की भाषाओं ने वैदिक, छांदस, संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आदि कई रूप ग्रहण किये हैं और दसवीं शताब्दी में उन्होंने आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं का रूप धारण किया है। गढ़वाली का विकास भी ऐसे ही हुआ, क्योंकि गढ़वाली भाषा भी 'मध्यदेश' के अन्तर्गत आयी हैं, ऐसा मेरा अपना विचार है।

भरतमुनि[2] ने अपने **नाट्यशास्त्रम्** में लिखा कि हिमवत्, सिन्धु और सौवीर में 'उकार बहुला भाषा' का प्रयोग होता था। इससे यह सिद्ध होता है कि हिमवत्, सिन्धु और सौवीर ही पहले अपभ्रंश के क्षेत्र थे, क्योंकि विद्वानों का ऐसा विचार है कि 'उकार बहुला भाषा' अपभ्रंश ही हो सकती है। अपभ्रंश भाषा को 'आभीरोक्ति' 'आभीरादि गिरा' या 'नागवाणी' भी कहा गया है। ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर यह वात निर्विवाद है कि नाग जाति के लोगों का हिमालय पर पर्याप्त प्रभाव रहा है।

आभीरों में शक और गुर्जर भी सम्मिलित थे, क्योंकि इनके प्रसार के साथ-साथ प्रारम्भिक अपभ्रंश का भी प्रसार हुआ। आभीर[3] लोग उत्तर-पश्चिम से आकर 'मध्यदेश' में पहुँचे और फिर वहाँ से उधर-उधर फैल गये। यह भी माना गया है कि गुर्जर[4] भी उत्तर से ही आये थे।

गढ़वाली 'उकार बहुला भाषा' है—यह एक तथ्य है तथा आभीर, गुर्जर, शक, नाग आदि जातियों का गढ़वाल से सीधा सम्बन्ध रहा हैं—यह भी निर्विवाद है। इसलिए इन आधारों से यह भी सिद्ध होता है कि गढ़वाली भाषा की उत्पत्ति शौर-सेनी अपभ्रंश से हुई है।

आरम्भ में, जैसे डॉ० नामवर सिंह ने 'हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग' (पृ० ३०) में लिखा कि तब विभिन्न जनपदों की भाषा में कोई विशेष व्याकरणिक भेद न रहा होगा, क्योंकि वैयाकरणों ने शेषं **शौरसेनीवत्** का प्रयोग किया है। वास्तव में शौरसेनी का क्षेत्र बड़ा विस्तृत था और गढ़वाली भाषा के विभिन्न तत्वों को देखकर

१. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : वही, पृ० ४४।
२. भरत मुनि : हिमवत्सिन्धु-सौवीरान् ये अन्यदेशान् समाश्रिताः।
उकार-बहुलां तेषु नित्यं भाषा प्रयोजयेत्॥
३. डॉ० शिवप्रसाद सिंह : सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य, पृ० ४७।
४. ग्रियर्सन : लिंग्विस्टिक सर्वे आव् इंडिया, भाग ९, खं० २, पृ० ११।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यह सिद्ध हो जाता है कि उसकी उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से हुई होगी। पहले कहा जा चुका है कि डॉ० धीरेन्द्र वर्मा, डॉ० उदयनारायण तिवारी और स्वयं ग्रियर्सन ने भी इस तथ्य को माना है कि गढ़वाली की उत्पत्ति शौरसेनी अपभ्रंश से हुई।

गढ़वाली और राजस्थानी में अधिक साम्य के कारण ग्रियर्सन[1] ने यह माना कि दोनों की उत्पत्ति 'आवन्त्य अपभ्रंश' से हुई। गढ़वाली हिन्दी के बहुत निकट है, यह भी निर्विवाद है। इसीलिए कैलाग[2] ने उसे हिन्दी का ही एक रूप माना है। स्वयं ग्रियर्सन[3] ने लिखा कि 'गंगा के समस्त कांठे में बंगाल और पंजाब के बीच, अपनी अनेक स्थानीय बोलियों सहित केवल एकमात्र प्रचलित भाषा हिन्दी ही है।' गढ़वाली के एक दो विद्वान् श्यामचन्द नेगी और चन्द्रमोहन रतूड़ी इस बात को नहीं मानते। वे गढ़वाली को एक अलग भाषा मानते हैं।

गढ़वाली का प्रारम्भिक रूप

आरम्भ के कुछ लेखों के आधार पर यह प्रतीत होता है कि गढ़वाल में संस्कृत का बहुत प्रचार था, क्योंकि सभी लेखों का आरम्भ संस्कृत से किया गया है। दसवीं शताब्दी से गढ़वाली में लिखित साहित्य उपलब्ध होता है। बदरीनाथ, देवलगढ़, देवप्रयाग, मालधूल आदि स्थानों में गढ़वाली भाषा के पुराने लेख विद्यमान् हैं :

(१) देवप्रयाग के मन्दिर में महाराजा जगतपाल (सन् १३३५) का दानपत्र :

श्री संवत् १४१२, शाके १३७७ चैत्र मासे शुक्लपक्षे चतुर्थी तिथौ रविवासरे जगतीपाल रजवार ले शंकर भारती कृष्ण भट्ट कौं रामचन्द्र का भट सर्व भूमि जाषिनी कीती जा यांटो मट सि लका मट लछमन का भट दिनो सर्व कर अकर सब दान गुदान नोट की नटाली भँवै की औताली रामचन्द्र ले पौनी लिखित पातक ये दुलरवी जैं तु परसोरा दूसरू सहज यामा चलतू सु रज ना जै मास जगतपाल रजवार ले दिनी तै मास करीक ली रजवारा शंकरानन्द को कृष्ण भारती को दीना सारवगम देव पर सौदा सुरजु सदजवान की तुलृह मोर गांगूह सोधी।

(२) देवलगढ़ में महाराज अजयपाल (१४६०-१५१९) का लेख—

'अजैपाल को धरम पाथो भंडारी करौं उक'।

१. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग १, खंड १, पृ० २३५।
२. कैलाग : ए ग्रैमर आव् हिन्दी लैंग्वेज, पृ० ६६।
३. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग १, खंड १, पृ० ४२।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) देवप्रयाग के उसी मन्दिर में दूसरा लेख—महाराजा पृथ्वीशाह (१६६४) का।

श्रीरामो विजयते, श्रीगणेशाय नमः अथास्मिन् श्री शाके १५८६, संवत् १७२१ वैशाष मासे शुक्ल पक्षे प्रतिपदा तिथौ प्रथमदिने शुक्र वारे एंद योगे श्री रघुनाथ ज्यू का देवालय तामा का पात्र चढ़ाया श्रीमहाराजा पृथ्वीपति ज्यू का राज्य समये श्री माधोसिंह भंडारी सुत श्रीगजेसिंह ज्यू की पलि परम् विचित्र श्री मथुरा बौराणी ज्यू ल तथा तत्पुत्र अमरसिंह भंडारी ज्यूल पाट चढ़ाया प्रतिस्टा करायी कुटुम सहित मठपति हरी मित्र पुरोहित जनार्दन श्रीहर्ष पंडित न लेख्यो देवीदास भगवानदास कृष्ण दास पुरी जा मनीय देवा-लय सम्हाचो शुभम्।

(४) मालद्यूल टिहरी गढ़वाल में लक्ष्मीनारायण के मन्दिर की बुनियाद के पत्थर पर सन् १७८५ का लेख—

संवत् १८४२ का भादों १५ गते श्री लक्ष्मीनारायण जी को भट लायो टुटेउ पीढ़ीयों को थयो अब श्री धनीराम डोभाल श्री सिरमौरिया राज धैंक गुरूजनों गुसेयूं मानण कों श्री महाराज जैकृतशाह को एज थामण कों मदत ल्यायो तब अंतराम डोभाल कौं उधेपुर की कमिणायीं दिनी कमिणायीं मा झगड़ राज सिरमौरिया को हुक्म होया भट चिणीक पूरो होयो।

(५) गढ़वाली भाषा में 'मांगल', 'जागर', 'पंवाड़ा', 'कुलाचार' आदि लोक गीत तो बहुत ही पुराने हैं। आगे लोकगीतों के अध्याय में उनकी चर्चा की जायगी।

'ढोलसागर' गढ़वाली भाषा का बहुत ही महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। गढ़वाल के औजी (हरिजन वादक) 'ढोलसागर[1]' के तालों के अनुसार 'ढोल-दमाऊं' बजाते हुए महाभारत के कथा-प्रसंगों को गीतरूप[2] में बिखेरते जाते हैं। ये गीत वीरोचित होते हैं और इनमें अलंकारों की झड़ियाँ रहती हैं। इसी तरह के 'घटथापना' और 'इन्द्र-जाल' आदि कुछ गोरखपंथी भी गढ़वाली में उपलब्ध होते हैं।

गढ़वाली के 'गारुड़ी' (तंत्र-मंत्र वाले) आधि-व्याधियों को दूर करने के लिए मंत्रों[3] का प्रयोग करते हैं, उनमें गोरखनाथ, बालानाथ, मैमन्दावीर, हनुमन्तवीर, मच्छीन्द्रनाथ, चौरंगीनाथ आदि की वाणियाँ भी प्राप्त होती हैं। गढ़वाली भाषा के

१. धुंयाल-पृष्ठभूमि (गढ़वाली साहित्य मंडल, दिल्ली)।
२. हां पांच दीर्घपाल-तुम जैल्या वणू मा (तुम पाँचों दीर्घपाल-वन-वनो,-जाओगे)।
३. बहुगुणा : विराट हृदय, पृ० २२५-२३६।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तंत्र-मंत्रों की भाषा बड़ी ओजस्विनी और तड़क-भड़क-वाली होती हैं। जैसे :

(क) लुवा[१] कि कोठड़ी बजुर कि ताली
देव घटा सणि कर दे सुणताली।

(ख) डैणी जोगणी को सैलवार, नाटक चेटक को फेरवार,
मण भर खंतड़ी मण भर गुदड़ी, लुवा की टोपी बजुर का
कंथा, हरप खोलु, पूख खोलु, लूणी डोमणी की हंकार खोलु,
राड़ी बामणी की हंकार खोलु, खसणी की जैकार खोलु।

गढ़वाली भाषा के पंवाड़ों और हिन्दी के वीरगाथा काल के गीतों में पर्याप्त साम्य हैं।

गढ़वाली के अनेक रूप

ग्रियर्सन[२] ने गढ़वाली के विषय में लिखा है कि यह 'स्थान-स्थान पर बदलती गयी है; यहाँ तक कि प्रत्येक परगने की बोली का अपना भिन्न रूप है तथा प्रत्येक का अपना स्थानीय नाम भी है।' फिर भी गढ़वाली का एक आदर्श रूप (स्टेण्डर्ड) है।

(अ) ग्रियर्सन[3] ने गढ़वाली के आठ उपभेद किये हैं—१. श्रीनगरी, २. नागपुरिया, ३. दसौल्या, ४. बथाणी, ५. राठी, ६. मांझ-कुम्मैया, ७. सलाणी, ८. टिहरी; और उनमें से सात के उदाहरण भी दिये हैं।

हिन्दी : किसी आदमी के दो लड़के थे। उनमें से छोटे लड़के ने अपने पिताजी से कहा—'पिताजी, जायदाद में से जो मेरा हिस्सा है, मुझे दे दो।' तब उन्होंने अपनी जायदाद बाँट दी।

१. श्रीनगरी : कँ आदमी का द्वी न्योन्याल छया, ऊंमान छोटा नौन्याल न अपणा बाबाजी मा बोले : हे बाबा जी, बिरसत मान मेरो जो हिस्सा छ मैं सणी दे देवा। तब ऊन अपणी बिरसत बाँट देये।

१. बहुगुणा : वही, पृ० २२९-२३०।
२. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग १, खंड १, पृ० ३३९।
३. ग्रियर्सन : लिंग्विस्टिक सर्वे आव् इंडिया, भाग ९, खंड ४।
राजस्थानी (जयपुरी का) रूप—"एक जणा कै दो बेटा छा। वां-मैं-सुं छोटक्यो आपका बापुने खई-दादा जी, धन—मैंसुं जो बाओ म्हारे वाटे आवै सो मैं नै द्यो"—ग्रियर्सन; लिंग्विस्टिक सर्वे आव् इंडिया, भाग ९, खंड २, पृ० १९४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२. **नागपुरिया :** कै वैख का दुई लौड़ा छया। तौं मधे लुड़ा लौड़ान बुवा ले बोले—हे बुबा, जो मेरो बाँटो माल को सौ मैं दे। तब बुवान वै कणी बांटो दे दिने।

३. **दसौल्यां :** कई आदमी का दुई लड़ीक छया। तनू मा काणिसा न वोलो—हे बुवा, माल माँगन की जो मेरो बाँटो होव सो मैं देवा। वेका बावू न बाओ दिन्यो।

४: **बथाणी :** कै आदमी का द्विव छिचोड़ी छिया। उनू मधे नाना छिचोड़ी न अपणा बुबा जी मू बोलो कि हे बुबा जी, माल असबाब में मेरी बांट मैं सणी न्यारो दे दिया। तब वैल असबाव बाँटो दियो।

५. **राठी :** कै मलख का द्वी लौड़ छाया। ऊंमा नान लौड़न बावू गणी बोल कि यार बावू जो कुछ चीज बस्त मांयन बांटो मी गणे दे। तव वैल उं गणी जो कुछ चीज छई बांट देंयं।

६. **सलाणी :** कै झणा का दुई नौना छया। ऊं मा काणसान अपणा बुबा मा बोल्यो, हे बुवा जी, माल ताल मा जु मेरो बांटो होव सो मीं दी देवा। तब वैन ऊं का बीच अपणों माल ताल बांटी दिने।

७. **टिहरियाली :** एक झणा का द्वी नौन्याल थया। ऊंमान वणसान अपणा बुबा मा बोले कि हे बावाजी, जु बिरसत को बांटो मेरो छ मैं दी द्या। तब वैन बिरसत ऊं सणी बांटी दिने।

किन्तु उच्चारण की दृष्टि से ये उदाहरण ठीक ढंग से नहीं लिखे गये हैं। उच्चारण[1] की शुद्धि, लहजे और शैली की दृष्टि से चक्रधर बहुगुणा के उदाहरण दर्शनीय हैं—

१. **बथाणी**—कुण कत्ति हुन्यार ह्वैगे ! (कनी गजब की बात ह्वैगे !) (कैसी गजब की बात हुई !)

२. **सलाणी**—मिलव्वाल दादुरे। ब्वारि पर कपन्यार चढ़िन्याया ढमके वजाति डौंरो। (मन बोले भाई। ब्वारि कम्पण लगीगे। डौंरो जोर से बजे।) (मैंने कहा—भाई, बहू काँपने लग गयी, 'डौरुँ' जोर से बजाओ।)

३. **जौनसारी**—का कि जांरे महता। उंडि और रे। (होजी कख जाणा छा। इथैं आवा।) (जनाब, आप कहाँ जा रहे हैं ? इधर आइये।)

४. **खांल्टी**—मेरो एतो हमदि तौको लेनि हिकार। वां को बणायो हुखा। द्वी कटोरा मैन हपोड्या द्वी त्यून हपोड्यया और द्वी घरवालिन। (मेरो समधि ऐं छो। तौंकुतैं सिकार लिने। वाँ को सुरवा बणाये। द्वी कटोरा मैन सपोड़ने द्वी तौन और

१. गढ़वाली साहित्य की भूमिका, पृ० ६४ : संपादक : डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

द्वी घरवालिन)। (मेरे समधी आये थे। उनके लिए शिकार ली। उसका शोरवा बनाया। दो कटोरे मैंने पिये, दो उन्होंने और दो घरवाली ने।)

५. नं० १ बजारी : श्रीनगर की—मां : नौनों का बावा जी पाव भर वासमती लाई छया। आज वी पकाये। द्वी फूल तौने खाईने द्वी मैंन थोड़ा नौन्यालून वाकी तख ही सारी डेगरी बचीं छ। (बच्चे के पिता जी पाव भर वासमती लाये थे। आज वही पकाये। दो सीत (चावल) उन्होंने खाये, दो मैंने, थोड़ा बच्चों ने और बाकी सब डेगची में ही वचे हैं।)

नं० २ बजारी : टिहरी की—अलो गैल्या मैं चल्या जै रही थौ, निन्याल का घुटणा उतार पर खचपचै गैथा, फिर चलन मां मजा ऐ रही थौ। (दोस्त, मैं जा रहा था। बच्चे के घुटने उतार पर हिल गये बस, फिर चलने में मजा आ रहा था।)

६. रागसी—खकान खकड़ी का झाड़ वाला खाफल का तल खाकड़ मारे (ककान कखड़ी का झाड़वाला काफल तल काखड़ मारे)। (चाचा ने खीरे के झाड़वाले काफल (पेड़) के नीचे काखड़ (मृग) मारा।)

गढ़वाली[1] भाषा की मुख्यत: तीन बोलियाँ हैं, जिनका नमूना श्री टीकाराम शर्मा 'कुञ्ज' के अनुसार निम्न प्रकार है—

हिन्दी—एक समय में दो विख्यात शूरवीर थे। एक पूर्व दिशा में, दूसरा पश्चिम दिशा के कोने में रहता था। एक का नाम सुनकर दूसरा ज़लभुन जाता था। एकके घर से दूसरे के घर जाने में बारह वर्ष का मार्ग चलना पड़ता था।

१. टिहरी-श्रीनगरी—एक वगतमा दुइ नामी जोधा छा। एक पूरब का कोणामा, अर दोसरू पच्छिम का कोणामा रन्दो छो। एकको नाऊं सुणकि, दोसरा घर जनि आग लग जान्दी छई। एकका डेरासे दोसरा का डेरा जाणामा बारह बरसको वाटो हिटणो पड़दो छो।

२. खांल्टी-जौनसारी—यक्क समय मु दू वेग्या बांक्का वीर हां। यक्क पूरब छोड़ु हैक्कु पच्छिम छोड्ड रौं। यक्का कु नौं सुणी, हैक्कु जली फुक्की जाउँ। यक्काका दार सि हैक्काका दार जाणुम यक्क जुग कु वाट्ट हिटण पड़ो।

३. चौंदकोट-सलाणी—एक बँनमा दुइ भारी नामी भैड़ छया। एक पूरबमा, हैक पच्छिममा राहन्दो छयो। एकको नाऊं सुणी, हैक फुकेइ जान्द छयो। एकका घार ना हैक्का घार जाणमा बारा साल को बाट हिटण पड़दु छयो।

१. राहुल सांकृत्यायन : हिमालय परिचय (१), पृ० २८८।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'गढ़वाली के सारे रूप लगभग इन्हीं के अन्तर्गत आ जाते हैं, केवल कहीं-कहीं कुछ शब्दों का साधारण हेर-फेर और उच्चारण में अन्तर पाया जाता है। सीमावर्ती प्रदेशों की बोलियाँ मिश्रित पायी जाती हैं। गढ़वाल की मुख्य भाषा 'गढ़वाली' है, जो श्रीनगर-टिहरी के आस-पास बोली जाती है। इसी में गढ़वाली भाषा का साहित्य भी मिलता है।'

वास्तव में गढ़वाली के मुख्य चार अवान्तर भेद हैं : १. श्रीनगरी, २. सलाणी, ३. टिहरियाली, ४. जौनसारी-खांल्टी।

ग्रियर्सन[1] ने जौनसारी को पश्चिमी पहाड़ी के अन्तर्गत रखा है, किन्तु कुछ लोग यह ठीक नहीं मानते। उनका कहना है कि जौनसारी और गढ़वाली में पर्याप्त साम्य है, भले ही उच्चारण की दृष्टि से कुछ अन्तर आ गया हो—

गढ़वाली[2]	जौनसारी
या बड़ी खुसी की बात छ कि गढ़वाली अर जौणसारी एक ई कुटुम का छन। इनु किलै नि होण? जौणसार बाबर पुराणा जमाना सी केदाखंड कू हिस्सा छ, जै तैं अजक्याल़ू गढ़वाल बोदाना जौणसारियों का रीति-रिवाज, खाणू-पेणू, देवी-देवता बी तन्नी छन जना गढ़वाल्यों का छन। गढ़वाल्यों अर जौणसारियों कू रोटी-बेटी, खाण-पेण कू सनबंद पैलि सि लग्यूं छ। यान गढ़वाली अर जौणसारी एक्की छन अर सदैं एक्की रला।	एजि बड़ी खुसी की बात अ कि गडवाड़िये अरे जौणसारिये एक ई कुटुमो के अ। ऐसा काई न ओ? जौणसार बाबर पुराणें जमाना से ई केदाखंड का हिस्सा अ, जैथु कि अचकाला गडवाड़ बोलों। जौणसारिये का रीति, रिवाज, खाणो-पीणो, देव-धाम बी तस्ने ई जस्ने गडवाड़िये के अ। गडवाड़िये अर जौणसारिये का साई-सगाई खाणा-पीणा पोइले से लागिये। ये जे गडवाड़ी अर जौणसारि एकू वा अरे सढाईं एकवे रंदे।

गढ़वाली के अन्य रूपों का एकमात्र आधार उच्चारण-भेद है। उच्चारण की दृष्टि से एक ही शब्द कई रूप धारण कर लेता है। यही प्रवृत्ति प्राचीन काल में भी थी। जैसे :

१. मेरो (म्यरो, म्यारो) घर (घौर, घार, घर) यख छ।

(मेरा घर यहाँ है।)

१. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग १, खंड १, पृ० ३३७।
२. श्यामचन्द नेगी : गढ़वाली, पृ० २।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

२. मैं (मीं, मन्नि) बोन्नू (ब्वन्नू, बोलनू, बोलणू) छौं। (मैं कह रहा हूँ।)

३. हम क्या छन (छां, छंवा, छंया) कन्ना (करणा, कअरणा)[1] ? (हम क्या कर रहे हैं ?)

४. वैन (वेल, वेन) भैंसी सणी, घास दिने (दीने, देये, दिनि, दे)। (उसने भैंस को घास दी।)

५. सु (सो, उ, वो) कख गै (गए, ग्याय, गेए) ? (वह कहाँ गया ?)

६. तुम कख रैन्दा (रंदा, रांदा, रौंदा, रहन्दा) आज कल ? (आजकल तुम कहाँ रहते हो ?)

७. मैं (मीं, मजि) सणी एक (यक, यअक, एक) किताब दी (दे, दे) या (देवा, द्यवा)। (मुझे एक किताब दे दो।)

८. तख न जया (जा, जान, जाया, जैन, जायन)। (वहाँ मत जाना।)

९. तै (वे, वै) कु (क्वे, को, कू) नौ क्या छ (च) ? (उसका नाम क्या है ?)

१०. हम जजमान छन (छंवां, छां, छौं)। (हम राजपूत हैं।)

११. ब्वे (बोई, ब्वई, बई, बँ) तख ना (न) जै (जई, जैई)। (मां, वहाँ मत जाना।)

१२. स्या (स्यअ) औणी (औणि) ह्वली (ह्वाली, ह्वैली, होली)। (वह आ रही होगी।)

१३. सरा (सैरा, सेरा, सैडा) दिन गप्प रे (रई, राई, रेई) मान्नो (मारणो, मारनू)। (सारे दिन गप्प मारता रहा।)

१४. तै (वै) सणी रोटी (र्‌वटी, रोटि, र्‌वाटि) (या आन्न) देवा (द्वा)। (उसको रोटी देना।)

१५. ब्वारि (ब्वारी, बुआरी, बुअअरि) सणी डर (डैर, डौर, डउर) लगणी रहे (रे, राये)। (बहू को डर लगता रहा।)

१. देवदत्त के स्थान पर देविक, देविय, देविल कहा जाता है। (अष्टाध्यायी, डा० मंगलदेव शास्त्री : भाषा विज्ञान, पृ० १२३, ५/३/७८/८४।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़वाली भाषा के स्वर

१. गढ़वाली में अ, अऽ, अऽऽ, आ, आऽ, आऽऽ, इ, इऽ, ई, उ, उऽ, ऊ, ए, ए, ऐ, ऐ, ओ, ओ, औ, औ—ये स्वर हैं। स्वरों[1] के ह्रस्व, अतिह्रस्व, ह्रस्व-दीर्घ, दीर्घ; प्लुत; दीर्घ-प्लुत,—ये उच्चारण गढ़वाली में भौगोलिक कारणों से बन गये हैं, क्योंकि पहाड़ी स्थान होने के कारण दूर-दूर से लोग एक दूसरे को बुलाते हैं और बातचीत करते हैं। अ का उच्चारण 'अऽ' और 'ओ' या अ और ऐ भी हो जाता है। जैसे, घर, घोर; डर, डैर। डॉ० धीरेन्द्र वर्मा[2] ने गढ़वाली का उच्चारण पूर्वी भाषाओं, भीली; और मराठी के समान अर्द्ध-संवृत ओ या संवृत ओ माना है। गढ़वाली में ए का उच्चारण भी तेल, त्यल, तेऽल—इस प्रकार तीन तरह का हो जाता है। ऐसा[3] माना जाता है कि इस प्रकार का उच्चारण सामवेदीय शाखाओं में भी वर्तमान था।

अनुनासिक स्वर

अँ—अँध्यारो, अँगार, हँसणू, हँत्या (हत्या), जँपणू (जपना)

आँ—आँसु, छाँया, साँसो (साहस), साँस, फाँस

इं—सिंकनू, खिंचणू, सिंवाल (शैवाल)

ईं—सींक, खींच, चींणा

उँ—मुँगरो (मुद्गर), घुंडो, ढुंगो (पत्थर)

ऊँ—कूंजो (कुञ्जक), न्यूं (नीवी), स्यूं (सीमा)

एं—फेंस (फांक), मेंडा (मेष), केंच

ऐं—दैंत (दैत्य), मैंत (महन्त), पैंसा (पैसा)

ओं—खरोंच, सोंठ, ओंठ

औं—नौंण (मक्खन), कौंल (कमल), पौंणो (पाहुना)

संस्कृत शब्दों में 'श' या 'स' के साथ जहाँ अनुस्वार होता है, गढ़वाली उच्चारण में उनमें 'ग्' और जुड़ जाता है : जैसे बंग्श (वंश), अंग्श (अंश), संग्सार (संसार)।

१. अ (ह्रस्व) डर, अऽ (अतिह्रस्व) डऽर, अऽऽ (ह्रस्व-दीर्घ), डऽऽर।
२. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० ४५।
३. डॉ० व्यास : संस्कृत भाषा का शास्त्रीय अध्ययन, पृ० २१०।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'गुम्'[१] रूप में इन वर्णों के साथ अनुस्वार का यह उच्चारण वैदिक काल में भी वर्तमान था।

स्वरागम

संयुक्त-ध्वनियों के उच्चारण की कठिनाई को दूर करने के लिए स्वरागम होता है। गढ़वाली में स्वरागम अ, इ, उ के रूप में होता है।

(क) आदि स्वरागम (अ) असनान (स्नान), अस्थान (स्थान), अस्तुति (स्तुति); (इ) इस्कूल (स्कूल), इस्टेशन (स्टेशन), इस्थिर (स्थिर)।

(ख) मध्य स्वरागम (अ) जनम (जन्म), धरम (धर्म), करम (कर्म); (इ) सुपिनो (स्वप्न), सुकिलो (शुक्ल); (उ) सुमरण (स्मरण), सुबरण (स्वर्ण), दुवार (द्वार)।

स्वराघात

स्वराघात[२] दो प्रकार का होता है—संगीतात्मक और बलात्मक। गढ़वाली में दोनों प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं, पर विशेष रूप से बलात्मक स्वराघात पाया जाता है। एक ही प्रकार से लिखे जाने-वाले शब्दों के निश्चित स्वर पर बल पड़ने से भिन्न अर्थ निकलता है। जैसे, कालो (काला), काऽलो (मूर्ख); खाल (खाल), खाऽल (तालाब); बड़ी (बड़ी), बऽड़ी (बाटिका या बाड़ियाँ); खड़ी (खड़ी), खऽड़ी (खड़िया)।

स्वर-लोप

गढ़वाली में उच्चारण-सौकर्य के लिए कुछ स्वरों का लोप हो जाता है : जैसे (क) आदि स्वर-लोप—हंकार (अहंकार), नाज (अनाज), कट्ठा (एकत्र), हरगण (अहर्गण), सीक (इषीका)।

(ख) मध्य स्वर-लोप—कल्सी (कलश), कड्वा (कटुक)।

(ग) अन्त्य स्वर-लोप—संकरांद् (संक्रान्ति), वंणांग (वनानि), सूर (सुरा), घीण् (घृणा), आस् (आशा)।

स्वर-विपर्यय

कभी-कभी उच्चारण की सुविधा के लिए स्वरों के स्थान बदल जाते हैं।[३] जैसे—उंगली (अंगुली), बूंद (बिन्दु), स्यूंद (सीमन्त)।

१. डॉ० व्यास : वही, पृ० ११५।
२. डॉ० उदयनारायण तिवारी : हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० ३२७।
३. डॉ० मंगलदेव शास्त्री : भाषा विज्ञान, पृ० १२८, टिप्पणी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

संयुक्त-स्वर

आधुनिक आर्यभाषाओं की तरह गढ़वाली में भी दो स्वरों (कहीं तीन) का संयोग पाया जाता है, परन्तु गढ़वाली में उच्चारणभेद से उनका भिन्न अर्थ हो जाता है। इसलिए उच्चारण में सावधानी की आवश्यकता पड़ती है। जैसे :—देउ (देव), द्यौ (आकाश); बऊ (तैरना), बौ (भाभी); भाऊ (विचार), भौ (दर); संऊ (सवां), सौं (कसम); कुई (कुवां), क्वी (कोई); लैई (सरसों), लैं (लिए) आदि।

गढ़वाली भाषा के व्यंजन

गढ़वाली के व्यंजन निम्नलिखित हैं—

क, ख, ग, घ, ङ

च, छ, ज, झ, ञ

ट, ठ, ड, ढ, ण, ड़, ढ़, ण्ह:

त, थ, द, ध, न, (न्ह)

प, फ, ब, भ, म, (म्ह)

य, र, र्ह, ल, ल्, ल्ह,

श, स, ह

क्, ख्, ग्, घ्, कंठ्य-स्पर्श-व्यंजन हैं। गढ़वाली में इनका उच्चारण स्थान हिन्दी की अपेक्षा कुछ पीछे का-सा प्रतीत होता है।

च्, छ्, ज, झ्–गढ़वाली में हिन्दी की अपेक्षा अधिक संघर्षी हैं।

ट्, ठ्, झ्, ढ्–मूर्धन्य स्पर्श व्यंजन हैं।

त, थ, द, ध—दन्त्य स्पर्श व्यंजन हैं।

प, फ, ब, भ—ओष्ठ्य स्पर्श व्यंजन हैं। गढ़वाली में उनके उच्चारण के लिए हिन्दी की अपेक्षा ओंठ कुछ आगे बढ़ाने पड़ते हैं।

ङ; ज, ण्, न्, म् अनुनासिक व्यंजन हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़वाली में 'न्,' 'ण्,' हो जाता है। कहीं-कहीं 'न' का 'न्ह' महाप्राण भी मिलता है। ऐसे ही 'म' का 'म्ह' महाप्राण भी कहीं मिलता है।[१]

गढ़वाली में ल के 'ल़', 'ठ' 'ल्ह' ये रूप भी मिलते हैं।

'छ' का पाली और अपभ्रंश में पर्याप्त व्यवहार हुआ है। आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं में मराठी, राजस्थानी, गुजराती, लहन्दा, सिंधी और उड़िया में भी यह विद्यमान है। छ[२] और ठ्ह वैदिक संस्कृत में भी मिलते हैं। डा० धीरेन्द्र वर्मा[३] ने यह माना है कि यह उस बोली में विद्यमान था, जिससे ऋग्वेद की साहित्यिक भाषा बनी।' ल्ह' ल का महाप्राण है।

'र्' लुंठित, घोष; 'बर्स्व' के स्थान में 'वर्त्स' तथा 'बर्त्स्य' वर्णों के लिए 'वर्त्स्य' का प्रयोग आजकल चल रहा है।

'ड़' मूर्धन्य, घोष, उत्क्षिप्त अल्पप्राण है, ढ़ महाप्राण।[४]

गढ़वाली में 'श' और 'स' अघोष, ऊष्म और संघर्षी हैं। 'ष' का रूपान्तर 'श' या 'स' में ही हो जाता है। कहीं-कहीं 'ष' का 'ख' भी हो जाता है। यह माना गया है कि 'ष'[५] का 'ख' उच्चारण संस्कृत काल में हो गया था। वैसे गढ़वाली में 'श' के स्थान पर भी 'स' का ही प्रयोग होता है।

य् अन्तःस्थ या अर्धस्वर कहलाता है, व द्वयोष्ठ्य अर्धस्वर है। गढ़वाली में 'व' के स्थान पर प्रायः 'व' का ही प्रयोग होता है। य के 'ज' और 'य' दोनों प्रयोग मिलते हैं। 'य' कभी 'व' में भी परिणत हो जाता है। जैसे न्याय=न्याव या न्यौ। प्राकृत[६] में भी यह प्रवृत्ति विद्यमान थी। गढ़वाली भाषा में शब्द के आदि का श् या स कहीं-कहीं 'छ' में बदल जाता है।

१. गढ़वाल में बहुत पहले क, का, कि, की कु, कू, के, कै, को, कौ, कं, कः के बदले बिजगनी क, कन्दन का, वैमति कि, दैणे की, उतलि क, वड्डुरे कू, एकलग के, द्वीलग कै, लगन्या को, दुलगन्या कौ, सिर विन्दु कं, दुवास विन्दु कः कहकर ही बालक रटा करते थे तथा 'ओं नमः सिधंग' (ओं नमः सिद्धम्) से विद्यारम्भ होता था।
२. डॉ० व्यास : संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, पृ० १०४।
३. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० ९४।
४. डॉ० उदयनारायण तिवारी : हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० ३२५।
५. डॉ० व्यास : संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, पृ० ११४।
६. पिशेल : प्राकृत भाषाओं का व्याकरण, पृ० २५४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'छ'[1] और 'श' का घनिष्ठ सम्बन्ध है, यह पाणिनि के 'शश्छोटि' सूत्र से स्पष्ट हो जाता है। ऐसे ही छ का 'स' भी हो जाता है। जैसे हिन्दी छांछ का गढ़वाली 'छांस'। शनैश्चर का 'छंछर', स्पर्श का 'छौं' आदि अनेक शब्द मिलते हैं।

गढ़वाली में लहर का 'लःर' (ल्हैर), ज्हर का 'जहैर' हो जाता हैं। वर्तनी में 'ह' तो नहीं लिखा जाता, किन्तु उच्चारण उसका अवश्य होता है। डा० चाटुर्ज्या[2] ने ऐसी ध्वनि को पुनद्रुत या आश्वासित कहा है।

१. व्यास : संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन, पृ० ११५।
२. डॉ० चाटुर्ज्या : राजस्थानी भाषा, पृ० २४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३

गढ़वाली भाषा का व्याकरण

गढ़वाली भाषा के व्याकरण में उन्हीं प्रवृत्तियों ने काम किया, जो अन्य नव्य भारतीय आर्य-भाषाओं में चलीं। संस्कृत के शब्द-रूपों की जटिल-पद्धति से गढ़वाली भी मुक्त है। लिंग, वचन एवं कारकरूपों को व्यक्त करने के लिए उसने अपभ्रंश काल से चली नयी प्रणाली को ही अपनाया। यद्यपि गढ़वाली में संस्कृत की कई प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं, फिर भी उसमें सरलीकरण की विशेष प्रवृत्ति होने के कारण उसके व्याकरण में कई नयी प्रवृत्तियाँ आयीं।

संज्ञा

१. गढ़वाली में कुछ संज्ञाओं के पदान्त तीन रूपों में मिलते हैं (१) ह्रस्व (२) दीर्घ और (३) दीर्घतर (प्लुत)

ह्रस्व	दीर्घ	दीर्घतर[1] (प्लुत)
ब्वारि (बहू)	ब्वारी	ब्वारीऽ
दीदि (बड़ी बहन)	दीदी	दीदीऽ
मनखि (मनुष्य)	मनखी	मनखीऽ

२. गढ़वाली में हिन्दी की तरह संज्ञा के तीन ही प्रकार होते हैं—

(१) व्यक्तिवाचक—तोताराम, भट्टवाड़ी, माभारत (महाभारत)।

(२) जातिवाचक—गोरु (गाय), मनखी (मनुष्य), नौनु (लड़का)।

(३) भाववाचक—मिठेस (मिठास), खटेस (खटास), ज्वानि (यौवन)।

१. इसका मुख्य कारण यह है कि पहाड़ों में लोग दूर-दूर से नदी-नालों के आर-पार से बुलाते हैं, बातें करते हैं। इसीलिए प्लुत का प्रयोग होता है। यही प्रवृत्ति अवधी भाषा में भी मिलती है। जैसे--

अवधी : ह्रस्व–घोड़; दीर्घ–घोड़वा; दीर्घतर–घोड़ाना।

डॉ० तिवारी : हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० २७७।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३. विशेषण और क्रियाओं से भी भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं—

(क) विशेषण से,	ज्वान (जवान)	–	ज्वानि (जवानी)
	अच्छो (अच्छा)	–	अच्छु (अच्छाई)
	बुरो (बुरा)	–	बुरु (बुराई)
(ख) क्रिया से,	लिखणु (लिखना)	–	लिखै (लिखाई)
	पढ़णु (पढ़ना)	–	पढ़ै (पढ़ाई)
	लड़नु (लड़ना)	–	लड़ै (लड़ाई)

लिंग

गढ़वाली में हिन्दी की तरह पुलिंग और स्त्रीलिंग, दो ही लिंग होते हैं, किन्तु कर्मकारक के परसर्ग—सणी, खुणी, तैं, कू, क आदि के प्रयोग में प्रकृति के अनुसार पुलिंग तथा नपुंसक लिंग का थोड़ा-सा भेद अवश्य मिलता है। जैसे :

(क) नौना सणी बुला (बच्चे को बुलाओ)।
(ख) तै सणी बुला (उसको बुलाओ)।
(ग) गोरू सणी मेलि द्वा (गाय को खोल दो)।

हिन्दी में भी साधारणतया प्राणिवाचक शब्दों में ही कर्मकारक में 'को' लगता है।

(क) घास काटा (घास काटो)।
(ख) रोटि खा (रोटी खाओ)।
(ग) पोथि बाँचा (पुस्तक पढ़ो)।

अप्राणिवाचक शब्दों के साथ कर्मकारक के परसर्गों (सणी, खुणी, तैं, कू, क आदि) का प्रयोग नहीं होता है। हिन्दी में भी 'रोटी को खाओ' ऐसा न कहकर 'रोटी खाओ' ऐसा ही व्यवहार होता है।

संस्कृत में तीन लिंगों का प्रचलन प्राकृतिक पदार्थों के भेद से हुआ। जड़ और चेतन में पुलिंग और स्त्रीलिंग का भेद रहता है। जड़ नपुंसक लिंग होते हैं, किन्तु गढ़वाली में जड़ और चेतन, दोनों पदार्थ पुलिंग और स्त्रीलिंग में आ जाते हैं। आधुनिक भारतीय आर्य -भाषाओं में नपुंसक की परम्परा केवल मराठी और गुजराती में ही शेष है।

गढ़वाली में लिंग-निर्धारण का मूल आधार (क) प्राकृतिक लिंग-भेद ही है, परन्तु कभी-कभी (ख) वस्तु या व्यक्ति के गुरुत्व या लघुत्व पर भी लिंग निर्धारित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

होता है। साथ ही कभी-कभी (ग) आदर प्रदर्शन करने के लिए स्त्रीलिंग पर पुलिंग का आरोप भी होता है। जैसे :

(क) प्राकृतिक लिंग-भेद के अनुसार :

पुलिंग	स्त्रीलिंग
बल्द (बैल)	गौड़ी (गाय)
बागी (भैंसा)	भैंसी (भैंस)
नौनू (लड़का)	नौनी (लड़की)
बोगट्या (बकरा)	बाखरी (बकरी)

(ख) वस्तु-विशेष के आकार के गुरुत्व या लघुत्व के अनुसार :

पुलिंग	स्त्रीलिंग
(१) बाखरो (बड़ी बकरी)	बाखरी (बकरी)
भैंसो (बड़ी भैंस)	भैंसी (भैंस)
गौड़ो (बड़ी गाय)	गौड़ी (गाय)
(२) आँखो (बड़ी आँख)	आँखी (आँख)
कूड़ो (बड़ा मकान)	कूड़ी (छोटा मकान)

(ग) आदर प्रदर्शन करने पर :

पुलिंग	स्त्रीलिंग
घरवाला (स्त्री)	घरवाली (स्त्री)
जनाना (स्त्री)	जनानी (स्त्री)

हिन्दी में पुलिंग समझे जाने-वाले कुछ उभय-लिंगी शब्दों के भी गढ़वाली में स्त्रीलिंग रूप चले हैं। जैसे :

अऽदमि (आदमी) से आदम्यण या आदमीण
जन से झणी
देवता से देवती (पुरानी गढ़वाली)

गढ़वाली में कुछ शब्द ऐसे भी हैं, जिनके दोनों लिंगों में एक ही रूप रहते हैं। जैसे :

भुर्त्या (भृत्य) = मजदूर : किसाण (किसान)

गढ़वाली में पुलिंग और स्त्रीलिंग की कुछ प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१. निर्जीव वस्तुओं का लिंग-निर्णय प्रायः उनके पुरुषोचित या स्त्रियोचित गुण, आकार के लघुत्व तथा गुरुत्व और जन-साधारण की परम्परागत धारणा पर निर्भर रहता है। जैसे :

स्त्रीलिंग	पुंलिंग
जोन (चन्द्रमा)	सूर्ज (सूर्य)
लाखड़ी (पतली या छोटी लकड़ी)	लाखड़ो (बड़ी लकड़ी)
पुंगड़ि (खेत छोटा, सुन्दर)	पुंगड़ो (बड़ा खेत)

२. प्राणिवाचक शब्दों के प्राकृतिक लिंग के अनुसार :

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
भै (भाई)	वैण (बहिन)
बल्द (बैल)	गौड़ी (गाय)
नौनू (लड़का)	नौनी (लड़की)
बाग (बाघ)	बञ्यण (बाघिन)

३. प्राणिवाचक शब्दों के आकार के अनुसार :

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
म्वारू (शहद की मक्खी)	म्वारी (शहद की छोटी मक्खी)
बोगठ्या (बकरा) बाखरो (बड़ी बकरी)	बाखरी (छोटी बकरी)
बागी (झोटा) भैंसो (बड़ी भैंस)	भैंसी (छोटी भैंस)
थोरू (बडी कटड़ी)	थोरी (छोटी कटड़ी)

४. प्रायः सभी उकारान्त, ऊकारान्त और ओकारान्त शब्द गढ़वाली में पुंलिंग होते हैं :

(१) गारू (कंकड़), भारू (बोझ) दारू (शराब)

(२) रैठू (रीठा), रैलू (नाला), जुतू (जूता)

(३) पुंगड़ो (खेत), टोखणो (लोटा), जान्द्रो (चक्की)

५. तकारान्त[१] शब्द प्रायः सभी स्त्रीलिंग होते हैं :

मत (मति), बात, पंगत (पंक्ति), लात, जात (जाति) आदि

१. अपवाद—वर्त (व्रत), सूत, मूत (मूत्र) आदि को छोड़कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६. इकारान्त और ईकारान्त[१] शब्द प्राय: स्त्रीलिंग ही होते हैं :

(क) तिथरि (तीतर), घैंदूड़ि (गौरैया), कुखड़ि (मुर्गी)

(ख) घूगती (फाक्ता), काखड़ी (खीरा), गोदड़ी (तोरी)

७. आकारान्त शब्द प्राय: पुलिंग ही होते हैं :

कवा (कौवा), मकड़ा, बिराला (बिल्लियाँ)

८. प्राणिवाचक शब्दों में कुछ केवल पुलिंग ही होते हैं :

जुवाँ (जूं), घूघू (घूक-उल्लू), चकोर, रिक (रीछ)

९. कुछ प्राणिवाचक शब्द केवल स्त्रीलिंग ही होते हैं :

हिलांस (एक पक्षी–चातक), बिच्छी (बिच्छू) आदि

१०. पेड़ों और फलों के नाम सब पुलिंग ही होते हैं :

आम, आरू (आड़ू), चूला (खुबानी), बेड़ू (अंजीर) आदि

११. संस्कृत के आकारान्त शब्द सब स्त्रीलिंग ही होते हैं :

दया, माया, सभा। (सभी तत्सम रूप स्त्रीलिंग होते हैं।)

१२. संस्कृत के पुलिंग इकारान्त जो तत्सम रूप में गढ़वाली में विद्यमान हैं—सब पुलिंग होते हैं :

कवि, मुनि, ऋषि आदि

१३. संस्कृत में नपुंसक लिंग के अन्तर्गत आने-वाले ऐसे शब्द तद्भव रूप में गढ़वाली में पुलिंग होते हैं :

ह्यूं (हिम), घाम (धूप-घर्म), नौं (नाम) आदि

१४. भाषाओं के नाम सब स्त्रीलिंग ही होते हैं :

संस्कृत, उर्दू, पाली, अंग्रेजी आदि

१५. पुलिंग सर्वनाम एकवचन उ या वो (वह), सु या स्यो (वह), कु या को (कौन), यु या यो (यह), जु या जो (जो) क्रमश: स्त्रीलिंग में वा, स्या, क्वा, या और ज्वा बन जाते हैं। अनुनासिक के कारण भी लिंग-भेद हो जाता है। जैसे :

पुलिंग	स्त्रीलिंग
जैन (जिसने)	जैंन
कैन (किसने)	कैंन
तैन (उसने)	तैंन

१. अपवाद—पाणी, मोती आदि पुलिंग ही होते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१६. कुछ संस्कृत के पुलिंग शब्द तद्भव रूप में गढ़वाली में स्त्रीलिंग हो गये। जैसेः अग्नि (सं० पुलिंग), आग (स्त्रीलिंग)

गढ़वाली में मुख्यतः निम्नलिखित स्त्री-प्रत्ययों का व्यवहार होता है—

१. आण—द्यूराण (देवरानी), ज्यठाण (जेठानी), भौज्याण (भाभी), दोस्त्याण
२. ई—भुली (छोटी बहन), नौनी (लड़की), दीदी (बड़ी बहन)
३. ईण—जोगिण (जोगन), नातीण (नातिन), बादीण (वादिका)
४. उड़ी—जिकुड़ी (हृदय), मुखड़ी (मुख), दाथुड़ी (हँसिया)
५. एली—रौतेली (सुन्दर), रौतेली (रानी), घौंपेली (चुटिया)
६. की—सेटकी (छड़ी), पोटकी (पेट), गोंदकी (पेड़ी)
७. टी—ब्यांटी (लड़की), फिसलोटी (चिकना), धणोटी (धनिक)
८. णी—टोखणी (लोटा), मास्टरणी, नातणी (नातिन)
९. इनके अतिरिक्त कहीं-कहीं आ, नी, का भी प्रयोग मिलता है। जैसेः
   (१) फुंद्या (अगुआ पर व्यंग्यात्मक रूप में)
   (२) बाला (बचपन)
   (३) पदानी (मुखिया की स्त्री)

वचन

गढ़वाली में अन्य आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं की तरह एकवचन और बहुवचन ही मिलते हैं। संस्कृत के द्विवचन का आरम्भ से ही लोप है। पुरानी गढ़वाली में भी इसका कहीं प्रयोग नहीं मिलता है।

गढ़वाली में अधिकतर ओकारान्त-या उकारान्त शब्द कर्ताकारक के एकवचन को व्यक्त करते हैं। यही प्रवृत्ति केन्द्रीय पहाड़ी भाषाओं में तथा राजस्थानी, गुजराती, बुंदेली और ब्रजभाषा में भी मिलती है। एकवचन में ओकारान्त या उकारान्त शब्द संस्कृत के 'सु' प्रत्यय के अनुकूल हैं और बहुवचन में वही शब्द आकारान्त हो जाते हैं, जो संस्कृत के 'अस्' प्रत्यय की प्रवृत्ति के अनुकूल है।[1] जैसे :

१. संस्कृत के एकवचन में भी बालकः गच्छति, या बालको गच्छति; बहुवचन में बालकाः गच्छन्ति, होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एकवचन	बहुवचन
भांडो (बर्तन)	भांडा (बहुत बर्तन)
नौनो (लड़का)	नौना (लड़के)
टोखणो (लोटा)	टोखणा (लोटे)
घोड़ो (घोड़ा)	घोड़ा (घोड़े)

एकवचन में ओ या उ की प्रवृत्ति शौरसेनी[1] प्राकृत में 'ओ' के रूप में तथा उसके बाद अपभ्रंश में 'उ' के रूप में मिलती है।

गढ़वाली में एकवचन से बहुवचन निम्नलिखित ढंग से बनते हैं :

(१) ओकारान्त या उकारान्त शब्द बहुवचन में आकारान्त हो जाते हैं। जैसे :

एकवचन	बहुवचन
भैंसो या भैंसु (बड़ी भैंस)	भैंसा (भैंसे)
नौनो या नोनु (लड़का)	नौना (लड़के)
टोखणो या टोखणु (लोटा)	टोखणा (लोटे)
घोड़ो या घोड़ू (घोड़ा)	घोड़ा (घोड़े)
कूड़ो या कूड़ु (मकान)	कूड़ा (मकान)

(२) अन्य स्वरों में अन्त होने वाले भी शब्द (अविकारी), चाहे वे पुंलिंग हों या स्त्रीलिंग, कर्ताकारक के एकवचन और बहुवचन में एक-से ही रहते हैं, उनके मूल रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता है। जैसे :

एकवचन	बहुवचन
ब्वारि (बहू)	ब्वारि (बहुएँ)
नौनी (लड़की)	नौनी (लड़कियाँ)
बौ (भाभी)	बौ (भाभियाँ)
द्यूर (देवर)	द्यूर (देवर)
द्यूराण (देवरानी)	द्यूराण (देवरानियाँ)
ब्यौ (विवाह)	ब्यौ (विवाह-शादियाँ)
ब्वै (माता)	ब्वै (माताएँ)
मामा	मामा

१. डॉ० उदयनारायण तिवारी : हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० ४३५।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३) विकारी अकारान्त शब्दों के बहुवचन में पुलिंग के साथ 'उ' तथा स्त्रीलिंग के साथ 'ई' लग जाता है । जैसे :

घर (पुलिंग) घरू ('न') घरून औणा छन (घरों से जा रहे हैं)
बल्द (बैल) बल्दु ('सणी') बल्दु सणी मेलि द्या (बैलों को खोल दो)
किताब (स्त्रीलिंग) किताबु ('पर') किताबु पर जिल्द चढ़ा (किताबों पर जिल्द चढ़ाओ)

(४) विकारी अकारान्त शब्दों के बहुवचन में 'ओं' लग जाता है । जैसे :

एकवचन	बहुवचन
मामा न (मामा ने)	मामों न (मामाओं ने)
काका न (चाचा ने)	काको न (चाचाओं ने)
नेता न (नेता ने)	नेतों न (नेताओं ने)
फुंद्या न (अगुवा ने)	फुंद्यों न (अगुवाओं ने)

(५) विकारी ईकारान्त शब्दों के बहुवचन में 'यों' लग जाता है । जैसे :

एकवचन	बहुवचन
जनानी न (स्त्री ने)	जनान्यों न (स्त्रियों ने)
नौनी न (लड़की ने)	नौन्यों न (लड़कियों ने)
भैंसी न (भैंस ने)	भैंस्यों न (भैंसों ने)
ब्वारी न (बहू ने)	ब्वार्यों न (बहुओं ने)

(६) विकारी ऐकारान्त शब्दों के बहुवचन में 'यों' सम्मिलित हो जाता है ।[1] जैसे :

एकवचन	बहुवचन
ब्वैन (माता ने)	ब्वैयों न (माताओं ने)
कैन (किसने)	कैयों न (कितनों ने)

(७) सम्बन्धसूचक शब्दों के साथ आदर-प्रदर्शन तथा बहुत्व की सूचना के लिए 'और' या 'ज्योर' तथा 'काँ' जोड़ दिये जाते हैं । जैसे :

	एकवचन	बहुवचन
(क)	बाबा या बुब्वा (पिता)	बाबा ओर (पिताजी तथा अन्य)
		ससुरज्योर (ससुर जी तथा अन्य)

१. अपवाद—तै न (उसने); तौं न (उन्होंने)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एकवचन	बहुवचन
जेठ	जेठ्ज्योर
काकी (चाची)	काकी ओर (चाची तथा अन्य)
(ख) काका कां (चाचा तथा उनके घर के)	मामा कां (मामा तथा उनके घर के)

बंगला[१] में भी इसी रूप में 'एरा' और 'रा' प्रत्यय का प्रयोग होता है।

(८) बहुत-से खाद्यान्न बहुवचन ही होते हैं। जैसे :

जौ, कौणी, ग्यूँ, साटी (धान)।

(९) पुराने कुछ लोकगीतों में बहुवचन के रूपों में 'ना' का प्रयोग भी मिलता है जो संस्कृत के 'नाम्' (जनानाम् नदीनाम्—षष्ठीकारक) से मिलता-जुलता है। जैसे—

रितुना को ओणो (ऋतुओं का आना)।

(१०) उपर्युक्त रूपों के अतिरिक्त कुछ शब्दों के योग से भी बहुवचन के रूप बनते हैं। जैसे :

(क) झणा (संस्कृत के 'जना') से :

इसका प्रयोग प्रायः पति-पत्नी के लिए ही होता है।

(ख) लोक—हम लोक (हम लोग), नौकर लोक (नौकर लोग)

(ग) सब—उ सब भैर जयाँ छन (वे सब बाहर गये हैं)

(घ) काँ—काका काँ (चाचा और उनके कुटुम्ब के)

(ङ) ओर या ज्योर—जेठ्ज्योर (जेठ जी तथा अन्य)

कारक

गढ़वाली में भी अन्य आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं की तरह संस्कृत की विभक्तियों के स्थान पर कारक-चिह्नों या परसर्गों का प्रयोग होता है। गढ़वाली में इन कारक-चिह्नों का प्रवेश सहसा नहीं हुआ। जिस भाषा से गढ़वाली का उद्गम हुआ है, उसमें विभक्तियाँ रही होंगी, क्योंकि इसका आभास कई रूपों से स्पष्ट मिलता है। गढ़वाली में संस्कृत की कई विभक्तियों की प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। जैसे, कर्ताकारक के एकवचन 'ओकारान्त' या 'उकारान्त' तथा बहुवचन आकारान्त में संस्कृत के 'सु' (एकवचन) और 'अस्' (बहुवचन) की प्रवृत्ति भैंसों (एकवचन) और भैंसा

१. डा० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या : भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी, पृ० १३६।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(बहुवचन) में मिलती है। संस्कृत के 'बालो याति' या 'बालको गच्छति' 'बाला: यान्ति' या 'बालकाः गच्छन्ति' कर्ताकारक के एकवचन और बहुवचन में 'ओं' और 'आ' के प्रयोग से स्पष्ट मालूम होता है कि गढ़वाली में यह परम्परा संस्कृत की ही है। प्राकृत में 'ओ' और अपभ्रंश में 'उ' की प्रवृत्ति भी उसी का फल है। इसके अतिरिक्त गढ़वाली में कैन (संस्कृत-केन = किसने), तैन (संस्कृत-तेन = उसने) यैन (संस्कृत-येन = जिसने) आदि रूप भी विद्यमान हैं।

गढ़वाली में कारक आठ ही होते हैं। इनके कारक-चिह्न या परसर्ग निम्नलिखित हैं—

कर्ता—न या ल (ल गढ़वाल में सलाण में ही लगाते हैं)।
कर्म—सणी, खुणी (सलाण में), तैं, कु, क, कै, कुण।
करण—से, न, सी, ती।
सम्प्रदान—सणी (हणी), खुणी, कैं, तैं, तई, क, कु, ले।
सम्बन्ध—रा, री, रो, का, की, को।
अपादान—बटे या बिटै, से (सी), ते (ती), परन।
अधिकरण—मां, मु, मंग, पर, मंजे, तनैं, मये।
सम्बोधन—(बुलाने के लिए) रे, हैं, ऐल, हे, ओ आदि।

कारक-चिह्नों (परसर्ग) का प्रयोग

१. कर्ता : ब्वारीन या ब्वारील खाणो पकाई (बहू ने खाना पकाया।)

२. कर्म : (क) मैं (या मी) सणी भूख लगीं छ। (मुझे भूख लगी है।) (ख) मैं (या मी) खुणी भूख लगीं छ। (ग) मैं तैं भूख लगीं छ। (घ) मैं कु भूख लगीं छ। (ङ) मैं तई भूख लगीं छ। (च) मैं क भूख लगीं छ। (छ) मैं कुण भूख लगीं छ।

३. करण : लाठिन (लाठि से, लाठि सी, लाठि ती) गागू मारा—(लाठी से सांप मारो)।

४. सम्प्रदान : (क) ते तैं किताब ल्या (उसके लिए किताब लाओ)। (ख) तै खुणी ब्यौ कर द्वा (उसके लिए ब्याह कर दो)। (ग) मैं सणी घर पहुचैं द्या (मुझे घर पहुँचा दो)। (घ) जगतू क (जगतू कु, जगतू ले, जगतू-तई) जुत्ता ली द्या (जगतू के लिए जूते ले लो)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MD

५. अपादान। (क) उ छज्जा **बिटे** (**बटे**) गिरे (वह छज्जे से गिरा)। (ख) वेन डाला **परन** आम तोड़ीन (उसने पेड़ से आम तोड़े)। (ग) घट्ट **तैं** (घट्ट **तो**) ग्युं पिसे ल्या (चक्की से गेहूँ पिसाकर लाओ)।

६. सम्बन्ध : (क) **तुमारा** घर को छ आयुँ (तुम्हारे घर कौन आया है)? (ख) **तुमारी** नौनी कख छ (तुम्हारी लड़की कहाँ है)? (ग) **तुमारो** नौं क्या छ (तुम्हारा नाम क्या है)? (घ) **तैं की** नौनी कख पढ़ दे (उसकी लड़की कहाँ पढ़ रही है)? (ङ) **तैं का** कति नौना छन (उसके कितने लड़के हैं)?

७. अधिकरण : (क) इँ दरी **मा** बैठा (इस दरी पर बैठो)। (ख) घर **मु** क्वी नी (घर पर कोई नहीं है)। (ग) यख **मंग** बैठा (यहाँ पर बैठो)।

८. सम्बोधन : (क) **रे** नौनो यन् ना करा (ऐ लड़को, ऐसा मत करो)। (ख) **हैं**, क्य छैं करणा (हो, क्या कर रहे हो)? (ग) **ओ** झगड़ दा (हे, झगड़ भाई)! (घ) **ऐल** (**ऐला**) क्या हाल छन (क्या हाल है)?

कारक-चिह्नों (परसर्ग) की उत्पत्ति

१. **न** (**ल**)—गढ़वाली में 'न' संस्कृत के करण कारक 'एन' से आया है, क्योंकि कई रूपों में 'एन' ऐन हो गया है। जैसे, तैंन, (संस्कृत-तेन = उसने), कै (सं० केन= किसने), यैन (सं०–येन = जिसने या इसने), जैन (सं० येन) और अन्यत्र मात्र 'न' रह गया। कर्ता के समान ही 'न' का प्रयोग करण और अपादान कारक के लिए भी होता है। जैसे :

(क) ब्वारीन खाणो बणाए (बहू ने खाना बनाया), कर्ता में।
(ख) उ भूकन[1] मरे (वह भूख से मरा), करण में।
(ग) कखन आए (कहाँ से आया ?), अपादान में।

१. इसी रूप में अवधी, भोजपुरी, ब्रजभाषा आदि में भी प्रयोग मिलता है–'भूखन' (भूख से)। डॉ० तिवारी—हि० भा० का० वि०, पृ० २४१।
२. बीम्स : कंपेरेटिव ग्रेमर आव् द मॉडर्न एरियन लैंग्वेजेज आव् इंडिया, भाग २/५७ उद्धरण—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० २५६।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिन्दी के 'न' चिह्न के विषय में भी ट्रंप और बीम्स[२] का विचार है कि यह संस्कृत के करण कारक के एकवचन की विभक्ति 'एन' का वर्ण-व्यत्यय से 'ने' में परिणत हो गया है।

डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या[१] तथा डॉ० सुकुमार सैन[२] ने 'न' की उत्पत्ति संस्कृत कर्णे से मानी है और 'ने' का पुराना रूप 'कने' था, जिसका धीरे-धीरे 'ने' हो गया है। 'कर्ण' (कान) शब्द से सामीप्य का बोध होता है।

केलॉग ने 'ने' की उत्पत्ति संस्कृत 'लग्ने' (लग्न) से की है, जिसके लगि, लइ, लेने—इस प्रकार रूप बने हैं। गढ़वाली में 'ल' का भी प्रयोग मिलता है। हो सकता है कि यह मत गढ़वाली पर भी लागू हो। नेपाली में करण में 'ले' और सम्प्रदाय में 'लाई' का प्रयोग भी इससे मिलता-जुलता है।

गढ़वाली में—**ब्वारील (ब्वारीन)** खाणो पकाए (बहू ने खाना पकाया)।

'न' और 'ल' दोनों का प्रयोग मिलता है।

२. क, सणि, कु, खुणी, कैं—

गढ़वाली में कर्मकारक और सम्प्रदान कारक के प्रायः एक जैसे ही विभक्ति-चिह्न हैं। गढ़वाली का 'क' प्रयोग हिन्दी के 'को', अवधी के 'क', व्रज के 'कों' और कन्नौजी के 'को' के समान ही है।[३]

(अ) ट्रंप[४] के मतानुसार 'को' की उत्पत्ति संस्कृत 'कृतम्' से हुई।

(ब) हार्नली और बीम्स[५] 'को' की उत्पत्ति संस्कृत 'कक्षम्' से मानते हैं।

(स) गढ़वाली में 'सणि' की उत्पत्ति डा० हेमचन्द्र जोशी[६] ने 'सते' से मानी है तथा डॉ० उदयनारायण तिवारी[७] ने संस्कृत 'संगे' से 'सणि' और 'कर्णे' से 'कणि' (कुमाउँनी में) की उत्पत्ति मानी है।

१. भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी, पृ० १३८।
२. ए ग्रेमर आव् द हिन्दी लैंग्वेज, पृ० १३२।
३. डॉ० तिवारी : हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० ४४१।
४. ट्रंप : सिंधी ग्रेमर, पृ० ११५ पर उद्धरण—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ०, २६१
५. बीम्स : क० ग्रेमर, भाग २/५६ पर उद्धरण—डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० २६१।
६. डॉ० जोशी : टिप्पणी, प्रा० भा० व्या०, पृ० ५२५।
७. डॉ० तिवारी : हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० ४४२।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

३. बटि, बिटे, से

(अ) 'वटि' या 'बिटे' का गढ़वाली में अपादान कारक में प्रयोग होता है। जैसे, 'घर बटि आयूँ' (घर से आया हूँ), इसकी उत्पत्ति संस्कृत के 'वर्तें' शब्द से संभव है, क्योंकि प्राकृत में भी 'वट्ट' या 'वत्त' इसी प्रयोग में आये हैं।

(ब) से—'से' का प्रयोग हिन्दी में अपादान और करण कारक दोनों में होता है। गढ़वाली में भी करण और अपादान दोनों में इसका प्रयोग होता है। इसकी उत्पत्ति केलॉग के अनुसार संस्कृत का 'तः' प्रत्यय है (गृहतः)। बीम्स ने इसकी उत्पत्ति 'सम' से मानी है। ऐसे ही ब्रजभाषा में 'सों' की उत्पत्ति भी 'समं' से ही मानी गयी है।

४. रा, री, रो और का, की, को—सम्बन्ध कारक के विभक्ति के चिह्न हैं। हिन्दी में रा, री, रे; का, की, के, अपभ्रंश में 'कर' विभक्ति-चिह्न मिलते हैं। का, की, के—इन तीनों का सम्बन्ध संस्कृत 'कृतम्' से ही माना गया है। 'कृत, कअ, का' इस प्रकार धीरे-धीरे 'कृतं' का 'का' हो गया।

५. मां, मंजे, मधे, पर

मां की उत्पत्ति 'मध्ये' (मंझे–मां हि–में) से ही हुई है। ऐसे ही 'मये' 'मस्तके' से और 'मंजे' 'मध्ये' से निकलते हैं और 'पर' की उत्पत्ति संस्कृत 'परे' से हुई है। इन सबका प्रयोग अधिकरण कारक में होता है।

क्रिया

गढ़वाली में क्रिया-रूपों की प्रवृत्ति अन्य आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओं की तरह सरलीकरण की ओर अधिक है। संस्कृत-धातुएँ दश गणों (भ्वादि, अदादि आदि) में बाँटी गयी हैं। प्रत्येक के वचन, पुरुष और काल-भेद से कई रूप बनते हैं। अतः मध्य भारतीय-आर्यभाषा काल के प्रारम्भ से ही जटिल क्रिया-रूपों को सरल करने की प्रवृत्ति आरम्भ हो गयी थी। गढ़वाली में अन्य रूपों की तरह अधिकतर क्रियाएँ संस्कृत से ही आयीं हैं। साथ ही कुछ प्राकृत और अपभ्रंश से उत्तराधिकार में मिली हैं।

गढ़वाली में काल रचना कृदन्त और सहायक क्रियाओं के तिङन्त तद्भव रूपों से होती है।

गढ़वाली में धातुओं का वर्गीकरण मुख्यतः दो प्रकार से किया जा सकता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

(क) सिद्ध धातुएँ; जैसे—कर (णू)–कृ-गण (नू)–गण, लिख (णू)–लिख, खण (नू)-न, रम (णू)–रम, लिप (णू)–लिप आदि जो मूल रूप में सुरक्षित हैं।

(ख) साधित धातुएँ—ऐसी धातुएँ जो मूलधातु में किसी प्रत्यय के योग से बनी हैं—जैसे लिखौणू (लिखना), (संस्कृत मूल धातु लिख और प्रत्ययः) करोणू (करवाना), (संस्कृत कृ – कर + आ – वा प्रेरणार्थक प्रत्ययः) आदि।

डॉ० चाटुर्ज्या ने हिन्दी की धातुओं का वर्गीकरण इसी प्रकार से किया है।

सिद्ध धातुएँ

१. संस्कृत से आयी हुई सिद्ध धातुएँ (१) साधारण (२) उपसर्गयुक्त धातुएँ

२. संस्कृत णिजन्त से आयी हुई सिद्ध धातुएँ

३. देशज धातुएँ

साधित धातुएँ

१. णिजन्त (प्रेरणार्थक), २. नाम-धातु, ३. ध्वन्यात्मक धातुएँ, ४. सप्रत्यय धातुएँ।

सिद्ध धातुएँ

१. संस्कृत से आयी हुई सिद्ध धातुएँ, साधारण—

करणू (सं० कृ), गणनू (सं० गण), चलणू (सं० चल), खणनू (सं० खन), कूदणू (सं० कूर्द), चरनू (सं० चर), रमणू (सं० रम), भरणू (सं० भृ), सरणू (सं० सृ), मिलणू (सं० मिल), लिखणू (सं० लिख), हँसणू (सं० हंस), जपणू (सं० जप), रटणू (सं० रट), लगणू (सं० लग), लीपणू (सं० लिप), बाँचणू (सं० वाच), आदि।

उपसर्गयुक्त धातुएँ

उतरनु (सं० उत् + तर), सौंपणू (सं० सम् + अर्प), परसनू (सं० प्र + सृ), उगणू (सं० उत् + गम्), परखणू (सं० परि + ईक्ष), उजड़नू (सं० उत् + जट्), विसोणू (सं० वि + श्रमः)।

णिजन्त धातुएँ जो अपने प्रेरणार्थक रूप और भाव को खोकर सिद्ध-धातुओं में परिणत हो गयीं :

तापणू (तापयति), परसारणू (प्रसारयति), थापणू (स्थापयति), छौणू (छादयति), पुर्‍योणू (पूरयति) आदि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देशज धातुएँ

ठोकणू (ठोकना), डाँटणू (डाँटना), ठेलणू (ठेलना), भेंटणू (भेंटना), लड़नू (लड़ना), दौड़नू (दौड़ना), टोकणू (टोकना)। इनकी उत्पत्ति संस्कृत से प्रतीत नही होती है। इसलिए इन्हें देशज धातुएँ कहा जाता है। हिन्दी में और गढ़वाली में ऐसी अनेक देशज धातुएँ मिलती हैं।

साधित धातुएँ

प्रेरणार्थक विजन्त धातुएँ

लिखौणू (लिखवाना), करौणू (करवाना), चढ़ौणू (चढ़ाना), मरौणू (मरवाना), हंसौणू (हँसाना), खलौणू (खिलाना), पिलौणू (पिलाना), सिलौणू (सिलवाना), दिलौणू (दिलाना), घूमोणू (घूमाना), बैठौणू (बैठाना), उठौणू (उठाना) आदि।

नाम धातुएँ

कुछ संज्ञाएँ 'योण्' 'अण्' 'एण' आदि के संयोग से गढ़वाली में नाम धातुएँ बन जाती हैं :

पुलिंग में योणू ओर अण् का प्रयोग होता है और स्त्रीलिंग में केवल एण का :

भापेणू (भाप + एण), सब्योणू (शब्द + योणूं), खुदेणू (खुद याद + एण्), हस्योणू (हात, हाथ + योण्)।

ध्वन्यात्मक धातुएँ

गढ़वाल गाड–गदनियों (नदी-नालों) और पशु-पक्षियों का प्रदेश है। इसलिए यहाँ अनेक प्रकार की ध्वनियाँ प्रचलित हैं। उन्हीं ध्वनियों के आधार पर कई धातुओं का निर्माण हुआ है। जैसे, छणमणाणू, भमराणू, बबराणू, लराणू, गिड़किणू, भमराणू, थयराणू, चरचराणू, गुणेगुणाणु आदि।

सप्रत्यय धातुएं

गढ़वाली में क, ट, एट प्रत्ययों से युक्त कुछ धातुएँ हैं। जैसे :

(क) क—लचकणू (लँगड़ाना), दनकणू (दौड़ना), अटकणू (अटकना), घटकणू (जल्दी-जल्दी पीना), बिदकणू (बिदकना) आदि। 'क' यह प्रत्यय हिन्दी में भी विद्यमान है। (ख) ट—जवटणू (देखना), डबटणू (डाँटना)। (ग) एट— घसेटणू (घसीटना), फेटणू (फटकाना)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सहायक क्रियाएँ

गढ़वाली भाषा में प्रमुख सहायक क्रिया 'छ' है। इसका प्रयोग बंगला, गुजराती, राजस्थानी, पुरानी अवधी और प्रायः सभी पहाड़ी भाषाओं में होता है। संभवतः इसकी उत्पत्ति संस्कृत के 'अस्ति' से हुई, क्योंकि प्राकृत में 'आछ' और अपभ्रंश में 'अच्छ' तथा 'अच्छि' रूप मिलते हैं। 'अस्ति, असति, अछइ', 'छइ-छ' इस प्रकार इसमें परिवर्तन हुआ—ऐसा प्रतीत होता है। टर्नर[1] ने इसका उद्‌गम संस्कृत 'आ+क्षे' से माना है। डा० चाटुर्ज्या[2] ने इसकी उत्पत्ति 'अच्छ' कल्पित धातु से मानी है।

टिहरी गढ़वाल में कहीं-कहीं भूतकाल में 'छौ' की जगह पर 'थौ' का भी प्रयोग मिलता है। इसकी[3] उत्पत्ति संस्कृत की 'स्था' धातु से हुई।

हिन्दी 'था', प्राकृत 'थाइ, ठाइ'—संस्कृत 'स्थिर' (स्था)। 'था' का प्रयोग हिन्दी में, 'थौ' का गढ़वाली में, 'थियो' का नेपाली में, 'थी' का मालवी में और 'थिली' का उड़िया में भी मिलता है।

सहायक क्रियाओं के रूप

एकवचन	बहुवचन
(वर्तमान) उ कख छ	सी कख छन
(वह कहाँ है ?)	(वे कहाँ हैं ?)
(भूत) उ कख छौ	सी कख छा
(वह कहाँ था ?)	(वे कहाँ थे ?)

संयुक्त-क्रिया

गढ़वाली के टिहरी क्षेत्र में रयूं, र (रह), और 'करी' संयुक्त क्रियाओं का प्रयोग भी मिलता है। जैसे :

(क) मैं घर जै रयूं (मैं घर जा रहा हूँ)।

(ख) तु जांदी र (तू जा)।

(ग) खै करी (खा लेना)। दी करी (दे देना)। जै करी (जा लेना)।

१. टर्नर : नेपाली डिक्शनरी, पृ० १९१।
२. डॉ० चाटुर्ज्या : बंगाली लैंग्वेज : द आरिजिन एण्ड डैवलपमेंट, पृ० ७६६।
३. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० २९४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

काल-रचना

काल मुख्यतया तीन ही हैं—वर्तमान, भूत और भविष्य, परन्तु[1] व्यापार की पूर्णता, अपूर्णता, सामान्यता तथा आज्ञार्थ, संभावनार्थ और निश्चयार्थ, इन तीन मुख्य अर्थों को ध्यान में रखते हुए कालों के कई भेद हो जाते हैं। हिन्दी में साधारणतः सोलह प्रकार के भेद हो जाते हैं।

वर्तमान काल

सामान्य वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
(क) मैं औंदू (मैं आता हूँ)	हम औंदा (हम आते हैं) उत्तम पुरुष
(ख) तू औंदू (तू आता है)	तुम औंदा (तुम आते हो) मध्यमपुरुष
(ग) सु (उ) औदू (वह आता है)	सी औंदा (वे आते हैं) अन्य पुरुष

घटमान वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
(क) मैं औणू छौं (मैं आ रहा हूँ)	हम औणा छन (हम आ रहे हैं)
(ख) तु औणू छ (तू आ रहा है)	तुम औणा छन (तुम आ रहे हो)
(ग) सु (उ) औणू छ (वह आ रहा है)	सी औणा छन (वे आ रहे हैं)

पूर्ण वर्तमान

एकवचन	बहुवचन
(क) तु आँयू छ (तू आया है)	हम आँयां छन (हम आये हैं)
(ख) मैं आँयू छ (मैं आया हूँ)	तुम आँगं छन (तुम आये हो)
(ग) सु (उ) आँयू छ (वह आया है)	सी आँयां छन (वे आये हैं)

भूतकाल

सामान्य भूत

एकवचन	बहुवचन
(क) मैं आँयूँ (मैं आया)	हम आँया (हम आये) उत्तम पुरुष

१. डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : वही, पृ० २९७।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एकवचन	बहुवचन
(ख) तु आये (तू आया)	तुम आँयां (तुम आये) मध्यम पुरुष
(ग) सु (उ) आये (वह आया)	सी आँया (वे आये) अन्य पुरुष

घटमान भूत

(क) मैं पढ़णू छौ[1] (मैं पढ़ रहा था)	हम पढ़णा छा (छया) (हम पढ़ रहे थे)
(ख) तू पढ़णू छौ (तू पढ़ रहा था)	तुम पढ़णा छा (छया) (तुम पढ़ रहे थे)
(ग) सु (उ) पढ़णू छौ (वह पढ़ रहा था)	सी पढ़णा छा (वे पढ़ रहे थे)

पूर्ण भूत

(क) मैं गै छौ (मैं गया था)	हम गै छा (हम गये थे)
(ख) तु गै छौ (तू गया था)	तुम गै छा (तुम गये थे)
(ग) सु (उ) गै छो (वह गया था)	सी गै छा (वे गये थे)

आसन्न भूत

(क) मैंन पढ़ी याली (याले) (मैंने पढ़ लिया)	हमुन पढ़ी याली (याले) (हमने पढ़ लिया)
(ख) त्वैंन पढ़ी याली (याले) (तूने पढ़ लिया)	तुमुन पढ़ी याली (याले) (तुमने पढ़ लिया)
(ग) वैंन पढ़ी याली (उसने पढ़ लिया)	ऊन पढ़ी याली (याले) (उन्होंने पढ़ लिया)

(कहीं-कहीं 'पढ़ी याली' के स्थान पर 'पढ़ले' का भी प्रयोग होता है)।

भविष्यत्

सामान्य भविष्यत्

(क) मैं औलू (मैं आऊँगा)	हम औला (हम आयेंगे)
(ख) तु औलू (तू आयेगा)	तुम औला (तुम आओगे)
(ग) सु (उ) औलू (वह आयेगा)	सी औला (वे आयेंगे)

१. 'छौ' भूतकाल की सहायक क्रिया है किन्तु जब 'छौं' हो जाता है तो वर्तमान की सहायक क्रिया हो जाती है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सम्भाव्य भविष्यत्

(क) मैं ऐ जौलो (मैं आ जाऊँगा)	हम ऐ जौला (हम आ जायेंगे)
(ख) तु ऐ जैलो (तू आ जायेगा)	तुम ऐ जला (जौला) (तुम आजावोगे)
(ग) सु (उ) ऐं जौला (वह आ जायेगा)	सी ऐ जाला (वे आ जायेंगे)

हेतुहेतुमद् भविष्यत्

(क) बरखा होलीत फसल होली (वर्षा होगी तो, फसल होगी) (बरखा ह्वली त फसल ह्वली)

(ख) बाटो ठीक होलो त पौंछी जौलो (रास्ता ठीक होगा तो, पहुँच ही जाऊँगा)

घटमान भविष्यत्

(क) मैं जाणू होलो (ह्वाली) (मैं जा रहा हूँगा)	हम जाणा होला (ह्वला)
(ख) तु जाणू होलो (तू जा रहा होगा)	तुम जाणा होला (ह्वला)
(ग) सु (उ) जाणू होलो (ह्यलो) (वह जा रहा होगा)	सी जाणा होला (वे जा रहे होंगे)

'त' भविष्यत् की उत्पत्ति[1] ब्लाश ने संस्कृत की 'ला' धातु से मानी है। डा० चाटुर्ज्या[2] ने इसकी उत्पत्ति संस्कृत 'त' या 'इत' के साथ लघुता-वाचक 'ल' से मानी है।

आज्ञार्जक रूप

	एकवचन	बहुवचन	
(क)	ओं आऊ (आऊँ)	आँवा (आयें)	उत्तम पुरुष
	जौं, जाऊँ (जाऊँ)	जावाँ (जायें)	
(ख)	आ (आओ)	अवा या आवा (आइये)	मध्यम पुरुष
	जा (जाओ)	जवा या जावा (जाइये)	
(ग)	आओ	औंन या आवन (आइये)	अन्य पुरुष
	जाओ	जौंन या जावन (जाइये)	

१. ब्लाश : लांग मराठेः२४२–वीम्स ने 'ल' का सम्बन्ध संस्कृत 'लग्न' और प्राकृत 'लग्गो' से जोड़ा है (उद्धरण डा० धीरेन्द्र वर्मा) हि० भा० का इतिहास, पृ० २०२।

२. दि ओरिजिन एण्ड डेवलपमैंट आव् बंगाली लैंग्वेज, पृ० ६२७।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इच्छार्थक रूप

एकवचन	बहुवचन
(क) इनो ना कर्या (कुर्यात्)	इनो ना कार्यान
इनो ना करिया (कुर्यात्)	इनो ना करियान
(ख) बड़ौ होया (भूयात्)	बड़ा होयान
बड़ौ ह्वया (भूयात्)	बड़ा ह्वयान

कृदन्तीय काल

वर्तमान कालिक कृदन्त

चलदू किलै नी (चलता क्यों नहीं) ?

'द' या 'द्' संस्कृत के 'शतृ' प्रत्यय के तद्भव रूप हैं। संस्कृत में चलन्, चलन्तौ, चलन्तः—चलन्त, चलन्दो, चलदो, चलदू—इस प्रकार इसका विकास हुआ है।[1] स्त्रीलिंग में यह इकारान्त (चलदि किलै ना) हो जाता है।

भूतकालिक कृदन्त

गढ़वाली में भूतकालिक कृदन्त का 'इयो' या 'न्यो' रूप मिलता है। संस्कृत के 'त' प्रत्यय से संस्कृत में चलितः बना। इसी चलित का 'चल्यो' बन गया। अन्त में इ, ए, ओ हों तो न्यो हो जाता है। जैसे, दीनी = दिन्यो, लीनी = लिन्यो, पीनी = पिन्यो। व्रजभाषा और अवधी में भी दीन्ह, कीन्ह, दीनो, कीनो आदि रूप मिलते हैं।

पूर्वकालिक कृदन्त

मैं खाइक (खैक) आयूँ (मैं खाकर आया)।

सू (उ) राम सणी पीटिक आये (वह राम को पीटकर आया)।

संस्कृत में 'कृत्वा' या 'आगत्य'-'त्वा' और उपसर्ग होने पर 'त्य' हो जाता है।

वाच्य

कर्तवाच्य	कर्मवाच्य
१. उ किताब पढ़णू छ	वे सणी किताब पढ़ाइ गए
(वह किताब पढ़ रहा है)	(उसको किताब पढ़ायी गयी)
२. मैंन स्वाँग देखे	मैं सणी स्वाँग दिखाई गए
(मैंने तमाशा देखा)	(मुझको तमाशा दिखाया गया)

१. ब्रज भाषा, अवधी, बंगला, भोजपुरी भाषाओं में भी यह कृदन्त रूप मिलता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

विशेषण

गढ़वाली भाषा में संज्ञापदों के वचन और लिंग से विशेषण प्रभावित होते हैं। संस्कृत से ही यह परम्परा गढ़वाली में भी आयी है। संस्कृत में 'सुन्दरः बालकः', 'सुन्दरी बालिका', 'सुन्दरं वनम्', 'सुन्दराः बालकाः', 'सुन्दर्यः बालिकाः', 'सुन्दराणि वनानि' संज्ञापद के लिंग और वचन के अनुसार विशेषण के भी लिंग और वचन होते हैं। संज्ञा के अध्याय में इसका उल्लेख किया गया है कि गढ़वाली में कई बार लिंग वस्तु-विशेष के आकार पर आश्रित रहता है। जैसे :

एकवचन	बहुवचन
काळो[1] भैंसो (बड़ी काली भैंस)	काळा भैंसा (बड़ी काली भैंसें)
काळी भैंसी (छोटी काली भैंस)	काळी भैंसी[2] (छोटी काली भैंसें)
कालो बागी (काला झोटा)	काला बागी (काले झोटे)
स्वाणो गौड़ो (सुन्दर बड़ी गाय)	स्वाणा गौड़ा (सुन्दर बड़ी गायें)
स्वाणी गौड़ी (सुन्दर छोटी गाय)	स्वाणी गौड़ी (सुन्दर छोटी गायें)
स्वाणो बल्द (सुन्दर बैल)	स्वाण बल्द (सुन्दर बैल)

ऐसे ही आकार के अनुसार कूड़ो (बड़ा मकान), कूड़ी (छोटा मकान); नथुलो (बड़ी नथ), नथ (सामान्य), नथुली (छोटी नथ) आदि रूप बनते हैं और जब विशेषणों के साथ उनका प्रयोग होता है, तब विशेषण उन्हीं के अनुसार बन जाते हैं। जैसे :

अच्छो कूड़ो (अच्छा मकान),	अच्छा कूड़ा (अच्छे मकान)
अच्छि कूड़ी (अच्छा छोटा मकान)	अच्छि कूड़ी (अच्छे छोटे मकान)
स्वाणो नथुलो (सुन्दर बड़ी नथ)	स्वाणा नथुला (सुन्दर बड़ी नथें)
स्वाणी नथुली (सुन्दर छोटी नथ)	स्वाणी नथुली (सुन्दर छोटी नथें)

१. ओकारान्त शब्द गढ़वाली में सब पुलिंग होते हैं।
२. गढ़वाली में इकारान्त और ईकारान्त अविकारी शब्दों के बहुवचन में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गुणवाचक विशेषण

पुंलिग एकवचन	पुंलिग बहुवचन	स्त्रीलिंग एकवचन	स्त्रीलिंग बहुवचन
पिंगळो (पीला)	पिंगळा (पीले)	पिंगळी (पीली)	पिंगळी
स्वाणो (सुन्दर)	स्वाणा (सुन्दर)	स्वाणी (सुन्दरी)	स्वाणी
लूलो (लंगड़ा)	लूला (लंगड़े)	लूली (लंगड़ी)	लूली
काणो (काना)	काणा (काने)	काणी (कानी)	काणी
काळो (काला)	काळा (काले)	काळी (काली)	काळी

(क) समानता का भाव प्रकट करने के लिए इन शब्दों का प्रयोग होता है— जनो, जशी, सी, सरी, सरिक्या, जशो, चुली, चार आदि।

इनमें जशी संस्कृत 'यादृशी', जशो 'यादृशः', सरिक्या 'सरी-सदृशः', सी 'सम' से व्युत्पन्न हैं।

(ख) गढ़वाली में तुलनात्मक श्रेणियों में 'चैं', 'चुली' और 'से' का प्रयोग होता है। नेपाली में 'चाई' का व्यवहार इसी रूप में होता है।

१. स्या (वा) त्वै चैं स्वाणी छ (वह तुझसे अधिक सुन्दर है)।
२. सु (उ) तैं चुली अच्छो छ (वह उससे अच्छा है)।
३. मैं चैं तु भली (मुझसे तो तू अच्छी है)।
४. नौनी से त ब्वारि भली (लड़की से तो बहू अधिक अच्छी है)।

(ग) कभी-कभी गुण के आधिक्य भाव को व्यक्त करने के लिए इस प्रकार के प्रयोग भी मिलते हैं—

१. काली-कलोसो बाखरो : बहुत ही काली बकरी (बड़ी)
२. काली-कलौसी बाखरी : बहुत ही काली बकरी (छोटी)
३. लाल चचकार : बहुत ही लाल

संख्यावाचक विशेषण[1]

१. संख्यावाचक विशेषण (क) गणनात्मक (ख) क्रमात्मक (ग) गुणात्मक (घ) भिन्नात्मक आदि रूपों में मिलते हैं।

१. इसका विशद उल्लेख परिशिष्ट में 'परिगणन' में देखिये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDS

(क) गणनात्मक—यदक (एक), द्वी (दुई), तीन, चार आदि
(ख) क्रमात्मक-पैलो (पहला), दूसरो (दूसरा), तिसरो (तीसरा)आदि
(ग) गुणात्मक-दुगुणो (दुगुना), तिगुणो (तिगुना), चौगुणो (चौगुना)
(घ) भिन्नात्मक-पवा (पाव), अधा (अद्धा), ड्योढ़ा,
सवैया (सवा), ढामा (ढ़ैया)

अनिश्चय-वाचक संख्या में 'कति' (कितने), 'उति' (उतने), 'जति' (जितने), 'यति' (इतने) आदि का प्रयोग होता है। जैसे, तुमार कति नौना छन ? (तुम्हारे कितने लड़के हैं ?)

परिमाणवाचक विशेषण

परिमाणवाचक विशेषण को प्रकट करने के लिए गढ़वाली भाषा में निम्न-लिखित शब्दों का प्रयोग होता है—

इथ्या; इथा, इथका (इतना)
उथ्या, उथा, उथका (उतना)
कथ्या, कथा, कथका (कितना)
जथ्या, जथा, जथका (जितना)
तथ्या, तथा, तथका (तितना, उतना)

सर्वनाममूलक विशेषण

गढ़वाली में सर्वनाम-मूलक विशेषण इस प्रकार हैं—

(क) इनो (ऐसा), जनो (जैसा), तनो (तैसा), कनो (कैसा), उनो (वैसा)
(ख) आकार का गुरुत्व और लघुत्व प्रकट करने के लिए निम्नलिखित शब्दों का प्रयोग होता है—

इतरो, इतनो (इतना), उतरो, उतनो (उतना), जतरो, जतनो (जितना), ततनो (तितना, उतना)

सर्वनाम

गढ़वाली भाषा के सर्वनाम अन्य नव्य-भारतीय आर्य-भाषाओं की तरह संस्कृत से आये हैं और कई रूप तो गढ़वाली में हिन्दी आदि की अपेक्षा बिलकुल संस्कृत जैसे ही हैं। जैसे, सो या सु--स (वह); स्या या सा--सा, स्या; तैंन--तेन (उसने), कैन--केन (किसने) आदि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुरुषवाचक सर्वनाम

एकवचन	बहुवचन
(क) उत्तम पुरुष	
मैं, मी, मि, मई	हम, हमु (अविकारी कर्ता)
मेरो, मेरी, म्यारो, म्यारी	हमारो, हमारी (हमारी) (अविकारी सम्बन्ध)
(ख) मध्यम पुरुष	
तु, तू, (ताउँ)	तुम (अविकारी)
तेरो, त्वै	तुमारो (विकारी)
(ग) अन्य पुरुष	
पुल्लिग सु, उ, वो	सी } (अविकारी)
स्त्रीलिंग स्या, वा	सी }
पुल्लिग तैं, वै (तैंकी, वैंकी)	तौं वों (तौंकी, वौंकी)
स्त्रीलिंग तैं, वैं (तैंकी, बैंकी)	,, ,,

निश्चयवाचक सर्वनाम

एकवचन	बहुवचन	
(क) पुल्लिग सु, सो, स्यो	सी, सि, स्ये	
स्त्रीलिंग स्या, वा	सी, स्यी, सि	
(ख) पुल्लिग यु, वो	से, इ	अविकारी
स्त्रीलिंग ई, या	इ	
पुल्लिग यें	यों, यूं	विकारी
स्त्रीलिंग ई	यों, यूं	
(ग)		
ओ, वो, उ	ओ, वो, उ	अविकारी कर्ता
वैको	ऊंको	विकारी सम्बन्ध

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

गढ़वाली में अनिश्चयवाचक सर्वनाम में क्वी, कुछ, किछु और किछ का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MHRD

प्रयोग होता है। 'क्वी' का विकारी रूप 'कै' होता है। क्वी की उत्पत्ति कदाचित संस्कृत 'कोपि' से हुई है।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम

	एकवचन	बहुवचन	
पुलिंग	जु, जो	जु, जो	अविकारी
स्त्रीलिंग	जु, ज्वा	जु, ज्वा	
पुलिंग	जै (जेन)	जौं (जौंन)	विकारी
स्त्रीलिंग	जैं या जीं (जैंन)	जौं (जौंन)	

जु, जो, ज्वा की उत्पत्ति संस्कृत 'यः' और 'या' से हुई है। सविभक्तिक रूप जैन (येन) मिलता है।

प्रश्नवाचक सर्वनाम

	पुलिंग	स्त्रीलिंग	
	को, कोज, क्व	क्वा	अविकारी
	क्या	क्या	
एकवचन	कै (कैन)	कैं : कैंन	विकारी
बहुवचन	कौ (कौन)	कौं : कौन	

निजवाचक सर्वनाम

अफ् या अफु — अविकारी

पुलिंग—अपणो — (कभी कभी 'अपणी' भी प्रयुक्त होता है)

स्त्रीलिंग—अपणी

अपने आप के लिए 'अफ्वी' का प्रयोग होता है।

संयुक्त सर्वनाम

गढ़वाली में कभी-कभी संयुक्त सर्वनाम का भी प्रयोग होता है। दो सर्वनामों के साथ-साथ प्रयोग के कई उदाहरण मिलते हैं। जैसे :

१. जु-कुछ करदा तुमारी मर्जी (जो कुछ करो, तुम्हारी इच्छा)
२. जै-कै का नौना (जिस-किसी के लड़के)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३. मैं से जनो-कनो काम नी होंद (मुझसे जैसा-कैसा (साधारण) काम नहीं होता)

४. जु-क्वी औलो त मैं सणी खबर दी दया (जो कोई आयेगा तो मुझे खबर दे देना)

अव्यय

गढ़वाली भाषा में अधिकतर अव्यय संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओं से उत्तराधिकार में आये हैं। कई अव्यय अन्य भारतीय आर्य-भाषाओं की तरह गढ़वाली में भी संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण से बने हैं।

अव्यय के भेद

(क) क्रिया-विशेषण, (ख) सम्बन्ध-वाचक, (ग) समुच्चय-बोधक, (घ) विस्मयादि-बोधक, (ङ) ध्वन्यात्मक।

क्रिया-विशेषण के भेद

१—कालवाचक, २—स्थानवाचक, ३—परिमाणवाचक, ४—रीतिवाचक

कालवाचक अव्यय

व्याले (कल = विकाले), भोल् (कल = भव्य वेला), झट (झटिति), सदानी (सनातन), आज (अद्य), परसे (पेरद्यु), अगाड़ी या अगनै (अग्रे), कदि (कदा), नित (नित्य), तदि (तदा), परार (पर परुत्), पोर (परुत्), पाछ (पश्च), पच्छनै या पच्छाड़े (पश्च्यात्), घड़ी (घटिका), सबैर (सवेला), अबैल (अबेला), बार-बार (बारंबारम्), अभी या अभि (डॉ० चाटुर्ज्या के अनुसार संस्कृत 'एवम्' से), व्याखुनी (वि+क्षण) जब[1], तब, कब की उत्पत्ति क्रमशः सार्वनामिक अंग क+ब, ज+ब, त+ब से हुई है। इन्हीं से कवार (कब), अबार (अब), तबार (तब), जबार (जब) और कबरै, जबरै, तबरे, अवारि आदि अव्यय बने हैं।

स्थानवाचक अव्यय

भैर (बहिः = वाहर), अण्थ (अन्यत्र), संग्ध (सर्वत्र), उदो (अब), उच्चौ (ऊर्ध्वं), पार (पार), भुंई (भूमि = नीचे), मुड़े (भूले = नीचे),

१. डॉ० तिवारी : हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० ५०७।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

पास (पार्श्वे), मये (मस्तके = ऊपर), भित्र (अभ्यन्तर = भीतर), ऐंच (उच्चै), तडल़ (तले = नीचे), तीर (तीरे) ।

देशज

ढीस (ऊपर), बेड़ (नीचे), निस (नीचे) आदि

अरबी-फारसी के—तरप (तरफ), नजीक (नजदीक)

सार्वनामिक अव्ययों के रूप

(अ) जख, तख, कख, यख, वख

(ब) जत्त (जत्थ), तत्त (तत्थ), कत (कत्थ), यत (यत्थ), वत (वत्थ)

(स) जतैं (जथैं), ततैं (तथैं), कतैं (कथैं), यतैं (यथैं), कतैं (कथैं)

(द) जख[1] (जहाँ), तख (तहाँ), कख (कहाँ), यख (यहाँ), वख (वहाँ) ।

परिमाणवाचक अव्यय

भौत (बहुत), जरा (थोड़ा), कम, जादा (ज्यादा), होर (और, अपर), मस्त (बहुत), भिंडी (ज्यादा), अभिथ्या (बहुत), जथा, जथ्या, जथगा (जितना); तथा, तथ्या, तथगा (उतना); कथ्या, कथा, कथगा (कितना); कथ्या, कथा, कथगा (कितना), वथा (उतना) आदि ।

रीतिवाचक अव्यय

सुदे या सुदि (ऐसे ही), दगड़ी (साथ), आस्ते (आहिस्ता), माठू (धीरे-धीरे), सात (साथ), कतैंन (बिलकुल नहीं)

सम्बन्धवाचक और समुच्चय-बोधक अव्यय

कि (कि), नितर (नहीं तो), त (तो), पर (परन्तु), बल (कि), अर (और) और दी (और) आदि ।

विस्मयादि-बोधक अव्यय

व्यंग्य तथा दया—चुचा (बेचारा),[2] लठ्याल़ा (बेचारा), लठ्याल़ी (बेचारी), भग्यान (भाग्यवान), भग्यानी, लोल़ा (बेचारा) ।

१. इनमें अ का उच्चारण अ (अतिह्रस्व) होता है ।
२. व्यंग्य ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घृणा-व्यंजक—छिः, हट्ट, धत्, दुर्, थुक् ।
पीड़ा-व्यंजक—हाइ (हाय), उह, हे, आः, हा ।
हर्षोल्लास-सूचक—आहा, हो, आ, हा ।
करुणाव्यंजक—च् च्,तयू, हेराँ (हे राम), हाइ, च ।
सम्बोधन—अला, एला, अजी, अरे, हेला, हैला, हैलो ।

ध्वन्यात्मक अव्यय

खीं च्वीं (चूँ-चूँ), स्याँ-स्याँ (नदी और हवा की ध्वनि)
छ्वीं, ध्वीं (धूँ-धूँ), हणमण (छनछनाना)
सररर (तेजी से), अनादनं (जल्दी-जल्दी)
दमादम (एकदम से), लमसट्ट (मार कर लंबा करना = खूब मारना)
हिरिरि (सुन्दर गति से), सरवट (जल्दी से), सुर-सुर (चुपके-चुपके)
दणमण (आँसुओं का गिरना), गड़गड़ (बादलों का गर्जन) आदि ।

उपसर्ग

गढ़वाली में उपसर्ग इस प्रकार हैं—

१. अ—अजाण, अचेत, अबैर, असज
२. अण—अणमेल, अणगिणत, अणदेख्यूँ, अणव्यौ
३. औ—औतार, औगुण, औराड़
४. कु—कुजात, कुकर्म, कुचाल, कुमनखि
५. दु, दुर्—दुरदिन, दुरगति, दुरमति
६. नि—निरण्या, निवंत, निपाणी, निखाणी
७. निर्—निरबुद्धो, निर्मोही
८. स—सजाण, सचेत, सकुशल
९. सु—सुदिन, सुपाल, सुजात

गढ़वाली में निम्नलिखित विदेशी उपसर्गों का भी प्रयोग होता है —

१. कम—कमसल, कमजात, कमतैस
२. ना—नासमझ, नालैक
३. बे—बेकाम, बेजबान, बेकार
४. हर—हर वगत, हरेक, हर चीज

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्रत्यय

गढ़वाली में अधिकांश प्रत्यय—देशज और विदेशी प्रत्यय, संस्कृत से ही आये हैं। ये दोनों प्रत्यय संस्कृत में कम ही हैं।

१. आप[1]—मिलाप, सिलाप, गिल्याफ आदि
२. आक[2]—लड़ाक, बोलाक, छराक, बैठ्वाक आदि
३. आऊ—बिकाऊ, टिकाऊ, दिखाऊ आदि
४. आर—गितार, जितार (यह प्रत्यय संस्कृत के 'कार' से निकला है)
५. आड़—नचाड़, हैंस्वाड़ (यह 'कार' का ही तद्भव है)
६. आल[3]—छुँयाल, दुदाल, घुयाल
७. आण—दोस्त्याण, मास्टरयाण
८. आत—जमात, भयात (बिरादरी)
९. आड़ो, आड़ी—कोदाड़ो (कोदों मंडुआ का खेत), गेंवाड़ो (गेहूँ का खेत), कोदाड़ी (कोदों का आटा), भेवाड़ी
१०. आट—किड़ाट, अड़ाट, खबड़ाट
११. इलो—रंगिलो, अगिलो, हँसिलो
१२. उलो—वगुलो, करछुलो, नथुलो, मरखलो
१३. उली—नथुली, बिन्दुली, बँसुली
१४. उड़ी—जिकुड़ी, दाँतुड़ी, रातुड़ी
१५. ई—गौड़ी, नौनी, भैंसी
१६. लो—पोथलो, दुदलो, रौंतेलो
१७. एर—वसेर, भुर्त्येर, ढोलेर
१८. ऐत—पंचैत, चकड़ैत, संजैत
१९. ऐस—खटैस, मिठैस, मोटैस

१. डा० तिवारी ने इसकी उत्पत्ति संस्कृत के 'आत्मन्' से मानी है—'हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास,' पृ० ४६८।
२. डा० चाटुर्ज्या ने प्राकृत 'अवक' या 'आवक' से और हार्नले ने 'आपक' से इसकी उत्पत्ति मानी है—उद्धरण—डा० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० २२६।
३. संस्कृत के 'आल' (श्रद्धालु) से उद्भूत।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

२०. ऐल—रखैल, दबैल, चुनैल
२१. दारो—करदारो, सुणदारो, खाँदारो
२२. यान, याण, वाण, आण—भग्यान, डाकवान, फुक्याण
२३. टो, टी—कोल्टो, तमोटो, ड्याँटी, छणोटी
२४. एटू—बगेटू (भैंसे से उत्पन्न), भौजेटू (भाभी से उत्पन्न)
२५. वार्त[1]—व्योवार्त, सक्वार्त
२६. ड़ो, ड़ी—मुखड़ो, मुखड़ी आदि।

१. संस्कृत 'वार्ता' से उद्भूत।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

४

गढ़वाली भाषा के शब्द-स्रोत और अर्थ-भेद

शब्द का विस्तार

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से गढ़वाल भाषा-विशेषज्ञों के लिए एक तीर्थ है। प्राचीन काल से ही यह भारत का पावन धाम रहा है। ब्रह्मावर्त,[1] ब्रह्मदेश या ब्रह्मपुर गढ़वाल का ही प्राचीन नाम है। ऋग्वेदिक काल में आर्यों के पाँच प्रमुख दलों में से 'त्रित्सु' नामक दल यहाँ आया और 'पांचाल' नाम से उसने अपना राज्य स्थापित किया[2]। स्कन्दपुराण के वैष्णवखंड के सात अध्यायों में बदरिकाश्रम के तीर्थों का वर्णन है। केदार-खंड में गढ़वाल का विशद भौगोलिक चित्रण मिलता है। महाभारत की कई घटनाओं का गढ़वाल से सीधा सम्बन्ध रहा है।

गढ़वाल कोल, भील, किरात, यक्ष, खश[3], द्रविड़, हूण, शक, गुर्जर, नाग, आर्य आदि कई जातियों का केन्द्र रहा है। व्यास[4], गौतम, जैमिनि, कपिल, आदि कई ऋषि-मुनियों ने यहाँ आकर तपस्या की और कई ग्रन्थ लिखे। जनश्रुतियों के अनुसार वेद, पुराण, दर्शन आदि ग्रन्थों की रचना यहीं हुई। ऋग्वेद का इतिहास और वेदमाता[5] में कई ऐसे शब्दों का उल्लेख किया गया है, जो बिलकुल वैदिक रूप में गढ़वाली में विद्यमान हैं।

बदरी-केदार और गंगोत्री-यमनोत्री की यात्रा के लिए समय-समय पर देश के कई प्रदेशों के यात्री यहाँ आते रहे हैं। राजनीतिक हलचलों के कारण पहले सपादलक्ष प्रदेश (जिसमें गढ़वाल, कुमायूं आदि) तथा राजपूताना में निरन्तर पारस्परिक आवर्तन-

१. डॉ० मुकर्जी : हिन्दू सभ्यता, पृष्ठ ७०-७१।
२. वसुधारा, पृ० २, (सं० देवरानी)।
३. राहुल सांकृत्यायन : हिमालय परिचय (१), पृ० ५६९ के अनुसार खश आर्यों से कई वर्ष पूर्व गढ़वाल में प्रवेश कर चुके थे।
४. डॉ० पाती राम : गढ़वाल एंश्येंट एण्ड मोडर्न, पृ० ११।
५. हरिराम धस्याणा : वेदमाता, पृ० ७७।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विवर्तन चलता रहा [1]। इसीलिए राजस्थानी के कई शब्द उसी रूप में गढ़वाल में विद्यमान हैं। वैदिक, संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश, गुजराती, बंगाली, ब्रजभाषा, अवधी, सिंधी, नेपाली आदि के भी कई शब्द समान रूप में वर्तमान हैं।

गढ़वाली में इन कई द्वारों से शब्द आये हैं :

१. गढ़वाल में विभिन्न जातियों (कोल, भील, द्रविड़, खश, आर्य आदि) का केन्द्र होना। २. बदरी-केदार की यात्रा के लिए विभिन्न प्रदेशों के यात्रियों का आगमन। ३. देवप्रयाग और बदरी-केदार के पंडों का देश-भ्रमण। ४. नीती-माणा आदि दर्रों से मारछा, हुणिया, तोल्छ्या आदि का तिब्बत से व्यापारी सम्बन्ध बना रखना। ५. राजनीतिक परिस्थितियों के कारण मैदानी भागों के कई लोगों का गढ़वाल-प्रवेश और उसे सदा के लिए अपना आवास बनाना। (६) घुमन्तू जाति के कुछ लोगों का आगमन (७) प्राकृतिक सौन्दर्य से अभिभूत होकर कई प्रकार के लोगों का बसना। (८) हाकिमों के हुक्म या फरमान [2]।

गढ़वाली भाषा के स्रोत

गढ़वाली भाषा का शब्द-समूह इन स्रोतों से सम्बन्धित है—

१. भारतीय आर्य-भाषाओं का शब्द-समूह : (क) वैदिक शब्द, (ख) संस्कृत के शब्द (प्राकृत और अपभ्रंश), (ग) नव्य-भारतीय आर्यभाषाओं (राजस्थानी, गुजराती, बंगाली, सिंधी, हिन्दी, मराठी, नेपाली आदि) के शब्द।

२. भारतीय अनार्य भाषाओं के शब्द

३. देशज शब्द

४. विदेशी शब्द

भारतीय आर्यभाषाओं के शब्द

क—वैदिक[3] शब्द

वैदिक	गढ़वाली	वैदिक	गढ़वाली
विट	विट या बीठ[4]	स्या	स्या (स्त्री)

१. ग्रियर्सन : भारत का भाषा-सर्वेक्षण, भाग १, खं० १, पृ० ३३३।

२. गढ़वाली साहित्य की भूमिका, पृष्ठ ६२ (लेख-चक्रधर बहुगुणा); सं० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'।

३. हरिराम धस्याणाः वेदमाता, पृ० ७७।

४. गढ़वाली समाज बीठ (ब्राह्मण, राजपूत आदि) और डोम (हरिजन)—इन दो वर्गों में विभक्त है। 'विट' शब्द वेदों में भी इसी अर्थ में प्रयुक्त हुआ है–'गढ़वाली का निबन्ध' पृ० ५३, भगवती प्रसाद पान्थरी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

वैदिक	गढ़वाली	वैदिक	गढ़वाली
दिशा	दिशा (लड़की)	पर्यंक्	पर्या (काठ का वर्तन)
समेति	समेत (सहित)	सामान्या	समन्या[1] या समनम
कलमत	कलमत (हड़वड़ाहट)	गौरी	गौड़ी (छोटी गाय)
		गैरो	गौड़ी (बड़ी गाय)
व्यंति	बिअन्त (वहुत)	गांथ	गाड (नदी)
द्यौ	द्यौ (आकाश)	एनोमानी	इनोमानी (ऐसा माना)
पाथो	पाथो (दो सेर का माप)	खार	खार (५ रु० प्रश्न का)
माण	माणों (आधा सेर सं० माणिका)	इत्या	इथ्या (इतना)

ख—संस्कृत के तत्सम और अर्धतत्सम शब्द—

(अ) अति, अर्ध, अन्न, अवस्था, अवश्य, अस्त, अस्ताचल, असुर (असूर), अधिकार, अत्याचार, अधिक, अक्षत, अखंड, अंगीकार, अधम, अधीन, अधीर, अनन्त, अनादर, अन्त, अन्तर्मन, अपराध, अपशब्द, अभाव, अभिमान, अभ्यास; अमर, अमृत, अवकाश, अवसर, अहंकार आदि । (आ) आतुर, आचमन, आज्ञा, आदर, आधि, आपत्, आलस्य, आसन आदि । (इ) इच्छा, इन्द्र, इष्ट, इति, इतिहास आदि । (ई) ईश्वर, ईर्ष्या । (उ) उत्तम, उद्धार, उन्माद, उत्पात, उपाय, उदय आदि । (ऋ) ऋण, ऋतु । (ए) एक, एकान्त, एकाग्र ।

[कवर्ग] कठिन, कण, कंठ, कन्या, कपट, कपाल, कमण्डल, कर्णधार, कलश, कलह, कति, कथा, कर्म, कष्ट, कमल, कंकण, काल, काया, किरण, कुटिल, कुटुम्ब, कुल, कुण्डल, कुशल, कुक्कुट, कृपा, कृपाण, कोण, कोमल, क्रिया । गंध, गदा, गरूड़, गर्व; गीत, गुण, गुरू, गोत्र, गोठ (गोष्ठ), ग्रन्थ, ग्रह, ग्लानि । घात, घास, घृणा, घोर ।

[चवर्ग] चकोर, चक्र, चंडाल, चतुर, चन्दन, चपेट (चपेटा), चरण, चर्चा, चिता, चित्त, चिन्ता, चुल्लि, चूर्ण । छाया, छंद । जटा, जन, जप, जागर, जाट, जाल, जीव, जीवन ।

[टवर्ग] टीका ।

[तवर्ग] तन्त्र, तप, तर्पण, तल, तारा, ताल, तिल, तीर्थ, तृण । दास, दाता, दिन, दिशा, दुख, दुर्गन्ध, दूत, दृष्टान्त, देह, देव, दोष, द्वार, द्वापर । धन, धर्म,

१. गढ़वाल में सेवा लगाने के लिए इसी शब्द का प्रयोग होता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धर्मराज, धातु, धार, धूर्त, ध्यान । नक्षत्र, नट, नरक, नष्ट, नाग, नागलोक, नाड़ी, नाना, नाम, नाश, निकट, निमित्त, नियम, निर्णय, निश्चय, निष्ठुर, नित्य, नीच, नीति, नेत्र, न्याय ।

[पवर्ग] पक्ष, पक्षी, पंक्ति, पंथ, पंजर, पट, पंडित, पति, पतिव्रता, पत्र, पदवी, पर, पराक्रम, परिणाम, पवित्र, पशु, पश्चात्, पश्चाताप, पाखंड, पाठ, पाताल, पाप, पार्वती, पातक, पिंड, पिशाच, पीठ, पीड़ा, पुण्य, पुत्र, पूजा, पौर्णमासी, प्रकार, प्रकाश, प्रकृति, प्रजा, प्रताप, प्रति, प्रतिज्ञा, प्रथा, प्रधान, प्रभात, प्रभाव, प्रमाण, प्रलय, प्रश्न, प्रसन्न, प्रसन्नता, प्रसव, प्रसाद, पहर (प्रहर), प्राण, प्रिय । फल, फेन । बल, बलि, बाण, बिल, बीज, बुद्धि, बृहस्पति, ब्रह्मचारी, ब्राह्मण । भक्त, भयंकर, भाग, भाग्य, भांड, भाषा, भार, भुजा, भुवन, भूमि, भेद, भोग, भ्रम, भ्रष्ट । मंगल, मठ, मणि, मति, मंडप, मध्यम, मन, मनोरथ, मंत्र, मंत्री, मर्यादा, मन्दिर, मांस, मान, मार, माला, मास, मात्रा, मित्र, मित्था, मुकुट, मुख, मुंड, मुख्य, मुनि, मूढ, मूर्ख, मूर्च्छा, मूर्ति, मूल, मृग, मोक्ष, मोह, मौन ।

यक्ष, यन, युक्ति, युग, युद्ध, योग्य, योनि । रक्षा, रथ, रण, राक्षस, राग, राजा, राशि, रीति, रुचि, रोग, रोष । लक्षण, लशुन (लसन), लग्न, लंपट, लाभ, लालसा, लांछन, लीला, लेखा, लेप, लेश, लोक । वंश[1], वचन, वज्र, वर, वन, वरुण, वर्ष, वश, वसन्त, वस्तु (वस्त), वाक्य, वार, वास, विकार, विघ्न, विधि, विना, विपत्ति, विपद्, विरोध, विलाप, विष, विचार, विश्वास, विस्तर, विस्तार, विस्मय, वीर, वृक्ष, वृथा, वेग, वेला, वैद्य, वैर, वैशाख, वैकुंठ, व्यंजन, व्यवहार, व्याज, व्याकुल, व्यापार, व्रत ।

शक्ति, शंका, शंख, शठ, शत्रु, शरण, शास्त्र, शाण, शान्ति, शाप (श्राप), शास्त्र, शाला, शिक्षा, शिल्प, शिव, शिर, शीघ्र, शुक्र, शुक्ल, शुभ, शुद्र, शूल, शेष, शोक, शोभा, श्मशान, श्रद्धा, श्राद्ध, श्रीफल, श्लोक । संयम, संशय, संसार, संताप, संध्या, सगोत्र, संकल्प, संख्या, संग्रह, संग्राम, सज्जन, सती, सत्य, सदा, सनातन, संतोष, संदेह, सभा, समय, समस्त, समाधि, समुद्र, संपुट, सरल, सरस्वती, सर्प, सहकार, सहाय, सहायता, साक्षात्, सागर, साधु, साधारण, सामर्थ्य, सार, सारथि,

१. गढ़वाली में व का 'ब' हो जाता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDL

साहस, सुख, सुगन्ध, सुन्दर, सूचना, सूत्र, सूर, सृष्टि, सेना, सेवक, सेवन, सोम, स्तुति, स्तोत्र, स्त्री, स्थान, स्थूल, स्नान, स्नेह, स्पष्ट, स्वच्छन्द, स्वप्न, स्वभाव, स्वयं, स्वस्ति। हवन, हत्या, हंस, हठ, हार, हित, हृदय।

क्षण, क्षत्रिय, क्षय, क्षमा, क्षुद्र। त्रास, त्रुटि। ज्ञान।

तद्भव शब्द

गढ़वाली में सरलीकरण की विशेष प्रवृत्ति होने के कारण तत्सम शब्दों की अपेक्षा तद्भव शब्दों की संख्या कई गुनी अधिक है। यहाँ उदाहरण के लिए कुछ ही शब्द दिये जा रहे हैं :

अगने या अगाड़ी (अग्रे), अटालि (अट्टालिका), असज (असह्य), अण्थ (अन्यत्र), अदन्तो (अदन्ती), अमित्था (अमित), अंद्वार या अन्धार (अनुहार), अखोड़ (अखोट), अँग्वाल (अंकमाल), अगत्या (अगरु), अँगारो (अंगार), अधा (अर्घ), अनाड़ी (अनार्य), अलोणो (अलवण), अँगरो (अंकुर), अँडरु (अंड), अजाण (अज्ञान), अलसो (आलस्य)। आखर (अक्षर), आग (अग्नि), आज (अद्य), आँखि (अक्षि), आम (आम्र), आँसु (अश्रु), आँतड़ा (अन्त्र), आदो (आद्रक), आगल (अर्गला), आगास (आकाश), आछरी (अप्सरा), आदो (आद्र), आफ्त (आपत्)। इसी (ईषत्), इख (इक्षु), इत्यास (इतिहास), इथ्या (हयत्), उणदो (उनिद्र), उब्धो (उर्ध्व), उंदो (अध), उताणू (उत्तान), उकसासी (उच्छास), उच्चो (उच्च), उलू (उल्लूक), उधो (उद्घोत), उंगलि (अंगुल), उलंघण (उल्लंघन), उवास (उपवास), ऊन (उर्ण), ओखलि (उलूखल), औखाणो (आख्यान), औतार (अवतार), औसर (अवसर), औतो (अपुत्र), औंला (आमलकी), औगुण (अवगुणी)।

कंदूड़ (कर्णद्वार), कंठ्यालो (कंठमाला), कल्यौ (कल्यवर्त), कणसो (कनिष्ठ), कंगलो (कंकलिका), कड़ै (कटाह), कड़ो (कटु), क्वा (काक), काँडो (कंटक), काणसो (कनीयस), कारव (कक्ष), काठो (काष्ठ), काठगो (काष्ठक), काँसो (कांस्य), काँच (काचक), कामलो (कम्बल), कांठो (काठ पहाड़)। किसाण (कृषाण), कीड़ो (कीट), कीलो (कीलक), कुंजी (कुचिका), कुरेड़ी (कुहेलिका), कुजाणी (को जानाति), कुखड़ो (कुक्कुट), कूंजो (कुब्जक), कूल (कुल्या), कूड़ी (कुटी), कोदो (कोद्रव), कोख (कुक्षि),

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोठार (काष्ठागार), कौळी (केलि), कौंळ (कमल) । खल्याण (खलस्यान :), खज्याली (खजिका), खपर (खर्पर), खाट (खट्वा), खाण (खनि), खार (खारि), खलो (खल), खील (खिल्य), खोर (क्षीर) । गरो (गुरु), गरुड़ (गरुड़), गल्वाड़ी (गल्ल), गवरू (गर्वरूप), ग्वस्यूँ (गोस्वामी), गळो (गल), गधा (गर्दभ), गागर (गर्गर), गात (गात्र), गाणो (गान), ग्वालो (गोपाल), गाँड (गंड), गाख या गैख (ग्राहक), ग्वैर (गोपाल), गैवणी (गर्भिणी), गोरू (गोरूप), गोठ (गोष्ठ), गोस्यूँ (गोस्वामी), गोरो (गौर), गौ (ग्राम), गौड़ी (गौ), घ्यू (घृत), घणो (घन), घाम (घर्म), घागरी (घघरी), घीण (घृणा), घुगू (घूक), घुंढो (घुंट), घूण (घुण), घोड़ो (घोटक) ।

चणा (चणक), चपेटा (चपेट), चंवर (चमर), चलितर (चरित्र), चमार (चर्मकार), चन्द्रेण (चान्द्रायण), चाम (चर्म), चालनो (चालीनी), चार (चत्वार), चुलो (चुल्लि), चिरैतू (चिरातिका), चीणा (चीनक), चैत (चैत्र), चोंच (चुंचु), चोखू (चोक्ष), चोली (चौड), चौमासो (चातुर्मास), चौक (चतुष्क), चौंरी (चत्वारिका), चौर (चामर), चौथो (चतुर्थ), चौद (चतुर्दश) । छप्पर (छत्वर), छत्री या छतरी (छत्र), छक्का (षट्क), छला (छाल), छल (छल), छत्री (क्षत्रिय), क्ष्यअ्द (छिद्र), छाजो (छाज) । जइर (ज्वर), जग्स (यक्ष), जंगुली (जघन), जाड़ो (जाड्य), जाप (जप), जिकुड़ी (जीव), जीभ (जिह्वा), जुग (युग), ज्यू (जीव), ज्यूणो (जीवन), जेठ (ज्येष्ठ), जैम्यर (जंभीर), जै (जय), जौ (यव), जाँदरो (यंत्र), जाख (यक्ष), ज्यूराँ (यमराज), जोन (योनि), जोई (युवती), जौंल्या (यमल), झइल (ज्वाला), झख (झव) ।

डंडा (दंड), डागण (डाकिनी), डौंरू या डौंरो (डमरू) ।

तलो (तल), तातो (तप्त), तांबो (ताम्र), तीतू (तिक्त), तोथ (तिथि), तीस (तृषा), त्रीस (त्रिंशत्), तुमड़ो (तुम्बी), तोमड़ो (तुम्बक), तौ (ताप), दलिदर (दरिद्र), दाँत (दन्त), दादरो (दद्रु), दाड़िम्या (दाडिम), दीबो (दर्भ), दाथी (दात्रिका), दुदलो (दुग्धल), दूध (दुग्ध), द्यूर (देवर), दोण (द्रोण) । धन्नी (धरणी), धनकूर (धान्यकृत), धंदो (द्वन्द), ध्याण (दुहिता), धिकार (धिक्कृत), धुवाँ (धूम्र), धूलो (धूलि) । नयो (नव्य), नवाण (नवान्न), नांगो (नग्न), नोटो (न्यष्ट), नाच (नृत्य), नाक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDL

(नासिका), निमो (निम्बुक), निव्त (निमित्त), नितर (न तर्हि), न्यूँ (नीवी), न्यूरी (नूपुर), नौण (नवनीत), नौनो (नन्दन), नौनी (नन्दनी), न्यौ (न्याय) ।

पको (पक्व), परसे (परश्व), परार (परारि), पराल (पलाल), पगार (प्राकार), पँख् (पक्ष), पंडाली (प्रणाली), परवान (प्रवीण), पाछ (पार्श्व), पाथो (प्रस्थ), पातगो (पत्रक), पाखड़ो (प्रकोष्ठ), पाखो (पक्ष), पारी (पर्यंक), पाणि (पानीय), पीना (पिन्यक), पीठ (पृष्ठ), पींडो (पिंड), पुड़लो (पुटक), पूस (पौष), पूरो (पूर्ण), पैंया (पद्म), पोकी (प्रकृति), पोर (पूर्व), पौणी (प्राघुण), परसु (परशु) । फागुण (फाल्गुन), फाँसु (पाश), फूल (फुल्ल) । बल्द (बलीवर्द), बामण (ब्राह्मण), बाग (व्याघ्र), बांदर (वानर), बिरालो (दिबडाल), बैल (बिल्व), बैण (भगिनी), बौ (वधू) । भारो (भार), भात (भक्त), भाँडा (भांड), भैरों (भैरव), भीख (भिक्षा), भुइँ (भूमि), भुत्यॉ (भृत्य), भोल (भव्य वेला), भौज (भ्रातृजाया) । मनखि या मणस (मनुष्य), मये (मस्तके), मछो (मत्स्य), माणे (माणिका), मारछो (मारिष), म्वारी (मधुकरी), माँड (मंड), मुंडारो (मुंडारि), मुंदड़ी (मुद्र), मूसो (मूषक), मैत (मातृगोत्र), मोसो (मसि) ।

यख (यत्र-अत्र, याख), यत्त (यत्र) । रात (रात्रि), रांसो (रास), राखो (क्षार), रिख (ऋक्ष), रीतो (रिक्त), रीत (रीति), राणी (रानी), रीष (ईर्ष्या), रूखो (रुक्ष), रुप्या (रुप्य), रूड़ (रूढ़), रूप्सी (रूपसी), रैंण (रमणी), रोपणी (रोपण), रोणो (रोदन), रौंस (रस), रौंस (रमणरस) । लगुली (गुल्पिन्नी), लसण (लशुन), लंबो (लम्ब), लाखुड़ो (लगुड़), लाख (लक्ष), लाटूँ (लट), लिच्चक (लिप्सक), लीखो (इक्षु), लीखा (लिक्षा), लीसो (लसक), लौण (लवण) । वणांग[1] (वनाग्नि), बसग्याल (वर्षाकाल), वस्त (वस्तु), वथौं (वात), व्यारमैं (विक्षण), व्याले (विकाले), वक्कत (वल्कल), व्याणो (विहान), बेलम (विलम्ब) ।

समैं (समय), सण्द (सर्वत्र), सराद् (श्राद्ध), सग्वाड़ी (शाक-वाटिका), सरील (शरीर), सल्ल (शल्य), संकरांद (संक्रान्ति), सट्ट (शठ), सदो (सब), सामल (संबल), सांगड़ो (संकीर्ण), साँकल (श्रृंखला), साख (साक्षी),

१. गढ़वाली में 'व' का उच्चारण 'ब' हो जाता है ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिवाल (शैवाल), सित्लो (शीतल), सुभौ (स्वभाव), सुकिलो (शुक्ल), सुपिनो (स्वप्न), सुर (स्वर), सुमरण (स्मरण), सुर्ज (सूर्य), सुन्न (शून्य), सुद (सुधि), सुपो (सूर्प), सुआग (सौभाग्य), स्यूणी (सीवानी), सूर (सुरा), सूतो (सुप्त), सेत्लू (शीतल), सैमल (शिम्बल), सेन्दू (सैन्धव), स्वैण (स्वामिनी), सोनो (स्वर्ण), सौत (सपत्नी)। हँकार (अहंकार), हिंवाली (हिमानी), हौर (और), हींस (हिंसा), ह्यूं (हिम)।

संस्कृत के शब्द

गढ़वाली में संस्कृत से आये कई तद्भव शब्द प्राकृत, पाली और अपभ्रंश से बिलकुल मिलते-जुलते हैं। उनमें आपस में आश्चर्यजनक समानता है।

(क)	प्राकृत	गढ़वाली	प्राकृत	गढ़वाली
	सिंघाण	सिंगाणू	जोन्हा	जौन
	इसि	इसि	जइ	जै (यदा)
	तइ	तै (तदा)	उब्भ	उब्बो
(ख)	पाली	गढ़वाली	पाली	गढ़वाली
	गरू	गरो (सं० गुरु)	सुधा (सं० क्षुधा)	खुद
	छक्क (सं० षट्क)	छक्का	दुल्लभ (दुर्लभ)	दुलभ
	बाह्मण (ब्राह्मण)	ब्राह्मण	अच्छरा (अप्सरा)	आछरी
	सो (सं० स)	सो	सुव (शुक)	सुवा
	पंचास (पंचाशत्)	पंचास		
(ग)	अपभ्रंश	गढ़वाली	अपभ्रंश	गढ़वाली
	पुत्थ, पोत्था } पुस्तक	पुथड़ो, पोथी	पोट्टलि (पोट्टलिका)	पोट्टलि
			पाणी (पानीय)	पाणी
	मट्टी (मृत्तिका)	मट्टी	ओइ (अदस्)	ओइ
	जुवाण (युवन)	ज्वान	पपाल	पंडाल
	नवल्लो	नौलो		

ग—नव्य भारतीय आर्य-भाषाओं के शब्द—

गढ़वाली में और राजस्थानी, मराठी, गुजराती, ब्रजभाषा, अवधी, बिहारी, बंगला, नेपाली, सिंधी, पंजाबी आदि भाषाओं के कई शब्दों में अद्भुत समता है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

गढ़वाली ने कई शब्द इन भाषाओं से उधार लिये, क्योंकि बदरी-केदार और गंगोत्री-यमुनोत्री की यात्रा पर आये हुए विभिन्न प्रदेशों के यात्रियों और गढ़वालियों में सदा व्यावहारिक और धार्मिक सम्बन्ध रहा है। संस्कृत के कुछ तद्भव शब्द सभी भाषाओं में समान रूप से विद्यमान हैं।

(क)	गढ़वाली	राजस्थानी[1]	गढ़वाली	राजस्थानी
	डागण (डाकिनी)	डाकण	आछरी (अप्सरा)	अछरी
	औखाणो (आख्यान)	उखाणो	खाल (पानी का मतनाना	खाल
	राड़धाड़ (लड़ाई-झगड़ा)	राड़वाड़	खाल (चमड़ा)	खाल
(ख)	गढ़वाली	गुजराती	गढ़वाली	पंजाबी
	बगत (वक्त)	वगत	कुखड़ी	कुकड़ी
	चौथु	चौथु	इथैं	इथे
			होर (और)	हौर
(ग)	गढ़वाली	नेपाली	गढ़वाली	सिंधी
	मैत (मायका)	माइत	थेगली (कपड़े का टुकड़ा)	थेंगड़ी
	आफू (स्वयं)	आफू	तस्मै (खीर)	तस्मैं
	झणा	जना	बुंच्चो (गाँठ)	बुज्गो
	भोल् (कल)	(भोलि)		
(घ)	गढ़वाली	बंगाली	गढ़वाली	बंगाली
	बाछुरू (बछड़े)	बाछुर	वख या बखन	ओखाने
	बाड़ी[2] (घर)	बाड़ी	यख या यखन	येखाने

व्रजभाषा में घोड़े के लिए घोडौ, मारवाड़ी में घोड़ो, बघेली में घ्वाड़, गढ़वाली में घोड़ो का प्रयोग होता है। बहन के लिए गढ़वाली में वैण, पंजाबी में

१. गढ़वाली साहित्य की भूमिका, पृ० ३९ (लेख—श्यामचन्द्र नेगी) संपादक : हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'।

२. भट्टवाड़ी : भट्टों (ब्राह्मणों) की बाड़ी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भैण, उड़िया में भेणी, गुजराती में बेन, नेपाली में बैण, बंगाली में बोन, आदि में समानता है।

अनार्य भाषाओं के शब्द

गढ़वाल कोल, भील, किरात, शक, हूण, द्रविड़, खस आदि कई अनार्य जातियों का आवास रहा। इसलिए इन अनार्य जातियों के कई शब्द गढ़वाली में घुल-मिल गये हैं। अनार्यों में किरात और द्रविड़ सर्वाधिक शक्तिशाली रहे। द्रविड़[1] उत्तर-पश्चिम से आये थे और इधर उनका पर्याप्त प्रभाव था। भारवि के 'किरातार्जुनीयम्' और कालिदास के 'कुमार-संभव' में किरातों का पर्याप्त वर्णन मिलता है। किरातों की बस्तियाँ भी हिमालय में थीं। इसका उल्लेख महाभारत में मिलता है।[2] गढ़वाल के 'रवांई' क्षेत्र में आज भी कुछ लोग पीले रंग के दिखाई पड़ते हैं। किरातों का रंग भी पीला ही होता था। स्कन्दपुराण के केदारखंड में भीलों का उल्लेख मिलता है।[3] आज भी गढ़वाल में भीलों की 'वेधा' जाति के 'बेड़ा' या वादी विद्यमान हैं, जो केवल नाचने-गाने से अपनी रोजी कमाते हैं।

गढ़वाल के कुछ हरिजनों में कोलटा जाति के लोग आज भी कोल जाति के वंशज माने जाते हैं। कुछ 'कोली' लोगों का सम्बन्ध भी कोल जाति से मानते हैं। गढ़वाल के कोली जंगलों से रिंगाल लाकर क्त्रनो, ढकोलों, डलोणों, चंगेरो आदि गृहोपयोगी वस्तुएँ बनाते हैं। ऐसी अनेक अनार्य जातियाँ बाद में आर्यों में घुल-मिल गयीं, किन्तु उनके कई शब्द आज भी गढ़वाली भाषा में प्रचलित हैं। जैसे, डोमड़ा (डोम), कूड़ो (मकान), कुड[4]। किरान्ति भाषा का डाँडा-पाखाँ[5] (पहाड़ी चोटियाँ)—गिचो (मुँह), गुंजो[6]—किरान्ति भाषा का, गाड[7]—(नदी)। मध्य भारत की कुरि भाषा का चसु (ठंडा), चिसु[8], देनवार भाषा का बाँगो (टेढ़ा या मूर्ख) बांग्गो किरान्ति का।

१. डॉ० मुकर्जी : हिन्दू सभ्यता, पृ० ४१।
२. वनपर्व, अध्याय १४०।
३. केदार खंड, अध्याय २०६।
४. हंटर : ऐ कम्परेटिव डिकशनरी आव् दि नोन एरियन लैंग्वेज आव् इंडिया, पृ० १३४।
५. हंटर : वही, पृ० १४४।
६. हंटर : वही, पृ० १४५।
७. हंटर : वही, पृ० १५७।
८. हंटर : वही, पृ० १७०।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आस्मिक[1] लोगों ने आदिम कृषि-प्रणाली विकसित की थी। खोदने की लकड़ी के लिए उन्होंने 'लग्' 'लङ्ग', 'लिंग' शब्द का प्रयोग किया। संस्कृत में 'लाँगल' शब्द यहीं से आया है। गढ़वाली में कहीं-कहीं हल के लिए 'लंगला' का प्रयोग होता है। ऐसे ही 'गंगा[2]' शब्द भी इसी स्रोत से आया है। 'गंगा' गढ़वाल में बड़ी नदी के लिए प्रयुक्त होता है।

मुण्डा[3] शब्द

उन्दुरू या चकन्दरू : चूहा की जाति का; क्वास—कर्पास।

द्रविड़[4] शब्द

घुण, कोणो (कोण), उखोलो (उलूखल), खव्वटो (पैर), एक्सड़ो (जूता), खवैस (बदसूरत), फुंड् (और), खादरो (आला), दाखु (ऊन का वस्त्र), पुंगड़ो (खेत), ढलोणो (रिंगाल का एक बर्तन), नसुड़ो (हल), बाजी (साधु), मिलंगना, खस्या[5], क्वनो (रिंगाल का एक बर्तन)। कई शब्द घूमन्तू लोगों के भी गढ़वाली में आगये, जैसे—कूड़ो, कुढ्ढ[6]—चूहड़ों की भाषा का शब्द। कुछ कूड़ो की उत्पत्ति संस्कृत कुटी से मानते हैं।

देशज शब्द

गढ़वाली में देशज शब्दों की संख्या बहुत अधिक है। कई शब्द नदी-नालों, झरनों, पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं आदि की ध्वन्यनुकरण की देन हैं। कई शब्द प्रकृति के सूक्ष्म निरीक्षण और विवरण वैशिष्ट्य की देन हैं और कई शब्द खेतों में काम करते, जंगलों में घास काटते हुए पैदा हुए हैं।

१. डॉ० सुनीति कुमार चाटुर्ज्या : भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी, पृ० ५२।

२. डॉ० चाटुर्ज्या : वही, पृ० ५२।

३. डॉ० मंगल देव शास्त्री : भाषा-विज्ञान, पृ० २५६।
प्रोफेसर टी०, बरो की पुस्तक 'दि संस्कृत लैंग्वेज' के आधार पर मुंडा के कुछ शब्द संस्कृत में गये। उन्ही में से कुछ गढ़वाली में भी आये।

४. डॉ० मंगल देव शास्त्री : भाषा विज्ञान, पृ० २५६।

५. टी० बरो की पुस्तक 'दि संस्कृत लैंग्वेज' (पृष्ठ ३८०) के आधार पर खस जाति के लोगों को कहीं कहीं आज भी 'खस्वा' कहते हैं।

६. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग १, खण्ड १, पृ० ३४८।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

करकरो, कतमत, कल़कल़ी, कपाट, किकर्याण, कँ-बैं, कौंखाण, खतबत, खणमण, खल़खल़ो, खड़गड़ो, गमगम, चक्कार, चचराणू, चिलखाण, चरचराट, चुँच्याट, छंदमंद, छणमण, छुतबुत, जरजरो, झणमण, भुरमुस, दणमण, दरदो, रंग-र्याट, सिंस्याट आदि कई देशज शब्द हैं।

विदेशी शब्द

विदेशी शब्दों में अरबी-फारसी, अंग्रेजी, पुर्तगाली आदि भाषाओं के कई शब्द गढ़वाली में घुल-मिल गये हैं; कई अपना मूल अस्तित्व भी खो बैठे हैं। गढ़वाल में मुसलमानों का शासन तो न रहा, पर राजनीतिक हलचलों के कारण सम्बन्ध अवश्य रहा। दारा शिकोह का बेटा सुलेमान शिकोह औरंगजेब के डर से भागकर इधर आया था और श्रीनगर के राजा ने उसे शरण दी थी। ऐसा भी आभास होता है कि शाहजहाँ ने जौनपुर, रवाँई के इलाके पर हमला किया था, क्योंकि कई दन्तकथाओं में मुसलमानों के आक्रमण का प्रसंग आता है। तैमूरलंग ने भी गढ़वाल पर हमला किया था। कुछ तुर्की शब्द भी गढ़वाली में आये हैं। शासन की दृष्टि से अंगरेज़ों का पौड़ी गढ़वाल से सीधा सम्बन्ध रहा है। अतः अंग्रेजी के कई शब्द गढ़वाली में आगये। कचहरियों के द्वारा अरबी-फारसी का विशेष रूप से प्रचार हुआ।

अरबी-फारसी के शब्द

असल, अकल (अक्ल), अंताज (अन्दाज), अर्ज, अदौर (अदावत), अफसोस, अव्वल, असमान (आसमान), अमन, आम, आजाद, आसान, आदत, आखिर, आदमी, आमद, आबरू, आराम, आइंदा (आयंदा), आस्ते (आहिस्ता)। इजत (इज्जत), इन्तजार, इमदाद, इन्तजाम, इजाजत, इतफाक, इलाज, इसाफ, इक्त्यार (अख्तियार), इलम (इल्म)। उमीद (उम्मीद), उमर (उम्र), उजर (उज्र), उस्ताज (उस्ताद), ऐना (आयना), औरत़, औकात, औलाद, औजार।

कसर, कदर (कद्र), कतल (कत्ल), कसम, कब्जा, क़र्ज, कमबख्त, कसूर, कमीना, कदम, कलेजो (कलेजा), करार (इकरार), करामात, काबिल, काफी, काबू, कारीगर, कारबार (कारोबार), कानून, किमत (कीमत), किसम (किस्म), किस्मत, कीसा (किसह), कुनबा, कैम (कायम), कैदो (कायदा), कैद, कोशिश, कौल, कौम। खर्च, खराब, खसम, खासी (खफ्ती), खतम, खतरा, खबर, खबसूरत (खूबसूरत), खता, ख्याल, खातिर, खाक, खाण, खानदान, खामोश, खामखां (खाम-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ख्वाह), खिदमत, खिलाप, खुश, खुराक, खुलासा, खुशामद, खुब्बि (खूबी), खूब, खून, खैर, ख्यैस (ख्वाहिश)। गरीब, गलत, गरदन, गर्दा, गरदस (गर्दिश), गर्ज, गश्त; गनीमत, गरुर, गारद (गारत), गुना (गुनाह), गुर्दा, गुलाम, गुस्सा, गैर, गोश्त।

चंद, चंदा, चंगुल, चरबी, चाकरी, चाक, चापलूस, चाबुक, चाय, चालाक, चीज, चुगली, चेहरा। जंग, जंगी, जंजीर, जखम (जख्म), जमीन, जरूरत, जल्दी, जमात, जरा, जनानो, जनाना, जबरदस्त, जवान, जमानत, जरिया, जागा (जगह), ज्वान (जवान), जादा (ज्यादा), जात, जारी, जिद, जिकर (जिक्र), जिला, जिस्म, जिल्द, जिरह, जिन्दड़ी (जिन्दगी), जुदा, जुलाब, जुल्फी, जुम्मा, जुलम (जुल्म), जेब, जेवर, जेदात (जायदाद), जैर (जहर), जोर, जोश। झल्सा (जल्सा)।

टंटा।

तंत्र, तलाश, तकलीव (तकलीफ), तकदीर, तकरार, तनख्वा, तलब, तमाम, तरीका, तरकीब, तरप (तर्फ), तकाजा, तख्ता, तन, तपाक, तबदीलि (तबदीली), तवाई (तबाही), तबेत (तबियत), तमाशो (तमाशा), तर्की (तरक्की), तराजू, तर्ज, तलाक, तसरीफ (तशरीफ), तसवीर, तजुर्बा, ताक, तागत (ताकत), ताकि, ताजो (ताज़ा), तातील, ताजुब (ताज्जुब), तारिक (तारीख), तालिम (तालीम), तिजारत, तुनक, तुफान (तूफान), तेज, तैसील (तहसील), तैस (तैश)। दर्द, दम, दर, दप्तर (दफ्तर), दसकत (दस्तखत), दवंग, दमा, दरकार, दस्तूर, दरखास (दरख्वास्त), दरजी (दर्जी), दर्ज, दवात (दावात), दस्ता, दानो, दारमदार (दारोमदार), दाग, दाद, दागी, दाणो (दाना), दारू, दावत, दिक, दिमाग, दिल, दिक्कत, दिवान (दीवान), दुरस (दुरस्त), दुनिया, दुश्मन, देर, देरी, देहात, दोस्त, दौलत। नफा, नकल (नक्ल), नसीब, नक्सा (नक्शा), नकसीर, नजीक (नजदीक), नज़र, नतीजा, नखरा, नफरत, नमकीन, नब्ज, नमूना, नवाब, नाजुक, नादान, नालेक (नालायक), नासमझ, नाराज, नासूर, निशान, नुकसान, नुक्स, नैथ (नीयत), नेक, नौबत, नौकर।

परवा (परवाह), पर्दा, परेज (परहेज), पस्त. पसन्द, पलीत (पलीद), परवस (परवरिश), पाया, पुरजा, पुश्त, पेच, पेचिस (पेचिश), पेशगी, पेशतर, पेशा, पैदा, पैजामा (पाजामा), पैमानो (पैमाना) पैबंद, पोसाक (पोशाक)। फर्ज, फकीर, फरक (फर्क), फसल, फजूल, फतूर, फजीतू (फजीहत), फकत, फलांणू

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(फलां), फरमेस (फरमायश), फर्याद (फरियाद), फाका, फास (फाश), फिक्कर (फिक्र), फिदना, फीता, फिसाद, फुरसत, फैसला, फेट्ट (फायदा), फौज, फौरन। बयान, बंद, बंदा, बदमाश, बरतो (बर्ताव), बद्दी (बदी), बशर, बग्त (वक्त), बवाल, बरोबर, बरगत, बरदास (बरदाश्त), बाबत, बानो (बहाना), बाजी, बाकी, बादाम, बिगर (बगैर), बिरादरी, बिमार (बीमार), बजरग (बुजुर्ग), बुन्याद (बुनियाद), बेहद, बेहतर, बेबार, बेकूप (बेवकूफ), बैंस (बहस), बैम (बहम)। मजाक, मर्जी, मर्तबा, मरम्मत (मरोम्मत), मदत (मदद), मजूर (मंजूर), मर्द, मजबूत, मजाल, मसल, मलाल, मजा, मसूर (मशहूर), मंसा (मंशा), मतबल (मतलब), मालुम (मालूम), मामूली (मामूली), माफिक (मुआफिक), माफ, मासूल (महसूल), मातबर, मिजाज, मिनत (मेहनत), मिसाल, मुसीबत, मुकाम, मुनाफो (मुनाफा), मुकद्र (मुकद्दर), मुश्गल (मुश्किल), मुलाकात, मुकाब्लू (मुकाबला), मुनासिब, मुकर्रर, मुफ्त, मुलाजु (मुलाहजा), मेनत (मेहनत), मैमान (मेहमान), मोबत (मुहब्बत), मौका, मौज।

यतीम, यकीन, यार, याद। रस्ता (रास्ता), रंज, रकम, रग, रद्द, रसीद, रसम (रस्म), रहम, राज़, राजी, राहत, रिवाज़, रिस्ता (रिश्ता), रियेत (रिआयत), रियासत, रिस्वत (रिश्वत), रेजगारी (रेजगी), रैम (रहम), रोज, रोजाना, रौनक। लबादो (लबादा), लब्ज (लफ्ज), लाम, लाश, ल्याज (लिहाज़), ल्याकत (लियाकत), ल्याफ (लिहाफ), लैख (लायक)। वजै (वजह), वजन, वाजिब, वारिस।

शकल (शक्ल), शरम (शर्म), शर्त, शरीक, शक, शगस (शख्स), शरीक, शहीद, शराब, शरबत (शर्बत), शतीर (शहतीर), शहद, श्याम (शाम), शह, शामिल, शिकन, शिकश्त, शिकेत (शिकायत), शिकार, शैकि (शेखी), शैर (शहर), शोर, शोदा, शौक। सबर (सब्र), सजा, सकल (शक्ल), सपर (सफर), सबक, सर्दी, सगो (शहद), सलेका (सलीका), सगोर (शहर), स्वाल (सवाल), सामान, सिरप (सिर्फ), सिपाही, सुबा (सबाह), सुकर (शुक्र), सौदा।

हमेश (हमेशा), हद, हराम, हज़म, हरूफ, हर्गिज, हमला, हर्जानो (हर्जाना), हालत, हासिल, हाल, हिसाब, हिकमत (हिम्मत), हुकम (हुक्म), हुकुमत (हुकूमत), हैवान, हैसियत, होश, होश्यार (होशियार), हौस, हौसला, हौज।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तुर्की शब्द[1]

उजबक (मूर्ख), कैंची, कावू, कुली, गलीचा, चकमक (पत्थर), चाकू, तमग़ा, तोप, रोगा, बावर्ची, बहादुर, बेगम, लाश ।

अंग्रेजी शब्द

अपील, अफसर, अपरप्रेमरी, अमरीका, अस्पताल, असंबली, आपरेशन, आर्डर, आफिस । इनिसपैक्टर, इंच, इंजीनियर, इंटर, इंट्रेंस, इस्काउट, इस्कूल, इस्टाम, इस्पीच । कलट्टर, कमिश्नर, कंपनी, कंपोंडर, कर्नैल, कुमेटी, कापी, कालर, काग, कारड, कांग्रेस, कालिज, क्वाटर, किलास, कुल्लार, कुइला, कुनैन, केतली, कोट, कौंसिल । गजट, गार्ड, गिलास, गिलट, गिन्नी, गेट, गैस ।

चिमनी, चिट, चैरमन ।

जंपर, जज, जर्नैल, जनवरी, जाकट, जुलाई, जून, जेल, जेलर ।

टन, ट्रंक, टिकट, टिकस, टिमाटर, टीम, टीन, टुइल, टेम, टेसन, टैलीफून, टोल, टोनहाल । ठेठर । डबल, डाक्टर, ड्रामा, डिप्टी, डिस्ट्रिक्टबोर्ड, डिगरी, डिरेवर, डिउटी, डीपो ।

तारकोल । थर्मामीटर । दर्जन, दराज, दिसम्बर । नर्स, नकटाई, नवंबर, नंबर, निकर, निब, नोट ।

पल्टन, परेड, पलस्तर, पतलून, पाकट, पालिस, पार्टी, पार्सल, पास, प्राइमरी, पिंसन, पिंसल, पिलेट, पिट्रोल, पिन, पिपरमंट, पुटलिस, पुलिस, पेटीकोट, प्रैस, प्रैसीडेंट, पैसा । फर्स्ट, फलालैन, फरवरी, फरलांग, फारम, फिरांस, फिनैल, फीस, फटवाल, फुट, फेल, फेर, फैसन, फोटो । बंक, बम, बरांडी, बटन, बक्स, बनयाइन, बारिक, बालिस्टर, बास्कट, बिल्टी, बिर्लडिंग, बिगुल, बिरजिस, बिरटिस, बिराग, बुरुस, बूट, बैंड, बैरंग, बैस्कोप, बैरा, बोर्ड, बोर्डिंग । मसीन, मजिस्ट्रेट, मन्योर्डर, मई, मफलर, मलेरिया, मैनेजर, माचिस, मास्टर, मारकीन, मिनीसुपिल्टी, मिनट, मिल, मीटिंग, मैंबर, मेम, मोटर ।

रंगरूट, रवड़, रसीद, रपट, रासन, रजिस्ट्री, रिजिस्टर, रजिस्ट्रार, रिजल्ट, रिटाइर, रिकार्ड, रूल, रेल । लमलेट, लंबर, लाटरी, लाट, लालटेन, लेट, लेटर-

१. डा० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास; टिप्पणी से कुछ शब्दों के आधार पर, पृष्ठ ७२।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बक्स, लेक्चर, लैन, लैसंस, लैस, लोअरप्रेमरी। वास्कट, वारंट, वाइसराय, विक्टोरिया, वोट, वैसलीन।

सम्मन, सरज, संतरी, सरकस, सार्टिफिकेट, साइंस, सिगरेट, सिमिट, सितम्बर, सिलीपर, सिलेट, सुटर, सुपरडंट, सेकिंड।

हाईकोर्ट, हाईस्कूल, हारमुनिम, हैडमास्टर, हैट, होल्डर।

पुर्तगाली शब्द

अलमारी, अचार, आलपीन, इस्त्री, कमीज, कप्तान, कनिस्तर, कमरा, काज़, काफी, काजू। गारद, गोभी, गोदाम। चाबी। तंबाकू, तौलिया, तौला। नीलाम। परेक, पिस्तौल, पीपा। फर्मा, फीता। बालटी, बिसकुट, बोतल। मिस्त्री, मेज। संतरा।

फ्रांसीसी शब्द

अंग्रेज, कारतूस।

सूक्ष्म अर्थ-भेद

सूक्ष्म अर्थभेद की दृष्टि से गढ़वाली भाषा का अध्ययन भाषाविज्ञान के लिए बड़ा ही महत्त्वपूर्ण विषय है। सूक्ष्म अर्थभेद की जो अद्भुत प्रवृत्तियाँ गढ़वाली में मिलती हैं, उनसे उसके सूक्ष्मातिसूक्ष्म विवरण-वैशिष्ट्य और बारीकी से विश्लेषण करने की शक्ति का पता लगता है। उदाहरण के लिए 'कुतराण' 'किकर्याण' और 'कुलल्याण' इन तीन शब्दों को ही ले लीजिये। सूती कपड़े के जलने पर जो बास आती है, उसे 'कुतराण' कहते हैं। ऊनी कपड़े के जलने की बास को 'किकर्याण' कहते हैं। सूती-ऊनी कपड़े की बास को 'कुलल्याण' कहते हैं। ऐसे असंख्य सूक्ष्म भेद गढ़वाली भाषा में मिलते हैं।

कई शब्दों में ऐसा सूक्ष्म अर्थभेद रहता है कि उसका स्पष्टीकरण अन्य शब्दों के द्वारा प्रायः असम्भव-सा हो जाता है। जैसे 'कतमत' और 'कै-बे',-दोनों शब्द साधारणतया एक प्रकार की 'हडबड़ाहट' के लिए ही प्रयुक्त होते हैं, पर दोनों की अर्थाभिव्यक्ति में भिन्नता है। 'कतमत' में वासना-जन्य हड़बड़ाहट की अभिव्यक्ति है और 'कै-बै' में किंकर्तव्यविमूढता तथा बिना सोचे-समझे शीघ्रातिशीघ्र कार्य करने की प्रवृत्ति है। गढ़वाली में यदि कहेंगे कि 'वे सणी कतमती लैगे' तो उस भाव-विशेष की स्पष्ट ध्वनि का आभास हो जायेगा और यदि कहेंगे कि 'सो कै-बै करी घर ओणो छयो' तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस वाक्य से किंकर्तव्य-विमूढ़ता और बिना सोचे-समझे जल्दी-जल्दी काम करने की प्रवृत्ति का पता लग जायेगा।

'ल' और 'ल़' के उच्चारण-भेद से भी शब्दों में अर्थ-भेद हो जाता है। जैसे, काली (देवी) और काल़ी (काल़ी विशेषण); धौल (चाँटा), धौल़ (आवाज); वाल (अनाज की वालें), बाल़ (वाल); मोल (कीमत), मोल़ (गोबर); गल्या (व्यापार), गल्या (पड़ने वाला, आलसी)। 'अ' और 'अ्' और 'आ' 'आ्' के उच्चारण-भेद से भी अर्थभेद हो जाता है—जैसे : वड़ी (बड़ी विशेषण), बऽड़ी (ताई); कालो (काला), काऽलो (मूर्ख); खाल (चमड़ा), खाऽल (तालाब); खाण (खाना), खाऽण (खाना); आग (आग), आऽग (आगे); बड़ (पेड़), बऽड़ (बछड़ा), मन (हृदय), मऽन (इच्छा); खड़ी (खड़ी), खऽड़ी (खड़िया) आदि।

अवस्था के क्रमिक विकास के लिए एक ही शब्द कई रूपों में बदल कर सूक्ष्म अर्थभेद की अभिव्यक्ति करता है। जैसे : बाछी (बिलकुल छोटी बछड़ी), बछरी (बाछी से कुछ बड़ी), बछड़ो (कुछ और बड़ी), बछलो (बिलकुल बड़ी)। थोरी कटड़ी (छोटी), थोरड़ी (कुछ वड़ी कटड़ी), थोरड़ो (बड़ी कटड़ी), थोरलो (बहुत बड़ी कटड़ी)। गदनी (बहुत ही छोटी नदी), गदरी (बहुत छोटी नदी), गदनो (कुछ छोटी नदी), गदरो (छोटी नदी), गाड़ (नदी), गंगा (बहुत बड़ी नदी)।

संध्यक्षरों और संयुक्ताक्षरों के उच्चारण में भी अर्थभेद पाया जाता है। जैसे : देउ (देव), द्यौ (आकाश); सऊं (सवां), सौं (कसम); कुई (कुवां), क्वी (कोई); कैंऽ (कई), कैं (उल्टी); रऊ (तैरना), बौ (भाभी)।

विवरण-वैशिष्ट्य की दृष्टि से बारीकी से अनुभव और अर्थभेद का स्पष्टीकरण मिलता है। जैसे :

'कुतराण' (सूती कपड़े की जलने की बू), 'किकर्याण' (गरम कपड़े के जलने की बू), 'कुलल्याण' (सूती-ऊनी कपड़े के जलने की बू); 'बास' (साधारण बू), 'बसाण' (बासी खाने की बू); 'खिकर्याण' (मिर्चों के जलने की बू); 'पिपर्याण' (सन्तरों के छिलकों की), 'चिलखाण' (घी की), 'मड़ान' (मरे हुए की), 'कोंखाण' (पसीने की), 'अमाण' (खट्टे की), 'भपयण' (भाप की), 'मुत्राण' (मूत्र की), 'गुवाण' (पाखाने की), 'भमाण' (गर्मी की), 'सड़ान' (सड़ी हुई चीजों की), 'भुज्याणों' (शाक-सब्जियों की), 'तमाण' (तांबे की), 'पगलाण' (पानी की),

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'स्यपाण' (सीलन की), 'बुखाण (ज्वर की), 'तैलाण' या 'तिलखाण' (तेल की) आदि।

कुछ शब्दों में लक्षणा और व्यंजना के द्वारा अर्थभेद की अभिव्यक्ति होती है। जैसे, 'तैकू कल्याण करा, तब उ ठीक रास्ता पर ओलो' (शाब्दिक अनुवाद—उसका कल्याण करो, तब वह ठीक रास्ते पर आयेगा), परन्तु इसमें 'कल्याण' का अर्थ 'मारना' है, भलाई करना नहीं। ऐसे ही 'तुम क्य समझदा मैं तुमारी भी 'पातड़ी' खोल द्यूलो' (शाब्दिक अनुवाद—तुम क्या समझते हो, मैं तुम्हारी भी जन्मपत्री खोल दूंगा) इसमें 'पातड़ी' का अर्थ' 'पोल' से है, जन्मपत्री से नहीं; वैसे गढ़वाली में जन्मपत्री या पातड़ी दोनों शब्दों का प्रयोग होता है। 'ख्वटु ख्वसड़ा, चुपला नाँगा' (पैरों में जूते, सिर नंगा), इस वाक्य में आडम्बर पर व्यंग्य अद्‌भुत ढंग से कसा गया है।

'उज्याड़' शब्द का प्रयोग गढ़वाली में गाय-भैंस जब दूसरों के खेतों में चरती हैं, तब होता है कि 'तैका गोरुन उज्याड़ खाये' अर्थात् उसके पशुओं ने ('गोरु' या 'गाजी' गाय-भैंस दोनों के लिए प्रयुक्त होता है) 'उज्याड़ खाया'; किन्तु जब 'ब्वारीन उज्याण खाये' (बहू ने उज्याड़ खाया) वाक्य का प्रयोग होता है, तब 'उज्याण' के अर्थ में भेद हो जाता है। यहाँ 'उज्याल' भ्रष्टाचार के अर्थ में आता है।

कुछ शब्दों से ऐसा सूक्ष्म अर्थ-भेद व्यक्त होता है कि उसका स्पष्टीकरण सरलता से प्रायः असम्भव-सा ही है। जैसे :

'कलकली' : किसी की 'खुद' (याद आना) लगने पर गले पर कुछ होता है, उसी को 'कल्‌कल़ी लगणी' कहते हैं। 'दणमण' (आँसुओं का गिरना), 'छन्दमन्द' (इससे कुछ उपाय का-सा भाव टपकता है, किन्तु उपाय उसके लिए उपयुक्त नहीं है) 'यां कू छन्दमन्द ठीक भी बैठणो। 'खल़खल़ो' में चिकनापन के साथ कुछ और भाव भी मिश्रित है। 'चल़चल़ो' (चकम-दमक के साथ चटपटापन), 'कड़कड़ो' (नाराजगी के साथ क्रोध, कुछ अकड़ तथा मौन), 'तड़तड़ा' (सुन्दरता के साथ सीधा या लम्बा), 'नाक तड़तड़ो छ'। 'करकरो' (खुरदरा तथा पीड़ा), 'जरजरो' (अक्खड़पन के साथ वाचालता जैसे, 'चोर चरचरो जार जरजरो'); 'चरचरो' (झूठी सफाई के साथ वाचालता का सम्मिश्रण), 'रगर्‌याट' (बुढ़ापे की कमजोरी के कारण शरीर में कँपकँपी-सी तथा बुद्धि के दिवालियेपन का मिश्रण), 'लतपत' (खाना इधर-उधर गिराना, कपड़ों पर हाथ पोंछना, शरीर पर जूठा पड़ना), 'खरखरो' (ऊनी कपड़े का खुरदरापन तथा तज्जनित पीड़ा), 'छणमण' (बकरियों की घंटियों के स्वर), 'खण-मण' (गाय-बैल की घंटियों के स्वर), 'खणखण' (घोड़े, खच्चर की घंटियों के स्वर), 'सिंस्याट्'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(छोटे गदरे, छोटी नदी का स्वर), 'स्यूँस्याट' (नदी का स्वर), 'धुंध्याट' (जहाज का स्वर), 'भिगड़ाट' (भीड़ की अस्पष्ट ध्वनि), 'रूण-झुण' (वर्षा की बूँदों का बरसना), 'छुमछुम' (पहाड़ी स्रोतों का बहना)। इनके अतिरिक्त 'कणाट' (पीड़ा की कराहट तथा दैन्य), 'बराट' या 'लराट' (बकरियों की पीड़ा और भयजनित ध्वनि), 'छिवड़ाट' (किसी के सरकने के कारण उत्पन्न ध्वनि), 'भभराण' (आग का शब्द), 'वाडुलि' (किसी की याद आने पर एक प्रकार की हिचकियाँ तथा विरह की पीड़ा), 'चमराट' (कटी जगह पर पानी, नमक आदि के पड़ने से), 'वरबराट' (कटी जगह घर पानी पड़ने से पीड़ा की अभिव्यक्ति), 'चरचराट' (अधिक पीड़ा—कटे पर पानी पड़ने से), 'नरचर' (चलने की असावधानी, अशिष्टता और भद्दी चाल), 'छलवल' (तरल पदार्थों के छलकने की ध्वनि), 'चचराण' (लकड़ी के फटने की ध्वनि)।

कुछ शब्दों से विशेष अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। जैसे : 'बमताले' (एक प्रकार का नटखटपन तथा बिगड़ने का भाव), 'खंखल्यो' (कार्य के बीच में अकारण तटस्थ होकर अनुत्तरदायित्व का भाव), 'खुद' (संस्कृत—क्षुधा, पर इसके भाव में विशेष अर्थ की अभिव्यक्ति—मायके की याद और तज्जन्य पीड़ा—दोनों का मिश्रण), 'कुरमुर्या', 'झुलमुस', 'ककड़ाणू' आदि कई ऐसे शब्द हैं। 'कनो हरगण ह्वए' (हरगण= सं० अहरगण) अर्थात् कैसे दिन आये !

'उज्याड़' (दूसरे के खेत में गाय-भैंसों का चुगना), 'मेलाग' (देवता आदि की पूजा के अवसर पर गाँव में प्रत्येक के घर से जो भाग उगाहा जाता है), 'पैणो' (एक प्रकार का 'कल्यो' या 'कलेवा', जब बेटी अपनी ससुराल जाती है तो गाँववालों के लिए स्वाँली पकोड़ी ले जाती है), 'बयाल' (कभी-कभी अकस्मात् प्रकाश का होना और तज्जनित वातावरण 'बयाल ऐगे'), 'भुक्की' ('भुक्की पेणी'—गढ़वाली में प्रियजन हाथ ठोडी नाक तक लेजाकर 'च्-च्' ऐसी ध्वनि कर उस हाथ को मुँह पर लगाते हैं), 'फुंडुफूंका' (रहने भी दो तथा तटस्थ रहने का भाव)।

जनसमुदाय में सूक्ष्म अर्थ-भेद का प्रचार

जिन शब्दों से सूक्ष्म अर्थभेद की अभिव्यक्ति होती है, उनका समस्त गढ़वाल में व्यापकरूप से प्रचार है। 'पृथ्वीपुत्र' होने के नाते गढ़वालियों का धरती के कण-कण से सीधा सम्पर्क है। यहाँ के प्रायः सभी लोग खेती-बाड़ी करते हैं। बच्चे गाय-बकरियों को चराने के लिए बन-बन फिरते हैं। स्त्रियाँ घास काटती-काटती सारी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घाटियों को मीठे स्वरों से आप्लावित करती रहती हैं। पालसी[1] भेड़-बकरियों के झुंड के साथ बुग्यालों[2] में धरती-आकाश का पारस्परिक-मिलन देखते हैं। किसान खेतों में फसलों के साथ-साथ नये शब्दों की सृष्टि करते रहते हैं। इसीलिए गढ़वाली भाषा में भिन्न-भिन्न पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं, फल-फूलों, नदी-नालों, पर्वत-घाटियों. वनस्पतियों आदि का बारीकी से विवरण मिलता हे। प्रत्येक वस्तु के स्वभाव, बोली, विशेषता, ध्वनि आदि के लिए ऐसे शब्दों की सृष्टि हुई है कि शब्द का उच्चारण करते ही वस्तु-विशेष का सांकेतिक सूक्ष्म अर्थ मिल जाता है।

वस्तुओं का सांगोपांग विवरण प्रस्तुत करना तथा सूक्ष्मातिसूक्ष्म प्रवृत्तियों का वर्गीकरण एवं नामकरण करना गढ़वाली भाषा की अपनी विशेषता है। यहाँ के असंख्य पशु-पक्षियों की ध्वनियों के लिए कई शब्द हैं, जिनसे सूक्ष्म अर्थभेद की व्यंजना हो जाती है। असंख्य प्रकार के फल-फूलों की विशेष प्रवृत्ति में जो सूक्ष्म अन्तर है, उसको व्यक्त करने के लिए ऐसे शब्द हैं, जिनसे एकदम उनका संकेत मिल जाता है। हर प्रकार के अनाज के पकने, सड़ने, गलने, अधपकेपन, कच्चेपन पर किस प्रकार की गंध आती है, उसका शब्दों के द्वारा सूक्ष्म अर्थभेद किया गया है। प्रत्येक पदार्थ के वैचित्र्य और सूक्ष्म-परिवर्तन के लिए विशिष्ट शब्द हैं। प्राकृतिक वस्तुओं का अपार वैभव और वैविध्य होने के कारण सूक्ष्म-अर्थभेद के द्वारा ही उनका स्पष्टीकरण सम्भव है।

'नथ', 'नथुली', 'नथुलो'—इन तीन शब्दों का प्रयोग करते ही उनके आकार का सूक्ष्मभेद अभिव्यक्त हो जाता है। 'बाछी', 'बछरी', 'बछरो' 'बछलो'—ये चारों शब्द गाय की 'बछड़ी' के लिए प्रयुक्त होते हैं, पर चारों में आकार की दृष्टि से सूक्ष्म अर्थभेद हो जाता है। शब्द के उच्चारण से ही सभी समझ लेते हैं कि बहुत ही छोटी बछड़ी है।

पहले कहा जाचुका है कि कुछ वाक्यों में कुछ शब्दों का प्रयोग लक्षणा-व्यंजना के रूप में किया जाता है। जैसे—'तैन अपणी भवासी घाम पर लगेली' में 'घाम' का अर्थ धूप नहीं है, बल्कि सर्वनाश है। (उसने अपने परिवार का सर्वनाश कर दिया है।) 'कनी हुन्यार ह्वे'—यहाँ 'हुन्यार' का अर्थ 'बुरा' या मुसीबत है, न कि 'होनहार' (कैसा बुरा हुआ)? 'तैन त खंखल्यो करले' में 'खंखल्यो' का सूक्ष्म अर्थ ऐसे भाव

१. जो केवल भेड़-बकरियों के द्वारा ही अपना गुजारा करते हैं।
२. पहाड़ों की चोटियों पर कई समतल मनोहर स्थान होते हैं, जहाँ भेड़-बकरियों के लिए अनेक प्रकार की जड़ी बूटियां होती हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

से है, जिसमें अनुत्तरदायित्व, बीच में ही कार्य छोड़ने की प्रवृत्ति और तटस्थता—ये तीन अर्थ समाविष्ट हैं। ऐसे कई शब्द जन-समुदाय में प्रचलित हैं, जिनमें कई भावों की एक साथ अभिव्यंजना होती है।

'इनो कल्याण कर लो कि ववी बुवा याद करला'--यहां 'कल्याण' शब्द का अर्थ 'मारना' से है, न कि भलाई (ऐसा करूँगा कि माँ-बाप याद करेंगे)। 'तै कू सलपट करा' में 'सलपट' का शाब्दिक अर्थ सुधार से है, पर यहाँ 'लक्षणा' के द्वारा अर्थभेद किया गया है। 'फुंडु फूंका' गढ़वाली भाषा का अद्भुत प्रयोग है। 'जाने भी दो' के लिए गढ़वाली में 'फुंडु फूंका' का प्रयोग होता है, पर वैसे उसका शाब्दिक अर्थ 'फिर से जलाओ' है, किन्तु गढ़वाली में उसमें हमेशा यही भाव टपकता है—'जाने भी दो'! ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़वाली साहित्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५

गढ़वाली का प्रतिनिधि प्रकाशित साहित्य

गढ़वाली भाषा में लिखित साहित्य का समारम्भ सन् १७५० के आस-पास हुआ। विश्वम्भरदत्त चन्दौला[१] ने सन् १८६०-८० के बीच इसका आरम्भ माना है। श्यामचन्द्र नेगी[२] ने महाराजा सुदर्शनशाह[३] (सन् १८१५–५६) द्वारा लिखी गढ़वाली में गोरख्याणी (गोरखों के समय की बातों) से माना है। गढ़वाली के आरम्भिक कवियों में हरिकृष्ण दौर्गादत्ति रुड़ोला, हर्षपुरी और लीलानन्द कोटनाला के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं।

गोविन्दप्रसाद घिल्डियाल[४] ने 'गढ़वाली' पत्र में सन् १९०६ में इन तीनों व्यक्तियों की कृतियों पर प्रकाश डाला था और इनकी कुछ कविताएँ उसी वर्ष 'गढ़वाली' के कुछ अंकों में छपी भी थीं।

सन् १८७६ में[५] सिरामपुर के मिशनरियों ने गढ़वाली में **न्यू टेस्टामेंट** (बाइबिल) का अनुवाद प्रकाशित किया और सन् १९०० में गोविन्द प्रसाद घिल्डियाल ने संस्कृत **हितोपदेश** का गढ़वाली में अनुवाद किया था। सन् १९०५ में 'गढ़वाली' पत्र के प्रकाशन से लोगों का ध्यान गढ़वाली भाषा की ओर विशेष रूप से आकर्षित हुआ। विकास की दृष्टि से गढ़वाली साहित्य (लिखित) पाँच कालों में विभक्त किया जा सकता है।

१. आरम्भिक काल, २. गढ़वाली युग, ३. समाजसुधार युग या सिंह युग, ४. पान्थरी युग और ५. आधुनिक काल या गढ़वाली जन-साहित्य-परिषद् युग।

१. गढ़वाली साहित्य की भूमिका, पृ० ४६ (प्र० सं०—हरिदत्त भट्ट 'शैलेश')।
२. गढ़वाली का निबन्ध, पृ० १८ (सं० गोपेश्वर कोठियाल)।
३. राहुल सांकृत्यायन : हिमालय परिचय (१), पृ० २४६।
४. गढ़वाली साहित्य की भूमिका, पृ० (प्र० स०—हरिदत्त भट्ट 'शैलेश')।
५. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, भाग २, खंड १, पृ० ३३६।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१. आरम्भिक काल

आरम्भिक काल की कुछ फुटकर कविताएँ ही उपलब्ध होती हैं; जो 'गढ़वाली' पत्र में समय-समय पर छपती रहीं। गढ़वाली भाषा में सर्वप्रथम जो कविताएँ लिखी गयी हैं, उनमें से कुछ निम्नलिखित हैं—हर्षपुरी द्वारा लिखित **बुरो संग**, हरिकृष्ण दौर्गादत्ति द्वारा लिखित **चेतावनी** और लीलानन्द कोटनाला द्वारा लिखित **विरह**।

बुरो संग

अकुलौं[1] माँ माया[2] करी, कैकी[3] बी नी पार तरी।
बार[4] बिथा सिर थरी[5], वैकुवि कू रोयेंद[6]।
जख तख मिसे[7] लांद, झूटा-फीटा[8] सऊँ[9] खंद।
दियुं लेयुं तने[10] जांद, अपजस पायेंद।
आगो पाछो देखी जाणी, खरी खाणी चुप्प चाणी।
किलै[11] कद झुटि स्याणी[12], गांठी पैसा खोयेंद।
मैंत बोदू भली बात, सोच कदु दिन रात।
मुरखू का संग साथ, ज्यान जोख्यूं[13] पायेंद।
आँखु देखि सुणी जाणी, बटोरों मां माया लाणी।
जगत की गालि खाणी, विचारियुं चाहेंद।
लगणु नी वैकी बाणी, जै की होन दुजि काणी।
पाछ पड़द खैंचा ताणी, ज्यान जोख्यूं पायेंद।

चेतावनी

अलो भायूं! क्या छ? कख तइं पड़्यूं घर मां।
विदेस्यूं न देखा? कनि कनि कन्याले जगत्त मां।
करा प्यारों अब त, जतन कुछ अप्णा विषय मां।
न खोवा हे चुच्चों, निज दिन अमोला मुफत मां।

विरह

आयो चैतर मास, सुणा दौं मेरी ले सास
वण-वणूंडें[14] सबी मौली[15] गैन, चीटें[16] मौली गैन घास

१. कुलहीन, नीच, २. प्रेम, ३. किसी की, ४. बारह, ५. आजाती हैं, ६. रोना पड़ता, ७. बातें, ८. झूठे-सच्चे, ९. कसम, १०. बेकार, ११. क्यों, १२. इच्छाएँ, १३. खतरा १४. वनस्पतियां, १५. हरी भरी हो गयीं, १६. पहाड़ी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्वामी मेरो परदेस गै तो, द्वी तीन होई गैन मास
अज्यूं[1] तई[2] कुछ सुणी[3]-नि-मणी, ज्यूं[4] को ह्वेगे उत्पास[5]
जौंका स्वामी घरू छन, तौंको होयुं छ विलास
रंग-विरंगे चादरे ओढ़ी-ओढ़ी, अड़ोस-पड़ौस सुहास ।

२. गढ़वाली युग

'गढ़वाली युग' 'गढ़वाली' पत्र के प्रकाशन से ही आरम्भ होता है। सन् १९०१ में 'गढ़वाल यूनियन' वनी और उसका ध्यान गढ़वाली की ओर आकर्षित हुआ। सन् १९०५ में 'गढ़वाली' पत्र के पहले ही अंक में सत्यशरण रतूड़ी की **उठा गढ़वालियों** नाम की कविता छपी। तभी से विभिन्न प्रकार की कविताएँ गढ़वाली में छपने लगीं। इस युग में सत्यशरण रतूड़ी, चन्द्रमोहन रतूड़ी और आत्माराम गैरोला की अनेक रचनाएँ छपीं, जिनमें से कुछ विश्वम्भर दत्त चन्दोला द्वारा सम्पादित 'गढ़-वाली कवितावली' में संग्रहीत हैं।

सत्यशरण रतूड़ी की **उठा गढ़वालियों**[1] :

उठा गढ़वालियों, अब त समय यो सेण[6] को नीछ।
तजा यीं मोह-निद्रा कू अजौं तैं जो पड़ीं ही छ।
अलो ! अपणा मुलक की यीं छुटावा दीर्घ निद्रा कु,
सिरा का तुम् इनी गेहरी खड़ा मां जींन गेर याल्यें।
अहो ! तुम मेर[7] त देखा, कभी से लोक जाग्यां छन,
जरा सी आंखत खोला कनो अब धाम चमक्यूं छ।
पुराणा वीर् व ऋषियों का भला वृतान्त कू देखा,
छयाई ऊँ बड़ीं की ही सभी सन्तान तुम भी त।
स्वदेशी गीत कू एक दम् गुंजावा स्वर्ग तैं भायों,
भला डौंरू कसालू[8] की कभी तुम कू कभी नी छ।
बजावा ढोल सणसिंघा, सजावा थौल[9] कू सारा
दिखावा देश-वीरत्व भरी पूरी सभा बीच।

१. अभी, २. तक, ३. कुछ पता लगना, ४. प्राण, ५. उदास, ६. सोने, ७. बाहर, ८. वाद्य यन्त्र, ९. मेला।

१. विश्वम्भर दत्त चन्दौला : गढ़वाली कवितावली, पृ० १-२।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

उठाला देश का देवतौं सणी, बांका भड़ू कू भी।
पुकारा जोर से भायों घणा मंडाण[1] की बीच।
करा प्यारों। करा कुछ त लगा उद्योग मां भायों,
किलै तुम सुस्त सा बैठ्यां छया ई और क्या नी छ ?
करा संकल्प कू सच्चा, भरा अब जोश दिल् मां तुम्,
अखाड़ा मां वणा तु सिंह गर्जा देश का बीच।
प्रचारा धर्म विद्या कू, उड़ावा झूट छल सारा
फुरावा सर्व गुण शक्त् यों, करा ज्यांमा बड़ाई छ।
बजावा सत्य कौ डंका सबू का द्वार पर जैक
भगावा दुःख दारिण करा शिक्षा भली जोछ।

चन्द्रमोहन रतूड़ी[1] की **देववण को वर्णन** (देवबन का वर्णन) :

आज्कल् छौं मैं बिचारण लग्यूं देवतों का वणूमां।
आकाश् लव्योणक[2] कर खड़ा पर्व्वत का सिरौंमां ॥
ठंडी हल्की तलती' र सफा वायु का और सीतल्।
निर्मल् उज्ज्वल् सरस जल की उत्पती की जगींमां ॥
जादा नत्दीक् रहण पर भी तेजवान् सूर्यदेव।
कड़ी दृष्टिन् कविमि यश नी देखदो तापकारी ॥
औंर्नारोंदा, कृपण, टुकड्या, सख्त बुन्दून्यखेद।
वर्षा कर्दो पर बरफ का नर्म, हंस्दासि फूलून ॥
यै तोहोंदन् अब फटिक या चांदि का ये पहाड़।
नीला आकाश् निस तब हर्यां देवदारु विशाल ॥
पौंदन् शोभा कत्तिनि, सूर्य-चन्द्र-प्रभा से।
क्या की देव्ता निछन यख यीं रम्यता भोगदारा ?
....उड़दो मेरो मन यखन पर, फिनी अपणा गंगाड़,[3]
प्यारा मैक् छन् फिरमि अपणा सारि[4] सेरा[5] व सौड़॥
जोड़दा हात में यखन अपणी मां सि भागीरथी कू।
ई का गोदस्थित हि अपणा जन्म का गोदि गौंक।

१. नृत्य समारोह २. पकड़ने के लिए, ३. खेत, ४. खेत (रोपण के), ५. मैदान।

१. विश्वम्भर दत्त चन्दौला : गढ़वाली कवितावली, पृ० ४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आत्मा राम गैरोला[1] की **पंछी पंचक :**

अरे जागा जागा कब बिटि[1] च कागा उड़ि उड़ी
करी.........'काका' 'काका' घर घर जगोणू तुमसणो।
उठो गैने पंछी करण लगि गैने जय जय,
उठा भायों जागा भजन बिच लागा प्रभुजि का।
घुगूती घुगूती घुगति[2] घुगता की अति भली
भली मीठी बोलो मधुर मदमाती मुदमयी।
हरी डांड्यो[3] धुनि पर धुनि जो छ भरणीं
हरी जी की गाथा हिरसि हिरसी स्या च करणीं।
'कुऊ कूऊ कुऊ कुउ कुउ कुऊ कूउ कुउऊ'
छजो[4] धारू धारू[5] बणु बणु बिटी गूंजण लगीं।
हिलांसू[6] की प्यारी जिउ खिंचण बारी रसभरी
सुरीली बोली स्या स्तुति भगवती जी कि करद।
....'तुही तूही तूही' सुरम बणु मां सार सिंचिक,
पुराणू शास्त्रू को मरम मय बोली बिमल मां।
प्रभू की ख्याती कोयल च करणीं तार सुर से
"तु तूही में तूही महि सब हि तूही तुहि तुही"
टिटो[7] च्यौलो म्यौली छितरि तितरी ढेंचु मंडकी
रसीली तानू कू भरि भरि हरी जी कु भजद।
उठा प्यारों प्यारी भिनसरि[8] कि लूटा विभक्ता,
छ जो छाई नाना प्रकृति जननी का रहसु से।।

इसी युग में बलदेव प्रसाद शर्मा 'दीन' ने **रामी** (बाटा गोड़ाई) और **जसी**, दो सुन्दर कृतियाँ रचीं। इनमें से 'रामी' का गीत बहुत ही लोकप्रिय हुआ। यहाँ **रामी** का कुछ अंश दिया जा रहा है—

रामी

'बाटा गोड़ाइ[9] क्या तेरो नौं[10] छ, बोल, बौराणि[11] कख तेरो गौंछ[12] ?'

१. से, २. फाख्ता, ३. पहाड़-पहाड़ियाँ, ४. है वह, ५. चोटियों, ६. पक्षी, ७. पक्षी विशेष, ८. प्रातः, ९. रास्ते में गोडनेवाली, १०. नाम, ११. स्त्री, १२. गाँव।

१. विश्वम्भर दत्त चंदोला : गढ़वाली कवितावली, पृ० ५४-५५।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

'बटोही-जोगी ! न पूछ मैकू। केकु पुछदि, क्या चैंद दवैकू ?
रौतु[१] की बेटि छौ, रामी नौछ। सेटु की ब्वारि छौं, पालि गौछ।
मेरा स्वामी न भी छोड़ी घबर। निर्दयी ह्वे गैने मई पअर।
ज्यूरा[२] का घर नी जगा मैकू। स्वामि विछोह होयूं च जैंकू।
रामी तैं स्वामी की याद ऐगे। हाय-कूटिल[३] छूटण लैगे।
'चल, बौराणी, छैलू[४] बैठी जौला। आपड़ी खैरी[५] उखीमू लीला।'
'जा, जोगी, अपड़ा बाठा लागण। मेरा सरील ना लऊ आगअ।
जोगी ह्वेकी भी आंखी नि खूली। छैलू बैठलि त्यरि दीदी-भूली।'
'बौराणी ! गाली नी देणी भोतअ। करव रैंद गौंको सयाणो रौतअ ?'
जोगी न गौं मा अलंक लाई। भूखो छौं, भोजन देवा मई।
बूडडी माइ तैं दया ऐगे। खेतु से ब्बारी बुलौण लैगे।
'घअर और ब्वारी त्। झट कैकअ। घर मू भूखो चअ साधु एकज।'
'सासु जी, कैकू बुलाये रौलअ[६]। ये जोगी लगीगे आज बौलअ[७]।
ये जोगी कू नि पकांदू रोटी। गालि देने येन खोटी-खोटी।
ये पापी जोगी शरम नीचअ। कैकुतैं आये हमारा बीचअ ?''
'अपड़ी ब्वारी समझऊ भाई। भूखो छौं, मात बणावा जाई।'
रामि रुसाड़ों[८] झुलयोण लैगे। स्वामो की याद भी औण लैगे।
'मा लू का पात मा धारे मातअ। भो तेरा भात नी लांदु हाय।
रामी का स्वामी की थालि माजअ भात्त दे, रोटि मैं खैलो आज।'
''खांदु छै जोगी तअखाई लेदा। नी खांदो जोगी तअजाई लैदी।
भतेरा जोगी झोलीऊ ल्हीकअ। रोजाना घूमि निपौंदा भीकअ।''
जोगी न आखीर भेद खोले। बूडडी माई से इनो बोले।
''मैं छऊं माता तुम्हारो जायो। आज नौ साल से घअर आयों।''

तारादत्त गैरोला की 'सदेई' का भी गढ़वाली भाषा में अपना अलग स्थान है। 'सदेई' की कुछ पंक्तियाँ गढ़वाल के कण-कण में व्याप्त हो गयीं। घसियारिनों के मीठे स्वरों में 'सदेई' की कसक उमड़ पड़ती है।

१. रावत, २. विधाता, ३. कुटला, ४. छाया, ५. कथा ६. सास, ७. पागलपन, ८. रसोई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सदेई की कुछ पंक्तियाँ यहाँ दी जा रही हैं—

जाड़ो तसिगे[1] प्रकृति बिजिगे[2],
पशु वा पंछी सभी जी गयेन।
जाड़ान जो सुन्न न होई गै तो,
स्यो वौड़ि[3] गे ल्वै रस सार प्राण।
डाली व बोटी वण व वणोंदी,
निर्लज्ज जाड़ान करेति नांगी।
अनेक पैरया लेन अब रंग की,
बसन्त का स्वागत कृत साड़ी।
गाड[4] गधेरा[5] अर पंछी पौन,
छया जो जाड़न सुन्न होया।
कर्ण बसे कोलाहल लगि गैन,
खुशी बसन्त की मनौण लैन।
शरीरो कलेजा पहुँचौंण रायावायु,
स्या घैंत स्वार्णा[6] अब्र लागदे छ।
सुगन्ध फूल[7] दगड़े मिलीक,
अमृत पिलाई पुलकौंद पौन।
सफेद रत्ता[8], पिंगला व नीला,
भांति व भांति छन फल फूल्या।
समीन्न यून प्रकृति पुरुष सी,
सजाई दीने रति रंग भूमि।
कुलूड़ि भि फूलि अर फ्यूंली फूली,
गयेन फूली वण वो वणोंदी।
गुलाब फूल्यों अर कूजों फूल्यो,
फूली गयेन लगुले[9] व झाड़ी।
आरु, घिंघार अर आम डाले,
निम्बू, नारंगी भित फूलि गैन।
चम्पाभि, जाईभि चमेलि फूलि,

१. बीतगया, २. जाग गयी, ३. लौट गये, ४. नदी, ५. नदिया, ६. सुन्दर, ७. साथ, ८. लाल, ९. लता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बुरांस घारूँ मंग अंचि फूल्यों।
सिलंग फली सब ठौर फूली,
गईन फूटि कलि कोंपलें भी।
क्या घर क्या बोण[१०] सभी जगौं मां,
सिलंग की बास सुवास फैली च।
छन रंग नया (ताजा) अर रंग नाना,
सुवास नाचा अर गीत नाना।
अनेक नाना विधि का न स्येन,
वि दिखेंद, सूंघेंद, सुणोंद जा ना।
गीतु सुरिला छन पंछी गाणा,
वीं कोकिला की पर प्यारि थक।
सुणोंद चारू दिशि दूरु-दूरु,
दुखौंद ज्यू कू सहदेई कोछ।
पंछी तु गाला छई मास ओरे,
चेड़ो[११] कफू[१२] बासलो चैत मास।
सिलंग डाली पर फ्यूँलि गाली,
ना पास केकु ज्युकड़ी[१३] झुरौंद।
हल्या रयों मां छन मस्त रौंकणा,
पाख्यों घस्यारे छन गीत गाणी।
लगादू भौणे छन गीतू मांगे,
स्वालू जवाब हुहरौंण लागी।
रैबार[१४] रै पार हिलांस[१५] प्यारी,
कू-कू करी कूकद लंवि कू-कू।
झणन्यालि गैरी-छ गदरियों मां,
स्या म्योलड़ी भी कना गीत गाणी।
भौंरा छया जो सुनसान ब्याले,
स्ये आज फुलु-फुल मांन गुजराण।
यैं फुल की केशरी फुल वै मां,
लिजाण लाग्यां छन स्वार्थि भौंरा।

१०. वन, ११. पक्षी विशेष; १२. पक्षी, १३. हृदय; १४. सन्देश; १५. पक्षी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इनी निराली अर भांति भांति,
छ काम होणु प्रकृति पुरुष को।
सृष्टि छ सारो उत्सौव मनोणी,
खुशी मनौणी खिलखील हंसणी।
बसन्त ए मा रज ताल-बात,
आयुँ छ गर्भाषय वीजु मांगे।
जणन कु जन्तु - जननी जनक को,
छ जग - जोड्यूँ जग मांग गां तां।
सिलंग नीस[१६] सहदेई बैठी,
सुणणी छ देखणी वण की वहार।
तैं मैलि डाली मुं सदानि औंदे,
खुदेड़ सैदी खुद बिसरौण।
सैदी कु औंदे जब याद मैतै,
दगड्[१७] याणियों की भि छ याद औंदा।
वणूं वणोंडो कि भि याद औंद,
धारू व गाडू कि भि याद औंदा।
चौंरी[१८] मां बैठी च खुदेड़ सैदी,
बौली सी होई खुद से सदेई।
चड़ी सी रीटी भोर भरि ज्यू स्या रोंदे,
इना इना वैन सुबैन बोदे।
हे ऊँचि डांडयों[१९]तू नीसी[२०] आवा,
धणी कुलांयों[२१] तु छांटि जावा।
मैं ते दर्गी छ खुद[२२], मैतुड़ा[२३] की,
बाबाजी को देखण देश देवा।
मैतअकि मेरी तु पौन[२४] प्यारी,
सुणों त रैबार[२५] तु मां को मेरी।
गाडू-गदअन्यों[२६] व हिलांस[२७] कफ्फू,

१६. नीचे, १७. सहेलियों, १८. चबूतरा, १९. पहाड़, २०. नीचे, २१. चीड़, २२. याद २३. मायका, २४. पवन, २५. सन्देशा, २६. नदी-नाले, २७. पक्षी विशेष, ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDi

मेतअका मेरा तुम गीत गावा।
वारअ ऋतु बौड़लि[२८] बार मास,
आली व जाली जनि दाई[२९] फेरो।
आई निजाई निरभाग मैं कू,
क्वी मी नि आई ऋतु मेरी दात[३०]।
बसन्त मैना सब का त माई,
मेटॅण आला वहिण्यों कु अपणी।
दीदी - भुली - मिलीक गीत गालो,
गला लगाली खुद विसराली।
मैत्यों कि भेजी कपड़ों की छाल,
पैर्ली विसाली कनु से मिजाज।
लड्यालि[३१] मेरो कुई माई होंदो,
कलेऊ लौंदो व दुरौंदो पैणा[३२]।
लठ्यालि होलो निरमाग मै त,
पीठी नि की होयन माई-वैणा।
करीं पछिण्डि छऊँ धौलि[३३] पार,
गाऊ विदेशी, अर दूर देश।
जवान ह्वै गयूं, लड़कालि[३४] भी गयूं,
मेरी करो नी कैन खबर न सार।
मैतअकि देवी छऊँ, झाली-माली,
मेरी सुणियाल विपत्ति भारी।
दियाल मैंकु इक भाई प्यारो,
देखीक जैंकु खुद बिसरौं में।
भाई की मुखड़ी जब देखि लेंदो,
होंदो सुफल जीवन यो त मेरो।
मैं कूत नी छ कुछ और इच्छा,
समान भाई नीछ, और नी छ की भी।

२८. लौटान, २९. गेहूँ जौ की मंडाई, ३०. समय, ३१. सम्बोधन (बेचारी), ३२. बाँटने के लिए कलेवा ३३. नदी का नाम, ३४. बचपन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देली तु जो यो वर आज मैंकू,
मैं देउलो त्वै सरवाच देवी।
जो भाई होलो तो अठ्वाड़ धूलो,
पंडौङ नचौलो अर जात धू लो।
खोंदू अभी नितर प्राण अपणों,
सहाय ह्वै जा दुर्गा-भवानी।
देवी भवानी जननी जगत की,
प्रसन्न होंदे वर तैंकु देंदे।
होलो सदेउ इक भाई तेरो,
बड़ो प्रतापी मिललो वो त्वैकू।
आकाशवाणी इन वीं न सुणी,
सुपनों छ यो या भरमौंणु की मैं।
या मेरी होली कुल इष्ट देवी,
दन्दौल[३५] नाना विधि कर्दी मनमां।
गई सदेई जब्र सांझ होये,
सिलंग डालि सणी भेंट देण।
धर्दी छ वा धीरज शांत होंदें,
लगदे छ धन्धें पर स्थान धरका।

'फुलकंडी' के नाम से योगीन्द्र पुरी का कविता-संग्रह इसी युग की देन है। 'फुलकंडी' के कई गीत वहुत ही ललित और मधुर हैं। उनकी रैबार नाम की कविता बहुत ही लोकप्रिय है—

पौन तू प्राण मेरी, दासि छौमें भि तेरी।
जैं दिशा भौंर[१] मेरो, तैं दिशा भारी फेरो।
देखि स्वामी को डेरो, बोलि रैबार[२] मेरो।
भौंर तू प्राण मेरो, केशरू को रसिया।
बागों को तू कसिया, फूलु को छू हसिया।
कै[३] विराणी हि जाई[४], देखिकी तू ना भूल।
भौर अलसीगे[५] तेरो, यो गुलाबी सी फूल।

३५. विचार।

१. प्रियतम, २. संदेशा, ३. किसी, ४. स्त्री, ५. मुझो गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

भौर की आश धरी, फूली गुलाब कली।
भौर विदेशु रम्यों, नी छ या बात भली।
खूब मैदान बड़ा, बाटामां त्वै मिलला।
हौंसिया[१] लोग रंदा[२], सेठुका गांऊ भला।
सेरो[३] चोसरसी बिछयूं, चौकोण्यों चारि गाउ।
नैर सीं कूल भली, पट्टि चौरास नाऊं।
नौर नोटयाल[४] रहंदा, खूब ज्यूंदीको सेरो।
नैणिकी कूल भली, जा गडयालू[५] को डेरो।
किलकिलेश्वर छै तखी[६] मैति[७] मादेव मेरो।
'महन्तयोगीन्द्र' पूरी राखला ध्यान तेरो।

बुड्या जवाई (बूढ़ा दामाद) पुरी की बहुत ही लोकप्रिय कविता है—

(१)

बुढ्याकू बेटि क्या देणि छ
मुणडमा[८] आपदा लेणि छ,
वर्ष द्वी मांज मरि जाँदो छ
छोरि[९] कू रांड करि जांदो छ।

(२)

मुर्खलो[१०] खोसि जब रोंदी वा
दु:ख का बैन यना बोदि वा,
बाबा जो तुमन क्यों सैंत्यो मैं
फेंकणया होइ कनु व्वेकु मैं।

(३)

माजि तिन कोखि क्यों राख्यो मैं
होंद ही केकु नी फेंक्यो मैं,
केकुतैं लाड़ करि पालयो मैं
फेर ये दु:ख मां डाल्यों मैं।

१. रसिया, २. रहते, ३. खेत (सिंचाई का), ४. गांव का नाम, ५. बड़ी मछली, ६. वहीं, ७. पीहर, ८. सिर में, ९. लड़की, १०. कानों का जेवर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(४)

त्वेन जो बेटि नी जाण्यों मैं
गोरू या भैंससी जारयों मैं,
पन्द्रसौ लेणिछै त्वैमेरी
यांकुही होइ तू मां मेरी।

(५)

धर्मदी कर्म नीजाण्यों जो
जात्यादी रूपभी नीमान्यों जो,
शोचदा वर्ष मैनौको छौं
साठ का बुढ्या कू दीने छौं।

(६)

बेचितैं पुडांड़ि[1] अर कूडी[2] कू
पन्द्रसौ दीनि त्वे पापी कू,
बाबा जी त्वेकू ह्वै सौकारी
मेरारै भाग मा जीलारो।

(७)

कीराकी होइ दै जो काले
चाँदिसी चमकदी वो वाले,
हारादी छड़ा छन सी मैकू
दैव यनु ना करी तू कैकू।

(८)

माजि तिन थैलि पर दीने डीठ
बेटिकू फेरी जो यनि पीठ,
त्वेकू वा थेली ही रई जान
लोक परलोक ना हो यो यान।

१. खेत; २. मकान।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

(९)

कै घड़ी दिन्या तिन मैंकु बांद
वर्ष का बीच ह्वैग्युं रांँड,
त्योंखि भी मैकू तैंनीछ आज
दैव ही रखलो मेरी लाज।

(१०)

गैणा जो लोगु का पर थारी
तौं की भीं बात रै दिन चारी
नाक पर मुर्खलो रये मेरा
स्योभि छै मासमा गये डेरा।

(११)

मार अर गालि देंदान सोरा
सैसुरी मैतिनी क्वीभि मेरा,
पूछरो आज नी क्वीभि मैकू
बाबा जी रोण मिन क्या आज त्वेकू।

(१२)

क्वीभि शुभ काम जब होंदान
मैंकू तैं क्वीभिनी बोदान,
सभी मा बैण वख जांदिन
गीत अर मांगल गाँदिन।

(१३)

कब्बि जो भूलिकी गैगी मैं
राँड निलंज्ज बस ह्वैगी मैं,
मैकु तैं डैणा सब बोदान
देखि मैं खाण जनु औंदान।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(१४)

राँड कू बारनी त्यौहार
राँड कू केकुछी श्रृंगार,
राँड ह्वै डोमू से भि नीच छ
राँड को जगतमा क्वीभि नीछ।

(१५)

मुख भी स्वामि को नी देख्यो
सुख संसार को नी देख्यो,
स्वीणा नी देखे सुख की रात्त
लाण औं खाणकी क्या बात्त।

(१६)

बालि ही राँड मैं ह्वैग्यूं जो
जन्म की दुःखिया रैग्यूं जो,
दोष यां माँग नी क्वी मेरो
बाबा जी पाप छ यो तेरो।

(१७)

दुखि ये चित्त की हड्कार
रोणु बी पीटणू फिड्कार,
कल्लो तै बंश को संहार
जागलो तब्बि यो संसार।

(१८)

थैलि कै काम जो ऐ जाली
भैंसि वा भेल कू ह्वै जाली,
मुकद्मा जोर को लै जालो
थैली "योगीन्द्र" वो खैजालो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

चक्रधर बहुगुणा की भी अनेक कविताएँ इस युग में प्रकाशित हुईं। बाद में इनका संग्रह **'मोछंग'** के नाम से प्रकाशित हुआ है। मोछंग की **छैला** कविता शृंगार और लालित्य से ओत-प्रोत है :

छैला

जिकुड़ि[१] धड़क धड़क कदी।
अपणि नी छ बाणी ॥
छैला[२] की याद करी
उलरिगे[३] पराणी[४] ॥
पखन जखन सरग[५] गिड़िके
स्यां स्यां के विजुलि सरके
ढाडु[६] पड़ं तड़-तड़ के
रुण झुण के पाणी ॥
छैला की याद करी
उलरिगे पराणी ॥
वीछ मुलक देश अहो
कनु कै जी ज्यू त सहो।
की जो क्या ब्यूत[७] कहो।
छि मै छवीं[८] नि लाणी ॥
जिकुड़ि धड़क धड़क कदी।
अपणि नी छ बाणी ॥
छैला बणि की उदास,
लैंदी दौं गरम स्वास ?
बणिगे तन को कबास,[९]
कंदुड़ि[१०] छन बयाणी।[११]
छैला की याद करी
उलरिगे पराणी ॥

१. हृदय, २. प्रियतम, ३. व्याकुल ४. प्राण, ५. आकाश, ६. ओला, ७. बात ८. बातें, ९. कपास, १०. कान, ११. गुनगुनाहट होना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिर-हिर कै बथो[१२] औंद
क्वी नी पर खब्र लौंद
कनु कै जी शान्त होंद
पापि यो पराणी ?
धड़क धड़क जिकुड़ि कदी
अपणि नी छ बाणी ॥

झट अब घर जौलो
इनु इनु वीं भेंट ल्यौलो
मन हे, तू क्यां कु लोलो
करदि काचि[१३] गाणी ?
छैला की याद करी
उलरिगे पराणी ॥

घर की तू जोत छई
कुळ मां उपोत छई
सुन्दर जनु फुलीं जई
छै तु दिल कि राणी ।
जिकुड़ि धड़क धड़क कदी
अपणि नी छ बाणी ॥

फ्यूली[१४] की कली जनी
क्वां सो स्यो वदन तनी
औंदो हा याद जनी,
तरस दो पराणी ।
छैला की याद करी
उलरिगे पराणी ॥

डांड्यों[१५] बसदी हिलांस[१६]
रुकदो दौं किलै स्वांस
खांदी क्या चुचा, फांस ?....

१२. हवा, १३. कल्पना (कच्ची बातें), १४. एक फूल, १५. पहाड़ों, १६. पक्षी ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

डूंडो भी उनकी सुमधुर कविता है :

डूंडो (नाव)

हिरिरि, हिरिरि बगद गाड
ढलकणू छ डूंडो।
खेलेल्यो क्या धुनार ?
डांड पड़्यूं खूंडो ।।

बौलि गैने यै छलार
नीं दिखेंद वार पार।
कथैं दौं छ छांद धार
थाति नी छ खूंटो।

हिरिरि, हिरिरि बगद गाड
ढलकणू छ डूंडो ।।

उरड़ो उठिगे अथाह,
मिटिगे सब धूप छांह,
भूलि गैने सभी थाह
बाड़, भीत, मूंडो।

हिरिरि, हिरिरि बगद गाड
ढलकणू छ डूंडो ।।

लोगु की छ कन्चि आस,
तू परेख ले सहास
चलनी नी जुगेती खास
टुट-मणो न टूणो।

हिरिरि, हिरिरि बगद गाड़
ढलकणू छ डूंडो ।।

बढिगे ! बढिगे ! नयार
हे धुनार, कख छ पार ?
त्वे मू अब क्या छ सार ?
कनै रहण ज्यूंदो ?

हिरिरि हिरिरि बगद गाड
ढलकणू छ डूंडो ।।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नीलो हँसणू अकाश
ऐगे यौ औंत पास,
लगीं जोर की छ ढास
रींग पड़े डूंडो
हिरिरि, हिरिरि बगद गाड
ढलकणू छ डूंडो ॥

मोछंग की कुछ पंक्तियाँ उद्‌बोधन के स्वर बुलन्द करती हैं :

मोछंग[1]

[१]

धारमं[2] बैठिकी पूर्ण निश्चिन्त हैवे
आ, सुणौदीं सुणा आज मोछंग कू।
साज मां साज ली, राग मां बाजली
चित्त की क्वो छिपीं आह भी खोलली।

[२]

देश का हर्ष मां, दुख मां, प्रेम मां
ईश की भक्ति मां, ठाठ से बाजली।
ताल मां, तान मां, कान मां गूंजली
ई सुणी, चित्त मां चाह भी सूजली

[३]

एक ही गूंज से गूंजलो विश्व यो
देश मां जाग भी, जोश भी फैललो।
मातृ-भाषा भरीं एक या द्वी कड़ी
भाव श्रृंगार को रूप भी खोलली॥

[४]

धार ये, गाड़[3] वो, डांडि[4]-मैदान से
एक ही भौण[5] मां ये हुँगारा भरी।
ओर से पोर तैं गाजली, गूंजली
आज मोछंग का गीत-संगीत मां॥

१. एक छोटा-सा वाद्य यन्त्र, २. पहाड़ी; ३. नदी, ४. पहाड़ी, ५. लय।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

[५]

वार की पार की, जोड़ि की तोड़ि की
बात द्वी, की गढ़ी ढंग से बोलली।
ह्वै सक्यो तो भला रांग-साहित्य मां
या रँगाली न क्या आपका चित्तकू ?

[६]

रोपिकी आश को तार आकाश मां
भाव का झूलना मां झुलाली अभी।
मस्त होली अफ्वी, आपकू तैं रिझै
कल्पना-भावना-का नया राग मां ?

[७]

इँ सुणी जागलो आपका ख्याल मां
जाति को प्यार, औ देश सेवा अभी।
जागला आप ही रोंगटा गात मां
चित्त मां ज्ञान की जोत भी भासली ॥

इनके अतिरिक्त इस युग में तोताकृष्ण गैरोला की **प्रेमी पथिक**, शशिशेखरानन्द सकलानी की **पुष्पांजलि** आदि रचनाएँ प्रकाशित हुई। तोताकृष्ण गैरोला का **प्रेमी पथिक** बहुत ही सुन्दर काव्य है। उसकी कुछ पंक्तियाँ हैं—

चंदा आधा सरग[१] पर थै[२] सर्कणी बादल्यूँ मा,
काँसी की सी थकुलि[३] रड़नी खत्खली[४] खूल्यूँ मा।
निन्यारे[५] थे निजन बण का नौवत्या गीत गाणी,
शर्दे राते शरदि लगणी, शीतली पौन पाणी।
बस्ती धोरा[६] कखि मि थइ नी गैर भी जंगली थौ,
डालौं[७] परथी बथौं[८] लगणू होंद सुँस्याट-सी थौ।
घुघू घू-घू घुरकि पुरको घुर्कणू-सी जनू थौ,
नेड़ू औणू धमकि धमकी धम्कदो भारि स्यूँ थौ।

१. आसमान, २. था, ३. थाली, ४. चिकनी, ५. पक्षी, ६. पास, ७. डालियाँ, ८. हवा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे हे बृन्दा गजब कनि ह्वे वज्र पड़नू सफा धो,[1]
तेरो निर्णै कुछ भित्त निह्वे दुख सबसे बड़ो यो।
सच्ची सादी चतुर गहिरो सत्य संकल्प वाली,
हिदैं सौंपे मइ मु तिन जो ओ कनो कष्ट पाली।

× × ×

कर्दो कर्दो मनहिं मन मा याद बृन्दा कि सारी।
देख्णो साम्णे बिसरि पड़गे स्यू कि भैंभी तवारी।
क्या दौं जाणे डुकरि भागेगे शेर तो फाल[2] काटी,
नन्दू चल्लै फिरभि बणिगे एकदौ रांग भाटी।

× × ×

मन्मा मुखैनी मुख मा मनै नी,
तू पूरि कन्कै मइं बोलु त्वेम्वी,
तांचै त देवी सब बात मेरी,
मन्मा टटोलो तरखि छाणि ल्हे ली।
जो कत्कली कीं खुद[3] कल्वली-सी,
लग्णी च वा बोलिहि नी सकेंदी।
कथ्णा हि गौंक्रा करु पर्त ज्यू को,
गुंडी त वा खोलिहि नी सकेंदी।

× × ×

गोरो-सी मुख सुर्ज-कान्त-मणि-सी किर्णून थौ[4] चस्कणू,
जां की झूलन फुलवाडि परथौ पीलो उद्यों[5] दम्कणू।
लम्बा लोलक दिप्प था कंदुड़[6] का मोती जड्या झूलणा
दर्पन् सी गलवाड़ियों[7] पर थमा दुद्दी बण्या सूझणा।
थै बाँई नकदोड़ि मा चमकणी फूली सुहाणी कनी,
हीरा की कणि ठोंठ मा यकतरैं तोता कि थामी जनी।
छोटी लाल पिठाई की टुपुकि सी बेंदी थई भालकी,
सोना का जनि जंत्र या सजदि थै टीकी धरीं लालकी।

१. आसमान, २. छलांग, ३. याद, ४. से, ५. चमक, ६. कान, ७. गाल,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

जाँखें थे मृग बालि बीसि रिगणी[1] पाणी न गैथै मर्ये,
ह्वे[2] सूरज देखणी ह्वरि[3] वा थै सोचणी प्राण मा,
कीदौं उभ्र गर्जन का च किचदौं ब्रह्माण्ड का ध्यान मा।
दुद्वी चूड़ि बरीक हाथु पर थै सोना कि सादी कनी,
लच्छे रेशम की मृणालु पर छै फूलू पिछाड़ी जनी।
बायाँ हाथ की अंगुली पर छई भिन्ना भई मुंदरी,
खोच्यूँ थौ नउँ हिन्दि मा टकटकी वृन्दावती सुंदरी।
दैणा हाथ न चौंठि मा कलम की मुख्ड़ी छुआई उडैं,
बायाँ हाथ न दाबि कागज धर्यूं अर्दोन धारी फुडैं।
कूर्ती पैरियूं आसमानि अलगीं छाती तई दीखणी,
देवी ही जनि दिव्य मन्दिर विटे संसार पलींखणी।
पोंछे सूरज धार[4] का पिछनई बृन्दा खड़ी-की-खड़ी,
देख्दी सामणि म्वाँ फंडो नजर तो फुंल्वाड़ि दी परपडी।
को दौं यो, कनु धूर्त बैठिक तई पुछ्याँ ही बिना,
मनमा सोचदि ह्वेक तैं पिरपिरी[5] यो चोर होलो किना।

इस युग में गद्य के क्षेत्र में भी थोड़ा-बहुत कार्य हुआ। शालिग्राम वैष्णव ने गढ़वाली लोकोक्तियों का संग्रह करना आरम्भ किया और लगभग आठ साल में (सन्-१९१८ में) उनका संग्रह तैयार हो गया। इसका प्रकाशन सन् १९३८ में डॉ० पीताम्बर दत्त बड्थ्वाल के सहयोग से हुआ। **गढ़वाली पखाणा** नाम का यह ग्रन्थ गढ़वाली की अमूल्य निधि है।

इस युग के निर्माता विश्वम्भर दत्त चन्दोला हैं, जिन्होंने 'गढ़वाली' पत्र का संपादन कर गढ़वाली भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है।

सन् १९०८ में गिरिजादत्त नैथानी ने **मांगल संग्रह** नाम की पुस्तक का प्रकाशन किया। इस युग में भवानीदत्त थपलियाल के दो नाटक **जयहिन्द** और **प्रह्लाद** भी निकले हैं। गढ़वाली में कुछ पुराने रूपकों के नाम भी मिलते हैं। **द्यूल नगेलो**[1], **गरुड़ासन**, **निरंकार**, **उमा महेश्वर**, **गौरी शंकर लीला**, **रामलीला**, **कृष्ण लीला**, **कुन्तीमाता**, **पक्षीसंहार**, **मोतीढांगो**, **आसाराम गेंडी** (चेटक) आदि नाम विद्वानों ने गिनाये हैं।

१. घूमना, २. कभी, ३. कभी, ४.पहाड़ी, ५. गुस्सा।

१. गढ़वाली को नयो कदमः (सम्पादक) हरिदत्त भट्ट 'शैलेश', पृ० २५।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सन् १९१८ में लीलानन्द की **गढ़वाली छन्द माला** के नाम से छंदों की एक पुस्तक भी प्रकाशित हुई। इस युग के गद्य का एक रूप यह भी है[1]—

गढ़वाली ठाट। "गुन्दरू का नाम विटे[1] सिंगाणा[2] की धारी छोड़िक वे को मुख वे की झगुली इत्यादि सब मेंला छन, गणेशू की सिर्फ सिंगाणा की धारी छ पर हौरी चीज सब साफ छन। यां को कारण, गुन्दरू कि मां अलगसी[3], खलचट[4], और लमडेर[5] छ। मित्तर देखादों बोलेंद यख बखरा[6] रंहदा होला, मेलो[7] खणेक धुलपट होयूं छ, मितर तब की क्वी चोज इथें क्वी चीज उथैं। सांरा मितर तब मार घिचर पिचर होई रये। अपणी अपणी जगा हर क्वी चीज नी। मांडा-कूंडा ठोकरियूं मां लमडण रंदन, पाणी का भाडों तक तलें देखा दों, धूल को क्या गद्दो जम्यू छ। यूं का मितर पाणी पेंण को भी मन नी चांदो। नाज पाणी की खत फोल, एक माणी पकोण कू तिकालन त द्वी माणी खतेई जांदन, अर जु कै डूम[8]-डोकला, मिखलोई सणी देणां कू बोला त हे राम! यां को नौ नी'।"

३. समाजसुधार युग या सिंह युग

सामाजिक रूढ़ियों और कुरीतियों पर करारी चोट करना इस युग की प्रमुख प्रवृत्ति रही है। गढ़वाल में **टके का ब्याह** अर्थात् बेटी के व्याह में मनमाने रुपये खाने (लेने) का प्रचलन-सा था, अब भी कुछ अंशों में यह विद्यमान है। कुछ कुछ वूढ़े-खुर्राटों को साठ-सत्तर वर्ष की आयु में भी ब्याह करने का शौक चर्राया करता था। शराब-खोरी, मुकदमेबाजी आदि कई अभिशाप समाज में व्याप्त थे। इन सबका जड़ से उन्मूलन करना इस युग के कवियों का नारा रहा है। इस युग के सर्वश्रेष्ठ कवि भजनसिंह 'सिंह' हैं। इन्होंने सामाजिक बुराइयों को समूल उखाड़ने के लिए अनेक फुटकर कविताएँ लिखीं, जिनमें अनोखा व्यंग्य और वाणी का चमत्कार है। साहित्यिक दृष्टि से सिंह का **सिंहनाद** (वीर-वधू) गढ़वाली भाषा का अनमोल हीरा है। भाषा, शैली और विषय की दृष्टि से यह गढ़वाली का सर्वश्रेष्ठ काव्य है।

१. से, २. सींप, ३. आलसी, ४. बुरी, ५. पड़ी रहनेवाली, ६. बकरियां, ७. फर्श, ८. डोम।

१. 'पहाड़ी' द्वारा उद्धृत सदानन्द कुकरेती का १९१३ के लेख का अंश: गढ़वाली साहित्य की भूमिका, पृ० २८-२९ (सं०) हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

सिंहनाद[1] की पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत की जा रही हैं—

पैलि गढ़देश त्वीकू नमस्कार छ।
तेरि हम पर दया-दृष्टी अपार छ।
तेरि छाया म हमकू बड़ी मौज छ।
वीर-पुत्र की तेरी खड़ी फौज छ।
पैलि उन्नीस सौ पन्द्र का लाम मा।
जर्मनी-फ्रांस का घोर संग्राम मा।
सात-सागर तरी देश का का कू।
जाति का और ब्बे[1]-बाबु का नाम कू।
ये गया बेधड़क बैठि की जाज मा।
देरि ही नी करे राज का काज मा।
लोग-ब्वे-बाबु भी छोड़ि गैने इख।
घर क्वी भागि ही लौटि ऐने इख।
फ्रांस की भूमि जो खून से लाल छ।
उख लिख्यूं खून से नाम गढ़वाल छ।
रैंदि चिंता बड़ौं तैं बड़ा नाम की।
काम की फिकं रैंदी, न ईनाम की।
'राठ' मा गोठ गौं को अमरसिंह छ्यो।
फ्रांस को लाम मा भर्ति ह्वै की गयो।
ज्यौं करी धर मूँ, लाम पर दौड़िगे।
फ्रांस मां, स्वामि का काम पर दौड़िगे।
नाम लेला सभी माइ का लाल को।
जान देकी रखे नाम गढ़वाल को।
शास्त्र मा कृष्ण जी को लिख्यूँ साफ छ।
धर्म का वास्ता खून भी माफ छ।
न्याय का वास्ता सैरि दुनिया लड़े।
भाइ तैं भाइ को खून करनो पड़े।

१. माता-पिता।

१. भजनसिंह 'सिंह' : सिंहनाद, पृष्ठ ७१-७४।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आतमा अमर छ, बीर नी मरदन।
शोक ऊँ कू किलै खामखाँ करदन।
रणम करन से मिलदो स्वर्ग-धाम छ।
जीत ह्वेगे त होन्दो अमर नाम छ।
भार्या वे कि छै देवकी नाम की।
वा सती छै बड़ी भक्त ही राम की।
स्वामिजी तब बटी[1] लाम पर ही रया।
चिट्ठी भी वो कभी भेजदा ही छया।
जब कभी स्वामि की चिट्ठी आंदी छई।
देवकी वीं सब्यूं मू पढ़ांदी छई।
चिट्ठी सुणी खुशी हूँदि दै देवसु।
स्वामि की याद से रुंदि छै देवकी।
सासु-ससुरा कि सेवा म रांदी छई।
कै का मुख पर नजर नी लगांदी छई।
स्वामि का नाम को व्रत लेंदी छई।
भूखा-प्यासौं तई[2] भीख देंदी छई।
जब कभी स्वामि की याद आंदी छई।
रात-दिन रुंदि रुंदि बितांदी छई।
स्वामिजी छन म्यरा[3] फ्रांस की लाम मा
घर छौं भी अफू लोलि आराम मा।
वो न जाणे कया कष्ट सहणा छन?
या कखी भूखा-प्यासा हि रहणा छन।
पेट-मोरी कि या भी नि खांदी छई।
रात दिन स्वामि की सोच रांदी छई।
एक दिन वो छया घर मु जब छया।
हैंसदा-खेलदा ही कना दिन गया।
भूख नी छै हमू प्यास नी छै कभी।
रात दिन प्रेम पूर्वक बितैने सभी।

१. से, २. को, ३. मेरा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

हाय ! भगवान वे जर्मनी को मरे।
पापि न या किलै धौं लड़ाई करे।
साथ का लोग घर बौड़ि[1] गैने सभी।
वो न जाणे किलै की नि ऐने अभी।
चिट्ठी भी भौत दिन से नि आई इख।
तब बटी कुछ खबर भी निपाई इख।
ऊँकि चिट्ठो किलैक नि आंदी होली ?
काम से सैत[2] फुरसत नि रांदी होली ?
घर च जो अफू लोलि आराम मा—
वा क्या जाणो कि क्या बीतदीं लाम मा।
चैत भी बौड़ि बौड़ीक ऐगे इख।
देवकी बाठा देखो कि रेगे इख।
डांडि-कांठी सभी हैरि ह्वैने चुचों।
डालि-बूटी सभी मोलि गैने चुचों।
घुगति भी लाम से लौटि ऐने इख।
फूल कै भाति का फूलि गैने इख।
चन्द्रमा को जवौं लौअि ऐगे कभी।
रौतु को नौनु भी घर ऐगे अभी।
देवि दैव्तौं तई भी मनांदी छई।
रात दिन वा पुछारू पुछांदी छई।
पुछणु कू बाट का बट्वै मू गये।
औंदा जांदौं तई पूछदी वा रये।
रात दिन एक सी बितांदी छई।
हर घड़ी स्वामि को सोच रांदी छई।
पर लिख्यूँ भाग मा जोकि जैका रयो।
फिर वही अंतमा ह्वै कि रहणो छयो।
फ्रांस से मौत को तार छूटी गये।
"देवकी को बल-भाग फूटी गये"।

१. लौट गये, २. शायद।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

आदमी सोच दो त बड़ी दूर छ।
हून्द वी जो विधाता कु मंजूर छ।
वैन जो कुछ करे न्याय, सहणो पड़े।
सबकु मजबूर चुपचाप रहणो पड़े।
रोज दुख:सुख इथा ? आप सहणा छवाँ।

× × ×

एक दिन, जब जरा घाम छौ धार[1] मा।
रूम्कै[2] पड़णी छई सैरि[3] संसार मा।
बोण[4] का गोरु जब घअर आणा छया
पंछि अपड़ा बसेरों मु जाणा छया।
गौंकि सब बेटि-ब्वारी[5] मि धाणी[6] बटी[7]।
रमकदी-झमकदी[8] घास-पाणी बटी।
क्वीं थकीं, क्वीं डरीं, क्वीं कणाणी छई।
भारि कै[9] बै करी घअर आणी छई।
घअर मू कैकि सासु खिजेणी[10] छनअ।
जो नि देणो इनी मैकि देणी छनअ।
क्वी करवी दूदि को नोनु[11] रोणू छयो।
यां परै द्वी झणों[12] झगड़ा होणू छयो।
क्वी पंदेरी[13] पंदेरा मु आणी छई।
वाजि,[14] लमडेर[15], जन्दी[16] लगाणी छई।
कुटणु कू ब्वारि-भारी ल्हि जाणी छनअ।
क्वी झणो गौड़ि-भैंसी पिजाणी[17] छनअ।
ज्वान जोरा तमाखू उडाणा छया।
बूड-बुड्डया मि बरड़ांद[18] जाणा छया।
मौज हूणी छई इनि जबारी उखअ
काबुली एक ऐगे तबारी उखअ।

१. पहाड़ी; २. शाम, ३. सारा, ४. बन, ५. बहुएं, ६. काम, ७. से, ८. झूमती, ९. जल्दी-जल्दी, १०. धमकाना, ११. बच्चा, १२. जन, १३. पनिहारिन, १४. काई, १५. आलसी, १६. चक्की, १७. दोहना, १८. बड़बड़ाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

लम्बु भारी बदन एक चोला छयो।
हींग देंदो रुप्ये एक तोला छयो।
कैरणी[1] आंखि, मैलो-कुचैलो बड़ो।
भूत-सी, ऐकि सोंदिष्ट[2] ह्वेगे खड़ो।
आज तक जो क्या सूणि छै जै न भी।
भूत सैंदिष्ट देखी नि छो कैन भी।
देखि तै छोटा छोरा भग्या रात मा।
आज क्या हूणि-जाणी ण, परमात्मा।
नौनु वे देखि; की एक रोये जबअ।
बूड-बुड्यों को यो हुक्म होये तबअ।
रात रहणू जगा तै नि देलो कईअ।
नौनु सैंत्यूं-पल्यूं[3] जी छले लो[4] कुई।
दूर गौं से अलग एक कूड़ो[5] छयो।
घअर, तैं रात बती आदमी नी रयो।
देवकी एक विधवा विचारी छई।
वा अफी पापि किस्मत कि मारी छई।
स्वामि का नाम को व्रत ल्हेंदी छई।
भूखा-प्यासों तई भीख देंदी छई।
चौक मा काबुली पोंछि ऊंका गये।
पापि बाकारुणा[6] कैकि रोणू रये।
"दीदि! देदे जगा आज की रात ही।
फेर चलि जौलु मी मोल़-परभात ही"
भोलि-भालि, कपट-छल नि जणदी छई।
हौरू को दिल भि अपणों-सि गणदी छई।
छै दयावन्ति घरकी अकेली रई।
खालि छो ओबरो,[7] बोर्ड[8] रांदी छई।
ओबरा का किनारा जगा रात मा
पेट भोरी मिल़े खाणु भी साथ मा।

१. कंजी, २. सामने, ३. पाला-पोसा, ४. भूत लगना, ५. मकान, ६. फूट-फूट कर, ७. नीचे का हिस्सा (मकान का), ८. ऊपर का हिस्सा,।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जबकि संसार समसूत[1] ह्वेगे छई।
कुक्र भुकणा छया दूर, गौं मा कई।
गाड[2]-गदरों कु स्वीं स्याट होणू छयो।
सालि[3] का मूड़ि[4] की स्याल् रोणू छयो।
सैरि संसार आराम पाणी छई।
नींद पर काबुली तैं नि आणी छई।
खड़-उठी वो, सुरक भैर आणू छयो।
बौड की देलि भू बैठि जाणू छयो।
आंदो-जांदो छयो द्वार भी खेल दो।
देकि धक्का, छयो रोष मा बोल दो।
जो भलो चांदि तब खोलिदे द्वार तू।
खांमखां केकु खांदी म्यरी मार तू?
दूर छौ गों, विचारी अकेली रई।
क्या करो? वेकि सब बात सुणणी छई।
रुन्दि छै भारि, घिड़ुड़ी[5]-सि रिटणी[6] छई।
भांडा-कूंडा लगै द्वार किटणी छई।
काबुली भैर, भीतर छई वा खड़ी।
नी खुल्या द्वार जब देर ह्वेगे बड़ी।
भाग-से द्वार भी एक कच्चो रये।
फेर भीतर की सांकल भी टूटी गये।
जबकि कैको बुरो वक्त आंदअइण अ।
खून भी वैकु आपड़ो नि रांदअ इखअ।
अपड़ि छाया जु रहंदी सदा साथ मा।
साथ नी रैंद वा भी चुचों, रात मा।
मिरग पर बाण मरदअ शिकारी जब्रअ।
खून ही पेड़ अपड़ी बतान्दअ तबअ।
लाल आंखी करी, छौ छुरा हाथ मा।
पौंछिगे काबूली क्रोध का साथ मा।

१. गहरी नींद, २. नदी-नाले, ३. गोशाला, ४. नीचे, ५. पक्षी, ६. चक्कर काटना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIB

वीन बोले—अरे, भैर जा, मान तू।
खांमखां खृंदि अपड़ी किलै ज्यान तू ?
खूंदु छै उख, जखी खांदु छै गास तू।
कै मुलक को छई चोर-वदमाश तू ?
तू सियीं-सिंहणी तैं जगाणू छई
आगि पर हाथ-केकू लगाणू छई।
पर नि मान्यो कतै, वीं डराणू रये।
होरि[1] डडो पकड़णू कु आणू रये।
स्वामि सुमरी, उठी बात की बात पर।
खैंचि खुंकरी सिंराणा बटी हाथ पर।
मूलिगे क्या च वा, नी रई होश मा।
भूखि-सी सिंहणी वा छुटे रोश मा।
क्रोध से वे परैं व्रज-सी टूटिगे।
हाथ से काबुली को छुरा छूटिगे।
बिजली-सी रात खुकरी चमकणी छई।
आग-सी तन बदन वीं का जगणी छई ॥

सिंह का दूसरा गीत खुदेड़ बेटी[1] भी करुण-रस का अद्भूत गीत है। गढ़वाली नारी की वेदना-भरी स्वर-लहरियाँ इस में प्रतिध्वनित होती हैं —

बोड़ि[2]-बोड़ी ऐगे ब्वै[3]। देख। पूस मैना।
गौंकि बेटो-ब्वारि ब्वै। मेतु[4] आइ गैना
मैतुड़ा[5] वूलालि ब्वै। बोइ[6] होलि जौंकी।
मेरि जीकूड़ी[7] म ब्वै। कूयड़ी[8]-सि लौंकी[9]।

मूल्वड़ी[10] वासलि ब्वै। डाड्यूं[11] चैत मासज।
भौलि गैने डालि ब्वै। फूलिगे बुरांसज।
माल की धूगति ब्वै। मैत आंदि होली।
डाल्युं मां हिलांस ब्वै। गोत गांदि होली।

१. और २. लौट-लौट कर, ३. माँ, ४. मायका, ५. मायका, ६. मां, ७. हृदय, ८. कुहरा, ९. छागया, १०. पक्षी विशेष, ११. पहाड़ों।

१. भजन सिंह 'सिंह' : सिंहनाद, पृ० ८९-९१।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऊलरि मैनो कि ब्वै। ऋतु बोड़ि ऐगे।
हैरि ह्वेने डांडि ब्वै। फूल फूलि गैने।
घूगती[1] घुरलि ब्वै। डाल्युं-डाल्युं मांजअ।
मैतुड़ा बुलालि ब्वै। बोह् होलि जौंकी।
मेरि जीकूड़ी म ब्वै। कूयड़ी-सि लौंकी।।

लाल बअणी होलि ब्वै। काफुलु[2] कि डाली।
लोग खान्दा होला ब्वै। लूण रालि राली।
गौंकि दीदी-भूलि ब्वै। जंगुल न जाली।
कंडि मोरि-मोरि[3] ब्वै। हींसर[4] बिराली।
'बाडुलि[5] लागलि ब्वै। आग भभराली[6]'।
बोई बोदि होलि ब्वै। मैत आलि-आली।
याद ओंद मीत ब्वै। अपड़ा भुलौंकी।
मेरि जोकूड़ी म ब्वै। कूयड़ी-सि लौंकी।।

ल्हालि कूरो[7] गाडि ब्वै। गौं कि बेटि-ब्वारी।
हैरि-भरीं होलि ब्वै। गेंउ-जो, कि सारी[8]।
यं बार मैनों कि ब्वै। बार ऋतु आली।
जौंकि बोई होलि ब्वै। मैतुडा बुलाली।
मैतु ऐ-गै होलि ब्वै। दीदि-भूलि गौंकी।
मेरि जीकूड़ी म ब्वै। कूयड़ी-सि लौंकी।।

स्वामिजी हमेशा ब्वै। परदेश रैने।
साथ का दगड़या[9] ब्वै। घअर आइ गैने।
ऊंकु प्यारो ह्वेगि ब्वै। विदेशू को वासअ।
बाठा देखी-देखी ब्वै। गैनि दिन-मासअ।
बाडुलि लागलि ब्वै। आग भभराली।
या त घअर आला, ब्वै। या त चिट्ठि आली।

१. फाख्ता; २. फल विशेष, ३. मिला-मिला कर, ४. फल विशेष, ५. स्मृति की हिचकियां, ६. शब्द होना, ७. घास (एक प्रकार की), ८. खेत, ९. दोस्त।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIB

चिट्ठि भी नी आइ ब्वै । तब बटी तौंकी ।
मेरि जीकूड़ी म ब्वै । कूयड़ी-सि लौंकी ॥

बाबजी भी मेरा ब्वै । निरमोही रैने ।
जौन पाथो[१] भोरि ब्वै । मेरा रूप्या खैने ।
गालि देंद सासु ब्वै । मै-बाबु[२] कि मारी ।
बासि खाणू देंद ब्वै । कोलि मारि मारी ।
बोद-तेरो बाबु ब्वै । जो रूप्या नि खांदो ।
मेरो लाड़ो-प्यारो ब्वै । बिदेशू नि रांदो ।
बाबा न वणाये ब्वै । इनि गति मेरी ।
ज्वानि तअ उड़िगे ब्वै । वाठो हेरी-हेरी ।
चिट्ठी भी नी आइ ब्वै । तब बटी तौंकी ।
मेरि जीकूड़ी[३] म ब्वै । कूयड़ी-सि लौंकी ॥

इस युग में कमल साहित्यालंकार, विशाल मणि शर्मा, ललिता प्रसाद 'ललाम', सत्यप्रसाद रतूड़ी (संपादक 'हिमाचल') आदि के नाम भी उल्लेखनीय हैं ।

इस युग में 'गढ़वाली प्रचार मंडल' इन्दौर, ने बृहत् **गढ़वाली नागरी कोष** के प्रकाशन की योजना बनायी थी । सन् १९३७ में अ-आ के नमूने के रूप में एक अंक निकला भी, किन्तु फिर यह योजना ठप्प-सी हो गयी ।

४. पान्थरी युग

इस युग में गढ़वाली भाषा-प्रसार पर विशेष जोर दिया गया । भगवती प्रसाद पान्थरी इस युग के कर्णधार माने गये हैं। पान्थरी ने गद्य-पद्य दोनों में सुन्दर रचनाएँ की हैं । पान्थरी की **बांसुली** और भगवती शरण शर्मा 'निर्मोही' का **हिलांसी** आदि इस युग के प्रसिद्ध काव्य हैं ।

गढ़वाली काव्य में भगवती चरण शर्मा 'निर्मोही' का अपना एक विशिष्ट स्थान है । उनकी **हिलाँसी** अपने युग की एक प्रतिनिधि रचना है; जिसमें राष्ट्र-चेतना के स्वर और स्वातंत्र्य-आन्दोलन के भाव मुख्य रूप से मुखरित हुए हैं । स्वयं स्वातंत्र्य-सेनानी होने के नाते कवि की महकती अनुभूतियों की अनुगूँज उनकी रचनाओं में पूर्णतः झंकृत हुई है ।

१. माप विशेष, २. से, ३. हृदय ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MDF

भाषा की दृष्टि से भी 'हिलाँसी' अनोखी कृति है। गढ़वाली भाषा का जीवन्त स्तरीय रूप इसमें उपलब्ध है।

उनकी निम्नांकित तीन चुनी हुई रचनाओं से उनके भावों की भीनी महक और भाषा का सौष्ठव मिल जाता है।

(१) हिलाँसी

(१)

आज हिलाँसो[१] बड़ी सबेरी,
कख[२] से तु उड़िकी चलि आई ?
बाटु[3] भुलीं या मेरा घर से,
रैबारू[४] बणिकी तैं आई !
औन्दी[५] छैं चुप कैकी औन्दी,
किलै[६] सुणाई अपणी बोली ?
आज अणमणो[७] छौं दिनभर मैं,
लगीं छ मन पर भारी गोली।

(२)

भुलन बैठि छौं जब सब कुछ,
मैं बिसराई खुद[८] तिन बौड़ाये[९]।
बच्चौं की प्यारा सजनू की
तरफ किलै सुरता[१०] दौड़ाये ?
बोल-बोल प्यारा पहाड़ से
क्या-क्या खबर अरी तू लाई ?
एक-एक करिकी तैं सुणऊ
वख[११] की सब बातैं मैं थाईं[१२]।

(३)

अजौं[१३] रयों[१४] छौ कि सूखिगे
गदनौं[१५] को सेल्वाणी[१६] पाणी ?

१. एक पक्षी, २. कहाँ, ३. रास्ता, ४. सन्देश, ५. आती, ६. क्यों, ७. उन्मन, ८. याद, ९. लौटायी, १०. ध्यान, ११. वहाँ, १२. को, १३. अभी, १४. रहा, १५. नदियों, १६. ठंडा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

डाली-बुटली[1] मौलि[2] गैन क्या
कतनि[3] होइने आमू की दाणी[4] ?
दुफरा[5] मा अब बजौन्द की ना
अलगोजा क्वी उलारु[6] पराणी[7] ?
ग्वैर[8] गोरु माल्ही जाँदान क्या
तुमड़्यों[9] पर लटकैकी पाणी ?

(४)

हौर[10] सुणो तू मेरा घर पर आई
छै क्या कुछ बिपता[11] सी ?
म्यरी[12] सौंजड्या[13] देखि होली तिन[14]
छाई ह्वली जैं[15] परैं उदासी।
रोज लोगु की नजर बचैकी
ह्वली बगौणी[16] ज्वा[17] द्वी आँसू।
जाणदू छौं म्यरी हिलांसी
प्राण च वीं[18] को भारी क्वाँसू[19]।

(५)

हाल बतैकी झटपट उड़िजा,
बात बतैदे सारा घर की।
निर्दय छन यख पकड़ि लेन्दान,
ये बात होईं या भारी डर की।
उड़ जा तू अपणी डाँड्यू[20] मा,
पे गंगा को ठंडो पाणी।
फेर[21] ना ऐ[22] यख ना तू बोली,
होण दे मेरो निठुरो पराणी।

१. पेड़-बेल, २. हरी-भरी, ३. कितनी, ४. दाने, ५. दुपहर, ६. भावुक, ७. प्राणी, ८. ग्वाले, ९. तुम्बी, १०. और ११. मुसीबत, १२. मेरी, १३. संगिनी, १४. तुमने, १५. जिस, १६. बहा रही, १७. जो, १८. उसका, १९. कोमल, २०. चोटियों, २१. फिर, २२. आना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(६)

यख को क्या रैबार[1] ल्हि जैली,
कैदी छौं कुछ बोलि नि सकदू।
बन्धन से ज्यादा दुनियाँ मा,
हैको[2] कुछ दुख होइ नि सकदू।
ये बन्धन तोड़णू कू तैं ही,
ये सब दुख सन[3] मैं सहणू छौं।
भूख-प्यास गर्मी-सर्दी को,
कष्ट भूलि की भी रहणू छौं।

(७)

पर जरूर तू इथगा[4] बोली,
बड़ो सुखी छौं याद ना कैने।
औलो[5]-औलो ईं आशा पर,
अपणा मन ब्यल़माई[6] रैने।
घबड़ाई की कुछ नी होन्दो,
कटदी जाला यख का ये दिन।
जनु कुछ भी हँसदो रोन्दो।

(२) भुली

औ भुली[7] तू आज मिलिले, मैं छ जाणू दूर तेरो,
ऐ[8] नि सकदो यख कभी, फिर छोड़ियाले आज डेरो।
ऐ गये मौका इनू यो, एक पल भी टल़ नि सकदो,
रुकण को भी क्वी बहानो, द्वी घड़ी को चल नि सकदो।

(२)

पीठि को फाडो[9] तेरो यो, दूर त्वै[10] से आज ह्वैगे,
मोह-ममता छोड़िकी तैं, जाणकू तैयार ह्वैगे।
भेंटिले कुछ बोलिले, जो कुछ छ मन की बात तेरी,
रै[11] जाली कुछ ही दिनूँ मा, आखिरी या याद मेरी।

१. सन्देश, २. दूसरा, ३. को, ४. इतना, ५. आऊँगा, ६. बुझाना, ७. छोटी बहन, ८. आ, ९. सगा, १०. तुम, ११. रह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIB

(३)

हौर[1] छैं छन भै[2] त्यरा भुलि, मैं सनैं[3] तू भूलि जाई,
याद कैं[4]-कै की बणू मा, ना खुदै[5] की गीत गाई।
भै औला त्वै मू सदा ही, रीत भी त्वै सन जणाला,
मैत[6] को बाटो बताला, सब तरह त्वै सन[7] मनाला।

(४)

ये भयादूजी कु[8] तैं तू, ल्हे फुलों माला बणैकी,
भेटदे सब भाइयों सन, सैंद्वाणी[9] अपणी बणैकी।
राखड़ी त्योहार आलो, अब आली होली-दीवाली,
औन्दु रै तू मैत अपणा, जाण ना दे बार खाली।

(५)

हौर सब मैं भूलि जाला, माँ त नी सकदी भुलाई,
माँ सणै[10] तू भूलि की भी, याद ना मेरी दिलाई।
त्वै सको धीरज बँधाई, प्राण सन वीं का बुझाई,
बात करदी वक्त रोकी मन, ना तू आँसू बगाई।

(३) मेरी बिचारी

बालापन[11] से ही मिन[12] गैल्या[13], सदा दुख का दीन बितैंने,
खोटी-खारी[14] लोखु[15] की सुणिने, इथैं-उथैं[16] की ठोकर खैने।
हूँद[17] कंपिकी कटीने रात, रूड़ी[18] डाल्यूँ[19] का छैल[20] बितैंने,
वर्षा ऋतु मा दिवरों उनाये, कई एक चिन्ता तब ऐने।

(२)

कभी कबड्डी गिलिडंडा ही, खेलि-खेलिकी दीन गँवैने,
पढ़ि-लिखि छौं फिर कविता कैने, ओर-पोर[21] का ध्यान मिटैने।
इना मयाल्दू[22] त्वै ये की भी, द्वी छ्वीं[23] त्वैमा कभि नि लगैने,
अपणा दुख का दुखड़ा सुणैकी, रोज त्यरा भी आँसू बगैने।

१. अन्य, २. भाई, ३. को, ४. कर-कर, ५. याद, ६. मायका, ७. को, ८. को, ९. सहारा, १०. को, ११. बचपन, १२. मैंने, १३. साथी, १४. खरी-खोटी, १५. लोग, १६. इधर-उधर, १७. जाड़ा, १८. गर्मी, १९. डालियों, २०. छाया, २१. आर-पार, २२. प्यारा, २३. बात।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(३)

कभी खूब सी आँगड़ी[1] चदरी, धोती मैं त्वै कु नी ल्हायो,
मेरा मोर[2] तिन अरो बिचारी, कभी पेट भरि खाणु नि खायो।
हँसुली-धगुली[3] दूर रई पर, एक सूत भी मिन[4] नि गढ़ायो[5],
त्यरा[6] नाक को मुरखलु[7] तक भी, पापो पेट की भेंट चढ़ायो।

(४)

लाईं-पैरीं[8] देखि बिराणी[9], कभी त्वै कु तैं डाह नि आयो,
अलाणि[10] चीज ल्हाँ, फलाणि[11] ल्हाँ, बोलकि मेरो ज्यू[12] नि जलायो।
जाणदू छौं मैं कभी एक दिन भी, त्वै सन सुख नि दे पायो,
किन्तु त्वै सनै रत्ती भर भी, पछतावा याँ को नि आयो।

(५)

ऐ[13] छौ त्वै सन सुखी करण को, मैं मु[14] जब कुछ समय बिचारी,
हाय विधाता ! निष्ठुर त्वै सन, छिनण लग्यूँ छ मैं से प्यारी।
चोट लगैकी भारी मन पर, जाणी छै तू अरी अगाड़ी[15],
जै[16] ले, कखी जग्वाली[17] मैं सन, औलो मैं भी त्यरा पिछाड़ी[18]।

नाटकों के क्षेत्र में पांथरी के अधः पतन, भूतों की खोह आदि नाटक और विश्वम्भरदत्त उनियाल का बासन्ती नाटक विशेष उल्लेखनीय हैं। पाँच फूल के नाम से पान्थरी का एक सुन्दर कहानी-संग्रह भी इस युग की देन है। पान्थरी के अधः पतन की कुछ पंक्तियाँ यहाँ उद्धृत की जा रही हैं—

तू राँसू, राँसू, गों का लेख[19] नी थई। राँसू, गाड[20] मू चल। देख दें पाणि मा-कनी छ तेरी मुखड़ी।[21]

त तख दी दे गंगाल फाल।[22] इ माचु गौं का सारी पिर्थी का फिरड़ी-फीरड़ी[23] औन्दान और जरा सी पाणी पेण मा यूं का खूटा तड़क टुटी जांदन।

अबारी घास काटण थौ। बजारियों का नौना त बुडुन्द[24]-बुडेन्द तलई रन्दान पहुण लग्यां।

१. अँगरखा, २. द्वार, ३. कंगन, ४. मैंने, ५. बनवाया, ६. तुम्हारा, ७. लौंग, ८. ठाठ, ९. दूसरों, १०. यह, ११. वह, १२. हृदय, १३. आया, १४. मेरे पास, १५. आगे, १६. जा, १७. प्रतीक्षा करना, १८. पीछे, १९. लायक, २०. नदी, २१. मुख, २२. कूदना, २३. घूम घूम कर, २४. बुढ़ापे तक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

सन् १९४२ में गढ़वाली साहित्य परिषद्, लाहौर की ओर से **गढ़वाली शब्द भण्डार** के प्रकाशन की योजना बनी। **गढ़वाली शब्द गवेषणा समिति** में श्रीधरानन्द घिल्डियाल; बलदेव प्रसाद नौटियाल आदि व्यक्ति थे, किन्तु 'अ' का एक अंक निकल कर यह योजना भी ठप्प-सी हो गयी।

५. आधुनिक युग या गढ़वाली जन साहित्य परिषद् युग

इस युग में गढ़वाली भाषा के प्रचार-प्रसार के प्रायः जितने आन्दोलन हुए, उनमें गढ़वाल जन-साहित्य-परिषद् का सबसे बड़ा हाथ है। दामोदर प्रसाद थपलियाल और गोपेश्पर कोठियाल 'साहित्य परिषद्' के प्राण हैं। इस युग में गद्य-पद्य की अनेक पुस्तकें छपीं।

नाटक

नाटकों में दामोदर प्रसाद थपलियाल का **मखली** (तिब्बत विजय, प्रायश्चित, औंस की रात आदि अप्रकाशित), भगवती प्रसाद चन्दौला[1] का **आज अलसो छोड़ देवा**, डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश' का **नौबत**, डॉ० पुरुषोत्तम डोभाल के **बिन्दरा और बुरांश**, जीतसिंह नेगी का **भारी भूल**, **चार गैल्यों का**, **पाँखू**, डॉ० गोविन्द चातक का **जंगली फूल** आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इनमें से कुछ के उद्धरण नीचे दिये जा रहे हैं।

(१) आज अलसो छोड़ देवा[1]

चैतू : (बडा गुस्सा का साथ) नाची-कुदीक दिन गंवौला ! हैं ! और तुम्हारे घेरचो[1] भरन का वास्ता हम डोखरा[2] मां अपणों कपाल फोड़ला, गोठ मां जै-जै क अपणी टांगड़ी तोड़ला, घास लाखड़ा सारी-सारीक अपणी खोपड़ी खुरचौला, और तु मौज-मस्ती खंखल[3] बणीक नाचला, कूदला और चैन की बांसुली बजैला। कख छ रे वो छोरा छंछ—कख छ? (छंछरु डरीक एक तरफ अलग खड़ो होई जांद) किलै रे, अपणों पेट काटीक हम न त्वै तई इसकूल ये वास्ता भेजे कि तू लिखणो-पढ़णो छोड़ीक इन्ने दिन काटो? चल घर-चल अब्बी घर। नी तई लट्ठी न तेरी टांगडी तोड़दों।

बैसाखू : अजी बोडा जी[4], आप इतना गुस्सा किलै होणा छन? यख मां छंछरु विचारा को कसूर क्या छ?

१. पेट, २. खेत, ३. अनुत्तरदायी, ४. ताऊ।

१. भगवती प्रसाद चन्दौला : आज अलसो छोड़ देवा, पृ० २।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(२) बिन्दरा[1]

गैणा : (उकासी लोक) हे परमात्मा नित दुनियाँ मां कै कै किसम का आदमी बणांयां छन, एक जो भी छन जो सीधी सादी बातू का और कुछ नी जाणदान, और एक ये भी छन, जों से संसार को पाप भी भय खांद । चार घड़ी चौसठ पहर बस एकाकी बुराई हैका[1] ही बुराई कखी घूस, कखी कुछ, बस पैसा की भूख छ । बुराई की भी हद होंद, पर उफ यख क्वी हद नी छ । प्रभु, कनां आदमी का पल्ला तिन में डाल्यों । सोचदू ज्यान खोई यूं पर इं बच्ची की मुखड़ी अभी भरन से रोकणी छ । परसे दमनसिंह जी समधी बणाईन, पर डर छ कि वे सज्जन पर लगीगे । पता नी बिचारो कै गति भांपड़द । यख त निगाह कुल रुप्या खाण तक छ । विचारी भोली गौ छ, कसाई का हाथ पड़ीगे । आह, नौनो भी कतना स्वाणो छ जनो राजकेन्द्र हो । परमात्मा करो मेरी बिन्दरा को भाग तै राजकुंवर का ही साथ रहण को हो । दुनियां बिन्दरा का बुवा[2] सणी खूब जाणदे । मैं डर छ कि कखी सम्बन्ध बीच ही मां नी टुटी जाओ । पर नां, मेरो दिल गवाई देणू छ कि मेरी बिन्दरा अवश्य वे की ही बणली[3] ।

(३) भारी भूल[2]

बुवा : पर मेरी ब्वारि[4] न क्य खोये ? मिन त पाप काये । लोगू की स्वागवन्ती ब्यर्यूं का पत्यूं मां सूत-ब्याज ल्हीण का जाना कर्जा देया अर ऊ कर्जा चुकाणा बाना परदेश मा लापता ह्वे गैनी । मीं त ऊं स्वागवन्ती ब्वार्यूं कू शराप च लगणू व्यटा । पर मेरी ब्यारी किलै च म्यारा कर्मू का फल भुगतणी । (चौंकी की सुदि-सुदि) जगूव्यटा ! तू ऐ गैयी ?—अरे, त्यारा हत मा शराब की बोतल ? ना ना—व्यटा । तैं शराब ना पी । अरे, तू जुवा ख्यनू छै ? (जोर कै) जुवा न खेल व्यटा । यांले हमारी मक्खो[5] घाम लगै (हैंसुदो च) हा !

१. बहू, २. परिवार, ३. मकान, ४. दूसरा, ५. बाप ।

१. पुरुषोत्तम डोभाल, बिन्दरा, प्र० अंक, पृ० ११ ।

२. जीतसिंह नेगी : भारी भूल, पृ० ७१ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIB

हा ! हा ! हा ! म्यारु जगू शराबी अर जुवाड़ी बणिगे। चाखा रे लोगू मेरी कूड़ी[1] पर अपणा हातुन आग लगणी च।

(४) मनखी[1]

श्रद्धा। मेरी श्रद्धा। आज तू कख गई। मेरी गेल्या[2] तू मिन ठुकराई देई, क्या तेरो ही यो शाप छ। ना, ना श्रद्धा तू इनी छई तू त सदने ! मेरी भूलों से भी तैं खबरदार रखदी छई। श्रद्धा कख गई तू भी निरभागी तैं छोड़िक। तू त मेरी सौंजड्या छई श्रद्धा। अर मनव ! बेटा मनखी ! त्वैन भी अपणों निरभगी बुवा मनु छोड़ी दिने। श्रद्धा ! मनखी, श्रद्धा, मनखी, श्रद्धा ! मनखी (उतरोत्तर जोर से चिलोन्द अर बेहोश होई जान्दा, फिर संगीत की ध्वनि सुणै पड़दा)।

(५) नौबत[2]

मनसा : (हुक्का गुड़-गुड़ैक) हरीश न गौं कू नौ उज्ज्वल करे साब। जख जा, जै गौं मा जा, तखी हरीश की चर्चा। अपणा गौं मा इनो नौन्याल—सबू तैं बड़ी खुशी छ—

आत्माराम : (कुछ तनी-मनी भाव से) मनसा, तू भी मेरी दिगती च लागू। यम० ए० बी० ए० ह्वेगे बल, एक पैसा भी नी भेजद हमारी तरफ से त—

जग्गू : (मुख बणैक) अजी कख-क्या ? आज कल का छोरा। थोड़ा पढ़ी-लिखी क्या गैन कि अफू तैं अफलातून समझदां। राम जी ठीक ब्वना छन। अरे एक पैसा भी त नी भेजद। यना छूकरु करा त करा क्या ?

मनसा : (हुक्का आत्माराम की तरफ बढ़ै क कुछ चिढ़ीक) अरे जग्गू, तू नजाणे अफू तै क्या समझद ? चोटि मानी त सौंगि ह्वन्दी पर—

जग्गू : (हड़बड़ैक) पर क्या ? अरे अपणा ही गौं को माया भी छ।

१. वनेगी, २. दोस्त।

१. दामोदर प्रसाद थपलियाल : मनखी, पृ० २।
२. डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश' : नौबत।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मिडिल पास छ। सरी मौ बणेले तैन। द्वी ब्यौ करल्यां, सुन्दर नयू मकान बणेले। नैई ब्वारी तैं ३ तोल कू नथबणे याले, ब्वे-बाबू को सरो कर्ज उतारि याले—छि कख-क्या ?

आत्माराम : (हुक्का जग्गू की तरफ बढ़ैक) जग्गू ठीक ब्वनू छ।

मनसा : राम जी, आप भी बुढ्या ह्वेग्यां लेकिन अजीतक। खांदा-कमौंदा सभी छन। गौं मा द्वी-चार सौकार भी छन जौन पूजा की चवन्नी पर भी ब्याज लीने। सवी अपणी अपणी।

कहानी

कहानी के क्षेत्र में मोहनलाल नेगी का **जोरि पर छायु किलै** दस कहानियों का सुन्दर, सरस और महत्त्वपूर्ण संग्रह है। उसके दो अंश देखिये—

(१) 'अरे सपा मुकर जाण। यूं सौकारुन लोगु सणि लुटि-लुटि का नास कर्यालि। सूद अलग खांदा। गंठखुलै न्यारि। अर धर्म का दुणा सि न्यारा। यूं साकारु कु मान्यूं देखि बि तुमुन क्वी पगर्यू आज तलक ? कुछ नि बिगड़दु। मैं जुम्मेवार रौलु नु 'ना' बोल्यान तेरु कुछ बिगाड़ ह्वै। जालु। पारे फिंचरु दास मुकरगि थौ इक्या का रुप्या त क्य बिगड़ि वैकु ? अबरि कि घड़ि बिचारा कि क्य चढ़दि बढ़दि छैं। सच्चा त बौला अचकालु मारेण लग्यां। सच्चै अर नेक नामि वाला त अबरि हींग घोल लग्यां। कख भगवान अर कख कुछ ? कैन देखि भगवान ? इ भौत हबासेगिन लोगु सणि लुटणु। यांक ही त सौकरु कि लूट खसोट मचाई। जम्मैं-जम्मैं डरखु नि होणू दौं। 'जु वल डरु उ मरु।' अर गोबरु फिर घुम जाउ।

ऐगि तारीख कु दिन। चलगिन बच्चु अर बोबरु कछड़ि मंगि। गुमानु सेठ अदालत मंगि नि ह्वै गोबरु कि गैल खड़ु। आज तलक ऊं का यख क्वी अदालत मैं नि ह्वै थौ खड़त। वैन अपणा नौन्याल का नौ मुख्यत्यारनामु दी दिनी। नौन्यालन वकील करि। मुकदमा पुकारेणि अर चलगिन गोबरु अर गुमानु कु नौन्यालं भितर मैं वकीलु का। गुमानु का नौन्यालन हलफ लिनि अर बोलि कि बो बरु सणि बाबान एक हजार रुप्या दिनी गणिक तैं। वैका ब्यौक तैं अब गोबरु कि बारि आइ हलफ पर बयान देण कि। वैन उस्मैने भी बतौण थै। गोबरु सणि पुछेगि पैली गंगाजलि हात में धरीक बोल—'जु कुछ बोललु मैं भगवान देखिक सच बोललु। भगवान मेरि मदद करु।' गोबरु न उन्नि बोलि। अब गोबरु का वकील न पुछि गोबरु सणि सवाल—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

'कवि गाडि तुमुन क्वी रुप्या कर्ज गुमानु सेठ मँगिन ?'

गोबरु का आँखा रिंगणा ल्हैगिन। आँखौं ऐथर अन्ध्यारु ह्वैगि। जोगणि ल्हैगिन छुटणा। कबि काला-काला बिंदका दौड़ु न उंडा अर फंडा वैका आँखौं का ऐथर। अब गोब्रु का आँखौं ऐथर कैकि बै अर बड़ा खड़ा ह्वैग्या। वैकि बै जनि बोल्न हो लगीं भटे-भेटेक तैं।

(२) ये गिगड़्याँ गींम हौंस्यारु नेगि का सिवै हौर इनु क्वी दानु सयाणू अर समझदार मनखि नि थै जु यूं खोई मति का बिठु सणि समझै सकु। यूँकि अकल सकु ठिकाणा कि केक त्यूं कि वै दिन बिटिन बरात गोटीं। क्यान उ यूंकु बिगाड़ण लग्याँ ? लोग त डोला पालंकि छोड़ण लग्यां। अपणा अदालत मँगि गया सरबट, वख नौ लिखायु अर ह्वैगि ब्यौ चटपट। अर यख देखा दौं मुण्ड कपाल फोड़ण लग्यां डोला पालंकि का बाना। कुछ स्कुलि नौन्याल अर कुछ हौर भला आदमि ल्हैगिन हौंस्यारु नेगि सणि ऊँ समझौंणक। हौंस्यार नेगि वख में अपणा लाठा का सारा खड़ु ह्वै अर ल्हैगि बिठु सणि समझौंण।

'क्या ल तुमारु यख परछि बिटिन धरना धर्‌यूं ? कनु हौर काम न्हीं तुमारु कुछ ? त्यांसि एक एक गडोलु घास कु कि ल्हौंदा त कतनै फैदु होंदु। जनि बल गौड़ि रमाल थै तबि दुदाल होंदि त कना दिन था। इनु धैया ध्यान कै हौर धाणि पर होंदु त कुछ कु कुछ ह्वै जांदु। बस अब एक स्वी काम रैगि तुमुक कर्नक तैं ? कनु अपणा डोखरों जा दौं, वख करा मीनत। जु इकल्वा-रस्या छन ऊँकि दगड़ि धाणि धन्दा करन ल्हगा। जु काम करण का ऊ सणि करा दौं। जु सराब जुओंण लग्याँ ऊँ सणि रोका। जु गरीब गुरबौं सणि अर मूँडु सणि रँदन संतौंण पितौण लग्यां ऊँकु डौल करा। भला काम ऊँ सणि करा धौं। कखि कै दुःख बिमारि ल्हगदि वैका धोर तिरप त क्वी जाँदु ही न्हीं।

कविता

कविताओं के क्षेत्र में देवरानी का **मलेथा की कूल**, अबोध बंधु बहुगुणा का **तिड़का** और **रण मंडाण**, गिरधारी लाल 'कंकाल' के **नवाण** और **फुर धिड़्ड़ी**, सच्चिदानन्द कांडपाल का **रैबार**, मुरली मनोहर सती का **गढ़वाली झांकी**, श्रीधर जमलोकी के **रुन्देड़** और **एकबिसि**, डॉ० उमाशंकर 'सतीश' के **रैमासी**, **खुदेड़** और **जिकुड़ी बौलली**, योगेन्द्र कृष्ण दौर्गादत्ति की **तिलु रौतेली** (खंडकाव्य), उम्मेदसिंह नेगी की **डाँडी-काँठी** आदि उल्लेखनीय हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भोलादत्त देवरानी की **मलेथा की कूल** एक सुन्दर काव्यकृति है, जिसमें माधोसिंह भंडारी के श्रमदान की अपूर्व गाथा है। देवप्रयाग से कीर्तिनगर जाते हुए मलेथा गाँव मिलता है, जो सदियों पहले पानी के लिए तरसता था। माधोसिंह ने पहाड़ खोदकर एक अद्भुत सुरंग निकाली, जिससे मलेथा गाँव हरा-भरा हो गया। इस नहर को बनाने में उसे बड़ी-बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, यहाँ तक कि आपने पुत्र को भी गँवाना पड़ा। फिर भी उसने हिम्मत नहीं हारी और अपने गाँव तक नहर लाने में सफल हुआ।

मलेथा की कूल

धौली[1] का छाला[2] पले किनारो,
ऊँचा माँगै मलेथो[3] को सेरो
एक दिन छयो रुखो मलेथो
एक दिन छयो भूखो मलेथो
कोदो गत्थू को गौं छयो
सटी नी नऊं को होंद छयो

दूर बटि[4] ब्वारी मुंउ मुं गैठी
लादी छै पाणी पीणू कू तैंई
तबी की बात तख रैंद छयो
माधू भण्डारी मासूर छयो
दूर तैं मानता जैकी छयी
राज दरबार मा धाक छयी

एक दिन माधू कोसू चल्यूं
राज दरबार बटी ए थक्यूं
भूख की ज्वाला छै पेट लागी
खाणू को रोटी, भावी मा मांगी
रोटी त छैंचा पर साग नीच
बोली भावी ला चटणी बी नीच
लूण अर मिर्च पीसिका ल्हौ
उनि खै ल्यूं लो दिव रोठला घौं

१. एक नदो, २. किनारे, ३. एक जगह, ४. से।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIB

बोले माधू ना भावी कू तैंयी
भावी स्या लूण सिपणू कू गैयी

जरा अबेर[1] भावी कू ह्वेगे
माधू कू कोध की ज्वाला लैगे
मिलता समझे भावी जी कखे
त्वे पर जलड़ा जकड़ी का लगिगे

तान मा ताना भावी ला धाया
एक की द्वी तैंला सुणाया

गै छौ वीं क्यारी मो मिर्च ल्हांणा
गोबी छन जख आलू लगाणाँ
कूल ल्हैं त्यारो कूल्याँदो कयूं
पाणी ल्है त्यारो पणचाये कयूं

क्यारी की क्यारी उखप्याज की छै
पुंगड़ी[2] पालिंगा अर मेथी की छै

पाणी का घट्ट जख धुरकदा छन
जौंल मंगरा बी धदकदा छन

माधो भण्डारी का नाम लागे
छत्रि छौ वेको अभिमान जागे

माधू ठाकुर उतड़ीण बैठे
भावी कू रोष मा बोली बैठे
तूयी ल्ही औंदी घौं कूल गाडी
तुयी ल्ही औंदी घौं गाड बांधी

मित्र वटि भावी को क्रोध बाढ़े
भैर मुसकैक बोलण बैठे

त्यारा रौंदा जी मिल कूल ल्हाणा
तवे छौंदा जी मिल हौल बाणा

१. देर, २. खेत।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MDF

ता बुवा माधू धिक्कार त्वेकू
ता चुचा माधू, छुछकार त्वेकू

जोंगा मूँडीका विन्दी लगौ तू
स्युंद गाडी का भिटुली वर्णौं तू
वीर क्या जैमा बबराट नीच
'स्यू' क्या जैमा घुघराट नीच

भावी का ताना तानौ की बात
बज्र सी पोड़ी माधो का माथ

साबली कूटली गैंती फौड़ो
धैरी कांदमा दाथी कुल्हाड़ो
कूल खणणू कू अब जाण बैठे
जोश का बोल बोलणा बैठे

गणपती भूमिया देवी की जै
जन्म भूमि गढ़माता की जै

व्यूंत कूली को अब दिखणा बैठो
रौल्यूं रौल्यू माधो जाणा बैठो

साबली बजणी च खणाखण''''॥
धमकदा फौड़ो तैंको दनादन''''॥

गैंती चलदी च जश तीर होवा
कूटी वा जनो शमशीर होवा

चल्दा पैनी कुलाड़ी चटाचट
डालौं तैं काटी घोल्दा खटाखट

छीना चट्टानू का चूरा-चूरा
खणी चट्टाणू का बूरा-बूरा
ऐगे भंडारी स्वरंग क्वरदा
दांती अंखेड़ सी फोड़द-फोड़दा

माधू का एक नौन्याल छयो
शेर को पूत हूँणयाल छयो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

जैं जगा डांडा[1] सोरंग कोरी
तख बटी खन्द एक भारी पोड़ी
माधो का नौना का मुंड लैगे
फोड़ि बरमंड का खंड कैगे

असगुनी कूल स्या अपजसी रै
सिरगत्तो बाल की जैंला बलि ल्हे

चित्त माधो को बैंरागी ह्वेगे
ज्ञान की जोत चमकणा लैगे
बीरु तैं शोक नी करणो चैंदो
तैथैं मिरतू मा नी रोण चैंदो

रौऊ को बांध माधू ला खोले
माई गंगा की जै बोले, बोले

पाणी खकलाट गगलाट कैकी
छल्की छल्की का फकप्याट कैकी

माधो की कृती यश गाँद-गाँदा
आज तैं कूल तख बग्द जांदा

कंकाल की नवांग सुन्दर कृति है, उसकी दो कविताएँ तुम द्यावता (तुम देवता) और खुलपित यहां दी जाती हैं :

तुम द्यावता

तुम द्यावता मीं दासी,
तुम रोज रोज सोदा[2] होन्दा,
मी होन्दी जान्दी बासी।
तुम राली मां घांडी
तुम दिप्प हिरेन्दो जे मुखनी
मी काँचे कच्ची हाँडी।
तुम स्वाती मीं चोली,

१. पहाड़ २. ताजा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MDF

तुम पूर्णं रूप छाँ भंडारा,
मीं रोज तिसाली लोली।
तुम पराण मी काया,
तुम योगी छा उच्च विरागी,
मीं धूल भरा छौं माया।
तुम डाली मीं दाणी,
तुम जीवन का नव अंकुरा,
मीं छौं रस वालो पाणी
तुम गौं स्वरूप मीं तैलो
तुम अपराध्यूँ की छिमा छ्याँ
मीं बगत बगत को गैलो।

खुलपित

मेरी विचारी तिन जीवन मा
खैरी ही खैरी खैने ।।

रात नि खुल्दी घास पाणि कै, तू पुगड़ों[1] मा जान्दी,
भूखी - तीसी - थकीं - पितीं, दवफरम घौरउ आन्दी,
रुखा सूखा द्वी गफरा[2] खाया, बोणूं फिर चली जान्दी,
घासै-बिठगी, लखड़ा गडोली, ढै ढै मण की लान्दी,
उकलि[3]-उन्दारी[4] कटदी-नपदी
जीवन का दिन गैने ।।

जीबन घिसिगे माटे दगड़ी, भाग बिदेसू ही रैगे,
जौंकि कुयेड़ी सैरी मंथा, सौंण बाखदो ऐगे,
ओल पचैन तिन रुड़्यूं[5] का, पूसौ देखे फालो,
दिन-द्वफरा भी गैंणा गणन, उज्यलो बेखी कालो,
रैगे लौंकी जिकुड़ि कुयेड़ी,
आंखि भ्वरीं ही रैने ।।

१. खेत, २. कौर, ३. चढ़ाई, ४. उतार, ५. गर्मियों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

काग़ा बसदा, ब्वल्दी आला, लोलि[1] आग भी भभरान्दी,
रोज ससेंई मौन बुथ्योन्दी, चिट्ठी ही ऊंकी आन्दी,
भुंचे गईं तू सोच फिकरमा, जीवन का दिन कम होन्दा,
मोरि नि सकदी, बिग्चि नि सकदी, आख्यूं का खुलदन-च्यूंदा,
सौंजड़्या तेरी क्वी परदेसू
क्वी अपड़ा मैतू ऐने ।।

केशव ध्यानी के कुछ सुन्दर गीत यहाँ उद्धृत किये जाते हैं, जिनमें पर्वतीय जन-जीवन की सुमधुर झलकियाँ हैं। वहाँ के सौन्दर्य और लावण्य से लबालब भरी झाँकियाँ हैं :

गढ़वाल प्यारो

मेरो हिमवन्त देश गढ़वाल प्यारो
चारी जाली कूल,
हैरी[2]-हैरी डांडी[3] मेरी
रंग बिरंगा फूल। मेरो हिमवन्त०
पिण्डलू का शोभा,
बद्री, केदार नाथ,
छै ऋतु की शोभा। मेरो हिमवन्त०
आरती की थाली,
छोटी-बड़ी रौली मेरी
झुकी-मुकी डाली। मेरो हिमवन्त०
भितरी को सीत,
ग्वेरू[4] की मुरली अर,
घसेयों का गीत। मेरो हिमवन्त०
गीत भरी साज,
डांड्यों म कुयेड़ जख,
दूध - कोसी गाज।
मेरो हिमवन्त देश गढ़वाल प्यारो ।।

१. बेचारी, २. हरी-हरी, ३. पहाड़ियाँ ४. ग्वाले।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अंछर्‌यों की राणी

झूम-झमा झम, खुटों का झांवर रे,
अंछर्‌यो[1] की राँणी आई, गीत गान्दरे।
नौ सोर मुरली बाजी, मोछंग[2] की धुन म
फूलू की पंखुड़ी, भौंर का गीतू म।
....ओजी हो

धम-धमा-धम,
भौंरों की बरात रे
अंछर्‌यों की राँणी आई, फूल फुलान्दी रे।
बाँज की डाल्यों म आई, बुराँस का फूलू म,
फ्योंलि का फूलू म आई, झमकदा गीतू म।
....ओजी हो

छम-छमा-छम,
खुट्‌यों का झाँवर ये
अंछर्‌यों की राँणी आई, गीत गान्द रे।
लंग-लंगी डाल्यों म आई, रुम-झुम पातु म,
छुणक्यलि[3] दाथी म आई, घुगति[4] की घू घू म।
....ओजी हो

सर-सरा-सर, सर,
बथौं का दगड़ रे
अंछर्‌यों की राणी आई, मुल-मुल हैंसदी रे।
हो.....................हो.....................हो!

को जी होलो औंणू ?

'घुगति-बसूती' घूरी घुगति डालि म,
उज्यालि मयलि घूरी घुगती डालि म
रीटि-फीरि आई ऋतु,

१. परी, २. एक गढ़वाली वाद्य यन्त्र, ३. बजती हुई, ४. एक पक्षी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIB

छड़म बाजी लाठी।
फूलु की फूल्यालि आई,
गिंवड़् यूँ की बाटी ॥ घुगति बसूती०
डाँडी हैरि डालि मौलि,
रंग-मती बँसूला।
धरती क कंठ आज,
फूलु की हंसुली ॥ घुगति बसूती०
पंथ्या धौलू[१] फ्योंलि[२], आरु
लय्या[३] फूशे बुरांस[४]।
घुंगटंयालि ठुमकदी आई,
झपन्यालों, हिलांस ॥ घुगति बसूती०
पैत्वल्यों पराज-आज,
कंठ की बडुली।
आज को जी होलु औंणू ?
डुलदी च लटुली ॥ घुगति बसूती०

दीवा जसी ज्योति

चन्दी गड़ी बन्दी,
कैकी सुआ ह्वैंली इनी, लगुती[५] सी लफन्दी,
दीवा जसी ज्योति।
चदरी की खांप,
कैकी सुआ ह्वैंली इनी, सैलूजसी लांप,
दीवा जसी ज्योति।

पाणी जसी पथलीं[६],
रुआं[७] जसी हपली[८]।
डाली जसी सुड़सड़ी,
कंठ की सी बड़ली।

१, २, ३, ४ पर्वतीय फूल, ५. लता, ६. पतली, ७. रुई, ८. हल्की।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बखर्यों की तान्द,
कैकी सुआ ह्वैली इनी, टपरान्दी चकोर,
दीवा जसी ज्योति ।

धुआँ जसी धुपेली,
नौ गज की धमेली।
राजुला जसी राणी,
केला जसी हतेली।

की टकोर,
कैकी सुआ ह्वैली इनी, टपरान्दी चकोर,
दीवा जसी ज्योति ।

स्वींणा सी लिख्वार की,
पिरथी की सि मोल।
बालो सूरिज बाँको,
सोना जसी-तोल।

वास की बडुली,
मिरग सी आँखी सुआ कुमर्यालि लटूत्ता,
दीवा जसी ज्योति ।

नौ सोर मुरली का,
गिताँग जसी गैली।
बुराँस जनी फूल,
फ्योंलि जनी रौतेली।

लगुड़ी लचीली,
कै चाल चलदी सुआ, साज सी सजीली
दीवा जसी ज्योति ॥

अबोध बंधु बहुगुणा के रसीले गीतों में गढ़वाल की धड़कनें बोलती हैं। प्रेम और सौन्दर्य से छलकती उनकी तीन रचनाएँ यहाँ दी जा रही हैं :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

त्यरि म्यरि च जोड़ी

त्यरि म्यरि च जोड़ी कैमा न बिंगै[1] दे,
सौंजड्[2] यौं कि छ्वीं[3] छन तू छ्वीं न लगै दे।
इनी छ्वीं लंगौणू मन बोद भारी,
बिस बणलो अमरित स्वी-सै न करै दे।
कैका दिख्याँ मी पर न मारी तु गारी,
मी जनई पँथेरम् पाणी न खले दे।
धौडाँदि द्वफरी[4] मा बँशुली बजौलो,
तू मोरि बटि भैने कु मुक न पल़ दे।
कमि आँखि टलपल रर्याट करली,
क्वी पूँछलो आँसू आँख्यौं मा लुकै दे।
त्यरिइ तरौं भलि स्वाणि[5] छन तेरि डाँडी,
ज्यू झुरैकी तौकी शोभा न जगै दे।

जुनख्यालि रात च छोरी

जुनख्यालि[6] रात च छोरी।
कनै हैंसि तू ?
गाड[7] पाणि अफ नि पेंदि
फल नि खाँदा डाला
अन्न तैं भि भूख लगद
तीस मेघ-माला।
हर फूल जो स्वाणो[8] लगद
स्वाणो ही नि होंदो
बात को अन्ताज होंद
निस्तुको नि होंदो।
छूँ लगाई लाख, मगर
छपछपि छू लगद क्वी

१. समझना, २. सहेलियाँ, ३. बातें, ४. दुपहर, ५. सुन्दर, ६. चाँदनी, ७. नदी, ८. सुन्दर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

औखियों मा दुनिया वसद
दिल भितर बसद क्वी
गाड द्यखण पड़द पैले
स्वाँ कु मरद फाल[१]
भक्क कख मरेंद भौं[२] कै
बाँद[३] पर अँग्वाल[४]।
भूको ब्वद वलि गदनी
अधणो ब्वद पलि गदनी।
अपणा दिलै मी जणदू
त्यरि जिकुड़ा[५] कन च कनी।

सबु कि बौ, बदेणि बौ

सबु कि बौ[६], बदेणि[७] बौ
त्यारो घुंघरू बाज्यो छम।
धणा गौं का बाठा औंदी तु बाँदी
दुहातें[८] माया[९] बाँटदी जाँदी
गजब कदी तू आँख्यौंन खाँदी
इतरि नि छै तू जम-कम।
हातु नि पकड़ंदी, भुयाँ नी धरेंदी
क्वी धड़ि आँख्यौंन फुंडुनी करेंदी
तरसेंद त्वै पर, जै भी दिखेंदी
चालि-सि चंचल चम-चम।
बीच बजार मा मेलो लग्यूँ च
हर कौथगेर[१०] त्वे पर मर्यूँ च
खौल कि तेरो खिरचा खत्यूँ च
खिरचा खत्यूँ च छम छम।

शिवानन्द नौटियाल ने गढ़वाल के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला है।

१. छलांग, २. हर कोई, ३. सुन्दरी, ४. आलिंगन, ५. हृदय, ६. भाभी, ७. नाचने वाली, ८. दोनों हाथों से, ९. प्रेम, १०. तमाशबीन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MHRD

उनकी **गढ़वाल के लोकनृत्य** एक महत्त्वपूर्ण कृति है, जिसमें गढ़वाल के लोकनृत्यों का सुन्दर ढंग से वर्णन दिया गया है। वैसे, उन्होंने कुछ गीत भी लिखे हैं।

उनका एक गीत यहाँ दिया जाता है :

छम घुँगरू बाजला,
छम छमाछम घुँगरू बाजला
छ घुंगरू बाजला, मांडा की उकाली[१] मा
भली नथुली[२] साजली तडतडी[३]-सी नाक मा,
तू फूल मा फूल छई, बाँद[४] छई लाखों मा,
मैं मायादार[५] तेरो, सरानी रखलो हाथ मा।

उम्मेदसिंह नेगी की **कख होली मेरी डाँडी व काठी** एक सुन्दर रचना है :

कख होली मेरी डाँडी व काँठी

कख होली मेरी डाँडी व काँठी, कख कुरेड़ी सौण की,
रूम झुम बरखा छुम छुम छोया, मैं कू सूझीं छ स्येण की।
हालड़ का बीच छानी होली, भैंसी बियाई सौण की,
दूद तपाला, खीर पकाला, गोंदगी[६] खाला नौंण[७] की।
बल्दू की घांडी, घस्यारियों का गीत आग लगौंदा ज्यू की।
कखड़ी व ग्वदड़ी पाकींगे होली, बग्वाल[८] पड़ली छोरू की,
मुंगरी की लुंग अजूँ नी चाखी खुद लगीं च दादी की।
घ्वीड़ मिर्गू कँ चाँत पियारो, मैं कू प्यारो गढ़वाल छ,
डाँड्यों का दर्शन होई जौन, लालसा या ही मन मा छ।
चिट्ठी न पतरी कै पापी की भी, याद नी होली सुपिना मा,
मुखड़ी देखीक टुकड़ी हौंन्दी प्यार नी होलू कैका दिल मा।

गढ़वाली जन साहित्य परिषद् के तीन प्रकाशन (क) 'गढ़वाली साहित्य की भूमिका' (प्र० संपादक : डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश',) (ख) 'गढ़वाली को नयो कदम' (सं०: डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश') और (ग) 'गढ़वाली का निबन्ध' (सं०: गोपेश्वर कोठियाल) बहुत ही महत्त्वपूर्ण हैं। श्यामचन्द नेगी, पहाड़ी, विश्वम्भर दत्त चन्दौला, दामोदर प्रसाद थपलियाल, भगवती प्रसाद चन्दौला, गोपेश्वर कोठियाल, भगवती प्रसाद

१. चढ़ाई, २. नथ, ३. सुन्दर, पैनी, ४. सुन्दरी, ५. प्रेमी, ६. टिक्की, ७. मक्खन, ८. मौज।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पांथरी, चक्रधर बहुगुणा, पुरुषोतम डोभाल आदि के निबन्ध विषय-वस्तु की दृष्टि से बहुत ही सुन्दर हैं। गढ़वाली भाषा के अनेक पहलुओं पर सुन्दर ढंग से लिखे गये इन निबन्धों का अपना अलग महत्त्व है।

डॉ० गोविन्द चातक का **क्या गोरी क्या सौंली** निबन्ध-संग्रह बहुत ही मजेदार है। उसका एक अंश यहाँ उद्धृत किया जा रहा है :

कुछ अजीब-सी चीज छ जनानी दुनिया मा ! खैर, दुनिया की बात त पिछाड़ी करला। दुनिया मा चा वा कन्नी लगो वर घर की त वा शोभा बोलेन्दी। बिना जनानी कूड़ी नी सजदी। बात या छ कि घर से भी बड़ी घरवाली। घरवाली नी त घर भुत को डेरो। चौतिरफू अँध्यारो ही अँध्यारो। जै घर मा जनानी छ वख उजाला की मुट्ट को क्या कर्न। कवि बिहारी न भी त यो ही बोले कि रात-दिन को पता नी चलदो वख, न औंस को औणो मालूम होन्द, अर न पूर्णमासी को जाणो। यान ही गते जाणनक पातड़ो रखण पड़द हर जनानी वाला सणी। पर हमारा कुछ भाई बिहारी की बात पर भी मोसो पोतदन, बोलदन, जनानी चा कथी गोरी हो पर छ काली ही अँध्यारो रात की तरौं। होती। भगवान जाणो। इथा हम भी जाणदाँ कि कुछ जनानी गोरी होन्दीन जोन की तरौं अर कुछ तवा की तरौं मोस-पट ! दुनियाँ गोरी जनान्यों तैं खूब भाणदी, पर जख तक भली होण को सवाल छ, न सेती भली, न सौंली। उनो त चिफ्ली धिच्ची सभी पेन्दन। अर मन की बात भी होन्दी-मन लग्यो गधी से त परी को क्या काम ? मन की रोटी छ, खुशी को सौदा। उनो त ज्वानी मा मेंडुकी भी सुन्दर देखेंदी पर उथा पाणी मा रण पर भी मेंडुकी गोरी नी बणी पौंदी। घुसे-घुसेक सोरा अर नहे-नहेक गोरा कख छा ? रई प्यार की बात। उनो भी मिठा का लोभ जूठो खायेन्द ही छ। पर ज्यादातर, लोगू तैं काम प्यारो होन्दो, चाम प्यारो नी होन्दो। गौड़ी जनी रुवाँल हो, उनीं दूधाल भी हो त फिर चैंद क्या छ ? खिचड़ी मा घ्यू होयूँ ही चैंद। भला फूल का भली वासिना भी हो, तबी ठीक लगदो। उनो क्वी सपेद हाथी खुंटा पर बाँधीक देखदो रौ, त हमारो क्या बिगाड़दो ? पर जनानी को अस्थान और भी बड़ो छ। वा सिर्फ नुमैश की चीज ही नी। जनानी गिरस्ती की बणौंदारी छ। बोल्युँ नी कि ब्वारी अर म्वारी। ब्वारी तैं म्वारी होयुँ चैंद। हम यनु नी बोलदा कि वा गोरी हो या सौंली।

फेर भी जनानो गोरी न होवन, यो कु बोलदो ? जै दी देऊ जगदीस,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

वैकी क्या रीस। अपनी जनान सबू तैं भली लगदी, पर अगर जु कै सणी भागन काली मिल जौ त क्या केन कपाल फोड़न। रोई रोई थोड़ी मिल्दी बिराणी जोई। लेखीं मिल्दो, देखीं नी मिल्दी। यो भी ठीक नी छ कि अपणी देखी नांगी कांगी, अर हैका की देखी लाई पैरीं, अर तब लैग्या रोण-मर्न-हे मेरा बुबा की अक्कल गै मैक स्याई नी माँगी ! अरे भाई, हैका की खूब छ त होण द्या। तुम किलै विराणा सोना पर मन दौड़ौणा। मन तैं मनैक रखा न ! उनो त बाखरा का पीछ बाग अर घाघरा का पीछ लाग होंदी ही छ। पर तुम ही बता, अपणी स्वैणी भौंदी कु चाँदो ? जुता को गारो अर स्वैणी की जारो वरोबर। तब कु अपणी गोरी पर हैका की नजर लगण देलो ? यान ही त लोग अपणी सुन्दर जनानियों तैं औरु का सामणे नी औण देन्दन। डिट्ठी की जोई अर मुट्ठी को धन। मुट्ठी मा जु धन छ वी अपणो छ, अर जनानी जब तैं आँखों का सामणे छ तब तैं ही अपणी छ। याँ को मतलब यो नी कि जनानी घास को तिरण छ कि जरा-सी पाणी की लैर आई, अर बोल कि ले, मैं त चल्दऊँ। पर भाई, दुनियाँ च या-यख बचद बचद भी ठसाक लग जाया करदे।....'

डॉ० गोविन्द चातक ने गढ़वाली लोकगीतों पर महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई हैं, जिनमें **गढ़वाली लोकगीत** और **मध्य पहाड़ी भाषा का शास्त्रीय अध्ययन** अच्छी कृतियाँ हैं। मोहन लाल बाबूलकर ने गढ़वाली लोकगीतों और लोकगाथाओं पर **गढ़वाली लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन** शोधपूर्ण पुस्तक लिखी है। डा० उमाशंकर 'सतीश' ने गढ़वाली की एक विशेष विधा पर काम किया है। हर्ष 'पर्वतीय' इस दिशा में बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

गढ़वाली साहित्य मंडल दिल्ली द्वारा संपादित **धुयाल** और **गिरीश** दो महत्त्वपूर्ण संग्रह हैं। वैसे, अभी तक गढ़वाली का न कोई महत्त्वपूर्ण व्याकरण ही लिखा गया है और न कोई उपन्यास ही।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

६

गढ़वाली लोकगीत

गढ़वाल लोकगीतों की धरती है। यहाँ का कण-कण गितार[1] है। छलछलाती गाड[2]-गदनियों का स्यूँस्याट[3]; लहलहाते खेतों का र-र-स्वर, मन्द-मन्द बयार का सर-सर, छोयौं[4] का छर-छर, रंग-बिरंगी चिड़ियों की चहचहाट, वर्षा की रुण-झुण[5], झंझा की झन-झन, बिजली की तड़पन, मेघों का गर्जन-सभी से धरती के बोल निकलते हैं। हल चलाते, बीज बोते, खेत निराते, फसल काटते, घास छीलते, ऊन कातते, राँछ[6] चलाते, यहाँ न-जाने कितनी स्वर-लहरियाँ फूट पड़ती हैं। पुंगड़ों[7] में फसलों के साथ-साथ गीत भी उपजते हैं। इसीलिए इन लोकगीतों में जन-जन के स्वर, युग-युग के रंग, मन-मन की तरंग, सुख-दुख के अर्थ और जीवन के चिर-नूतन आख्यान जीवन्त रूप में मिलते हैं, जिन्हें यहाँ के हुड़क्या, मिरासी, बाद्यी, औजी, ढाक्की हुड़के[8] की हुड़-हुड़, डौंर-थाली की डिम-डिम, ढौल-दमों की धिना-धिकड़ी-धिना-धिकड़ी पर निरन्तर दुहराते रहते हैं।

गढ़वाल में लोकगीतों के अनेक रूप मिलते हैं, किन्तु अभी तक इनका ठीक ढंग से वर्गीकरण नहीं किया गया है। लोकगीतों को शैली, विषय और रस की दृष्टि से बारह भागों में विभक्त किया जा सकता है।

१—मांगल

क. आह्वान गीत, ख. पूजा गीत, ग. विवाह गीत, घ. लोरियाँ (बहुत कम मिलती हैं)।

२—झुमैलो (वेदना और प्रेम के गीत)

क. झुमैलों, ख. छोपती, ग. लामण।

१. गायक, २. नदी-नाले, ३. कलकल, ४. निर्झर, ५. रिम-झिम, ६. कपड़े बुनने का रंग, ७. छोटे-छोटे खेत, ८. वाद्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

३—थड्या गीत या बासन्ती (गीत)
क. वासन्ती गीत, ख. होरी (होली) ।

४—बाजूबन्द (गीतात्मक संवाद)

५—खुदेड़ (विरह के गीत)

६—चौंफला (मिलन के गीत)
(धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—चार फलों की उपलब्धि)

७—कुलाचार (औजियों द्वारा गुणगान)—विरुदावली

८—चौमाशा (वर्षा के गीत)

९—बारामासा (बारह महीनों का वर्णन)

१०—पट—उपदेशात्मक (सूक्ति-वाले नीतिगीत)

११—सामयिक गीत–(बाद्दियों और सामयिक प्रसंगों के गीत)

१२—राष्ट्रीय गीत–(राष्ट्रचेतना के गीत)

१. मांगल

गढ़वाल के सबसे पुराने गीत संभवतः मांगल (मंगल-गीत) ही हैं। वैदिक ऋचाओं की तरह इनमें भी देवी-देवताओं का आह्वान, स्तुति, मंगल-कामना, आशीर्वाद आदि के भाव निहित हैं। इनमें प्राकृतिक शक्तियों की पूजा, पद-पद में जय और यश की कामना (यशो मे देहि) और कई स्थानीय देवी-देवताओं (भैरों, हीत, नरसिंह आदि) की स्तुतियाँ विद्यमान हैं। भारत की परम्परा यह रही है कि कोई भी काम आरम्भ करने से पहले 'मंगलाचरण' होता है—

मंगलं भगवान् विष्णुः, मंगलं गरुड़ध्वजः ।
मंगलं पुण्डरीकाक्षः, मंगलायतनयो हरिः ॥

यही भावना इन सब गीतों में वर्तमान है। सभी मांगलिक कार्यों में, चाहे देवपूजन हो, विवाह, हो, उपासना हो, 'मांगल' गीतों का प्रयोग होता है।

विपय-वस्तु की दृष्टि से इन गीतों के चार रूप मिलते हैं —

(क) आह्वान गीत

(अ) बीजी जावा बीजी[1], हे खोली[2] का गणेश
बीजी जावा बीजी, हे मोरी का नारेण[3]

१. जागो जागो हे, २. पौर, ३. नारायण ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बीजी जावा बीजी, हे खतरी[1] का खैंडो[2]
बीजी जावा बीजी, हे कूंती का पंडौऊं[3]
बीजी जावा बीजी, हे कांठ्यों[4] उदंकारों[5]
बीजी जावा बीजी, हे नौखंडी[6] नरसिंह
बीजी जावा बीजी, हे संभु भोलेनाथ
बीजी जावा बीजी, हे रात की चाँदनी
बीजी जावा बीजी, हे दिन का सूरजु
बीजी जावा बीजी, हे ऐंच का आगास[7]
बीजी जावा बीजी, हे नीस[8] की धरती
बीजी जावा बीजी, हे नौ खोली का नागों

(आ) ऐजा अगनी[9] मेरा मातलोक,[10] मेरा मातलोक
त्वै बिना, अगनी, ब्रह्मा, भूखो रैगे, ब्रह्मा भूखे रैगे
कनु[11] कैकि औंलू, कनु कैकि ओलू, तेरा मातलोक
तेरा मातलोक यो बुरो अत्याचार, यो बुरो अत्याचार
क्या होलो अगनी बड़ो अत्याचार, बुरो अत्याचार
माया - धीया[12] माया - धीया ऊजो - पैंछों[13]
बेटा - बाबू को लेखो - जोखो[14]
ब्वारी[15] ह्वै की सासू अड़ाली[16]
नौनो[17] ह्वै का बाबू पढ़ालो
नगरी का लोको[18] नगरी का लोको तै मातलोक।
मी[19] तैं लत्याला,[20] थक थूकाला,
कनु कैकि औलो, कनु कैकि औलो ते मातलोक?
तुमारा लोक मा बढ़ो अत्याचार
तुमारा लोक को तुमारा लोक को खोटो चलण[21]।
ऐजा अगनी ऐजा अगनो मेरा मातलोक,
त्वै बिना अगनी ब्रह्मा भूखो रैगे।

१. क्षेत्रपाल, २. तलवार, ३. पांडव, ४. चोरियों का, ५. प्रकाश, ६. नौ भाग धरती के, ७. आकाश, ८. नीचे, ९. अग्नि, १०. मातृलोक, ११. कैसे, १२. माँ-बेटी, १३. लेन-देन, १४. लेखा-जोखा, १५. बहू, १६. सिखाती, १७. बेटा, १८. लोग, १९. मुझे, २०. लात मारेंगे, २१. अनोखी चाल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(इ) प्रभात को परब[1] जाग, गो सरूप पृथ्वी जाग
धर्म सरुपी अगास[2] जाग, उदयंकारी काँठा[3] जाग।
भानुपँखी गरड़ जाग, सत लोक जाग।
मेघ-लोक जाग, इन्द्र-लोक जाग।
सूर्य-लोक जाग, चन्द्र-लोक जाग,
तारालोक जाग, पवन-लोक जाग।
ब्रह्मा का वेद जाग, गौरी का गणेश जाग।
हरो भरो संसार जाग, जन्तु जीवन जाग,
कीड़ी-मकोड़ी जाग, पशु-पक्षी जाग।
नर-नारैण जाग, मरद-औरत जाग,
दिन अर रात जाग, जमीन-आसमान जाग।
शेष समुद्र जाग, खारी समुन्द्र जाग,
दूदी समुद्र जाग, खैराणी समुद्र जाग।
घोर समुद्र जाग, अघोर समुद्र जाग,
प्रचंड समुद्र जाग, श्वेत-बंध रामेसुर जाग।
ह्यूं हिंवालू[4] जाग, पयालू[5] पाणी जाग,
गोवर्धन पर्वत जाग, राधाकुंड जाग।
बाला बैजनाथ जाग, धौली दिप्रियाग जाग,
हरि हरद्वार, काशी विश्वनाथ जाग।
बूढ़ा केदार जाग, भोला शम्भुनाथ जाग,
कालसी कुमौंऊ जाग, चोपड़ा चौथान जाग।
फटिग का लिंग जाग, सोवन की गादी जाग।

पूजा गीतों में जय, यश और सौभाग्य की कामना की गयी है—

(ख) पूजागीत

पोखरी का हीत[6], जय जश दे,
तेरा जाति[7] आयो जय जश दे
भेंटुली[8] क्या लायो, जय जश दे,

१. पर्व, २. आकाश, ३. शिखर, ४. हिमालय, ५. नदी, ५. एक जगह, ६. हित देवता (गाँव का), ७. यात्रा, ८. भेंट।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सोवन[1] धुपाणी[2] लायो जय जश दे
मोत्यों[3] भरी थाल लायो जय जश दे,
जाति तेरा आयो जय जश दे
पोखरी का हीत जय जश दे,

प्रस्तुत गीत में धरती माता, कूर्म (कच्छावतार) देवता, भूमिपाल, गंगा और पंचनाम देवताओं से 'जौ' (ऐश्वर्य) और यश की कामना व्यक्त है—

जौ[4] जश दे धरती माता
जौ जश दे कुरम[5] देवता
जौ जश दे भूमि का भूम्याल[6]
जौ जश दे गंगा की सौणी[7] धार
जौ जश दे पंचनाम देव
जौ जश दे भायों[8] की जमात
जौ जश दे देऊ भूम गढ़वाल

गढ़वाल में प्रत्येक गाँव का अपना एक देवता होता है, जो खेती-बाड़ी की रक्षा करता है। इसीलिए लोग हर फसल के पकने पर पहले उसकी पूजा करते हैं। प्रस्तुत गीत में उसी क्षेत्रपाल देवता से विघ्न-निवारण करने की स्तुति की गयी है—

देव खितरपाल[9] घड़ी-घड़ी का विघ्न टाल
माता महांकाली का जाया[10] चंड भैरों[11] खितरपाल
प्रचंड भैरों खितरपाल, काल भैरों खितरपाल
माता महांकाली का जाया, बूढ़ा महारुद्र का जाया

तुमारो ध्यान जागो

प्रस्तुत गीत गृह-स्वामियों की मंगल-कामना के लिए औजियों द्वारा गाया जाता है—

यूँ को राज रखो देवता,
माथा भाग दे देवता!
यूँ का बेटा-बेटी रखो देवता,

१. सोने की, २. धूपदानी, ३. मोतियों से, ४. ऐश्वर्य, ५. कूर्म, ६. भूमिपाल, ७. सुहावनी, ८. भाइयो, ९. क्षेत्रपाल, १०. पुत्र, ११. भैरव।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

यूँ का कुल की जोत जगौ देवता।
यूँ का खाना जश दे,
माथा भाग दे देवता!
यूँ की डाँडो काँठ्यों[१] मा,
फूँलीं रौ फ्योंली[२] डंड्यौली
यूँ कि साग सवाड़ी,
रौन रोज कलबली[५]।
धरती माता सोनो बरखाओ,
नाजा[६] का कौठारा[७] दे,
धन का भंडारा दे।

गढ़वाल में नाथ और सिद्धों का भी पर्याप्त वर्णन मिलता है। बुरे प्रभावों से बचने के लिए गढ़वाल में **रख्वाली** की परम्परा है। इसमें रक्षा के लिए **राख की रेखा** बनायी जाती है। इसीलिए इसका नाम **राखावली (रख्वाली)** पड़ा—

ओं नमो वभूत[८], माता वभूत, पिता बभूत,
वभूत तीन लोक तारिणी।
ओं नमौ वभूत, माता वभूत, पिता वभूत,
सब दोष की निवारिणी।
ईश्वरल औणी[९] गोजलि छाणी[१०],
अनन्त सिद्धों ने मस्तक चढ़ावणी।
चढ़े वभूत नि पड़े हाऊ,
रच्छा करे आतम विश्वासी गुरू गोकं[११] राऊ।
जरे जरे[१२] धरेतरी[१३] फले, धरेतरी मात गायत्री[१४] चरे,
सुषे सुषे[१५] अगनि मुख जले।
स्या वभूत नौ नाथ पुर्षकूं चढ़े,
स्या वभूत हैंसदा कमल कूं चढ़े।
चतुर्थी वभूत चार वेद कूं चढ़े,

१. चोटी, २. एक फूल, ३. एक फूल, ४. खेत (बाड़ी), ५. हरी-भरी; ६. अनाज, ७. कोठार, ८. विभूति (राख), ९. ईश्वर ने बनाया, १०. छानकर, ११. गौरखनाथ, १२. हरी-भरी होकर, १३. धरती, १४. गाय, १५. सूख-सूख।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पंचमें वभूत पंचदेव कूं चढ़े।
हंसन देखे तुमारू नाऊं,
आप गुरू दाता तारो, ज्ञान खड्ग ले कालै मारो।
औंदी डैकणी[1] द्यालो पताल,
त्वै देऊं रे डाकणी बजुर का ताल।
दुख[2] नावे सुष बैठे बस कुंवार किकरे माया,
इस पिंड की अमर काया।
अमर पथी बजुर[3] की काया।
घर घर गोरक वैकर सिद्धि काया निरमल निधी।
सोल कला सा पिंड वाला घट पिंडक गोरक रखवाला।

नरसिंह

विष्णु के अवतार नरसिंह को गढ़वाल में एक नया रूप दिया है। गुरु गोरखनाथ के चेले के रूप में उन्हें प्रस्तुत किया गया है। चिमटा, झोली, चाबुक, डंडा, मुद्रा आदि से सुसज्जित कर उनका आह्वान किया है :

जाग जाग नरसिंह बीर बाबा,
रूपा को तेरो सोटा जाग, फंटिगू की तेरी मुद्रा जाग,
डिमरी रसोया जाग, केदारी रौल जाग!
नेपाल तेरो चिमटा जाग, खरुबा की तेरी झोली जाग!
तमा की पत्री जाग, सतमुख तेरो शंख जाग!
नौं लड्या चाबुक जाग, ऊर्दमुखा तेरो नाद जाग।
गुरु गोरखनाथ का चेला जाग,
पिता भस्मासुर माता महाकाली जाग!
लोह खम्ब जाग। जागरन्तो होई जाई बीर बाबा नरसिंह।
वीर तुम खेला हिण्डोला! वीर उच्चा कैलासू,
हे बाबा तुम खेला सोवन हिंडोला!
हे वीर तुम मारा झकोरा! अब चौद भुवन मा,
हे वीर तीन लोक पृथि, सातौं समुद्र बाबा।
हिण्डोलो घूमद घूमद चढ़े बैकुण्ठ सभाई। बीर इन्द्र सभाई,

१. डाकिनी, २. दुख नष्ट होना, ३. वज्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

तब देवता जागदा होई गैन, लौंदन फूल किन्नरी।
शिव जी की सभाई पेंदन भाँग की कटोरी,
सुलपा की रौंण पेन्दन-राठ वाली भाँग।
तब लैग्या भाँग का झकोरा।
तब जाँदू बाबू कविलासी गुम्फा
जाँदू गोरख सभाई, जाँदू बैकुंठ सभाई!

भैरों (भैरवनाथ)

भैरवनाथ का आह्वान कर सभी कष्टों को दूर करने की प्रार्थना की जाती है। यही इस गीत का सार है—

रच्छा करी बटुकनाथ भैरों,
चौड़िया नारसिंह, वीर नौरतिया नारसिंह।
ढौंढिया नारसिंह, चौरंगी नारसिंह।
फोर मंत्र ईश्वरो वाच।
ॐ नमो आदेश, गुरु कौं आदेश!
प्रथम सुमिरौं नादबुद[1] भैरों,
द्वितीय सुमिरौं ब्रह्मा भैरों,
तृतीय सुमिरों मछेन्द्रनाथ भैरों,
मच्छ रूप धरी ल्यायो।
चतुर्थ सुमिरौं चौरंगी नाथ,
विधा उत्तीर्थ करी ल्यायों।
पंचमें सुमिरों पिंगला देवी,
षष्ठे सुमिरौं श्री गुरु गोरख साई,
सप्तमे सुमिरौं चंडिका देवी!
या पिंडा[2] को छल करी, छिद्र करी,
भूत, प्रेत हर ले स्वामी!
प्रचंड बाण मारि ले स्वामी!
सप्रेम सुमिरौं नादबुद भैरों,
तेरा इस पिंडा को ध्यान छोड़ादे!

१. भैरवनाथ का एक नाम, २. शरीर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इस पिंडा को भूत, प्रेत, ज्वर उखेल[1] दे स्वामी !
फिर सुमिरौं दहिका देवी,
इस पिंडा को दग्ध बाण उषेल दे स्वामी !
अब मैं सुमिरौं कालिपुत्र कलुवा वीर,
द्यू लो तोई स्वामी गूगल को धूप,
कलुवा वीर आग रख पीछ रख !
सवा कोस मू रख, पाताल मू रख !
फीली फेफ्नी को मास रख,
मुंड को मुंडारो उखेल,
मुंड को जर उखेल !
पीठी को सलको उखेल,
कोखवी की धमाक उखेल,
बार बिथा, छत्तीस बलई[2] तू उखेल, रे बाबा !
मेरी भक्ति, गुरु को शक्ति, सब साचा
पिंडा राचा, चालो मंत्र, ईश्वरो वात्र
फोर मंत्र, फट् स्वाहा,
या बिक्षा नी आन दूसरी बार।

गंगा

गंगा भारतीय जन-जीवन की जीती-जागती कहानी है। लोकजीवन में उसका अपना अलग महत्त्व है। उसकी महिमा और गरिमा की स्वर-लहरियाँ जन-जन का कंठहार हो गयी हैं। उसी का एक रूप इस गीत में व्यक्त किया गया है—

गंगा माई, गाडू[3] रिंग्या[4] ओद,
गंगा माई, इनी मातमी माई,
त्वैन उत्पइ लिने, हिमालै का गोद।
गंगा जी, रीटी जाली काई,
विष्णु चरण से छूटी, शिव जटा समाई।
गंगा माई, इनी मातमी माई, शिव जटा समाई !
गंगा जी, रीटी जाली काई,

१. दूर कर दे, २. बला, ३. नदियों, ४. घूमी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

शिव जटान छूटे, मृत्यु मंडल आई !
गंगा माई, इनी मातमी माई, मृत्यु मंडल आई !
गंगा जी, तराजू का झोका,
तेरी जातरा[1] औंदा, देसू-देसू का लोका।
गंगा जी, अखोड़ू की साई,
सोवन की जटा माता, मोती भरी ले बाँही !
गंगा माई, इनी मातमी माई, मोत्यों भरी ले बांहीं।
आँगड़ा की तणी, गंगा जी,
आग-आग चले माता, पीछ-पीछ हीरों की कणी।
गंगा जी, लमडाई लोड़ी,
आग आग चले माता, पीछ-पीछ गौ की जोड़ी।
गंगा माई, इनी मातमी माई, पीछ गौ की जोड़ी।
गंगा जी, मँडवा की माणी,
चाँदी सी चलक माता, सुहाग-सी स्वाणी।
गंगा माई इनी मातमी माई, सुहाग सी स्वाणी !
गंगा जी, कागजू की स्याई,
भगतू का खातर माता, मृत्यु मंडल आई।
गंगा जी, औंलू को अचार,
पंचनाम देव माता, करदा जै-जैकार।
गंगा माई, इनी मातमी माई, करदा जै-जैकार।

गुरु-महिमा

भारतीय साहित्य में गुरु का स्थान सर्वोच्च माना गया है। इसी भावना को इस गीत में व्यक्त किया गया है—

हाथ जोड़ी गुरु जी परणाम,
पैले[2] माया हरि को परणाम,
जौन उपजाई सकल संसार।
जुवार[3] लगोंदू देवी जी पार्वती,
जींका सत से होये अनिधि पुराण।

१. यात्रा, २. पहले, ३. नमस्कार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जुवार लगोंदू गुरु जी गोरख
हाथ जोड़िक अरज गुरु जी गोरख।
मैंक देण गुरु जी सकल संसार,
चँद सूरज देण पौण[1] पाणी[2]
मैंक देण गुरुजी विधना[3] को भार।

(ग) विवाह गीत

वैवाहिक गीतों में देवी-देवताओं से कल्याण और सुफल की कामना, देवताओं, औजियों (वादक), मंगल्यानियों (मंगल गीत गायिकाओं) को निमन्त्रण देना, दान का महत्त्व, बारात-आगमन, वर-वधू का सौन्दर्य-वर्णन, वेष-भूषा की चर्चा, कन्या की सखियों द्वारा वर देखने की इच्छा, सप्तपदी और विदाई आदि सम्पूर्ण कार्य-कलापों का वर्णन रहता है।

(अ) पैले[4] न्यूते[5] पैले न्यूते, वेदमुखी बरमा,
आज चैन्द बरमा जी को काज।
तब न्यूते, तब न्यूते औजो को बेटा,
आज चैन्द बढ़ैं[6] को काज।
आज न्यूती याले मैन हालदान[7] की बाड़ी,
आज चैन्द हलदी को काज,
आज न्यूती यालेन मैन मंगल्यानी[8] नारी,
आज चैन्द मांगल को काज।
आज न्यूती यालेन मैन साट्यों की सटेड़ीं[9],
आज चैंद मोतियों को काज।

(आ) दी देवा बाबा जी, कन्या को दान
दानू मा दान होलो, कन्या को दान।
हीरा दान, मोती दान, सब कोई देला,
तुम देला बाबा जी, कन्या को दान।
तुम होला बाबा जी, पुण्य का लोभी,
दी देवा बाबा जी, कन्या को दान।

१. पवन, २. पानी, ३. ब्रह्मा, ४. प्रथम, ५. निमंत्रण, ६. बधाई, ७. हल्दी, ८. मंगल गायिकाएँ, ९. धान के खेत।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

हेम दान गजदान सब कोई देला,
तुम देला बाबा जी, कन्या को दान !

(इ) प्रस्तुत गीत में वर और वधू दोनों पक्षों को ओर से रूप देखने की इच्छा प्रकट की गयी हैं :

वर-पक्ष की ओर से—

खोली देवा खोली देवा, ए दौड़ पड़दा[1],
देखू मैं कन्या को रूप।

कन्या-पक्ष का उत्तर—

हमारी कन्या छ गौरी स्वरूप, तुमारो बन्दड़ा श्याम स्वरूप।
केन होय केन होय श्याम स्वरूप,
बन्दड़ा पर लगे जेठ की धूप।

वर-पक्ष की ओर से—

खोली देवा खोली देवा, ए दौड़ पड़दा,
देखूँ मैं कन्या को रूप।

कन्या पक्ष का उत्तर—

हमारी कन्या छ सावित्री स्वरूप,
तुमारो बन्दड़ा, चमार सी काळो।
बन्दड़ा पर लगे, जेठ की धूप।

देवस्तुति

मंगल कामना के सबसे पहले कूर्म देवता, फिर धरती माता, गणेश, नारायण, भूम्याल (भूमि के देवता), पंचनाम देवता और पितृ-देवता की स्तुति के रूप में यह गीत गाया जाता है—

(क) बोला-बोला सगुन बोला, बोला-बोला सगुन बोला
जौ जस देने कूरम देवता, जौ जस देने धरती माता,
जौ जस देने खोली का गणेश, जौ जस देने मोरी का नारैण,
जौ जस देने भूमि को भूम्याल, जौ जस देने पंचनाम देवता।
जौ जस देने पितर देवता,
तुमारी थाती मा यो कारीज कीयों, यो कारिज सुफल फलयाना।

१. पर्दा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बारात आगमन

(ख) कै भड़[1] को आइ होलो, यो दल-बल,
कै भड़ की आई होली, या पिंगली पालंकी,
केक सेन्दो बाबा जी, निंद सुनिंद,
ऐ गैन बाबा जी, जनती[2] का लोक,
नी सेन्दू बेटी मैं, निन्द सुनिंद।
तेरी जनीत कांद ओगी लौलू !
बरमा जी करला, गणेश की पूजा,
वर तैं लगौलू, मंगल पिठाई।

सप्त पदी (सात फेरे)

(ग) पहिलो फेरो फेरे लाड़ी, कन्या च कुमारी,
दूजो फेरो फेरे लाड़ी, कन्या च माँ की दुलारी।
तीजो फेरो फेरे लाड़ी, कन्या च भायों की लड्याली,
चौथो फेरो फेरे लाड़ी, मैत[3] छोड्याली।
पाँचों फेरो फेरे लाड़ी, सैसर[4] की च त्यारी,
छठो फेरो फेरे लाड़ी, सासु की च ब्वारी,[5]
सातों फेरो फेरे लाड़ी, कन्या ह्वे चुके तुमारी।

२. झुमैलो

गढ़वाल में झुमैलो गीत वेदना और प्रेम के प्रतीक हैं। बसन्त के आने पर जब चारों ओर मादकता और बहार छा जाती है, तब आन्तरिक पीड़ा से छटपटाती नव-युवतियाँ झुमैलो गाकर दुखड़ा भुलाने का प्रयत्न करती हैं। वास्तव में इन लोकगीतों में नारी-हृदय की टीस और कसक रहती है, साथ ही रूप और सौन्दर्य का वर्णन भी।

(क) झुमैलो

आई गेन ऋतु बौड़ी[6] दॉई जनो फेरो[7], झुमैलो
ऊबा[8] देसी ऊबा जाला, ऊँदा[9] देसी ऊँदा, झुमैलो
लम्बी-लम्बी पुंगड् यों[10] मां, रअ् रअ् शब्द होलो, झुमैलो
गेहूँ की जौ की सारी, पिंग्ली[11] होई गैने, झुमैलो

१. वीर, २. बारात, ३. मायका, ४. ससुराल, ५. बहू, ६. लौटना, ७. फसल मोड़ते समय बैलों के चक्कर, ८. ऊपर, ९. नीचे, १०. खेत, ११. पीली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

गाला गीत बसन्ती, गौं का छोरा[१] छोरी, झुमैलो
डाँडी काँठी गुँजी ग्येन, ग्वैरू[२] को गितूना, झुमैलो
छोटी नौनी-नौनी, मिलि देल्यू[३] फूल चढ़ाला, झुमैलो :
जौं का माई रला, दंला टालुकी[४] अंगूड़ी[५], झुमैलो
मैतु[६] बैण्युं कु अप्णी, बोलौला चेत मैना, झुमैलो।

(आ) प्रस्तुत गीत में घास काटती हुई किसी रूपसी से बटोही पूछ रहा है कि तुम किस की बहू हो—

हे लठ्याळी[७] तू कैकी बौराण छ?
धुँवाँ-सी धुपली[८], पाणी सी पतली,
केला-सी गलखी, नौण[९]-सी गुँदकी,
दिवा जसी जोत, कैकी बौराण छ?
इनी मेरी होंदी जिकुड़ी[१०] मा संदी[११]।
बादल सी झड़ी, दूबला[१२] सी लड़ी,
भीमल सी सेटकी,[१३] लाबू[१४] सी-ठेलकी,
फ्यूँली[१५] की-सी कली, कैकी बौराण छ?
नाक मा छ तोता, जीभ मा क्वील,[१६]
आँख्यों मा आग, गालू मा गुलाब।
हुड़की-सी कमर, कैकी बौराण छ?
इनी मेरी होंदी, हथगुली मा[१७] सेन्दी।
बाँदू[१८] मा की बाँद, चाँदू मा की चाँद।
चीणा[१९] जसी झम,[२०] पालिंगा[२१] सी डाली।
हिंसर की-सी डाळी, कैकी बौराण छ?
घास काटद काटद, बणी छ गितांग[२२]
हे लठ्याली दादू, कैकी बौराण छ?

१. लड़का, २. चरवाहा, ३. देहली, ४. चुनरिया, ५. अगर, ६. मायके, ७. आली, ८. महीन, ९. मक्खन, १०. हृदय, ११. सौती, १२. दूब, १३. छड़ी, १४. पत्ता, १५. एक सुन्दर फूल, १६. कोयल, १७. हथेली, १८. सुन्दरी, १९. एक प्रकार का अनाज, २०. वाली, २१. पालक, २२. गवैया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ख) छोपती

छोपती खाँई और जौनसार में ही प्रचलित हैं । इनमें भी प्रेम, रूप और संवाद की त्रिवेणी रहती है । गढ़वाल में अन्यत्र इनका प्रचलन नहीं है । स्त्री-पुरुष इन गीतों को गाते हुए मस्त हो जाते हैं । इन्हें प्रेम और रूप के प्रतीक होने के कारण झमैलो में ही सम्मिलित किया गया है ।

पोसतू[1] का छुमा, मेरी भग्यानी बौ[2] ।
आज की छोपती, मेरी भग्यानी बौ ।
रै तुमारा जुमा, मेरी भग्यानी बौ ।
अखोड़ का डोका,[4] मेरी भग्यानी बौ,
रै तुम्हारा जुमा, मेरी भग्यानी बौ,
हम अजाण लोका, मेरी भग्यानी बौ ।
बाजी त छुड़ीका[5] मेरी भग्यानी बौ,
इनू देण दुवा[6] मेरी भग्यानी बौ,
हींग सा तुड़ीका[7] मेरी भग्यानी बौ ।
काखड़[8] की सींगी, मेरी भग्यानी बौ,
रातू क सुपिना देखी, मेरी भग्यानी बौ ।
दिन आँख्यों रींगी, मेरी भग्यानी बौ
बान[9] को हरील[10], मेरी भग्यानी बौ,
रिंगदों रिंगदो,[11] मेरी भग्यानी बौ,
त्वै मुंग[12] सील,[13] मेरी भग्यानी बौ ।

(ग) लामण

लामण भी गढ़वाल के खाँई और जौनसार प्रदेश में ही गाये जाते हैं । ये भी प्रेम से ओत-प्रोत हैं, पर शैली और लय की भिन्नता के कारण ये छोपती से नहीं मिलते, वैसे विषय-वस्तु एक ही है ।

१. पोस्त का फूल, २. भावी, ३. भाग्यशाली, ४. पत्ते, ५. छुड़की, ६. दोहा, ७. छौंक, ८. काकड़, ९. बांज (पेड़), १०. हरियाली, ११. घूमता घूमता, १२. कपास, १३. शरीर ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

लामण लान्दरिय[१] किति[२] लामण जाणे,
डोडी[3] के भितर किती फीमेंर दाणे[४]।
लाऊँ[५] लामण, लाऊँ देवोरा बुंगा,
कोई शुण टीर कोई शुण वाडवा तुंगा।
लाऊँ लामण जाण कीणई जाला,

३. थड्यागीत या बासन्ती

वसन्त का स्वागत गढ़वाल में अनुपम ढंग से किया जाता है। गढ़वाल की धरती वसन्त के आने पर पुलकित हो जाती है। अनेक प्रकार के फूलों से धरती का आँचल लहलहा उठता है। गढ़वाल की किशोरी कुमारियाँ **फ्यूँली** के फूलों को एकत्र कर प्रातः घर-घर द्वार-द्वार **जै गौंगा माता फ्यूँली का फूल** कहकर उन्हें देहलियों पर डालती हैं। वसन्त यौवन का प्रतीक है, इसलिए वसुधा के कण-कण में मादकता और मस्ती छा जाती है। वसन्त पंचमी के दिन देहलियों और द्वारों पर चावलों के पीठे से चित्रांकन कर गोबर से हरे-हरे जौ की गुच्छियाँ थाप कर लगायी जाती हैं।

सीरी पंचमी माऊ की, पैली हर्याली जौं की

इस पंक्ति से ये वासन्ती गीत प्रारम्भ होते हैं और **बिखोत** (विषुवत् संक्रान्ति) तक अविराम चलते रहते हैं।

(क) बासन्ती

आई रितुड़ी[६] रे सुणमुणया[७] रे
आई गयो बालो[८] वसन्त रे।
फूलण लैगी गाड़ू[९] की फ्योंलड़ी[१०]

सेरा[११] की मींडोली,[१२] नैं डाली पैंया[१३] जामी।
कूली[१४] का ढीसोली[१५], नैं डाली पैंया जामी।
चला दीदि भुलेऊँ, नैं डाली पैंया जामी।
क्वी मीटी काट्यौला, नैं डाली पैंया जामी।
क्वी ढुंगा[१६] चाड़ यौला, नैं डाली पैयां जामी।

१. गानेवाली, २. कितने, ३. पोस्त, ४. दाने, ५. गाऊं, ६. ऋतु, ७. सुहावनी, ८. किशोर, ९. नदी (तट), १०. फ्यूंली (फूल), ११. खेत, १२. मेंड, १३. पद्म, १४. कूल (पानी), १५. ऊपर, १६. पत्थर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दूपत्ति[१] ह्वे गये, नैं डाली पैंयां जामी।
द्यू करा धूपाणों, नैं डाली पैंयां जामी।
क्वी दूद चार्‌यौंला, नैं डाली पैंयां जामी।
चौपत्ति ह्वे गये, नैं डाली पैंया जामी।
द्यवतों का सत्तन, नैं डाली पैंयां जामी।
दूफौंकी ह्वे गये, नैं डाली पैंयां जामी।
झपन्याळी[२] ह्वे गये, नैं डाली पैंया जामी।
चला छैलू[३] बैठ्यौला, नैं डाली पैंयां जामी।

धौळी[४] का किनारा, यो फूल के को[५] ?
अनमन[६] भांति को, यो फूल के को ?
सैरो[७] बोर्ण[८] मोयेणे[९] यो फूल के को ?
सैरी धौली धुमैली[१०], यो फूल के को ?
देवतों सरोख्या[११], यो फूल के को ?
टोपी मा धर[१२] लेणू, यो फूल के को ?
धौली का किनारा, यो फूल के को ?

(ख) होरी (होली)

गढ़वाल में होली भी बड़ी धूमधाम से मनायी जाती है। गाँव के सब लोग मिलकर जंगल से पैंया (पद्म पेड़) की बहुत बड़ी शाखा काट कर पंचायती आँगन में मजबूती से गाड़ देते हैं। बस, उसी दिन से गाँव के बच्चे उसके चारों ओर नाच-नाच कर होलियाँ गाते हैं। छरोड़ो के दिन (अन्तिम दिन) उसको जलाकर रंग खेलते हैं और उस राख को माथे पर लगाते हैं। शंख ढोलकी (ढोलक) और ढोल-दमों (ढोल-दमामा) बजाते हुए गाँव की टोली घर-घर घूमकर दूसरे गाँव में भी जाती है।

दसरत को लछीमन बाल जीत।
चौदा बरस तपोवन रहियो, ताप नि लाग्यो एक रती।
चौदा बरस हिमाचल रहियो, जाड़ो नि लाग्यो एक रती।
चौदा बरस सीता संग रहियो, पाप नि लाग्यो एक रती।

१. दो पत्ती, २. हरी-भरी, ३. छाया, ४. नदी का नाम, ५. किसका, ६. अनोखा, ७. सारा, ८. वन, ९. मोहित, १०. धुंधली, ११ समान, १२. रखना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

खोला किवाड़[1], चला मठ भीतर
दर्शन देओ लाई, अंबे ! झुलती रहों
गाय को गोबर चोपड़ माटी
चौका देवत माई अंबे झुलती रहो

४. बाजूबन्द

बाजूबन्द गढ़वाल के संवादात्मक प्रणय-गीत हैं। इनकी संख्या गढ़वाल में पर्याप्त मात्रा में मिलती है, क्योंकि इनकी सृष्टि का क्रम सदा चलता रहता है। गाँव की स्त्रियाँ और पुरुष जंगलों में जाकर बाँज, बुराँश, राफल, चीड़ और देवदार के पेड़ों की छाया के नीचे बैठकर इनकी तान छेड़ते हैं। बाजूबन्द की सरस स्व-लहरियों से सारा वन, प्रान्तर गूंज उठता है। एक ओर से नारी-कंठ की मिठास गूंजती है तो दूसरी ओर से पुरुष कंठ की। इन गीतों में पहली पंक्ति मात्र तुक मिलाने के लिए होती है।

छाँछ[2] छोली[3] रौड़ी,
डाँड[4] मा फूल फूल्याँ, आई रितु बौड़ी[5]।
खणी[6] जालो च्यूणो,
चार दिन होन्द, मनख्यों क्वू ज्यूणो[7]।
सड़क की धूम,
द्वि दिनक रंदी, प्यारी जवानी की धूम[8]।
भेरा[9] लीगे भैराक[10],
द्वि दिन की जवानी प्यारी, बथौं[11] सी हराक[12]।
पाड़ काटे घास,
सदा नी रंदो प्यारी, यो दिन यो मास
आँगूड़ी का तौया,
सदा नी रंदा प्यारी, पाड़[13] उन्दू छोया[14]।
पड़ बैठे गोणी[15],
हौर चीज लेणी देणी, ज्वानी[16] फेर न होणी।
लगी जालो तैक,

१. दरवाजे २. पट्टा, ३. मथना, ४. चोटी, ५. लौट, ६. खोदा, ७. जीवन, ८. बहार, ९. बांध, १०. भेड़, ११. हवा, १२. झांका, १३. पहाड़, १४. स्रोत, १५. लंगूर, १६. जवानी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज्वानी नी ओणी, मरी जाण हात फट कैक ।
गौडी[1] को मखन,
दुनियान मरी जाण, क्या लिजाण यखन ।
थोड़ी को मकर,
दुनियान मरी जाण धरती अमर ।

(लम्बा गीत)

गंगा जी को औत[2]
तराजू नौ[3] तोलि लैणी, कै कि माया[4] बौत[5]
खलियाण दाँदो[6]
माया लाँदा तोय मां, तू गंगा को जांदो
राजा जी की राणी
रगडू[7] नो सूकि जाणा, रई स्यलवाणी[8] पाणी
सड़के की ऊँटणी
तेरी मेरी माया सूआ, चूलू[9] की चटणी
मौली[10] जाली दूब
तेरा मन माया लाण, मेरा मन खूब
अंखेड की बूँकू[11]
देणी लेणी फूंडो फूको[12], मैं माया कू भूकू
झंगोरा की बाल
जवानी भरी, सुरेसी, जैसा गौं का ताल
दाथुड़ा की धार
कखन दीखेणे पंछी, देवता की चार[13]
दूद की जमुन[14]
जनम जनम हूण[15], मूंगा माया को जनम[16]
धरती अमर
तेरी मेरी माया सूआ, लपलप[17] चमर[18]

१. गाय; २. भंवर, ३. से, ४. प्रेम, ५. अधिक, ६. सीमा, ७. बरसाती; ८. सोत, ९. खुबानी, १०. अंकुरित, ११. ऊपरी भाग, १२. दफा करो, १३. समान, १४. जामन, १५. रहेंगे, १६. प्रयत्न, १७. हिलना, १८. चंवर ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

हाती बुणी माणी[१]
माया मसूरी मां लाई, दुटली[२] तो जाणी
मंडुआ की धूंसी[३]
अपना जोबन देखी, आफी ह्वैं छे खूसी
चाँदी को बटण[४]
तोय कैन किकाये[५] सूआ, माया को जतन
झंगोरा की धाण
जै कि माथा घनाघोर, आँखियों माँ पैछाण[६] ।

५. खुदेड़

गढ़वाल में बाल-विवाह का प्रचलन न जाने कब से चला आ रहा है, यद्यपि अब कुछ कम हो गया है। बाल्यावस्था में विवाहिता किशोरियाँ जब अपनी ससुराल जाती हैं तो रह-रह कर उन्हें अपने मायके की याद सताती है। ससुराल में सास का अत्याचार उन्हें रोने के लिए मजबूर करता है और तब आँसुओं के साथ-साथ गीतों की झड़ियाँ भी लगती हैं।

फूली जालो काँस[७] ब्वै, फूली जालो काँस,
म्योलड़ी[८] बासदी ब्वै, फूलदा बुरांस !
हिंसर की कांडी ब्वै, हिंसर की कांडी,
मौली[९] गैन डाली ब्वै, हरी ह्वैन डांडी[१०] ।
गौड़ी देली दूद ब्वै, गौड़ी देली दूद,
मेरी जिकूड़ी[११] लगी ब्वै, तेरी खूद[१२] ।
काखड़ी को रैतू ब्वै, काखड़ी को रैतू,
मैं खूद लगी ब्वै, तू बुलाई मैतू[१३] ।
दाथुड़ी को नोक ब्वै, दाथुड़ी की नौक,
वासलो कफू ब्वै, मेरा मैत्यों[१४] का चौक !
सूपा भरी देण ब्वै, सूपा भरी देण,
आग भमराली ब्वै, भैजी[१५] भेजी लेण[१६] ।

१. अनाज नापने का वर्तन, २. टूटना, ३. भूसा, ४. बटन, ५. खिजाना, ६. पहचान, ७. याद, ८. मायके, ९. कोपल आना, १०. चोटियाँ, ११. हृदय, १२. याद, १३. मायके, १४. मायके का, १५. भाई, १६. बुलाने ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

टोपी धोई छोई ब्बै टोपो धोई छोई,
मैत्या डाँड देखी ब्बै, मैं आँदो रोई !
झंगोरा की बाल ब्बै, झंगोरा की बाल,
मैत को बाटो देखी ब्बै, आँखी ह्वैन लाल !

(आ) आई गैन रितु बौड़ी, दाँई[1] जसो फेरो[2],
फूली गैन बण बीच, ग्वीराळ बुराँस !
झपन्याळी[3] डाल्यों मा, घूघती[4] घूरली,
गैरी-गैरी[5] गदन्यो[6] मा, म्योलड़ी बोलली
उचि उचि डाँड्यों मा, कफू वासलो।
मौऴळी भाँति भाँति की फुलेर डाले !
गेऊँ-जौ की सारी[7], सैरीं[8] पिंगली ह्वैन,
राडा की रडवाड़ियों मा, मारी रुणाली !
डाँडी काँठी गूँज, ग्वैरू की मुरल्योंन[9],
गौं की नौनी स्ये, गीत वसंती गाली।
जौं की ब्वई[10] होली, मैतुड़ा[11] बुलाली,
मेरी जिकुड़ी मा ब्बै, कुयेड़ी–सी लौंकी।

(इ) जावा गैल्याण्यों, तुम मैत जावा,
मेरो रैबार, माँजी मू लि जावा।
मालू भैंसी को खटो दई,
बई मा बोल्यान रोणीकि छई।
बाबाक बोल्यान देखीक जाई,
सासु सैसरों समझाई जाई।†

१. लौट, २. चक्कर, ३. हरी-भरी, ४. फाखता, ५. गहरी, ६. नदी-तटों, ७. खेत, ८. सरसों, ९. बांसुरी, १०. माँ, ११. मायके।

† —जाओ सहेलियो, तुम मायके जाओ।
मेरा संदेश माँ के पास ले जाना।
मालू भैंस का खट्टा दही, मुझे याद आता है।
माँ से कहना, वह रो रही थी।
पिता जी से कहना, मेरी हालत देखकर जाना,
सास-ससुर को तो आकर समझा जाना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

(ई) उलान्या मास ऐगे, खुदेड़ वगत,
बार रितु बौड़ी ऐन, बार फूल फूली गैन !
औंदी की मुखड़ी न्याल्दू,
जांदौं की पिल्वाड़ी ।
एक दाणी चौलू बोदी, मैं उमली औं,
निरमैतीण छोरी बोदी, मैं मैंत जौं !
भग्यान्यौं का भाग होला,
जौंका पीठी जौंला भाई !
मैंत बोलाला, रीत जणाला !
जौं दिशौं ध्याण्यो का गोती होला मैती,
तौ दिशौं ध्याणी मैत जाली देसु !
सरापी जायान माँजी, विधाता का घर !
जनी कनी पुतरी चुली माँ जी,
एक विराली पालदी !
कुत्ता पालदी, पैरो जागा देन्दो ।
केक पाली होलू माँ जी,
मैं निरासू सी फूल ।

६. चौंफला

चौंफला गढ़वाल के मिलन-गीत हैं । इनके पद-पद में रति, हास, मनुहार और अनुनय का मार्मिक चित्रण मिलता है । शायद इसीलिए इनका (चार फल वाला) 'चौंफला' नाम पड़ा हो । अप्रत्यक्ष रूप से कहीं-कहीं इन गीतों में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की भावना भी निहित रहती है, इसलिए भी शायद इन्हें 'चौंफला' कहते हों ।

(अ) तू कति चूमण छै !

सर बियांरा[1] क्या धरे बौ[2] हे ।
त्यरा दादू[3] क रोटी धरे ।
खंडकि[4] तोड़िक मैं दियाल वौ हे !
छीः तू कति मंगणया छै ।
छीः तु कति चूमण[5] छै ।

१. आला, २. भाभी, ३. भाई, ४. टुकड़ी, ५. कंजूस ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सर बियांरा क्या धरे बौ हे !
तेरा दादूक बुखणा, धरेन।
एक खौंकाल[1] मैं दियाल बौ हे !
छीः तू कति मंगण्या छै !
छीः तू कति निदऊ[2] छै !
सर जटोली[3] क्या करे बौ हे !
तेरा दादून नर्यूल दे तो !
टुकड़ा तोड़िइ में दियाल बौ हें।

(आ) मुखड़ी को रंग कनो !

'चौंफलों' में अंग-प्रत्यंग का वर्णन भी मिलता है।

सिर धौंपेली[4] लटकाई कनी,
काला सर्प की केंचुली जनी !
सिन्दूर से भरी माँग कनी,
नथूली मा गड़ी नगीना जनी।
सी आँखी सरमीली कनी,
डाँडू मा खिलीं बुराँसी जनी।
मुखड़ी को रंग कनो ?
बाला सूरज को रंग जनो !
ओंठू का बीच दाँतुड़ी कनी,
गठ्यांई[5] भोत्यों माल जनी !
स्वर मा मिठास कनी ?
डाँड्यो वासदी हिलाँस[6] जनी !

(इ) बौ का हात भली रसाण

प्रस्तुत गीत में भाभी की प्रशंसा मनुहार के रूप में की गयी है—

मारी बाखरी, पूज्यो मसाण[7],
बौर्का[8] हात, भली रसाण[9] !
सड़क फुंड बाखरा मेरा,

१. मुट्ठी भर, २. न देनेवाली, ३. भाड़े, ४. चुटिया, ५. गूंथी, ६. पक्षी,
७. एक देवता, ८. भाभी के, ९. रस।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

ब्याखनदां[१] जाण, बौ का डेरा !
बौ छ मेरी छोटो छौनक[२],
बौ का बौंड[३], भली रौनक।
उबा बणू बल हिंसरी गोंदा,
छोटी बौ बड़ू छ फोंदा !
पल्यापताला[४] वासी त कवा[५],
बौ बणीगे, बजारी हवा।
बौ च मेरी रिक पठोली[६],
बौ की धोती कैन लटोली[७] ?

(ई) 'कैसो च भण्डारी तेरो मलेथ ?'

प्रस्तुत गीत में नायक-नायिका का संवाद है। नायिका नायक से पूछती है कि तुम्हारे 'मलेथा' गाँव में क्या-क्या है ? मलेथा का भंडारी इसका उत्तर देता है :

"कैसो च भण्डारी तेरो मलेथ ?
देखी भलो ऐन सैवो तेरो मलेथ।"
"ढलकदी[८] कूल[९] मेरा मलेथ
गाँऊ मुड़े को धारो मेरा मलेथ
पालिगा[१०] को बाड़ी मेरा मलेथ
छोलिंग बिजोरा[११] मेरा मलेथ
गांयियों को गुठयार[१२] मेरा मलेथ
भैंस्यों का खरक[१३] मेरा मलेथ
बैजूका बांदूका[१४] लड़का[१५] मेरा मलेथ
वैखूका[१६] ढसक[१७] मेरा मलेथ
देखी भलो ऐन सैवो मेरा मलेथ।"

(उ) माधोसिंह

बार ऐन बग्वाली, माधोसिंह,
सोल ऐन सराध, माधोसिंह।

१. शाम, २. छौना की तरह, ३. ऊपर की मंजिल, ४. घाटियों में, ५. कौआ, ६. छोना, ७. देखी ८. तेज चलती, ९. पानी की नहर, १०. पालक, ११. फल, १२. गांठ, १३. खटक, १४. सुन्दरियां, १५. झुंड, १६. मर्दों के, १७. झुंड।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मेरो माधो नी आयो, माधोसिंह।
त्वै जागी रैन, माधोसिंह
तेरी राणी बौराणी, माधोसिंह।
दाल दलीं रै, माधोसिंह।
चौंल छङ्यां रया, माधोसिंह।
तेरी ब्वै रोंदी रै, माधोसिंह,
मेरो माधो नी आयो, माधोसिंह।

(ऊ) गर्जेसिंह

गर्जेसिंह माधोसिंह का साहसी बेटा था। पिता का बदला लेने के लिए राणी-हाट जाने की तैयारी करता है। उसकी माँ उसे वहाँ जाने से रोकती है :

रणिहाट नी जाणू गर्जेसिंह, हल जोता का दिन, गर्जेसिंह
छि: दारु नी पेणी गर्जेसिंह, रणिहाट नी जाणू, गर्जेसिंह
हौंसिया छै बैख गर्जेसिंह, बड़ा बाबू को बेटा, गर्जेसिंह
त्यरा कानू कुंडल गर्जेसिंह, त्यरा हातू धगुला, गर्जेसिंह
त्वे राणी लूटली गर्जेसिंह, रणिहाट नी जाणू, गर्जेसिंह
तेरो बाबू मारेणे गर्जेसिंह, रणिहाट नी जाणू, गर्जेसिंह
बैरियों का बदाण गर्जेसिंह, सांपू का डिस्याण, गर्जेसिंह
बड़ा बाबू को बेटा गर्जेसिंह, दरोलो नी होणो, गर्जेसिंह
मर्द मरी जांदा गर्जेसिंह, बोल रई जांदा, गर्जेसिंह।

७. कुलाचार[1] या चैती गीत*

मंगलाचार मंगलाचार बड़ा सरकार बड़ा दरबार।
राज मुहल्ली राज मुसद्दी, जुग-जुग जीवै राजाधिराज।
माराज बोलांदा बद्रीनाथ जै जै कार जै जै कार
पूरबी पच्छिम घाट को राज बड़े,

१. चैत के महीने में गढ़वाल के औजी अपने ढोल-दमों को लेकर अपने ठाकुरों और दिशाओं (ठाकुरों की बेटियों) के घर जाकर नाचते-गाते उनका गुणगान करते हैं।

* घुंयाल से—'गढ़वाल साहित्य मंडल' द्वारा संपादित।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

उत्तरी दक्षिणी घाट को राज बढ़े,
बेटी बेटान को राज बढ़े नाती पूतान को राज बढ़े,
कुल का दिव्वा सब पर नेह करे,
दाता धाता गुण से भरपूर करे,
ग्यानी पंडित सदा गरीब रये, छत्री का हथ रच्छा को सस्त्र रये,
मूसा[१] घाँड पैरावै दुलाँ[२] बैठे, कागा घाँड पैरावे देस फिरे,
घुंड घुंडों[३] की दाल, कमर कमर[४] को भात,
चक्खल पक्खल[५] जागिर माँ,
जै सिरी[६] ठाकरो जै जै कार सामन्या[७] ठाकरो सामन्या सा—।

८. चौमासा

चौमासा बरसात के गीत हैं। वर्षा की झड़ियों में गढ़वाल का कोमल संगीतमय हृदय गुन-गुनाने लगता है। परदेश गये हुए प्रीतम की याद रह-रह कर मन में तूफान मचाती है।

इन गीतों में विरह की भावना विशेष रूप से व्यक्त हुई है—

(अ) आयो आयो चौमासा त्वैक जागी रयो।
मैं पापणीं सदा मन भारी रयो।
मेरा स्वामी को मन निठुर होयो।
घर बार छोड़ीक विदेश रयो।
हाई मेरा स्वामी जी मैने क्या खायो।
तुमरी प्रीति से न्यारी होयो।

सावन आया पर परदेश गया प्रीतम न आया। मन व्यथा से भर गया—

(आ) सुणा मेरा स्वामी जी सावर्ण[८] आयो।
रूण-झुणया[९] वर्षा, घनघोर लाया।
दौड़ी दौड़ी कुयेड़ी,[१०] डाडू मा आयो।
कुयेड़ी न स्वामी, अंधियारों छायो।

(इ) प्रस्तुत गीत में भादों की अँधियारी रातों द्वारा विरह-वेदना के मर्म को छू देनेवाली कसक व्यक्त की गयी है—

१. चूहा, २. बिल, ३. बहुत, ४. बहुत, ५. चहल-पहल, ६. श्री, ७. सेवा लगाना, ८. सावन, ९. रिमझिम, १०. कुहरा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भादों की अँधेरी, झकझोर[1]।
ना बास ना बास, पापी मोर।
डुलदो[2] तू क्यों, पापी प्राणी।
स्वामी बिना मैक, बड़ी खडरी[3]।
विश्वासी मन जो, औंद भारी।
भादों की बरसात जग रूझ[4]।
मन की मेरो ना, आग बूझ।
स्वामी बिना झूठी, लाणीं खांणी[5]।
मनु की मनुमा, रई गांणी[6]।

(ई) आयो महीनो भादों को।
मन समझादूं[7] बौर्त[8]।
या मिली जादों स्वामी जी
या प्रभु देदो मौत।

९. बारामासा

गढ़वाल में बारह महीनों के अलग-अलग गीत हैं। हर गीत में उस समय की प्रकृति का चित्रण किया है। रूड़ (गर्मी), बसग्याल् (वर्षा) और ह्यूंद (जाड़ा)—इन तीन मौसमों तथा प्रत्येक मास में क्या-क्या परिवर्तन होते हैं, कौन-कौन से फूल खिलते हैं,—सबका सुन्दर वर्णन इन गीतों में मिलता है :

आयो मैंना चैत को, हे दीखो[9] हे राम।
उठिक फुलारी झुसमुस[10], लगी गैना निज काम ।।
मास आय वैशाख को, सुणली पतिव्रता खास।
ग्यूँ जौ का पूलों मुड़े, कमर पड़ी गये झास ।।
आयो मैंना जेठ को, भक्कां[11] हैगे मौत।
स्वामिका नी होणते, समझि रयूं मैं मौत ।।
मास पैलो बसगाल को, आयो अब आषाढ़।
मैं पापिणि झुरि-झुरि, मरो मास रयो न हाड़ ।।
मास दूसरो गसग्याल को, आयो अब घनघोर।

१. बहुत, २. कांपना, ३. दुख, ४. जग भीग गया, ५. खाना लाना, ६. इच्छा, ७. समझाती, ८. बहुत ९. बहन, १०. जल्दी, ११. गर्मी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

बादल कुयेड़ि झूकिगे, वर्षा लगि झकझौर ।।
भादों मैना आइक, मन समझा यो भौत ।
या स्वामी घर आवन, या प्रभु ह्वै जो मौत ।।
आयो मास असूज को, बादल गैंन दूर ।
साटी झंगोरे सब पक्यो, निम्बू पाक्याचूर ।।
आई देवाली कातिकी, चढ़िगे घर घर तैक ।
यूंदींनू बिन स्वामि को ज्यू क्या लगलो कैक ।।
आय मास मंगसीर को, हे बहिनो हे राम ।
पतिदेव की फिक्र मां रयो हाड़ ना चाम ।।
पूष मास को ठण्ड बड़ी, धर धर काँपद ग्रात ।
कनि होली भग्यांनसीं, छनपति जौं का साथ ।।
लाग्यो मैना मांघ को, ठण्ड आविगे दूर ।
पति का घर निहोणसे, ज्यू यो ह्वैगे चूर ।।
फागुन मैना आइगे, हरि भरि गैंन सार ।
सैं पापिण तनि हीरयो यकुला[1] बांदर कि चार ।।

उल्लिखित गीत में संक्षेप में सभी महीनों का दिग्दर्शन कराया गया है ।

१०. पट

यद्यपि **पट** गढ़वाल में बहुत कम मिलते हैं, फिर भी इनका बड़ा महत्त्व है । **पट** गीत उपदेशात्मक नीति-गीत होते हैं जो बड़े-बूढ़ों की जबान पर हर समय विद्यमान रहते हैं । रवाँई में इन्हें **घुड़ा** गीत कहते हैं । हिन्दी के दोहों की तरह उनमें ज्ञान की अनोखी बातें भरी पड़ी हैं ।

*धरणी रीटे साँपीण,
अगाश रीटली शीणी,
मणछ मगार लाणदो,
विपता भगवान दीणी ।

(धरणी पर सर्पिणी रेंग रही है, आकाश पर चील मंडरा रही है, मनुष्य दोषी ठहराया जाता है, पर विपत्ति भगवान की देन है ।)

१. अकेला ।

* गोविन्द चातक—'गढ़वाल के लोकगीत' से साभार उद्धृत ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हसा खाण, बांठी बुलाण,
कोया न बाटुड़ लाणो।
चार दिन मानछड़ो-
मरेय त अंयागौर जाणो।

(हँसते हुए खाओ, मधुरता से बोलो, दुख के बोझ को न लादो। मनुष्य का जीवन चार दिन का है। फिर तो अंधार में जाना है।)

कूण कियो बांठो को मरीणो,
कूणी दुबड़िया लायो रीण।
पापी अपरादी ज्योंरा मेरा,
न माणदो कसी की गीण।

(किसने सुन्दरियों के लिए मृत्यु बनायी ? किसने निर्धन पर ऋण किया ? मेरे अपराधी पापी यमराज, तू किसी पर भी दया नहीं करता।)

११. सामयिक गीत

गढ़वाल में समय-समय पर जो विशेष घटनाएँ घटीं, उन्हीं प्रसंगों को लेकर वहाँ के जनकलाकारों और वादियों ने अनेक गीतों की रचना की है।

देश स्वतन्त्र हुआ। नयी-नयी योजनाएँ बनीं और जन जन के मन ने उनका अभिनन्दन किया। लोक-जीवन में नयी चेतना आयी। सोयी हुई कन्दराओं में जागरण के मन्त्र गूँजने लगे। हल चलाता हुआ किसान नयी आशाओं और कल्पनाओं में झूलने लगा। नूतन के आगमन की प्रतीक्षा में वह विगत दु:खों और यातनाओं को भूल गया। अब धरती उसकी है, हल उसका है, राज उसका है, वह अपने भविष्य का मालिक है। इन्हीं रेशमी तानों-बानों में वह मस्ती के गीत गाने लगा। उसका कंठ मुखर हो गया और गीतों की धाराएँ पहाड़ी झरनों की तरह झरने लगीं। अपने चारों ओर उसे अब 'नया-नया' दिखाई दिया। उमंग और उत्साह में जन-जन का मानस भावविभोर दिखाई दिया। बार-बार अन्तःकरण अन्दर-ही-अन्दर गान्धी-नेहरू-सुभाष की जय-जय करता। देश के बलिदानी वीर भगतसिंह, 'आजाद' उसकी स्मृतियों में झूलने लगे और उसका मानस श्रद्धा के फूल चढ़ाने लगा। वह खुशी से झूम उठा। अब उसे स्वाधीनता का वास्तविक रूप दिखाई दिया। उसके मन ने धरती माता की कसम खाकर प्रण किया कि वह अपने लहलहाते खेतों में स्वतन्त्रता के गीत गायेगा, प्रेम और सद्भावना के बीज बोयेगा, आपसी मतभेदों को घास की तरह उखाड़ फेंकेगा, देश के लिए श्रम करेगा। इन्हीं भावनाओं को मूर्त रूप देने के लिए पंचायतें बनीं। गाँव-गाँव में पंचायतों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

की चर्चा होने लगी। किसान-मजूर सब प्रसन्न हुए, अब उन्हें न्याय खरीदने के लिए रुपये कर्ज नहीं लेने पड़ेंगे। अपना फैसला आपस में ही करेंगे। पिछले कडुवे अनुभवों से उसने सबक सीख लिया था। फलतः हिमालय के आँचल में पंचायतों का गुणगान समवेत स्वर में होने लगा। खेतों में फसलों के साथ-साथ श्रम और पंचायतों के गीत भी उपजने लगे।

(अ) गौं गौं पंचायत करा

गौं गौं पंचायत करा, अर सुधारा पाणी जी,
सुख से उठली-बठली, राणी-बौराणी जी।
न करा मुकदमा भायों, करा आपस मा मेल जी,
कोर्ट माँ पड्यां रला, बेचला लोण-तेल जी।
अच्छो काम करा भायों, नी खेलणू जुवा जी,
गली-गल्यों पड्यां रला, बोलला बोई बुबा जी।
पंचू मा जैक बोला, घूस जरा नी खाणी जी,
सही-सही निसाब कर्णू, बाल-बच्चों जाणी जी।
अपणी छ खेती, अपणू छ राज जी,
मेल से रणो भाई, आजाद आज जी।
डाली बोटी लगावा, वणा बग्वान जी,
जागू जागू मोटर पौंछा, देवा श्रमदान जी।

(गाँव-गाँव में करें पंचायत, औ सुधार पानी का जी।
सुख से उठेंगी-बैठेंगी हाँ रानी सी दुलहनियाँ जी।
लड़ाई-झगड़ों से दूर रहें, औ आपस में करें मेल-मिलाप
कोर्ट के भरोसे रहे समझो, रोटी रोजी जायेगी जी।
अच्छे अच्छे काम करें औ, खेलें न कानून का जुवा भाई,
गली-गली में पड़े रहेंगे, फिर माता-पिता कहेंगे बार-बार
पंचों से कहेंगे जा कर जी, घूस मत खाना भाई हाँ,
सही-सही न्याय करना भाई, बाल बच्चों की कसम खाकर जी।
आज खेती अपनी है औ राज भी अपना ही भाई।
मेल से रहना भाई, पाई है आजादी भाई।
पेड़-पौधे लगाए भाई, बनों औ बागों में आज,
जगह-जगह मोटर पहुँचाए, श्रमदान करें सभी आज।)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्राम-पंचायतों द्वारा ही घर-घर में नव-निर्माण और श्रमदान का शुभ सन्देश पहुँचाया गया। लोगों ने श्रम का मूल्य आँका और स्वावलम्बन का महत्त्व समझा। उसी का फल है कि दुर्गम पहाड़ों में जन-जन के श्रमदान से यातायात बहुत सुगम हो गया और जनता के स्वर श्रमदान के महायज्ञ में मुखरित होने लगे :

(आ) श्रमदान मा देण हात

गाँव का पंचून सोचे बात, श्रमदान मा देण हात।
हात की साबली हात रैन, परवाणा देखी छक्का छुटी गैन।
पाड़ से जुझ्यां एक छंदा जवान, साबली चलौंदा जना कावुली खान
जनतान इनु करे यो सांसो, ये पाड़ तोड़ला हम जनु कांसो।
ये काम से न हम मुख मोड़ला, पड़ तैं हम हातून फोड़ला।
घणु की चोटुन पाड़ थर्राए, डाँडू वीठू मा सड़क आए।

(गाँव के पंचों ने सोचा, श्रमदान में देना है सहयोग, पर सब्बल हाथ के हाथ में रह गये; खड़े खड़े दुर्गम चट्टानों को देख छक्के छूट गये सबके, पर युवकों ने ललकारा सबको—पहाड़ों से जूझ गये फिर सब—,जोर-जोर से लगे चलाने सब्बल, काबुल के पठानों जैसे, जनता ने हिम्मत बाँधी, श्रमदान से मुख न मोड़ेंगे हम, पहाड़ों को तोड़ेंगे अपने हाथों हम। लगे काँपने पर्वत बड़े-बड़े, घन की बड़ी-बड़ी चोटों से, पहुँच गयी सड़कें सर्वत्र, जन-जन का श्रम सफल हुआ।)

गाँव के भोले-भाले किसान ने हृदय में एक नये युग का दर्शन किया। नये चेहरों की खुशहाली की कल्पना की और फिर बैलों को हांकते हुए गुनगुनाने लगा—**जागा जागा धूम मचै द्या।**

(अ) सतपुली मोटर बौंगीन

सतपुली की दुर्घटना का मार्मिक चित्रण निम्नलिखित गीत में किया गया है :

द्वी हजार आठ भादौं का मास
सतपूली मोटर वौंगीन[1] खास
से[2] जावा भै बन्दो अब रात ह्वेगी
रुण-झुण, रुण-झुण बारसि लैगे,
काल की सी डोर[3] निदंरा यैगे
घनघोर निंदरा जूब सबू येगी

१. बह गयी; २. सो, ३. मौत की रस्सी की तरह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मोटर का छत पांणी भोरे गे
भादौं का मैंना रुण-झुण पांणी
हे पापी नयार क्या बात ठांणी
सबेरी उठीकी जब औंदा भैर
बौगीकि[१] औंदान सांदण खैर[२]
डरैबर[३] कलैंडर सबी कठा होवा
अपणी गाड्यो मा पत्थर मोरा
गरी ह्वै जाली गाड़ी रुकि जालो पाणीं
हे पापी नयार क्या बात ठांणी
अब तोड़ा जंदेऊ कफड्यों खोला
हे राम-हे राम !, हे शिव बोला
डरैबर कलैंडर सबी भेंटी[४] जौला
ब्याखन त्रिटोन येखूली रौला
भग्यानू की मोटर छाला[५] लैगी
अभाग्यों की मोटर डूबण लैगी
शिवानन्दी को छयो गोबरदन दास
द्वी हजार रुप्या छया तैका पास
गाड़ी बगदी जब तैन देखी
रुप्यों की गड़ोली[६] नयार[७] फेंकी
हे पापी नयार कमायों त्वैकू
मंगसीर का मैंना ब्यो छऊ मैकू
सतपूली का लाला तुम घौर जैल्या
मेरी हालत मेरी मांमा बोलल्या
मेरी माँ मा बोल्यान तू माजी मेरी
ती रयो माँ जी गोदी को तेरी
मेरी माँ को बोल्यान नी रयी सास
सतपूली मोटर बौगीन खास।

१. बहकर, २. सादण और खैर लकड़ियाँ, ३. ड्राइवर, ४. गले लगना,
५. किनार, ६. गट्ठी, ७. नयार नदी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ई) मनख्या बाघ (आदमखोर)

लोगू[1] कु खेती कु काम नी ह्वोये पूरू,
यो निरभागी बाघ ह्वोईगे शुरू!
एकी[2] जागान[3] बल हैकी[4] जागा जाँद,
जनानी चोरीक नौनौऊँ छ खाँद!
कनो निरभागी यो बाग गीजो[5],
हमारी आँखी आँसुन भीजी!
एकी जनानी वैन मारे धाड़ो,
मैं कू बाड़ी पकौण को करे भाड़ो।
तैं को मालिक बवरांदो[6] भौत,
ये पापी बागक कब औली मौत?
तै डांडा का ऐंच दुगड़ी गौऊँ,
तख बुडड़ी मारे वैन गौं का सौऊँ!
तै बागन पकड़े बुडड़ी की गली,
ब्वारी की पकड़ी छै वीं की नली!
खाण दे बुडड़ी की ऐगे खैर,
हम बाग की डर नी औंदा भैर[7]!
तौं द्वारू तैं अब झट लावा,
घमछंदे भायों रोटी खावा!
ऐंसू का साल नी कैकी खैर,
हम बाग की डर नी औंदा भैर!
डरदा-मरदा औंदान वो घर,
विरालों देखीक लगदी छ डर!
रुमसूम्यां[8] बगत जु कुकर भूक्या,
इना नामी वंधू जु ओबरा[9] लूक्या!
ओबरा लूक्या रऊ-सी[10] माछा,
पोटगा मा डर का नरसिंह नाच्या!

१. पूरा, २. एक, ३. जगह से, ४. दूसरी, ५. लत पड़ गई, ६. बड़बड़ाता, ७. बाहर, ८. शाम, ९. नीचे की मंजिल, १०. गहरे तालाब।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

(उ) सलौ (टिड्डियों का दल)

टिड्डियों के आने से जो तबाही और बर्बादी होती है, उसका इस सामयिक गीत में चित्रण किया गया है :

सलौ[1] डारि[2] ऐ गैना, डालि बोट्‌ी खै गैना।
फसल पात खै गैना, बाजरो खाणो कै गैना।
सलौ डारि डाँड्यूं मा बैठी गैन खाड्यूं मा।
हात झींकड़ा लीन, सलौ हांकि दीन।
काकी पकाली पलेऊ, काला हकालू मलेऊ।
भैंजी हकालू टोपीन, बौ हटाली धोतीन।
उड़द गथ खै गैना, छड़ी सारी कै गैना।
भैर देखा बिजोपट, फसल देखा सफाचट।
पड़ीं च बाल बच्चों की कनी रोवा रो,
हे नौंनों का बुबा जी, सलौ ऐन सलौ।

(ऊ) बदल्यूं च है रे जमाना

जमाने की शिकायत करते हुए ये पंक्तियाँ फूट निकलती हैं :

तेरो रंग बदल्यूँ च है रे जमाना!
दुनिया का देख ढंग, चड्यूँ च कच्चो रंग।
भेद भौ कुछ नी च, सब एक समाना!
छै रुप्या को कोट सिलैले तब चलदो बाँगो,
जेब मा वेका धेला नी च चुफ्लो वे को नाँगो!
कली होक्का साँदी रख्या, बीड़ो पेन्दा ज्यादा,
कोणा पर बीड़ी सुलगै, रजै फुंके आदा!
नौना को भैंसो ब्यायूँ, बुड्या लग्यूँ च सास,
ब्वारी करदी सैर फैर, सासू काटदी घास!
सासू कर्दी कूटणी पीसणी, ब्वारी ह्वैगे सयाणी,
नौनों मू चा को गिलास, बुड्या मू पंज्वाणी।
जोंखी मूंडी फुंडू घोली, चिफ्ली करी दाड़ी,

१-२. टिड्डियों का दल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

घर की जनानीक धोती नी, रंडीक लौंदा साड़ी !
हात पर बीड़ि लीले, गिच्चा पर पान,
बुड्या बुड्योंन जोंखी मूंडी, हम भी होन्दा ज्वान !

१२. राष्ट्रीय गीत

युग की विचार-धाराओं, परिस्थितियों, गतिविधियों और जन-जन के मानस की विविध भाव-भूमियों का जो जीवन्त और मुखरित स्वरूप लोक-साहित्य में मिलता है, वह अन्यत्र नहीं। लोक-साहित्य में जन-जीवन का स्पन्दन और लोक-मानस की पुकार रहती है।

इसीलिए हम देखते हैं कि जब देश के कोने-कोने से स्वातंत्र्य आन्दोलन में जनता के स्वर गूंजने लगे, सदियों की दासता से अन्तस् की छटपटाहट एक तूफान का रूप धारण करने लगी, परिस्थितियों की टक्कर में सभी मूर्च्छना भंग हुई और एक उफान उठने लगा, तब भला हिमालय का हृदय गढ़वाल चुप कैसे रह सकता था ? वह भी स्वातन्त्र्य संग्राम में कूद पड़ा। नये-नये सपने उसकी आँखों में नाचने लगे और वे ही गीत बनकर जन-मन के कंठ से मुखरित होने लगे। तब से गढ़वाल एक नयी राष्ट्रीय चेतना का प्रस्फुरण और एक व्यापक आन्दोलन का सूत्रपात करने लगा। देश-भक्ति, स्वाधीनता, राष्ट्रीयता, जागरण, गांधी, नेहरू सुभाष आदि के गीत गढ़वाल के गाँव-गाँव में गूंजने लगे। जागा जागा धू मचैद्या (जागो जागो धूम मचा दो) आजाद हिन्द के सिपाहियों ने गढ़वाल की सोयी कन्दराओं में क्रांति के गीत और सन्देश पहुँचा दिये। फलतः विदेशी शासन, रूढ़ियों, कुप्रथाओं, भुखमरी, रंगाली, उत्पीड़न और शोषण के विरुद्ध गढ़वाल की आवाज बुलन्द होने लगी। दबे-पिसे हरिजनों में एक नयी लहर और चेतना आ गयी।

गाँव-गाँव में नित्य जलसे निकलते, गांधी, नेहरू, सुभाष और 'भारत माता की जय' के नारे लगते, प्रभात फेरियाँ निकलतीं और घास काटते, हल चलाते नर-नारियों के कल-कंठ से क्रान्ति के असंख्य गीत हिमालय की शत-शत धाराओं की तरह फूट पड़े।

(अ) माता गांधी

गाँधी जी पर जन-साधारण का कितना विश्वास, कैसी अटल श्रद्धा और अगाध भक्ति है, उसका सच्चा स्वरूप निम्नलिखित लोकगीत में मिलता है :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

माता गांधी बड़ों भागी छ,
देश सेवा को अनुरागी छ।
बकरी को दूद सी खाँदू छ।
खादी को लाणू वो लाँदू छ,
पन्द्रह अगस्त हमू दिलेगी बो,
अंग्रेजू सणी भगेगी बो,
आजादी हमू दिलेगी, बो।
राजू किसाणू दिलेगी, बो।

(महात्मा गांधी वड़े भाग्यशाली हैं, देश-सेवा के बड़े अनुरागी हैं, बकरी का दूध पीते हैं, खादी का वस्त्र पहनते हैं, वे हमें पन्द्रह अगस्त दे गये, वे अंग्रेजों को भगा गये, हमें आजादी दिला गये, राज किसानों को दे गये।)

कांग्रेस और तिरंगे झण्डे के प्रति जनता का उत्साह और प्रेम छलक पड़ता है :

"ह्वे जाणो मेंब्रर सची, प्यारा कांग्रेस मा,
तिरंगो सो झंडा देखे, भायो बाजारु मा।"

क्रान्तिकारियों को आते हुए देखकर किसान कह उठता है :

चला भाई देखि ओला, गांधी की पलटन दा।
अगणे गांधी सूबेदार, पिछने जबाहीर दा।
पैलि तिरंगो झंडा उठे, लन्दन का बची दा।
जौन तिरंगो झंडा छीने, अंग्रेजों को मोरी दा।
मोतीलाल को वीर जबाहर, भारत को राजा दा।।

(चलो भाइयो गांधी की पलटन देख आयें,
आगे गांधी सूबेदार, पीछे-पीछे वीर जवाहर,
पहले-पहल तिरंगा झंडा लहराया लन्दन में,
उन अंग्रेजों का मुर्दा करा, जिन्होंने झंडा छीना।
मोतीलाल का वीर जवाहर भारत का राजा हैं।)

(आ) नेरु तेरा ही सास

अंग्रेजी राज्य और अंग्रेजों के भयानक शोषण एवं अत्याचार को समाप्त करने के लिए किसानों ने अपना सेनापति जवाहर को चुना--

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अंग्रेज जमाना नेरु, गरीब की तबाई, झम।
अंग्रजी जमाना नेरु, वेंट थई बेगार झम ॥
अंग्रेजी जमाना नेरु, अमीरु की शान, झम।
गरीबू की कमई नेरु, अमीरुन चाटी, झम॥
जनता का मुख नेरु, कनो लगयो ताला, झम।
दस का प्राण देदी नेरु, कांगरेसी टोली, झम ॥
सुमन, नगेन्द्र मोलू नेरु, गढ़वाल का वीर, झम।
भारत का गरीब नेरु, तेरा ही सास, झम ॥

(अंग्रेजो शासन में नेहरू, गरोबों की तबाही है।
अंग्रेजी शासन में नेहरू, भेंट और बेगार है।
अंग्रेजी शासन में नेहरू, अमीरों को शान है।
गरीबों की कमाई तो, अमीरों ने ही चाटी है।
जनता के मुँह पर, नेहरू, कैसे ताले लगे हैं!
कांग्रेसी टोली, नेहरू, देश पर बलिदान हुई।
सुमन नगेन्द्र, माल्, नेहरू, गढ़वाल के वीर हैं।
भारत के गरीब, नेहरू, तेरे ही भरोसे हैं।)

(ई) नेता जी जै हिन्द

भोले-भोले किसानों के अन्तः करण में सुभाष के बलिदान और देश-प्रेम के प्रति श्रद्धा और आस्था है, इसका जीता-जागता चित्र निम्नलिखित लोकगीत में मिलता है:—

जै हिन्द, अखीड़ू की साई, नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, बर्लिन पौंछीन नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, आजादी ताई नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, आरसी को ऐना नेता जी, जै हिन्द!
जै हिन्द, हिटलर मिलीक नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, सिंगापुर गैना नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, लुवा गड़ी सरी नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, सिंगापुर जैक नेता जी, जै हिन्द!
जै हिन्द, फौज खड़ी करी नेता जी, जैं हिन्द,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

जै हिन्द, कपड़ो की गाजी नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, नेता जी लगै नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, प्राणू की बाजी नेता जी, जै हिन्द !
जै हिन्द, फाँडी जाली ऊन नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, सुफल फलीगे नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, तुमारो खून, नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, वाखरा की गूदी नेता जी, जै हिन्द !
जै हिन्द, धनि ऊँ मात पितौंक जै हिन्द,
जै हिन्द, जौन पिलाये दूदी नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, लगोठी का बाद नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, त्वैन लड़ै लड़ै नेता जी, जै हिन्द !
जै हिन्द, हम होया आजाद नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, धातु गड़े पारो नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, मा गुंजीगे नेता जी, जै हिन्द,
जै हिन्द, को नारो नेता जी, जै हिन्द !
सड़की को सूत, सुमन, सड़की को सूत ले,
टीरी मा पैदा ह्वैगे, सुमन, सुमन सपूत ले !

(जय हिन्द, तूने लड़ाई लड़ी, नेता जी जै हिन्द ।
जय हिन्द हम आजाद हुए, नेता जी, जय हिन्द ।
हिन्दुस्तान में गूंज गया नेता जी
जय हिन्द का नारा नेता जी ।
उन माता पिता को धन्य है नेता जी
जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया नेता जी ……!)

इस प्रकार संपूर्ण गढ़वाल का लोक-साहित्य राष्ट्रीय भावनाओं से ओतप्रोत और देश-भक्ति तथा क्रान्ति के स्वरों से भरपूर है ।

(ई) सुमन सपूत

गढ़वाल के महान स्वातन्त्र्य-सेनानी श्रीदेव सुमन का नाम विश्व-इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठों पर सदा जगमगाता रहेगा । 'श्री देव सुमन क्रान्ति के अग्रदूत के रूप में आये और उन्होंने जन-जन के मन में क्रान्ति के बीज बोये :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़ माता को प्यारो, सुमन, सुमन सपूत ले।
अखोड़ू को कीच, सुमन, अखोड़ू को कीच,
ढंडक शुरु ह्वैगे, सुमन, रवाईं का बीच।
घाघरी को फेर, सुमन, घाघरी को फेर,
गढ़माता की जिकुड़ी, सुमन, पैनो लागे तीर।
गढ़माता को वीर, सुमन, पैनो लागे तीर ले,
बजायो त धण, सुमन, बजायो त धण,
मरि जाण बल, सुमन, घर नी रण!
नौ लखो हार, सुमन, नौ लखो हार,
त्वैन शुरु कर्‍याले, सुमन, आजादी परचार!
गांधी जी का चेला, सुमन, आजादी परचार,
काटी जालो कुरो, सुमन, काटी जालो कूरो!
यो सुमन ढंडकी ह्वैगे, होई जाणो सूरो,
कपड़ा को गज, सुमन, कपड़ा को गज,
आँगण का बीच, सुमन, झण्डा देन्द सज।
घास काटे सुमन, घास काटे च्वान
तेरा साथी छन, सुमन, इसकूली ज्वान!
देवता का भोग, सुमन, देवता को भोग,
तेरा साथी छन, सुमन, गौं गौं का लोग!
बाखुरी को कान, सुमन, बाखरी को कान,
सुफल होइगे, सुमन, तेरो स्यो बलिदान!
गढ़माता को वीर सुमन, तेरो स्यो बलिदान!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

७

गढ़वाली लोक-गाथाएँ

गढ़वाल में ढेर-सी लोकगाथाएँ मिलती हैं। उनको मुख्यतया दो भागों में बाँटा जा सकता है :

१. लौकिक गाथाएँ (पँवाड़ा)
२. पौराणिक गाथाएँ (जागर)

लौकिक गाथाएँ भी दो प्रकार की मिलती हैं :

१. वीर गाथाएँ और प्रेम गाथाएँ।

पौराणिक गाथाएँ मुख्य रूप से तीन प्रकार की मिलती हैं :

१. कृष्ण-सम्बन्धी गाथाएँ,
२. स्थानीय देवगाथाएँ और
३. पांडव सम्बन्धी गाथाएँ।

लौकिक गाथाएँ

वीर गाथाएँ और प्रेम गाथाएँ, जिन्हें गढ़वाली में 'पँवाड़ा' कहा जाता है— अनेक दृष्टियों से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। इनमें जहाँ इतिहास की रंग-विरंगी झलकियाँ और कल्पना के इन्द्रधनुषी तानेबाने मिलते हैं, वहाँ शब्दों का जादुई चमत्कार, उपमाओं का सुन्दर सौष्ठव और शैली का अद्भुत रूप भी मिलता है। भाषा-विज्ञान की दृष्टि से इनकी अपनी एक अलग विशेषता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१. जीतू बगड्वाल

जीतू और शोभनू गरीवा के बेटे थे। सुमेरा उनकी माँ थी और फ्यूंली जौसू दादी। कुंजा दादा था और शोभनी बहन।

राजा भानशाह ने उसे बगूड़ी का सेरा (धान वाला खेत) दिया था। बगूड़ा से ही उसका नाम बगड्वाल पड़ गया। जीतू बगड्वाल अपनी मस्ती में झूमता रहता था। वह बड़ा रसिया था। भौंरे की तरह उड़ता रहता।

बरसात आयी, तब कहीं उसे खेतीबाड़ी की याद आयी। बगूड़ी के खेत में धान रोपने के लिए तय करना था। जीतू ने अपने भाई शोभनू को पंडित के पास भेजा। पंडित ने कहा, 'रुपाई तो तेरी बहन शोभनी के हाथ जुड़ती है।' शोभनू लौटा और उसने जीतू को सब बता दिया।

माँ शोभनी को बुलाने के लिए शोभनू को भेजना चाहती है,लेकिन जीतू खुद जाना चाहता है। माँ से वह कहता है कि "वह तो नासमझ है। मैं ही जाऊँगा।"

इसी बीच जीतू की तिल्वा बकरी छींकती है। माँ इसे अपशकुन समझती है। वह जीतू को रोकती है, किन्तु वह कहता हैं "माँ, छह गते असाढ़ रोपण का दिन जुड़ता है। बहन को तो जैसे-तैसे बुलाना ही है।"

जीतू जाने की तैयारी करता है। उसकी स्त्री भी उसे कोसती है कि 'तुम तो अपनी साली वरुणा से मिलने जा रहे हो, मैं सब समझती हूँ !' लेकिन जीतू किसी की नहीं सुनता है। अपनी बाँसुरी लेकर चल पड़ता है।

चलते-चलते वह भरी दुपहरी में रैंथल पहुँचता है और कुछ देर आराम करने के बाद अपनी नौसुरी वाँसुरी बजाता है। बाँसुरी की सुरीली तान सुनकर खैर की नौ अप्सराएँ आ जाती हैं और उसके हाथ, नाक, कान और आँखों में बैठकर उसका खून पीने लग जाती हैं। जीतू अपने कुल-देवता भैरव को याद करता है। तब अप्सराएँ फिर से मिलने का वायदा करके उसे छोड़ देती हैं।

जीतू अपनी बहन शोभनी के पास पहुँचता है। फिर साली वरुणा से मिलता है। दोनों एक दूसरे को जी-जानसे चाहते थे। जी भर कर बातें करते हैं। फिर जीतू अपनी साली से कहता है कि फिर न जाने मिलन होगा कि नहीं !

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

अपनी बहन के साथ वह बगूड़ी लौट आता है। रोपण का दिन समीप आता है। तैयारियाँ होती हैं। बैलों की जोड़ी लेकर वह मलारी सेरा पहुँचता है। जैसे ही वह दूसरे चक्कर की तैयारी करता है, नौ अप्सराएँ उसके नाक, कान और आँखों में बैठ जाती हैं और उसका सारा खून पी लेती हैं। वह लुढक जाता है और वहीं डूब जाता है।

जीतू बगडवाल

जीतू व शोभनू होला, गरीबा का बेटा,
माता त सुमेरा छई, दादी फ्यूँली जौसू।
दादा जी कुंजर छया, भुली[१] शोभनी छई,
जाति को पंवार छयो, जीतू अकलि गँवार,
बगूड़ी[२] जैक भौजी, होंऽ गैन बगड्वाल!
राज मानशाइन दिने, कमीणा[३] को जामो[४],
गौ मुंडे[५] को सेरी[६] दिने, गौ मथे[७] को धारो[८]
जीतू रये दादू, मादू[९] उदभातू[१०]
राणियों कू रौंसिया[११], रये फूल को हौंसिया[१२]।
अणब्याई[१३] बेटियों कू, ठाकुरमासो[१४] खाये,
बांजा[१५] घटू[१६] को, वैन, भग्वाड़ी[१७] उगाये,
ऊं बांजो[१८] भैंस्यों को, पालो[१९] लिने परोठो[२०],
जीतू रये भैजी, राजौं को मुसद्दी।
बगुड़ी ऐगे भैजी, उल्या-मुल्या[२१] मास,
तब जितेसिंह राजा, धाविड़ी[२२] लगौंद—
ओड़ू[२३] नेड़ू[२४] औंदू, मेरा भुला शोभनू
सोरा-सरीक भुला, सब सेरा सैंक लैन,
कि मलारी को सेरो हमारो—
बाँजो रैगे त, बाँजो मेरा दादू।

१. छोटी बहन, २. एक जगह, ३. सामन्त, ४. पद, ५. नीचे, ६. खेत (धान वाला), ७. ऊपर, ८. पानी का स्रोत, ९. मस्त, १०. उन्मत्त, ११. रसिया, १२. शौकीन, १३. अनब्याही, १४. कर, १५. उजाड़, १६. घराट, १७. भाड़ा, १८. बाँझ, १९. कर (दूध), २०. एक बर्तन, २१. चौमासा, २२. आवाज, २३. और, २४. नज़दीक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तू जायौदू भुला[1], जोशी[2] का पास,
गाड़ीक लऊ, सुदिन सुवार
सुदिन सुवार लौणा, लुंगला[3] को दिन।
पातुड़ी की भेंट धरे, सेला चौंल पाथी,[4]
धुलेटी[5] की भेंट धरे, सोवन[6] को टका।
चलीगे शोभनू तब, बरमा[7] का पास,
जाईक माथो नवौन्दो, सेवा लगौंदो
पैलगु पैलगु मेरा बरमा।
चिरंजी जजमान मेरा।
भैंर[8] गाड़[9] बरमा, धुलेटी[10] पातुड़ी,
धुलेटी पातुड़ी गाड, सुदिन सुवार।
गाडी याले बरमान, धुलेटी पातुड़ी,
देखद देखद बरमा, मुंडली[11] ढगडयोंद,[12]
तेरी राशि नी जूड़दो जजमान
तुमारी बतैन्दी बल, वा वैण[13] शोभनी,
शोभनी क हाथ जूड़े, लुंगला को दिन।
लुंगला को दिन, छै गते अषाढ़।
वा वैण मेरी रन्दी, कठैत का गाऊं
चूला कठूड़ तैं, बाँका वनगड़।
सोचदू सोचदू तब, घर ऐगे शोभनू
पौंछीगे[14] तब, जीतू का पास–
खरो मानी जदेऊ[15], मेरा जेठा-पाठा भैजी,
तेरी राशि नी जूड़े दिदा[16], लुंगला[17] को दिन !
हमारी बतैंछ[18] भैजी, वा वैणा शोभनी,
शोभनी का हात जूँड़े, लुंगला को दिन।
जीतू भिभड़ैकै[19] उठे तब, गए माता के पास,

१. छोटा भाई, २. ज्योतिषी, ३. रोपण, ४. एक पाथा (चार सेर), ५. पटला, ६. सोने, ७. ब्राह्मण, ८. बाहर, ९. निकाली, १०. पटला-पत्रा, ११. सिर, १२. हिलाया, १३. बहन, १४. पहुँच गया, १५. नमस्कार (जय देव), १६. बड़ा भाई, १७. रोपण, १८. बतायी, १९. भड़भड़ाकर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

हे मेरी जिया, हमारी राशि नी जूड़े, लुंगला को दिन!
मैं त जाँदू माता, शोभनी बैदौण[१]।
तू छई जीतू, बावरो[२] बेसुवा[३],
शोभनी बैदौण जालौ, तेरा भुला शोभनू।
भुला शोभनू होलू माता, बालो अलबूद[४],
मैं जौलू माता, शोभनी बैदौण।
न्यूतीक बुलौलो, पूजीक पठोलो[५]।
नी जाणू जीतू, त्वैक[६] ह्वैगे असगुन,
तिला बाखरी तेरी, ठक[७] छयू[८] दी।
नि लाणी जिया[९], त्वैन इनी छुँई[१०],
घर बोड़ी[११] औलो, तिला मारी खोलो।
भैर[१२] दे तू मेरो, गंगाजली जामो[१३],
मोड़ुवा[१४] मुन्डयासो[१५] दे दूँ, आलमी इजार
घावड्या बाँसुली दे दूँ, नौसुर मुरुली।
न जा मेरा जीतू, कपड़ी तेरो झौली[१६] ह्वैन मोसी[१७],
आरस्यों[१८] को पाग तेरो, ठनठन टूटे।
त्वैक तई ह्वैगे, जीतू यो असगुन!
माता की अड़ैती[१९] जीतू, एक नी माणदू,
लैरेन्द[२०] पैरेन्द तब, कांठो[२१] मा को-सी सूरीज[२२],
गाड़ को-सी माछो, सर्प को-सी बच्चा,
बाँको वीर छयो, जीतू नामी भड़,
राजौं को माण्यु छयो, रूप को भर!
पैठीगे[२३] तब जीतू, वैणी[२४] का गऊँ[२५],
राणी पटूड्या तब, तैंकी[२६] गाळी देन्दी।
जाँदू होई मेरा स्वामी, औंदू ना होई,

१. बुलाने के लिए, २. बावला, ३. झक्की, ४. अल्प बुद्धिवाला, ५. भेजना, ६. तुम्हें, ७. एकदम, ८. छींक मारी, ९. माँ, १०. बातें, ११. लौटकर, १२. बाहर, १३. कपड़े, १४. सिर की, १५. पगड़ी, १६. झलक, १७. काली, १८. असें, १९. सीरज, २०. सजा-धजा, २१. चोटी पर, २२. सूरज (चावल की मिठाई), २३. चल पड़ा, २४. बहन, २५. गाँव, २६. उसकी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

स्याली[१] का खातर तू, पैटी वैणी वैदौण[२] !
विदा लिने जीतून, रस्ता लगे वो,
चल्दू रै वो ऊँची तौं घैड़ियों[३],
ऊँची घैड़ियों चढ़े, जीतू गैरी[४] त पाख्यों,[५],
कलवली[६] कुलै[७] छै वख, देउदार छा स्वाणा,
हऱ्याँ डाँला छा, फूलून जना ढक्याँ !
पौंछी गये जीतू, रैथल[८] की थाती,
घड़ांदी[९] दोफरी छई, तढांदो[१०] घाम,
तड़ांदा घाम मा, जीतू सेल[११] बैठोगे।
तमाखू पीयाले तैन, साध्यान[१२] लीयाले,
हौंस्यारी[१३] पराण वेको, उलारिया[१४] गए।
हाथ गाडयाले[१५] वैन[१६], नौसुर[१७] मुरली,
नौसुर मुरली धरे, धावड़या वाँसुली।
बावरो छयो जीतू, उलारिया ज्वान[१८],
मुरली को हौंसिया छयो, रूप को रौंसिया।
घुराये[१९] मुरली वैन, डाँडी[२०] बीजीन[२१] काँठी[२२],
वणा का मिरगून, चरणू छोड़ी दिने,
पंछियोंन छोड़ी दिने, मुख को त गालो।
कु होलं चुचों स्यो, धावडया[२३] मुरल्या[२४],
तैंकी मुरली मा क्या, मोहनी होली।
बिजी गैन बिजी, खैट की आछरी[२५],
जीतू की आँख्यों मा, जनो शीशो[२६] चमलाणी[२७]।
छमछम घूँघर बजीन, जीतू की आँखी मुंजीन[२८],
क्वी वैणी वैठीन, आँख्यों का स्वर,

१. साली, २. बुलाने, ३. चोटियाँ, ४. गहरी, ५. घाटियाँ, ६. सुन्दर, ७. चीड़, ८. एक जगह, ९. तपती, १०. कड़ी, ११. छाया, १२. आराम, १३. भावुक, १४. मस्त, १५. निकाल दी, १६. उसने, १७. नौ स्वरवाली, १८. जवान, १९. बजायी, २०. पहाड़ियाँ, २१. जाग गयी, २२. चोटियाँ, २३. मोहक, २४. मुरलीवाला, २५. अप्सराएँ, २६. दर्पण, २७. चमका, २८. मुँद गयी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIE

क्वी बैणी बैठीन, कन्दूड्यों[१] का घर।
छालो पिने लोई[२], आलो खाये मास पिंड,
पन्द्र[३] पचीसी जीतू, रैंथल थाती रैंगे।
अल्हर जवानी जीतू, भुंचण[४] नी पायो।
तिन नी माणो जीतू, माता की अड़ैती[५],
फँसी गए कनो, आछर्यों का घेरा।
सुमिरण करदो जीतू बगूड़ी भैंरो[६],
कख हैवैली मेरी, कुलदेवी भवानी ?
आज मैं पर ऐगी, विपदा भारी,
बीच बाटा मा कनी होये, मेरी मोल[७] की मरार्स[८]।
दैणो[९] ह्वैगे तब, जीतू को बगूड़ी भैरों,
नौ बैणी आछरी तब, छूटी गैन।
तब जीतून ऊँ देन्दु, दिन्या धरम[१०]—
आज मैं जांदू बैणी वैदोण,
छै गते आषाढ़, लंगला को दिन।
तै दिन तुम मेरी, तैं मोल पुंगड़ी आन।
तब मन ह्वैगे उदास, जीतू,
चित्त ह्वैगे चंचल।
तब पौंछी गए जीतू, बैणी का गऊँ
मिली गये वीं बैणी शोभनी।
तब आये वा, स्याली[११] त वरुणा।
सेवा मेरी पौंछे, वीं स्याली वरुणा
सेवा मैं खरी लाँदू, भैना[१२] बगीड्वाल।
तेरी खातर छोड़े, स्याली बाँकी बगूड़ी,
बांकी बगूड़ी छोड़े, राण्यों की दगूड़ी[१३]।
छतीसू कुटुम्ब छोड्यो, बतीसू परिवार,
घिटुड़ियों[१४] जसो रत्थ[१५] छोड़े, चकौरू जसी टोली।

१. कान, २. खून, ३. जवानी, ४. भोगने, ५. कहना, ६. भैरव, ७. गोबर, ८. ढेर, ९. सहायक, १०. वचन, ११. साली, १२. जीजा, १३. साथ, १४. गौरय्या, १५. झुंड।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तेरा बाना[1] छोड़े मैन भैना—
दिन को खाणो, रात की सेणो।
तेरी माया[2] न स्यालीं, जिकूड़ी[3] लपेटीं,
कोरी-कोरी खाँदो, तेरी माया को मुंडारो[4]।
जिकुड़ी कौ त्वैं[5], पिलैक अपणी
परौसणू[6] छौं तेरी, माया की डाळी।
अब त मरीक ही, मिटलो स्याळी,
त्वै[7] मेंजे को हेत[8]।
यूं डाँड्यूँ मा तेरी, फूल फूलला,
झपन्याली होली बुरांस डाळी।
रितु बौड़ी औली, दाँई जसो[9] पेरो,
पर तेरी मेरी भेंट स्याली,
कु जाणी[10], हौंदी कि नी होंदी?
बौड़ीक ऐ गए जितू, तैं बाँकी बगूड़ी,
ओडूं[11] नेडूं ऐगे, लुंगला को दिन,
घटू की रिंगाई ह्वैगे, सामल[12] की पिसाई।
चौखम्भ्या तिवारी जितू, होये मंगलाचार।
मुड़ायूं[13] गुड़ाखू[14] पैट्यो[15], घुंघरियालो[16] होका[17],
पौंछी गए बल्दू की जोड़ी, मलारी[18] का सेरा[19],
तब जोतेण लैंग्या जीतू, का घौला[20] त बुल्ला[21]।
मलारी का सेरा, शुरू होइगे रोपण,
सेरू सैंक ऐगे तैं, मोल पुंगड़ी।
एक फाट उंडो ळीगे, जीतू एक फाट फुंडो,
फीकू ह्वै गए ज्यू, जीतू जी को।
तब्रे[22] वीं मोल पुंगड़ी[23], छुटे घेंटुडी[24] रथ,

१. लिए, २. प्रेम, ३. हृदय, ४. सिरदर्द, ५. खून, ६. सींच रहा (पालना), ७. तेरे से, ८. प्रेम, ९. जैसे, १०. कौन जाने, ११. जल्दी-जल्दी, १२. सामान, १३. मीठा, १४. तम्बाकू, १५. रखा, १६. घूंघरवाला, १७. हुक्का, १८. एक जगह, १९. खेत, २०-२१. बैलों का नाम २२. तभी, २३. खेत, २४. उड़ता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIL

मलेऊ[१] - सी भिड़को[२]।
नौ बैणी आछरी[३] ऐन, बार बैणी भराड़ी[४],
क्वी बैणी बैठीन, कन्दूडयों का घर,
क्वी बैणी बैठीन, आंख्यों का स्वर।
छालो पिने लोई, आलो खाये मासपिण्ड।
अगुंडो छयो जीतू, पछिड़ू फरकी,
स्यूँ[५] बल्दू जोड़ी जीतू, डूबी गए,
मलारी का सेरा, जीतू खोई गए।
अल्हर जवानी जीतू, मुंचण[६] नो पाए,
लाखड़ू[७] - सी तार्बू[८] होये, पिंडालू - सी भाड़
बत्तीसू कुटुम्ब तेरो, तै मलारी सेरा रैगे,
बावरो नी होन्दू जीतू, नी होन्दू विणास[९]।

२. तिलू रौतेली

उन दिनों गढ़वाल की राजधानी खैरागढ़ थी। राजा थे मानशाह। कत्यूरा के राजा धामशाह ने खैरागढ़ पर हमला किया। मानशाह राजधानी छोड़कर चाँदगढ़ी पहुँच गये। गढ़वाल में सर्वत्र कत्यूरों का आतंक फैल गया। जिन गढ़वाली सरदारों ने डटकर सामना किया, वे मारे गये। तिलू के पिता भूपू और उसके दोनों भाई भी लड़ाई में मारे गये। उस समय बेचारी तिलू केवल पन्द्रह बरस की थी।

काँडा खेल (कौतुक) का समय आता है। लोग खेल देखने की तैयारी करते हैं—तिलू रौतेली का खेल। तिलू की माँ उसे बताती है कि कत्यूरों ने उसके पिता और भाइयों को मारा है। वह बदला लेने का संकल्प करती है। खेल बन्द हो जाता है। लड़ाई का नया खेल शुरू हो जाता है।

तिलू अपनी सहेलियों को लेकर युद्ध के लिए चल पड़ती है। तिलू सबसे पहले खैरागढ़ पर हमला करती है और बात-की-बात में जीत लेती है। फिर रमोली खाल पर, इड़िया भौंन पर। वहाँ भेल देवी की स्थापना करती है। फिर उमरागढ़ी पर, फिर

१. एक पक्षी, २. स्वर, ३. अप्सराएँ, ४. यक्षणियाँ, ५. सहित, ६. भोगने, ७. लकड़ी, ८. लिया, ९. विनाश।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सल्द मणो महादेव पर। इस प्रकार वह उधर के इलाके पर अपना अधिकार कर लेती हैं।

मिलंगन मौन के मोर्चे पर उसकी सखियों मारी जाती हैं, किन्तु वह उसे भी जीत लेती है। फिर कांतियाखाल, चौखुरिया, देघाट, सराईखेत आदि पर उसका कब्जा हो जाता है। शत्रु हार जाते हैं। वह फिर अपने गढ़ डुमैलो और राँडा पहुँचती है।

रास्ते में नहाने के लिए जैसे ही वह नवार नदी में उतरती है, राजू रजवार अचानक उसपर हमला करता है। वह शेरनी सदा-सदा के लिए सो जाती है।

पन्द्रह से बाईस की उम्र तक आठ साल तक वह लड़ती रही, भिड़ती रही, दुश्मनों के दाँत खट्टे करती रही।

तिलू रौतेली

ओ काँडा[१] को कौतिक[२] उन्यो,[३]
ओ तिलू कौतिक जौला[४]।
धका धैं धैं तिलू रौतेली धका धैं धैं।
द्वी वीर मेरा रणशूर ह्वेन,
भगतू[५] पतर को बदलो लेक कौतिक खेलला,
धका धैं धैं तिलू रौतेली धका धैं धैं।
अहो रणशूर बाजा बजी गेन रौतेली धका धैं धैं।
बोइयों को दूध तुम रणखेतू बतावा धका धैं····।
तीलू रौंतेली ब्वादा रणसाज सजावा धका····।
ईजा[६] मैंण यू बीरु टीका लगावा, साज सजावा धका····।
मैं तीलू बोलूद जौंका भाई होला, जौकी बैण होला,
ओ रणखेतू जाला धका धैं धैं।
बल्लूँ[७] पहरी तू मुल्क जाईक धाई लगादे धका····।
वीरौं की भ्रुकुटी तनीगे धका····।
तील रौतेली धका धैं धैं।

१. एक जगह, २. खेल, ३. आ गया, ४. जाएँगे, ५. तिलू के भाई, ६. माँ, ७. सहेलियाँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

ओ अब बढ़ो सलाण नाचण लाग धका····।
अब नई ज्वानी आइगे धका····।
बेलू देवकी द्वी संग चलीगै धका····।
ओ खैरागढ़ मा जुद्ध लगी गै धका····।
खडकू रौत तख मरीगे धका धैं धैं।
तोलू रौतेली धका धैं धैं।
ओ काँडा को कौतिक उरो धका····।
तिलू रौतेली तुम पुराण हथियार पुजावा धका····।
अपनी ढाल कटार तलवार सजावा धका····।
घमडू की हुड़की बजणी बैठे धका····।
ओ रणशूरसाज सजीक आगे तीतू रौतेली धका····।
दीवा को उस्टानकर याल धका····।
रण जीति घर आइक गाडूलो छत्तर रे।
धका धैं धैं तीलू रौतेली धका धैं धैं।
पहुँची गैतीलू[1] टकोली भौन धका····।
यख विद्दा कत्यूरो मारियल धका····।
तब तीलू पहुँचीगै सल्ड महादेव !
ओ सिगनी शार्दुला धका····।
शार्दुला तीलू अब बढ़ीगै भिलण भौन।
धका धैं धैं तोलू रौतेली धका····।
यख कख मारी कै को बढ़ीगै चौखटिया[2] देघाट[3] घका····।
विजय मिल पर तीलू घिरीघै धका:,
बेल्लू देवकी रणखेतूमा यखी काम ऐन।
इतना माँ शिब्बू पोखरियाल मदद लेक आइग घका····।
जब शार्दुला लड़द लड़द पहुँची कालिका खाल—
सराईखेत आइगै घमसाण युद्ध धका····
सार्दुला की मार से कत्यूरा रण छोडी भागीगे धका····।
यू कत्यरौं क खन से तर्पण देईक कौंतिक खेललो धका····।
रणभूत पितरों को कख तर्पण दिऊला धका····।

१. स्थान, २. स्थान का नाम, ३. स्थान विशेष।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

यख शीघ्र पोखरियाल तर्पण देण लग्ये धका····।
सराईखेत नाम तभी से पड़ा धका····
यो कौतिग तलवारियों को हालो धका····।
ये ताई खेलण मर्दाना मस्ताना रणबांकुर ज्वान धका····।
सरदार चला तुम रणखेत चला तुम धका····।
धका धैं धैं तिलू रौतेली धका····।
ओ रणसिघा रणभेरी, नगाड़ा बजीगै धका····।
ओ शिबू ब्वाडा तर्पण करण खैरागढ़ धका····।
अब शार्दुला पहुँची गै खैरागढ़ धका।
यह जीत कत्यूरा मारी राजुला जैरौतेली आगे बढ़ीगे····।
रणजीति सिंघनी दुबाटा मा नाणलग्ये धका····।
रामू रजवार घात पाइगै धका····।
राजूला त रणचण्डी छई अपणो काम कैकी नाम धरीगे।
कौतिका जाईक खेलणों छयो खेली याल,
याद तौं की जुग जुग रहली धका धैं धैं।
तू साक्षी रैली खाटली की देवी,
तू साक्षी रैली सल्ड महा देवी,
ओ तू साक्षी रैलो पंच पाल देव।
कालिका की देवी, लंगूरिया भैरो,
तड़ासर देव, अमर तीलु सिंगनी शार्दुला,
जब तक भूमि, सूरज आसमान,
तीलू रौतेली की तब तक याद रैली,
धका धै धै तीलू रौतेली धका धैं धैं।

३. जगदेव पंवार

एक बार स्वर्ग में पंचनाम देवताओं की सभा लगी थी। शिव अपने ध्यान में थे, पार्वती भी वहीं बैठी थीं। नारायण ने कहा–"है संसार में कोई ऐसा वीर, जो हँसते-हँसते अपना सिर दे दे। उसे गढ़वाल का राज्य देंगे।"

भलासीगढ़ के चंचू भाट की बेटी कालिका उस समय वहीं थी। उसे देवताओं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

ने कहा कि तुम मर्त्यलोक में रहती हो। घूमो-फिरो और देखो कि कौन ऐसा वीर है, जो अपना सिर दे सकता है।

कालिका मलासीगढ़ पहुँची। सब उसे चाहते थे। वह बड़ी दयालु थी। वहीं बेताल भाट था। उसके चार लड़के थे। बेताल ने उससे कहा– 'मेरे बेटों का लालन-पालन भी आप ही करो।" उसने कहा-"ठीक है।"

कालिका घूमती-घामती धारा नगरी पहुँची। वहाँ जयदेव और जगदेव सगे भाई थे। पहले वह जयदेव के पास गयी, जोगिन बन कर। जयदेव बड़ा कंजूस था। उसने दरबारियों से कहा कि उससे कहदो कि वह शिकार पर गया है।

जगदेव को यह झूठ अखरा। उसने कालिका को निमंत्रण दिया, फिर अपनी छह रानियों से पूछा कि उसे क्या दिया जाय। किसी ने कुछ कहा, किसी ने कुछ। तब वह अपनी सातवीं रानी चौहानी के पास गया। उसने अपना सिर देने की बात कही। जगदेव को रानी की बात बहुत अच्छी लगी।

उसने तलवार निकाली और झट से अपना ही सिर कालिका को अर्पित कर दिया। कालिका स्वर्ग गयी। देवता बड़े प्रसन्न हुए। मर्त्यलोक आकर उन्होंने जगदेव का सिर फिर धड़ से जोड़कर उसे जीवित कर दिया। रानी ने कहा कि दिया हुआ दान वापस नहीं लिया जाता। देवताओं ने मंत्र के बल से दूसरा सिर लगा दिया, जगदेव जीवित हो गया। उसका नाम अमर हो गया और उसे गढ़वाल का राज्य मिल गया।

जगदेव पंवार

पंच देवों की सभा लगीं छई,
शिव जी ध्यान मा छा, देवी छई पारवती,
सभा का मुकुट तिरलोकी नारैण,
तब इना बैन[1] बोलदा :
क्वी दुनिया मा इनो वीर भी होलो,
जो शीश काटीक दान देलो ?
जैन शीश को दान देण,
वैन गढ़वाल को राज लेण।
बखी वैठी छई चंचु भाट की बेटी कैड़ी कंकाली।
तव बोलदा भगवान, हे कैड़ी कंकाली,

१. शब्द।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दुनिया को तोल लौ दू, पृथ्वी भाऊ[1]।
क्वी दुनिया मा शीश काटीक दान भी देलो।
तू रन्दी कंकाली मृत्यु मण्डल[2] मा।
मैं ल्यूलो भगवान पृथी को भेद,
तब कैड़ी कंकाली मृत्यु मण्डल ओंदी।
वै मलासीगढ़ में रन्द छयो वीं को बाबा[3] चंचु भाट,
कैड़ी कंकाली छै मलासीगढ़ को प्यारी,
मन की मयाली[4] छैणै वा कैड़ी कंकाली,
भूकों तई खलौंदी छई, रोदौं चण्यौन्दी[5],
भूकों देखीक अन्न नी छै खान्दी
नंगों देखीक वस्त्र नी छै लान्दी।
मालसीगढ़ का लोक वीं तई तब—
आंख्यों मा पूजदा छया।
वखी वै गढ़ मा रन्द छयो एक बेताल भाट,
मति को हीणू[6] छयों, पेट को नीनू[7]।
गरीब छयो भौत वो बेताल भाट,
चार नौना[8] छया वैका[9],
जिकुड़ी[10] का जना चीरा[11], भाग का जना कांडा[12]।
भूख न रोंदा छा वो, वे सणी झुरोंदा[13]
तब कंकाली मू वैन अपणी विपता गाये :
हे कैड़ी कंकाली, तू होली देवी स्वरूप,
मैं छऊँ किस्मत को हारो, विपता को मारो।
मेरा होला ये चार बेटा,
तू ऊं सणी भीक मांगीक पाली दे दूँ।
जिकुड़ी क्वांसी[14] छै कंकाली की
वींन बालीक पालणा स्वीकार करयाल्या।
मैंन जाण होलो दुनिया को भाऊ[15] लेण,

१. भाव, २. लोक, ३. पिता, ४. दयालु, ५. चुप कराना, ६. हीन, ७. खाली, ८. लड़के, ९. उसके, १०. हृदय, ११. घाव, १२. कांटे, १३. तंग करना, १४. कोयला, १५. भाव।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

तखी बिटी मांगीक भी लौलू यूं छोरौंक।
कंकालीन तब हात धरे कमण्डल,
जोगीण को भेष बणाये, बभूत रमाए।
तब राज राज मा घूमदी कंकाली,
घूमदी घूमदी ऐ गए धारा नगरी।
धारा नगरी मा रन्द छया जैदेव जगदेव पंवार,
जयदेव जगदेव होला पीठी[१] जौंला भाई,
जयदेव जेठू होलू जगदेव काणसो[२]।
जयदेव बल मा किरपण होलो।
मंगदारों देखीक जो द्वारू लगौंदो।
जगदेव मन को टुलो[३] होलो, दिल को खुलो,
दानियों मा दानी होलो जगदेव पंवार।
कैड़ी कंकाली गै पैले जयदेव का पास,
द्वार पर जैक वींन अलख रमाई,
हे पहरदारू भीतर जैक बोला राजा मू इनो,
द्वार पर एक भिखारीण आई छ।
तब राजा जयदेव इनो कदो बूध[४],
सभी मुसद्यों[५] तैं अफू[६] जना[७] जामा[८] पैरोंद,
कंकाली तब वै पछाणी नी पौन्दी—
तब बोलदू वो—हे कैडी कंकाली,
हमारू राजा शिकार जायूं छ।
तब हैंसदी हैंसदी कंकाली लौटीक ओन्दी :
जनू सीखी छ तनी तुमूक होयान।
तब सूणीयाले या बात जगदेवन,
शरील उठौंगे, लाज न बैठोगे।
न्यूते तब वैन वा कैडी कंकाली,
मैं मुख को मांग्यूं त्वै दान द्यौंलो।
इनो दानी छयो जगदेव पँवार

१. सगे, २. छोटा, ३. उदार ४. युक्ति, ५. दरबारी, ६. अपने ७. जैसे, ८. वस्त्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दणक वेको हात नी छौ टिटगदो,
कया देऊं, कया देऊं मन करदू छऊ।
तब एक एक करी वैन पूछौन अपणी राणी,
बोला, वीं भिखारीणो कया देण, कया देण ?
कैना रुप्या बोले, कैन बोले पैसा,
कैन हाथी बोल्या, कैन बोल्या घोड़ा।
वैकी छैः राण्योंन छैः जवाब दिन्या,
सातीं राणी छई चौहान्या[1] राणी,
राजा की छोड़ी छै वा पुंगड़ी[2] जनी गोड़ीं,
पर वैन वा भी पूछी लीने।
तब बोल्दी वैकी वा चौहान्या राणी
तुम मेरा सिर का छतर छयाई,
तुम वोलदाई त स्वामी त मैं
अपणू सिर देणक भी त्यार छऊं।
तब राजान एक एक करीक
सबी राण्यों तई सिर देणक पूछे।
तब बोलदी राणी : हे राजा, तुमू क्या होये।
जिन्दगी से प्यारी कभी भिखारिण क्या होली ?
चौहान्या राणीन तबी मर्दाना वस्तर पैरीन,
वीरु को भेष बणाये, सिरंगार सजाए,
हौर[3] राण्यों न समझे खेल तमाशा छ जाणी,
देखदीं कती सजीं ल जनी बुरांस-सी डाली।
मैं पराणू भीख दी सकदूँ राजा।
देखी जगदेव न चौहान्या राणी,
आंख्यों से आंसू छुटीन, जिकुड़ी से सांस,
तू धन्य छै चौहानी, तिन मेरो नाक रखे।
तब पंवार का भुजा वलकण लै गेंन,
तब छेत्री हुंकार चढ़ीगे मरद।
औ तू कैंडी कंकाली, तू पतरा लीक

१. चौहान वंश की, २. खेत, ३. और।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

तब पंवारन सोनामुठी[1] तेग[2] गाडे[3]
देखण देखण मा ही तलवार
वैकी धौणी[4] से पार होई गए !
कैडी कंकाली न सिर धरे कमण्डल पर
धारा नगरीन स्वर्ग चली गए।
बख वैठ्यां छया पंचनाम देवता,
सभा का मुकुट तिरलोकी नारैण छया।
तब बोलदी कंकाली—ल्य, नारैण।
यो छ जगदेव को सिर।
दुनिया को तोल लायूं मैं पृथी को भाऊ।
तब परसन्न होया तिरलोकी नारैण,
जगदेव होलू प्राणू को निरमोही।
तब पंचनाम देवता धारानगरी ऐन,
सिर पर धड़ लगाए तब देवतौन।
तब कैडी कंकाली चौहान्या राणी मू बोदी :
यो छ सिर जगदेव को, जीता[5] होई जालो।
तब चौहानी राणी ना करदी वीं कू—
दिन्यू दान नी लियेन्दू,
थुक्यूं जूक नी चाटेन्दू।
तब देवतौंन वीं धड़ पर ही हैकू[6] सिर उपजाए।
सेता-पिंगला चौंल मारीन,
जीतों होई गए जगदेव पंवार।
देवतौंन तब वे गढ़वाल को राज दिने।
वचन चले दिल राई, जैसिंह सभाई,
वचन रहा जगदेव पंवार का जिसने
सिर काट कंकालो को दिया।
गढ़वाल देश को राज लिया।

१. सोने की मूठवाली, २. तलवार, ३. निकाली, ४. गरदन, ५. जिंदा, ६. अन्य।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४. रणू रौत (रावत)

श्रीनगर में प्रीतमशाह राजा थे।

कुसवाली कोट में रावत रहते थे। हिंवा का बेटा भिंवा। भिंवा का बहादुर बेटा हुआ रणू रौत। वह बड़ा योद्धा था। विमला (भिमला) उसकी रानी थी।

प्रीतमशाह ने रणू को पत्र लिखा कि देहरादून जाकर उपद्रवियों को मारो। रणू रौत ने झालीकाली देवी का स्मरण किया और पूरी तैयारी की। दून पहुँचकर उसने बात-की-बात में उपद्रवियों को ठण्डा किया। उन्हें मूली-गाजर की तरह काट डाला।

छीलू भिमल्या रणू का मामा था। उसका बेटा झंक्रू बड़ा रसिया था। उसने अच्छा मौका देखा और चला विमला भाभी को पटाने।

रणू रौत को दून में सपना आया और वह भागा-भागा घर पहुँचा। झंक्रू डर के मारे थरथर काँपने लगा और भाभी के सामने हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा कि मुझे बचा दो। उसने उसे सन्दूक में बन्द कर दिया।

रणू रौत आग बबूला हो उठा। उसने इधर-उधर देखा। सन्दूक का कुण्डा हिला। उसने कहा, 'कौन है इसमें ?' झंक्रू जैसे-तैसे भागा और रणू रौत की माँ अमरावती के सामने गिड़गिड़ाया। उसने नीचे की मंजिल में उसे भेज दिया।

रणू रौत ढूँढता-फिरता वहाँ भी पहुँचा और माँ से उसके बारे में पूछने लगा। माँ ने कहा कि भाई को मार कर क्या करेगा ? मारना ही है तो मार मेघू कलूनी को जो तेरी वाग्दत्ता सुशीला (स्यूँसला) से ब्याह रच रहा है।

रणू रौत भागा-भागा वहाँ गया। 'दिवालीखाले' में बरात सजी थी। उसके डर से मेघू कलूनी छिप गया। उसने छिप कर बाण मारा। दोनों भाई मर गये।

सुशीला ने सफाई दी और कहा कि इनकी दाह-क्रिया करो। जलती चिता पर वह खुद कूद गयी। मेघू कलूनी देखता ही रह गया !

रणू रौत (रावत)

सिरीनगर[1] रन्द छयो, राजा प्रीतमशाई,

१. श्रीनगर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

कुलावाली कोट मा, रन्दी रौतू औलाद।
हिंवा रौत को छयो भिवाँ रौत,
भिवा रौत को छयो रणू रौत।
रणू रौत होलो मालू[1] मा को माल,
जैको डबराल्या[2] माथो छ, खंखराल्या[3] जोंबा[4],
घुण्डौं[5] पौंछदी भुजा छन जोधा की,
मुंगर्‍याली[6] फीली[7] छन, मेरा मरदो।
माल की दूर्ण[8] रांजड़ा ऐन,
तौन कागली[9] सिरीनगर भेज्याले।
रुखा रुखा बोल लेख्या तीखा लेख्या स्वाल।
बोला बोला मेरा कछड़ी[10] का ज्वानू
मेरा राज पर कैन त यो धावा बोले ?
मेरा गढ़वाल मा कु इनु माल[11] होलू
जु भैर[12] का मालू तैं जीतीक लालू।
तबरेक उठीक बोलदू छीलू भिमल्या,
ई तरई को माल होलो कुलवाली कोट,
हिंवा रौतन तरवार मारे।
रणू रौत भी तरवार मारलो।
रणू रौत होलो तरवार्‍या ज्वान,
जैका[13] मारख्वाल्या[14] छन बेला[15],
जैका चौसिंग्या[16] खाडू[17] होला, खोल्या होता कुत्ता।
कुलावाली कोट को वो रणू रौत,
मेरो भाणजो मालू साधीक लौलो।
प्रीतमशाई माराज तब कागली[18] लेखद,
हे बुवा रणू रौत तू होलू बांको भड़,

१. बहादुरों, २. ऊँचा, ३. बड़ी-बड़ी (रौबदार), ४. मूछें, ५. घुटने, ६. मुगदर, ७. टाँगें, ८. दून (देहरादून), ९. पत्र, १०. कचहरी, ११. योद्धा, १२. बाहर, १३. जिसके, १४. मारने वाले, १५. भैंसे, १६. चार सींग वाला, १७. मेंढ़े, १८. पत्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भात खाई तख, हात धोई यख,
जामो[१] पैरो तख तणी[२] बाँधी यख।
कागली पौछीगे रौत का पास।
तब बांचद कागली रौत—
शेर जसा[३] मोछ छया रौत,
तैका मणि[४] का मान धड़कन लै गैन,
तैकों हातू की मुसली[५] बबलाण[६] लै गैन,
कण्डील[७] वंश को कांडो जजरान्द[८],
निरकुलो पाणी डाली सी हिरांद[९]।
तब धाई[१०] लगौन्द रण राणो भिमला,
मैं त जांदू राणी सैणी[११] माल दूण,
मेरा वासता पकौ निरपाणो खीर।
राणी भिमला तब कुमजुल्या[१२] ह्वैगे,
नयी नयी माया छै ऊँ की ज्वानी की,
नयों नयों ब्यौं छो ?
राणी भिमला डाली सी अलस्यैगे।
छोड़दी पथेणा नेतर रांग-सा बुन्द
मैं छोड़ीक स्वामी तुम जुद्धक पैट्या,
सुमरदो तब रौत देबी झाली़माली़,
ढेबरा[१३] लुकदा, बाखरा लुकदा,
मर्द कबी नी रुकदा, शेर कबी नी डरदा,
लुबा जंगी जामा पैरेण लैग्या,
सैणा[१४] सिरीनगर ऐ गए रणू,
जैदेऊ माल्यान गर्दनी मालीक।
हे रौत आज को जैदेऊ त्वैक च बुवा।
तू छै मेरा रणू मालू मा को मांल,
त्वैन मारणन बेटा त्वै चटा माल।

१. वस्त्र, २. तनियाँ, ३. जैसे, ४. हृदय, ५. भुजाएँ, ६. फड़कने, ७. काँटे, ८. सिहरना, ९. हिलते, १०. आवाज, ११. समतल, १२. कुम्हला, १३. भेड़, १४. समतल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

राजा को आदेस् पैक रौत चलीगे,
माल की दूण कुई माल बोदा—
ये तैं चुखनी[१] चुण्डला[२], आँगूली[३] मारला।
तब छेत्री को हंकार चढ़े रौत,
मारे तैन मछुली-सी उफाट,
छोड़े उडाल तरवार।
तैन मुण्डू[४] का चौंरा[५] लगैन,
तैन खूनन घट्ट[६] रिंगैन[७] मरदो।
तै माई मर्दू का चेलान मरदो,
सी केला सी कच्यैन, गोदड़ा सी फाड़ीन।
बैरी को नी रखे एक, ऋणना को-सी शेष।

× × ×

छीलू भिमल्या छयो रणू को मामा,
तै मामा को एक नौनो होलो झंक्रू।
झंक्रू होलो मातो[८] उदमातो[९],
राणियों को रौंसियो[१०] होलो वो, फूलू को हौंसिया[११]।
रणू रौत की बौराणी[१२] भिमला पर
वैकी लगीं छै आँखी।
रणू तैं जुद्ध मा जायूं सुणीक
वो चली आये भिमला का पास।
सेवा मानी मेरी बौ[१३] भिमला।
ज्यू जागी दिऊर लाख बरीस।
धोलीन झंकरुन टलपला आँसू—
हे मेरी बौ, दादू[१४] मरीगे माल की दोण[१५]।
तनी न वोल मेरा द्यूर[१६] झँकरु,
उ मालू मा का माल छन,

१. चुटकियों में, २. नोच, ३. अंगुलि, ४. सिर, ५. ढेर, ६. घराट, ७. चलाये, ८. मत्त, ९. उन्मत्त, १०. रसिक, ११. शौकीन, १२. बहू, १३. भाभी, १४. बड़ा भाई, १५. दून (देहरादून), १६. देवर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऊं सणी कु मारी सकदो ?
सची माण मेरी बौ भिमला।
मैं दादू की गति[1] करि आयूं मुगति।
तब राणी भिमला कनी कदी कारणा ?
छोड़दे पथेणा[2] नेतर रांग[3] जसा[4] बुन्द
तब झंक्रू बुझौणी बुझौद—बौ,
मामा पुफू का भाई होन्दान, कका[5] बड़ों[6] का दाई[7],
जनो माल दिदा छयो तनी मैं भी छऊं।
मैंन आज दादू का पलंका सूतो[8] होण,
मैंन दादू की थाल ठऊँ जिमण।
एक बात बोली द्यूर हैकी ना बोली,
मैं शेरना की सेज स्याल नी सेवाल्दो,
मैं स्वामी की थाल कुत्ता नी जिमौंदू।
माल की दूण रणू रौत सूतो छयो,
झाबीमाली देबी वैका सुपिना चलीगे।
चचलैक[9] उठे रणू झबकैक[10] बैठे—
मेरी कुलावाली कोट कु चोरड़ा[11] आइगे।
लत दिन रात कैक रणू घर पौंछे,
रात चौक मा तब तैको जोड़ो[12] बजीगे।
जोड़ो बजीगे, घोड़ो खंकरैगे[13] :
चोर जार कू नीन्दरा नी होन्दी,
झंक्रू का तरेण्डा[14] टुटी गैन—
खडी उठ हे मेरी बौ[15] भिमला।
भेर बजीगे माई को जोड़ो, घोड़ो खंकरैगे।
थरथर कम्पद झंकरू राम राम जम्पद—
अलै जाँदू[16] बलै मेरी बौ भिमला।
मैं छनी आज बचौ।

१. दाहक्रिया, २. आँसू, ३-४. रांग-जैसी, ५. चाचा, ६. ताऊ, ७. दुश्मन, ८. सोना, ९.हड़बड़ा कर, १०. झपक कर, ११. चोर, १२. जूता, १३. हिन-हिनाया, १४. तार, १५. भाभी, १६. बलैय्या।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

तेरो आज मेरा द्यूर[१] नाश होण,
तिन त बोले दिदा माल दूण मरीगे।
तब राणी उन्दू[२] देखदी फुण्डू[३],
झंक्रू सेकुली[४] बन्द करील।
रणू धाई लगौन्द राणी राणी—
मेरा वास्ता राणी अमल[५] भऱ्याल।
मैं छऊँ राणी नौ बेली[६] को भूको,
मैंक बणौ राणी निरपाणी की खीर।
दई दूद जु छयो खैली छौ झंकरुन,
तैंन छंछेड़ी[७] पकैले अर बोले—
आवा स्वामी भोरजन होइगे।
रणू रौत देखद छँछेड़ी को थाल,
तैका सिर का बाल खड़ा होइ गैन।
मैं माल की दूण ही केर्क[८] नी मऱ्यो ?
मैंक तई रांड केक पकाए खट्टो भोजन ?
रणू रौत न खैंचे शमशेर,
आज रांड का टुकड़ा टुकड़ा करदौं।
झंकरू तब कम्पण लैगे थरथर
सेकूली[९] को तालो खकटाणा[१०] लैगे।
तब पूछन्द रणू रौत भिमला,
सेकुली पर तिन क्या चीज छ धरे ?
सेकुली पर स्वामी बिराली का बच्चा।
भ्वां गाडँ दौं मेरी राणी, ऊँ दूद भात खलौला।
जनो कर्दो रणू सेकुली पर मार,
झंक्रू भायीक ओबरा[११] लूकद।
ओबरा रन्दी छई राणी अमरावती—
तब झंक्रू नानी का खुटू[१२] मा पड़द,

१. देवर, २. नीचे, ३. उधर, ४. सन्दूक, ५. तम्बाकू, ६. दिन, ७. छाँछ का, ८. क्यों, ९. सन्दूक, १०. खटकने, ११. नीचे की मंजिल, १२. पैरों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अलै जांदू[1] बलै नानी मैं सनी[2] बचौ।
राणी अमरावती तब वै लुकौन्दी।
बबराँदो[3]-खलांदो रणू रौत तब,
पौछन्द मां का मास।
बतौ मेरी जिया मेरी जनानी को जार।
यख नी आये कुई मेरा रणू,
त्वैन सुपिनो त नी देखे।
देखदौं कनी छन तेरी होई लाल आंखी,
केक[4] तै तिन या तलवार हात लिने ?
घर मू लड़नक होन्दो शेर।
जा मार खोड़[4] की लगोटो[5],
अपणी तरवार म्याना पर धर।
जनानी का खातिर तू भाई न मार,
तेरी पीठ सूनी होली।
भाई का खातिर राणी न मार,
तेरी सेज सूनी होली !
जु तू इनु छई वीर, मेरा रणू त सूण,
तुमारा बाबू की माँगणी बोलीं छै,
स्या राणी स्यूंसला।
आज तैंको डोला मेघू कलूणी छ लिजाणू।
सूण्या जिया[6] का बचन,
रणू रौत खड़ो होई गए—
तू इनु क्या बोनी मेरी माँ जी,
मेघू कलूनी मैं ज्यूंदा[7] नी छोडौं।
तब झंक्रू भी वैका साथ ह्वैगे
दिवालीखाल सजीं छै बरात।
तख तौंन सब बराती मारी दिनेन।
मेघू कलूणी लुकी गए बोटगा[8] का पेट।

१. बलैय्या को, २. बड़बड़ाता, ३. क्यों, ४. गोट, ५. बकरा, ६. माँ;
७. जीवित, ८. झाड़ी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

झंक्रून बोले—दिदा, तमाखू खाण बैठ्याल।
भुला, विराणो पाणी बैरी, राणी बैरी,
विराणो रस्ता बैरी होन्द।
हम यख मू तमाखू नी खांदा,
हम केकी डर छै दिदा,
जु तुमू डर छ त पीठी मिलैक बैठला, तू उण्डू[1] देख, मैं फुण्डू[2]।
मेघू कलूणी तोंका[3] तौं दोबणू[4] छौं,
तैन लुकीक एक बाण इनु मारे
जु रणू की छाती घुसे
झंक्रू की छाती भैर[5] आये।
पकोड़ा सी दुये छेदेइ गेन,
हरीं आंखीं ह्वैन तौंकी पिंगला केस,
दुयौं का पराण उडी गैन।
तब औन्द मेघू स्यूंसला का पास
मारदो लात वीं का डोला पर।
तब स्यूंसला इना बैन बोदी :
मैंन रन्त[6] नी दिने रैबार[7],
जना अफू आई छया वो, उना अफू मरि गैन।
तुम छन मेरा सिर का भरता
पर अधर्मा न होयान।
यूं दुई मालू की गार्ति[8] करी देवा मुगति।
लगाये द्वि मालू को एकी बोज,
रवि छाला[9] वैन ऊंकी[10] चिता रंचे
देखदी रै हेरदी पैली स्यूंसला,
फेर छट उछले चिता चढ़ो गये,
द्वि मालू का बीच वा सती होई गये।
उण्डु हेरद फुण्डो मेघू कलूणी, यो मैंक तैं क्या होये ?
सेयूं सी जागे वो, चेत आयो ?

१. इधर, २. उधर, ३. उन्हें, ४. घात में, ५. बाहर, ६. खबर, ७. सन्देश, ८. दाह-क्रिया, ९. किनारे, १०. उनकी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

५. भानु भौंपेलो

हिंडवाणी कोट में हंसा हिंडवाण रहता था। उसके यहाँ अपार अन्न-धन था। बारह महल थे और बत्तीस हवेलियाँ। बारह बेटे थे और अठारह नाती।

संयोग की बात। एक बार वहाँ बारह साल का भयंकर अकाल पड़ा। हंसा हिंडवाण का पूरा परिवार भूख से तड़पने लगा। इतना बड़ा आदमी, किसी के सामने भला हाथ कैसे फैलाये ? तब एक दिन हंसा ने एक बकरे को जहर खिलाया और वही बकरा पूरे परिवार को खिला दिया। सब लोग मर गये। बचा केवल एक लड़का भानू भौंपेलो। उन दिनों वह अपने मामा के घर गया हुआ था। चुपचाप उसने उनकी दाहक्रिया की और स्वयं पत्ते पहने और वहाँ से चल पड़ा।

कई शहरों के चक्कर काटकर भानू आखिर में कालूनी कोट पहुँचा। वहाँ सजू कालूनी रहता था। उससे उसने नौकर रखने के लिए प्रार्थना की। सजू कालूनी ने उसे नौकर रख लिया। काम बता दिया कि पहाड़ी पर बनी छानी (झोंपड़ी) में रहना है, घास काटना है और गाय-भैंसों को पालना है।

भानू पहाड़ी की छानी में गया। वहाँ सजू कालूनी की बेटी अमरावती रहती थी। उसने भानू से कहा—'तुम यहाँ क्यों आये ? मैं मर्दों से दूर रहती हूँ। भागो यहाँ से।' वह टस-से-मस नहीं हुआ।

अमरावती ने दो भयंकर भैंसे—चाँदू और बेन्दू छोड़े। भानू ने उन्हें वश में कर लिया। अमरावती उस पर लट्टू हो गयी। दोनों मजे से रहने लगे। भानू की बहार हो गयी, लेकिन कुछ लोगों ने शिकायत की।

सजू कालूनी ने अपनी बेटी को घर बुलाया। उसकी शादी की बात ग्वाड़छोड़ के राजा गुरु ज्ञानचन्द से तय कर दी थी। सजू ने कहा, जवान लड़की पर किसी का वश नहीं चलता। अगर तुम्हें शादी करनी है तो झटपट बारात लेकर आओ।

ज्ञानचन्द अपनी बरात लेकर आ पहुँचा।

इधर भानू ने देखा कि अमरावती नहीं लौटी तो वह कालूनी कोट पहुँचा। अमरावती ने अपने दुपट्टे के सहारे उसे अपने पास खींच लिया। वह उसे खाना खिलाने लगी थी कि तभी उसकी माँ आ गयी।

माँ ने भानू को बहुत समझाया, लेकिन वह माना नहीं। तब माँ ने कहा—'अगर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIE

तुम अमरावती को चाहते हो तो जाओ रागसाड़ी राज्य से महाकाली घोड़ी जीत कर लाओ।'

भानू तुरन्त चल पड़ा। वैसे, बारह वरस जाने में और बारह आने में लगते थे, किन्तु भानू तो उड़ा-उड़ा वहाँ पहुँचा। महाकाली घोड़ी को चाबुक मारे और बात-की-वात में वश में कर लिया। उसी पर बैठ कर वह वापस आया।

ज्ञानचन्द ने वाछियों का घेरा डाला था। चारों ओर से उस पर प्रहार हुआ। भानू वहीं मर गया।

स्वर्गलोक में पंचनाम देवताओं की सभा थी। भानू पर सबको तरस आ गया। देवता बराती बने और वहाँ पहुँचा गये। उन्होंने भानू को जिन्दा कर दिया। ज्ञानचन्द और सजू कालूनी भी मारे गये। अमरावती से भानु का व्याह हो गया।

भानु भौंपेलो

हिंडवाणी कोट मा रन्दो[1] छ्यो[2] हंसा हिंडवाण,
वो त होलो अनमातो[3] धनमातो[4]
जैकी बार[5] छन तिवारी, बत्तीस नीमदरी[6],
मट्टी जसो अन्न होलो, ढुंग्यों[7] जसो धन,
बार छन बेटा जैका, अठार छन नाती।
तब हिण्डवाणी कोट मा पड़े, वार बरस को अकाल,
देखा बड़ा पेड़ा, न लायान भूक,
छोटा न पड्यान दूख।
हिण्डवाणी कोट मा, कनी तराई[8] मचीगे,
रोन्दा छन, बरांदा[9] भूखन नौना,
देखी-देखीक, जिकुड़ी चिरेन्दी।
बत्तीसू कुटूम तैकू, भूखन चचलाण[10] लैगे,
बड़ो आदमी छयो, हंसा हिण्डवाण,
वैकू शरम ऐगे, अपणा आँसू पीगे।
कै मू अपणी, विपता कया लाण,

१. रहता, २. था, ३. अन्न से भरपूर, ४. धनी, ५. बारह, ६. हवेली, ७. पत्थर, ८. त्राहि, ९. विलखते, १०. तड़पने।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कै मू मैंन अब, मांगणक जाण ?
विता का दिनू, अपणा भी होंदा पराया।
गाड़े[१] वैन तब, खोड[२] की लगोठी[३],
मिठो जैर[४] डाली, दिने बत्तीस कुटुम।
तब बत्तीसों कुटुम, वैको स्वर्गवास ह्वैगे,
अफू भी ढलकी गै राजा, तिवारी का अडासा[५]।
वे को बैटा भानू, मामाकोट छयो जायँ
तब लौटी आये, हिण्डवाणी कोट मा,
सूनो चौक देखे वैन, सूनकार तिवारी,
घूमद ऊं बार तिवारियों, बाईस निमदारियों,
तब देखीन वैन, अपणू बत्तीसों कुटम
जागू[६] जागू मू मरियूं।
तब चाखुड़ी[७] सी रीटदो[८], भानू भौंपेलो,
रौंदू छ बराँदू, कपाल फोड़ी-फोड़ी।
कै मा नी सुणाँद, बदनामी की डर,
लोक बोलला, रजा की कुटमदारी, भूखन मरी गए।
शरम को मारो छौ वो, विपता को हारो,
बत्तीस कुटम को वैन, एकू भारो लगाये,
तब लीगे ऊं रवि-छाला[९] मुंग।
चिता बणाई वैन, जलाई दिन्या--
अपणा आँखून वैन, अपणी जिकुड़ी
सल मा जगदी देखे फूकेन्दी।
तब चिता कों राखो लीक, भानु भौंपेलो,
ऐगे हिण्डवाणी कोट माँग !
सूनी तिवारी वै, तब खाण औन्दीन,
तब बोल्द वो, भानू भौंपेलो :
मैंन यख रैक, क्या त करण ?
तब उतार्‍याँ वैन, राजों का कपड़ा,

१. निगली, २. गोष्ठ, ३. बकरा, ४. जहर, ५. सहारे, ६. जगह, ७. चकोर, ८. चक्कर काटना, ९. किनारे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

बणाये माल्[१] की झगली, माल् की टोपली[२],
छोड़्याली तब वैन, हिण्डवाणी कोट।
तब राजपाट छोड़ीक, शैरू[३] शैरू घूमद,
एक शैर छोड़ी राजा, दूसरा शैर जान्द
दूसरा शैर छोड़ी, तीसरा चौथा शैर जान्द।
छठा शैर मा जाँद, कालूनी कोट मा,
कालूनी कोट मा, रन्दो छयो सजू कलूनी।
तब सजु कलूनी मा, भानू जदेऊँ[४] लगौंद,
रजा तेरी बलया जौलू, मैं छऊँ गरीब छोरा,
गरीब छोरा छऊँ, मैं नौकर धऱ्याल।
छारा, नौकर धरलू, तिन तनखा क्या लेण ?
गरीब छोरा छऊँ, रोटी दियान कपड़ा।
तंउ सोचदू सजू, अछू नौकर मिले,
त्वई लैख[५] काम, डाँडू की मरूड़ी[६] हमारी,
डाँडों की मरूड़ी, घास काटण की नौकरी।
तब फेंञ्याले वैन, मालू की झगूली टोपली,
सजून दिन्या, फट्यां-पुराणा बस्तर।
तब सामल पांजायाले, बतैले डाँडा को बाटो,
वे डांडा मरूड़ी बैठा, घास काटण।
तब भानु भौंपेलो गैगे, वीं डांडा मरोड़ी,
सजू कलूनी की छई, एक नौनी अमरावती,
नौनी अमरावती, छई सुघर तरुणी।
वींन देखे, छोरा एक औन्द, तब बोदे :
मैंन पैले बोल्याले, छोरा आँगण छूत न करी।
मैं तेरा ब्वई[७] बुवार्न[८], नौकर भेजेऊँ,
ई डांडा मरूड़ी, मैन घास काटण।
तू अबी लौटी जा, घसेर छोरा,
यख मर्द का नौं[९], माखो[१०] नी औन्दी।

१. मालू के पत्तों का अंगरखा, २. टोपी, ३. शहर, ४. जयदेव (नमस्कार),
५. लायक, ६. छानी (झोंपड़ी), ७. माँ, ८. बाप, ९. नाम, १०. मक्खी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वा ज्यों-ज्यों ना करदी, छोरा अगाड़ी औन्दो,
तब अमरावती, भौत गुस्सा ऐगे;
न औ न औ छोरा, मैं आज
चाँदू[१]-बेन्दू[२] बेलों[३] मू, तेरी शिकार खेलौण।
वा ज्यों-ज्यों ना करदी, छोरा अगाड़ी औन्दो—
कैको होलो यो, निरभागी छोरा,
कै अभागी माँ की, होली कोख सूनी ?
तब चढ़े वीं, सिंहणी को रोष—
खोल्या वींन, चाँदू बेन्दू बेला।
लम्बा-लम्बा सिंग छा ऊँका, बड़ा बड़ा आँखा,
पड़ी गैन वो, वैकी धाद[४]।
दौड़दो छ दौड़दो छोरा, विपता को मारो,
तब एक बिरछ, मारदो अंग्वाल।
इना छया, चाँदू बेन्दू बेला—
वै बिरछ सणी, जड़ उखाड़ कर्ण लैग्या। 96569
तब छोरा तै चढ़ी, छैत्री को जोश,
सची होलू मैं हिंडवाण वंश को जायो,
एक ही मुठीन चाँदू बेन्दू फोत[५] होई जान।
तब एक एक, मुठ्यों मा ही
वैन चाँदू बेन्दू, चित्त करीया लौन।
हकदक रैगे तब, अमरावती रौतेली,
यो छोरा होलू, मालू[६] मा को माल।
तब पूछदी वा, नौं गौं छोरा को,
हे छोरी मैं छऊँ, हिंडवाणी कोट को रौतेलो,
हंसा हिण्डवाड को बेटा, छऊँ मैं भानु भौंपेलो।
किस्मत को मारो छऊँ, बिता को हारो,
आज बण्यू छऊँ, तेरो घास काटदारो।
तब बोदे राणी अमरावती—
राजों कू रोतूलू होलू तू, पर मैं

१-२. नाम, ३. भैंसा, ४. पीछे, ५. मौत, ६. योद्धा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

अपणा कूड़ा[१] भितर, त्वै जगा नी देऊँ।
मैं मर्द को, मुख नी देखदू,
वैको छैल[२] भी, धोरा[३] नी पड़ण देन्दू।
पर फेर वींन, पैरु से सिर तक न्याले[४],
माल का शेर जना मोछ छा
डवराली डीठ, गजभर की पीठ, कंकर्यालो[५] माथो।
तब अमरावती नौनी, मोहित ह्वै गए—
पकड़ीले छोरा की पाखुड़ी[६], लीगे सुतरी[७] पलंग
हे छोरा तू कुछ, खेल-बोल भी जाणदी ?
तव गाड़े वींन, हस्तिदन्त पाँसो,
खेलण लैग्या दुये, वीं डाँडा मरुड़ी।
तब ऊँकी आँख्यों से, मिलीन आँखी,
दिल से दिल, जुड़ी गैन।
तब एक ह्वै गैन वो, जना[८] धरती अगास,
ऊँका पराणू मा, प्रीत समाये।
कख छयो, घास काटणो,
दिन भर छोरा, अमरावती का सात, मौज मा रन्दो।
फूलू सीं हैंसदा छन दुये,
पंच्छियों-सी बोलदा छन।
मोस-सी नाचदा छन, वो बणू-बणू माँज[९]।
तब और छानी वालौंन, चुगली खाई—
ब्याले छोरा, भूत जनो आये,
आज रजा की नौनी दगड़े, खेल-बोल कर्द।
तौन लिखी घणी कागली, भेजे कालूनी कोट,
हे सजू कलूनी, तिन अपणी नौनी दगड़े[१०]
यो नौकर भेजे कि जार ?
सज कलूनी तब भौत गुस्सा ऐगे,

१. घर, २. छाया, ३. समीप, ४. देखा, ५. सुन्दर, ६. हाथ, ७. साफ, ८. जैसे, ९. में, १०. साथ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

नौनी अमरावती माँगी होली,
ग्वाड़छोड़ का रजा, गुरू ज्ञानचन्द की।
तब लेखदो राजा तरवारी सवाल, करड़ा बयान—
हे राजा ज्ञानचन्द, छोटी बेटी बाप भौंदी,
ठुली[1] बेटी आप भौंदी।
मेरी बेटी लिजालू त, तुरन्त ली जाई,
पिछाड़ी तू वीं का, भरांस[2] न रई।
गुरू ज्ञानचन्द, गुस्सा ऐगे भौत—
कैको आई होलो, रूठो ऊठो काल ?
जैन हमारी यांद[3] रखणी चाये।
राजान हात्योंन का, हलका[4] पैटाया[5],
पैटेले रैदल[6]-सैदल।
कना पैटीन, रण का हत्यार,
पैटी गए गुरू ज्ञानचन्द की फौजी बरात।
कालूनी कोट मा, ग्वीराल[7] सी फूलीगे,
शेर[8] मा जगा नी होंदी, जंगलू डेरा पड्याँ,
लेखी कागूली वीं डाँडा मरोड़ी सजू कलूनींन,
हे बेटी अमरा, घर आई जान।
तेरी होली गरै[9] की शान्ती।
स्वामी, आज जौलू, भोल[10] यखी[11] औलू।
तब जांदी अमरावती, कलूनी कोट मा,
कलूनी कोट मा, ग्वीराल फूल्यूं छ
पिता जी का शैर[12] मा, क्या तमाशो होल ?
पौंछी गए अमरा, पिता का भौन—
पितान वीं का, ब्यौ की बात नी सुणाई।
राजा बेटी की, नहोणी धुवेणी करौन्द
अनमन भाँति का, बस्तर पैरोंद।
घर से भैर[13] वीं जाण नी देन्दो।

१. बड़ी, २. भरोसे, ३. सुन्दरी, ४. झुंड, ५. भेजे, ६. दलबल, ७. कचनार, ८. शहर, ९. ग्रह, १०. कल, ११. यहाँ, १२. शहर, १३. बाहर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

भानू भौंपेलो डाँडा मरोड़ी भैंसी चुगौन्दू,
होई गए जब श्यामली बगत,
वैन देखे, अमरा नी आई।
प्रेम की डोरीन बँध्यूँ छयो,
रौड़दो-दौड़दो, कालूनी कोट चली आये।
तब खोलीवालो[१] बोद, भितर जाण को हुकम नी च।
माई मरदान को वेला, इथैं[२] देखद उथैं[३],
देखे वैन राणी अमरावती, पूरब की मोरी[४]!
फेंके दुपटा तब अमरा न, भौंपेलो भीतर गाड़े।
औन्दी तबारी राणी की माता, भोजन लौंदी,
तब देखदी भानु भौंपला, तब बोदी—
हट छोरी, त्वैन कनो छोरा यों मराये,
भैर तेरी बरात आई छ,
यतनों मा येकी[५] सगून[६] नी पूगणी[७]।
तब बोदी[८] राणी अमरावती :
हे जिया[९], तौं[१०] माचदू[११] क बोल, चली जावा।
भानु मेरो कलेजी को भेंडू[१२], जिकुड़ी को साल[१३]।
हे छोरी अमरा, त्वैन कनो छोरा मराये ?
हे छोरा, अमरा का फरपंचू[१४] कतै[१५] न पड़,
भैर[१६] वीं की बरात आई छ।
हाथ्यों का हलका[१७] होला, घोड़ो का मलका[१८]।
मैंन मरण जिऊण अमरा मेरी छ :
डाँडा मरुड़ी हमून फेरा फेरयालीन।
हे सासु, तुम छन माता का समान,
न छीना अपणी, नौनी को सुहाग।
हे सासु, इनी बुद्धि बतावा,
जाँ से तुमारी बेटी, वैरी न लिजै सको।

१. पहरेदार, २. इधर, ३. उधर, ४. खिड़की, ५. दूसरी, ६. बोटी, ७. पूरी होना, ८. कहती, ९. माँ, १०. उन, ११. सालों, १२. टुकड़ा, १३. कसम, १४. प्रपंच, १५. बिलकुल, १६. बाहर, १७. झुंड, १८. कतार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे बेटा, सते छई तू जु राजू अंगस[1]
तू रागसाड़ी राज से, मांकाली घोड़ो जीती-लौलो।
तब मैं अपणी बेटी अमरावती
त्वै दगड़े[2] बेवोलो।
आज मैं वीं, सैसर[3] भेजलो,
भोल[4] वापीस बुलै दिओलो।
हे सासु परसे, तब तेरी बेटी
दोघर्या[5] होई जाली।
जाणक मैं जौलू वख, पर बतौ तू
कथा[6] दिन जाणका छन कथा औण का।
बार बर्स जाण का छन, बार बर्स औण का।
चौबीस बरस मा, अमरा बुढ्यां ह्वै जाली।
जु[7] त्वै[8] पर छेतरी[9] हंकार[10] त
चौबीस बरस तक का वचन लीले।
एक धज[11] तोड़ी मैं बामण[12] दिऊलो,
गुरु ज्ञानचन्द का सात अजुड़दो[13] करै द्यूलो।
चौबीस बर्स तक अमरा तेरी बाँद[14] छ।
वचन मांग्याल्या वैन, धरम दियाले,
सजाई वैन अपणी घोड़ी, होई गए सवार
मारी घोड़ी पर वैन, निगर कुलड़ा,
तब उड़ी घोड़ी पवन का समान,
उडी माल बाँज सी पतेलो[15],
नी समझी वैन, उतारी को बथौं[16]
नी समझी वैन, उकाली को धाम।
मेरो माल सास[17] नी ससदो,
थूक नी घूटदो, ढांव[18] नी रुकदो।
तब जांद वो, तीसरा रोज--

१. अंश २. साथ, ३. ससुराल, ४. कल, ५. दो घरवाली, ६. कितने, ७. यदि, ८. तुम, ९. क्षत्रिय, १०. अहंकार, ११. रोष, १२. ब्राह्मण, १३. अयुक्ति, १४. सुन्दरी, १५. पत्ता, १६. हवा, १७. सांस, १८. जगह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

बार बरस को बाटो, तीन रोज मा काटदो ।
तख छयो वो माँकाली घोड़ो,
रागसी घाड़ौं की पंगत[१] बँधी छई ।
मांकाली[२] घोड़ो मरा सगन्ध[३] सूंगद,
हे छोरा, कै राज को छई ?
कै बैरीन भरमाए, घर की नारीन सन्ताये ।
हे मांकाली घोड़ा, मैं कू मदत दियाल,
मैं पर चढ़ीं छ, गुरु ज्ञानचन्द की सेना,
त्वै द्योलों, सोवन की जीण,
त्वै द्योसों, काँसी का घूँघर ।
आज घोड़ा तिन भाई होण ।
तेरा बाबू दादान मैं जांती नी सक्यो,
तू कखन मैं जीतण आई ?
घोढ़ो निकालद, हात-हात की जीभ,
बैत[४]-बेत का दाँत ।
तब गाड़े भानू भौंपेलान, बेतुना[५] की छड़ी,
साधण लै गए माँकाली घोड़ो ।
मारी मछुली उलार,
ओ जै लग वीं काली बादुली ।
कनो रैगे नौ दिन, नौ राती अगास मा ।
एक वेत टूटे, हैको[६] निकाले मालन,
घोड़ा पर पसीना ऐगे, नीला दाग पड़ी गैन ।
ये घोड़ा मैं बिना मार्‍याँ नी छोंड़ौं,
मैं छऊँ हिण्डवाणी वंश को जायो ।
तब बोलदू मांकाली घोड़ो—
अफू जौलू अस्वार, अब पाये मैंन ।
पृथी मा ऐगे तब, घोड़ो मांकाली ।
हे घोड़ा तिन, सच्चो भाई होण,
दुश्मनू की फौज मारी देण ।

१. कतार, २. महाकाल, ३. मनुष्य गंध, ४. बालिश्त, ५. वेत, ६. दूसरा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तब राजी ह्वैगे मांकाली घोड़ी,
कालूनी कोट मा जाण कू तैं।
ज्ञानीचन्द की बरात अड़ी छै—
तुम्हारा शैर[1] मा नी जूड़दत,
हम अपणा शैर मा जुड़ौला।
लड़ी-झगड़ीक ऊन तेरां[2] रोज,
लाडी अमरावती, वेदी मा गाडयाले।
आम जसी दाणी छै, दिवा जसी जोत,
पूनो जसी चाँद, बाँदू[3] मा की बाँद।
मैन पैले[4] बोल्याले ज्ञानचन्द, मैं न छुइं :
मैं राणी छऊँ, भानु भौंपेला की।
छै मैंना की माँगी छै, कना बैन वोदे।
मैंन पैले बोल्याले ज्ञानचन्द, मैं न छुइं,
लम्बी-लम्बी टाँगी तेरी मड़ोई तोड़ला।
बेदी का अग्वाड़ी[5] पिछाड़ी, डाले वींन बरछ्यों को घेर,
कै भी अमरा भितर नी औण देंदी।
तब उड़ी औंद मांकाली घोड़ो भानू लीक[6],
मारदू भानु भौंपेलो, घोड़ी पर चाबुक
मारयाले वीन माछी-सी उछाट।
तब का जायान क्या होण,
जब ज्ञानचन्द दगड़े, मेरी राणी फेरो फेऱ्याली।
झटपट मा छयो घोड़ो सरपठ चलणू
अफू तैं समाली[7] नीं सक्यों—
पड़ी गये वो बरछियों का घेरा मा।
चुभीत बरछी जिकुडी मा,
भानु भौंपेलो स्वर्गवास होये।
वैको छौ हिरक्यालो[8] पराणी,

१. शहर, २. तेरहवें, ३. सुन्दरियों, ४. पहले, ५. आगे, ६. लेकर,
७. संभाल, ८. हल्के।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

जिन्दगी ज्यान[१] ह्वै, तरुणैं को विणास[२] ।
वैकी मिट्टी दुश्मनू कामणे रैगे,
रोंदी बराँदी[३] तब अमरावती-
कनो देव मैं कू तैं रूठे ?
तब मलासदी[४] वै सेयों[५] मुखड़ी वीं का माता–
हे बेटा, मेरो कसूर नीं,
विधाता की लेखी मेटो नी सकेंदी !
जाँद तब विधाता चित्रगुप्त पवन रेखा
जख होला पंचनाम देव, पांच पाण्डव,
मामी पार्वती होली जख
तैको[६] पौन[७] विधाता की सभा जाँदो !
हे मेरा विधाता मौत सबू की होंदी,
पर मेरी मिट्टी दुश्मन का सामणे रैगे !
तब भगवान विष्णु दया औंदी,
पाँच पाण्डव पौणा[८] पैट्या,
कुन्दी दुरपती मंगल्वैन[९] पैटी[१०]
ऐ गैन देवता कालूनी कोट ।
भानु भौंपेला मा ऊँन शरील धऱ्याले,
तब वो जीतू[११] होइगे,
इनी[१२] जीती[१३] होयान सुणदी[१४] सभाई ।
तब माल घोड़ी मांकाला मांकली चढ़ीगे,
पकड़े पट पाखुड़ी वैने अमरावती की,
ऐंच चाड्याले !
घोड़ा मू मंडल[१५] वैन वो दल-बदल,
बैरी को मालन, तब एक नी रखे,
माऱ्या गए सजू कालूनी भी !
तब सासु औन्दी वेका पास–

१. अन्त, २. विनाश, ३. तड़पती, ४. सहलाती, ५. सोयी, ६. उसके, ७. प्राण, ८. बराती, ९. मंगल गानेवाली, १०. चल पड़ा, ११. जिन्दा, १२. ऐसे ही, १३. जागृत, १४. सुननेवाला, १५. दबा दिया ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अपणो भलो करे, मेरो करे बुरो !
अपणी जोड़ी बांधे, मेरी जोड़ी मारे !
सासू जी बेटा दीक बेटा छऊँ
मऱ्याँ को क्वी नी, बच्याँ की दुनिया !
तब सजीगे अमरावती को, औलासरी डोला,
राजा की सजी जेवर पालंकी !
बाज्या ढोल दमौंरूं गायेन्दा माँगल,
चार दिन पुरुषू को नाम,
मालू का पवाड़ा रै गैन ।

६. गढ़ू सुम्याल (सुमरियाल)

खिमासारी हाट में गढ़ू सुमरियाल रहता था । वह नामी योद्धा था ।

एक बार वहाँ भयंकर अकाल पड़ा । तबाही और बर्बादी । लोग भूख के मारे बिलखने लगे । गढ़ू के भी बुरे हाल । एक दिन वह अपनी माँ लीलादेवी के साथ आरुणी बन चला गया । वहाँ जड़ी-बूटी खाकर जैसे-तैसे पेट की आग शान्त करने लगा । एक बार उसकी माँ ने कहा—'जा बेटा गढ़ू, तू अपने ताऊ दीपू के पास । वे दीपीकोट में रहते हैं । मेरी नौ लाख की हँसुली उन्हें दे देना और उनसे एक अच्छी दूध देनेवाली भैंस ले आना ।'

गढ़ू दीपीकोट पहुँचा । उसके ताऊ दीपू ने उसका खूब आदर-सत्कार किया और चुपके से अपने सातों बेटों से कहा—'इसे मार डालो ।'

दीपू के बेटे गढ़ू को दूर एक जगह ले गये कि वहाँ भैंस बँधी है । रास्ते में उन्होंने गढ़ू को मारने के लिए बड़े-बड़े पत्थर उठाये, लेकिन गढ़ू को अचानक कुछ भनक सी लग गयी । वह चौकन्ना हो गया । उसने उन्हें खूब डराया-धमकाया कि 'मैं तुम्हें बात-की-बात में खतम कर दूँगा; तुम समझते क्या हो ?'

उन्होंने गढ़ू को एक भैंस पकड़ा दी, यह कह कर कि यह सात पाथे (चौदह सेर) दूध सुबह देती है और सात शाम को ।

गढ़ू भैंस लेकर आरुणी बन पहुँचा । माँ ने भैंस देखी तो उदास हो गयी । बोली, 'तेरे ताऊ ने तुझे ठग लिया है ।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

उसने पंचनाम देवताओं का नाम लिया और भगवान की माया देखिये कि भैंस दूध देने लग गयी। अब तो दोनों की बहार आ गयी। आरुणी बन में माँ-बेटे अपनी मस्ती में रहने लगे। गढ़ू अच्छा मुरलिया था। दिन भर मुरली बजाता, मौज उड़ाता।

उसी बन में सुरमा रहती थी। बड़ी सुन्दर थी वह। वह उसकी मुरली पर लट्टू हो गयी और सब छोड़ छाड़कर गढ़ू की खोज में निकल पड़ी। दसवें दिन उसे गढ़ू मिला। उसे देखकर वह निहाल हो गयी—क्या हट्टा-कट्टा बाँका जवान है गढ़ू! शेर की तरह तेज।

सुरमा को गढ़ू अपनी माँ के पास ले गया। सुन्दर बहू देखकर माँ गद्गद् हो गयी। अब उनके दिन मजे में कटने लगे।

उधर ताऊ दीपू को मालूम हुआ कि गढ़ू के तो बड़े ठाट-बाट हैं। एक दिन वह खुद आरुणी बन पहुँच गया।

गढ़ू से उसने कहा—'बेटा, सलाण से बारह साल की मालगुजारी वसूल करनी है। तुम्हीं यह काम कर सकते हो। तुम्हारे पिता को उन लोगों ने ही मारा था।'

गढ़ू अपनी भंवरपंखी घोड़ी पर बैठ कर चल पड़ा। माँ ने मना भी किया, लेकिन वह माना नहीं। सुरमा आँसू बहाने लगी। गढ़ू ने उसे समझाया कि मैं जल्दी ही लौट आऊँगा। तब सुरमा ने उसे सलाह दी कि रास्ते में अकेले न जाना और दूसरे के पलंग पर मत बैठना।

गढ़ू सलाण की ओर चल पड़ा। वहाँ के लोगों को पता लग गया। उन्होंने बहुत गहरा खड्डा खोदा। उसके ऊपर चारपाई रख दी और उसपर चादर बिछा दी। गढ़ू जैसे ही वहाँ पहुँचा, उन्होंने उसे चारपाई पर बैठने के लिए कहा। उसने चारपाई पर चोट की। चादर नीचे चली गयी और गहरा गढ्ढा दिखाई दिया।

गढ़ू सब भाँप गया। उसने उन लोगों को मूली-गाजर की तरह काटा और मालगुजारी वसूल करके खिमासारी लौट आया।

उधर ताऊ दीपू ने नयी चाल चली। सुरमा के मामा को बहुत से रुपए देकर सुरमा को घर बुला लिया। दीपीकोट से बरात आयी। सुरमा की मामियों ने उसे पहचाना नहीं और सौत समझकर उसे जहर खिला दिया। ताऊ दीपू ने उसे लड़-खड़ाते हुए डोली पर रखा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रास्ते में गढ़ू खाना पका रहा था। सुरमा की बेहोशी दूर हुई। वह तड़पी। सहसा उसकी नजर गढ़ू पर पड़ी। उसने कुछ कंकरियाँ फैंकीं। गढ़ू को गुस्सा आया और डोली की तरफ बढ़ा। अपनी रानी को देखकर वह चकित हो गया।

सुरमा ने तब सारा हाल सुनाया। गढ़ू को भयंकर क्रोध आया। उसने ताऊ दीपू के सातों लड़के मार डाले। दीपू और बाकी सभी दुश्मनों को भी मौत के घाट उतार दिया।

सुरमा को लेकर वह खिमासारी कोट आया। बहू ने सास के पैर छुये। चारों ओर आनन्द की लहर फैल गयी।

गढ़ू सुमरियाल

खिमासारी[1] हाट रन्दो, गढ़ू[2] स्यो सुमऱ्याल[3],
मालू[4] मा को माल होलो, वो सुमऱ्याल!
तरवरि्या[5] माल होलू, गढ़ू त सुमऱ्याल!
जैका बाबू दादान, तरवार मारे,
वेको बैटा भी, तरवार मारी लालो!
खिमासारी हाट मा, पड़े धुरमी[6] अकाल,
तड़की तड़फी मरीन, लोक उखड़[7]-सा माछा[8],
जागू[9]-जागू पड़ीन, डाला का-सा गेंडा[10]!
स्वागीण[11] रांड ह्वैन, कोली[12] का मरीन बाला[13],
ज्वाती[14] नी भुंचा[15] कैन, जिन्दगीनी भोगी!
तड़ी-तपड़ी करीं, कमाई सब खाई याले,
भूख मरण लैगे, गढ़ू सुमऱ्याल-
चल मेरी जिया[16], लीला देई,
आरुणी[17] जंगल जौला, जड़ी-बूटी खौला!
माता लीक तब गढ़ू, माल ऐगे आरुणी जंगल,
जिया लीला देई तब, बोलण लै गए:

१. एक जगह, २. एक नाम, ३. जाति का नाम, ४. बहादुर, ५. तलवार वाला, ६. भयंकर, ७. बिना पानी की जमीन, ८. मछली, ९. जगह, १०. मेला, ११. सुहागिन, १२. गोदी, १३. बच्चे, १४. जवानी, १५. भोजी, १६. मां, १७. जंगल का नाम।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

कनो कलोबलो[१] वण छ, देखदौं मेरा गढ़ू,
सुणदौं[२], दीपीकोट[३] मा रन्दो, तुमारो बड़ा[४] दीपू,
तू लीजा वख[५], मेरी नौ लाख हँसुली[६],
अपणा बड़ा[७] मुँगै[८], भैंसी लीओ मोल !
आरुणी जंगल मा, दूध पर दिन बितौला !
तिन ठीक बोले मेरी जिया,
धरे गढ़ू मालन, नौ लाख हँसुली,
जाई लगै ते, दीपीकोट मा !
ओ मेरो जदेऊ[९] मान्यान, तुम मेरा बड़ा जी
खिमासारी हाट मा, पड़ीगे अकाल !
मेरी जियान दिने, या नौ लाख हँसुली,
तुम देवा बडा जी, मैं भैंसी दुधाल !
दीपू बडान तब, गढ़ू की आदर करे खातर
पकाये मालक[१०], निरपाणी की खीर।
सुतपुल्या[११] घीऊ[१२] दिने, पौंडल्या[१३] दई,
खिलाये-पिलाये वैन, गढ़ू सुमन्याल !
तब दीपून मन्सूबा ठाणो, मन्त्र किराये,
बुलाया तब वैन, वैका सात लड़ीक,
हे मेरा बेटों, ये मारी द्यान,
नितर[१४] येई[१५] छुटेड़[१६], भैंस क्वी द्यान !
बाटा लैग्या स्ये, दीपू का साती सपूत,
तब बोलदू दीपू, जा मेरा गढ़ू माल,
डाँडा[१७] मरुढ़ी[१८] होली, लैंदी[१९] भैंसी !
तब अगाड़ी फुंल्डू, बाटा लगे गढ़ू माल,
साती भायों का मन मा, कपट सूझीगे !

१. हरा-भरा, २. सुन ले, ३. एक जगह, ४. ताऊ, ५. वहाँ, ६. हँसुली (गले का आभूषण), ७. ताऊ, ८. से, ९. जयदेव, १०. बहादुर के लिए, ११. ताजा, १२. घी, १३. बढ़िया, १४. नहीं तो, १५ इसको, १६. छूटने-वाली (दूध खतम होनेवाली, पौंड्डी भैंस), १७. पहाड़ी, १८. छानो (झोंपड़ी), १९. दूध देनेवाली ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गाडीन[१] साती, गंगलोड़ी[२] हात,
पर विधाता की, माया देखा,
तब गढ़ू सुमन्याल की, भुजा नलकदाब[३],
आँखी फफराँदी[४], तब वा वैकी !
क्या जी होई होलो, यो सगुन,
तब घूमीक पिछाड़े, देखद गढ़ू सुमन्याल !
भलू करे भायों, तुमून मैं नी मारयों,
तुम साती भाई मेरा, कौजाड़ा[५] मुंगक[६] नी छा !
तब चली गैन, वीं डाँडा मरोड़ी,
दिखाए साती भयोंन, भैंसी एक छुटेड़ !
या च मेरा दिदा[७], भैंसी दुधाल,
सात पथा सबेर देंदी या, सात पथा साँज !
उठै गढ़ू मालन, भैंसी कखरियाली[८] धरीले,
रौंड़दों[९]-दौड़दो, आरुणी जंगल ऐगे,
ले मेरी जिया, तेरा जिठाणा को दिन्यूँ भैंसो।
तब कायरी[१०] होन्दी, जिया[११] लीला दे,
छोड़ दी पथेणा[१२] नेतर[१३]।
इना भैंसा मा गै, मेरी नौ लाख हँसुली,
सती होली मैं, आपणी माता की जाई,
सते होला जु, पंचनाम देवता
त ई भैंसी पर, दूद आई जान !
तब आरुणी जंगल वा, जड़ी खलौंदी बूटी,
भैंसी पर दूध, पैदा ह्वैगे !
गढ़ू माल तब, चैन की निन्द सेंद,
भैंसी चरोंद, दूद घुटकी पेंद !
आरुणी जंगल होलू, भलो रौंत्यालु[१४],

१. लिये, २. गगलोंडे (पत्थर), ३-४. फड़कने लगी, ५. बगल, ६. के लिए, ७. बड़ा भाई, ८. बगल, ९. भागता, १०. बेचैन, ११. माँ, १२. आँसू, १३. नेत्र, १४. सुन्दर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

डाँडी[१]-काँठी[२] जनी, मन मोहदी।
गढ़ू सुमन्याल होलू, उलान्या[३] मुरल्या[४],
मुरली त होली वैकी, जनी जादून भरीं!
तै जंगल मा रन्दी छई, सुरमा एक रौतेली,
रोज मोहन मुरली सुणदी,
मन मा मन्सूबा गणदी[५]—
इनी तैकी मुरली, अफू[६] कनो होलू?
तब वींको चित्त, ह्वैगे चंचल, मन ह्वैगे उदास,
दीदी भुल्यों मा, कना बैन बोदी:
जावा दीदी भुल्यों, तुम घर जावा,
मेरी माँ मु बोल्यान, सुरमा बाघन खैयाले।
जावा मेरी दगड्याण्यों[७], तुम घर जावा,
मेरी माँ मु बोल्यान, सुरमा भेल[८] पड़गे।
जावा मेरी जोड़ी सौंजड्यों[९], मैत[१०] जावा,
मेरी मां मु बोल्यान, सुरमा गाड[११] बगगे[१२]।
बाबरो ह्वैगे पराण, मुरल्या की खोज पैठीगे[१३],
मरणू होई जान, मैन मुरल्याक जाणा।
गढ़ू माल होलू, तानियों[१४] मा को तानी,
सुरमा देखीक, मुरली छिणै देन्द।
नौ दिन नौं रात, ह्वैगीन मुरल्या की खोज,
पर रौतेलीन, कखी मुरल्या नी पायो।
दसवाँ रोज देखेणे, गढ़ू स्यो सुमन्याल,
काँठा मा को-सी सुरीज, शेर को-सी बच्चा।
ढकुली[१५] ढवौन्दी सुरमा, माथो नवौंदी:
मैं तुमारी राणी छौं प्रभु, तुम मेरा पराणी!
लीगे तब गढ़ू वीं तै, जीया का पास,

१. पहाड़ी, २. चोटी, ३. मस्त, ४. मुरलीवाला, ५. बाँधती, ६. अपने आप, ७. सहेलियों, ८. गिर (पहाड़ से), ९. सहेलियाँ, १०. मायका, ११. नदी, १२. वह गयी, १३. चल पड़ी, १४. मजाकिया, १५. नमस्कार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ले मेरी जिया,[१] मैं राणी आज लायूँ,
आरुणी जंगल, जड़ी खाली बूटी,
घास काटीक लाली, भैंसी मेरी चराली,
तेरी सेवा करली माता, ब्वारी[२] तेरी सुरमा !
तबरी[३] बिटैने[४] तौंकी, होणी-खाणी ह्वेगे--
गढू सुमन्याल, चैन की मुरली बजौन्द !
अन्न का भण्डार ह्वैन, ऊँका धन का कोठारा,
तौंक तई तै, आरुणी जंगल मा ही, सोनों बरखे !
तब सूणीयाले दीपू बडान[५], तौंकी होणी खाणी,
ऐ दिन वैन, हात धरे लाठी,
रोन्दो-बरांदो तब, आइ गए आरुणी जंगल।
जदेऊ[६] पाँछो मेरा, बड़ा जी जेटा पाठा।
आशीष मेरा बेटा, गढू माल !
नी रये क्वी-कत्त, बेटा हमारा वंश मा।
बार बरस को मामलो[७], ऐला तैला सलाण रैंगे।
तेरा बाबून तरवार मारे, तू तरवार मारलो,
तू होलू बेटा छेतरी बंगल, हमारू अंगर्स[८] !
तिन जाणा बेटा, तैला[९] मैला सलाण,
मामलो उगैं[१०] लौण।
तब जिया लीलादेई, इना बैन बोदी :
नि जाणू बेटा, तै सलाण बैरियों का,
नि जाणू गढू, काल का डिस्याण[११]।
तौं सलाण्योंन[१२], तेरो बाबू मारे,
तू होलू गढू मेरो, एकलो एकून्त !
हे जिया, सच्चू होलू मैं, ई बाबू को बेटा,
सलाण साथीक लौलू, बैरी बांधीक !

१. मां, २. बहू, ३. तब, ४. से, ५. ताऊ, ६. जयदेव (नमस्कार), ७. मालगुजारी, ८. अंग, ९. तल्ला-मल्ला, १०. वसूल, ११. बिस्तरा, १२. सलाणके रहनेवालों ने।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

पैरीने[1] वैन[2] अपणी, ऐड़ी हत्यारी[3]—
सुरमा रौतेली, पथेणा[4] नेतर छोड़ दे :
कना जाला स्वामो, विराणा विदेश,
आरुणी वण मा हम, आनन्द रौला।
आज जाणू छौं सुरमा, भोल औलू बौड़ी[5],
कायरो[6] नी करणो, तिन ज्यू अपणो !
जाणक जावा स्वामी, एक बात मेरी ली जावा,
एकुला न चल्या बाट, विराणी[7] न बैठ्याँ खाट।
प्रफूल ह्वैक दीपू, गँगे अपणा दीपू कोट।
गढ़ू बैठे अपणी, भँवरपंख घोड़ी,
सलाण मा तब, खबर या पौंछीगे—
जेको बाबू हम लोग न मारे,
वैको बेटा यख पौंछीगे !
तब खोदीयाले तौन, सौ जरीब खाड[8]
वख मा पलंग बिछैगे, पलंग मा चदर।
सलाण का लोक तब, कठा[9] होई गैन,
औ ज्वान ज्वान छोरी, स्यूँद[10] गाडदी[11]—
अब आयो हमारो पदान[12] !
तौं लोगून बड़ो, सतभौ दिखाए,
लाई ऐन तब वै, पलंग मा बैठौणा।
याद आये तब गढ़ू, सुरमा की बोलीं—
पलंग मा मारी वेन, बेत की चोट,
चदर उन्दू लैगे, खाड देखेण गैरी।
भली मैमानी[13] करी, तुमन मेरी भायों,
तुमारो ऐसा न, कबी न भूलूँ।
कनो होये माल[14], घोड़ी असवार

१. पहन ली, २. उसने; ३. लड़ाई के कपड़े और हथियार, ४. आँसू, ५. लौट कर; ६. कातर, ७. दूसरे की, ८. गड्ढा; ९. इकट्ठा, १०. माँग, ११. निकालती, १२. प्रधान, १३. मेहमानदारी, १४. योद्धा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

छौलो-बुक[1] छौलो, ह्वैगे घोड़ी--
कला-सी कच्यैन[2] वैन, गाबा[3] सी काटीन !
साधीयाले तैन, स्यो सलाण,
मामलो उगाई याले !
गज करो[4], मुण्ड करो, स्यूँदी सुप्पो लगौले।
खिमासारी तब, पैटीगे[5] माल,
घर मू दीपू न मर्दो, मन्सूबा ठाण्याल्या,
गढ़ू न मरी जाण, सुरमा मैन अपणा नौनाक[6] ल्यौण।
तब वो सुरमा का मामों, एक खाल रुप्या देन्द,
सुरमा रौतेली, बुलैले मामाकोट।
दीपीकोट बिटी[7] ह्वैन बरात की त्यारी
सुरमा की माम्योंन, देखे सुरमा रूपवन्ती,
तौन जाणी नी, ना पछाणी, सोचे--
या हैकी सौत आई, कखन काल हमारी।
अनजाणा मा तौन, वीं विष खेलैले,
सुरमा अंगुडी[8] छई, पघुण्डी[9] ढलीगे।
दीपून धरयाले तब, वा डोला पर,
पर विधाता की लेख, इनी होंदी—
रस्ता मा गढ़ू माल, खाणा छौ पकौणू।
सुरमा रौतेली की, तब आँखी खुलीन,
रोन्दी छ तुड़ादी तब, वा चाखुड़ी[10] सी बराँदी[11]।
मैं छऊँ सुरमा राणी, गढ़ू माल की,
कु छ मैं सणी, डोला पर लिआणू।
डोला से नजर लगे, माल का रस्वाड़ा[12],
भादों जसो बेला[13] छयो, मगन पड़्यू,
डेड हात पीठ छई, डेड हात छाती।
होलू त सी होलू मेरो, स्वामी प्यारो।

१. धौन्ना, २. काटा, ३. कन्दमूल, ४. करों के नाम ५. प्रस्थान किया, ६. लड़के को, ७. से, ८. आगे, ९. पीछे, १०. चकोरी, ११. तड़पी, १२. रसोई, १३. भैंसा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

फेंकदी तब गारा, सुरमा रस्वाड़ा मा,
टपरांदो[१] तब गढ़ू सुमऱ्याल--
अला[२] कैको आये यो काल,
कैन मेरा रस्वाड़ो पथराये।
डोला से देखे वैन, हात अगाड़ी बढ़द,
उंडो देखे वैन फुंडो, रौड़दो छ दौड़दो।
गढ़ू माल, डोला मु जांदो,
सुरमा रौतेली, माथो नवौंदी--
मैं छऊँ स्वामी, विपता की मारी,
किस्मत की हारी, छऊँ तुमारी नारी।
दुश्मनुन जैर खलैं, मैं बेहोश होयूँ,
तुमारा बडा[३] जीने[४], या कुदरत कराये।
गढ़ू माल चढ़े, छेतरी को रोष,
तैकी छाती का, बाल बवरैन!
ओंठ बबलैन वैका, भुजा फफड़ैन
आंख्यों मा वैका लोइ सरे,
दीपू बडान, यो क्या त करे ?
मारीन तब बैन, दीपू का साती लड़ीक,
दी वड़ा भी दगड़े, स्वर्ग पौंछाए!
तब दीपीकोट मा वैन
कोटू बोणो कर याले!
बैरी को एक नी रखे,
रीझाना को-सी शेष।
तब सुरमा लीक, गढ़ू सुऱ्याल,
खिमासारी ऐगे,
माता न बालो भेंटें,
ब्वारीन सासू का पैर छुयाँ,
खिमासारी कोट मा, बजे आनन्द बढ़

१. इधर उधर देखना, २. अरे, ३. ताऊ, ४. जी ने।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मर्द मरी गैन, बोल रई गैन,
मर्दूं का पँवाड़ा, गाया गैन !

७. मालू राजुला

रंगीली वैराट (वाणाहाट) का राजा था—दौलाशाह। उसकी रानी थी पंवारी। अस्सी साल की उम्र में उसका लड़का हुआ। नाम रखा गया—मालू शाह।

मालूशाह के ग्रह देखकर पंडितों ने पाँचवें ही दिन उसकी सगाई करने के लिए कह दिया।

संयोग की बात। सौक्यानी कोट के राजा सोनूशाह के घर इसी समय लड़की का जन्म हुआ। उसका नाम रखा गया—नौरंगी राजुला।

मालू और राजुला की सगाई हो गयी किन्तु राजुला के ग्रह कुछ खराब थे। मंगनी होते ही उसके भावी ससुर दौलाशाह मर गये।

मंगनी की बात मालूशाह से छिपायी गयी।

इधर राजुला बड़ी होती गयी। चारों ओर उसके सौन्दर्य और लावण्य की बात फैल गयी। उसके पिता सोनूशाह बड़े संकट में पड़ गये। रंगीली वैराट से किसी ने इस बीच कभी कोई बात नहीं चलायी। बेचारे सोनूशाह इधर-उधर शादी की बात टालते रहे, लेकिन एक दिन जलन्धर का राजा विघनी विजयपाल सौक्यानी कोट पहुँचा।

उसने राजा से कहा—'राजुला से मेरा ब्याह कर दो, नहीं तो सबको ठीक कर दूँगा।' सोनूशाह डर के मारे 'ना' नहीं कर सके। विघनी विजयपाल ने घोषणा की कि 'मैं आठवें इतवार को बरात लेकर आऊँगा और राजुला को ब्याह कर ले जाऊँगा।'

राजुला जलन्धर नहीं जाना चाहती थी। लाचार होकर वह अपनी चाची जमुना (छमुना) से बोली कि मुझे इन पहाड़ों पर घुमाओ।

बातों-ही-बातों में एक दिन राजुला ने अपनी चाची से पूछा कि सबसे सुन्दर शहर कौन-सा है ?

जमुना रंगीली वैराट का नाम लेती है और साथ ही यह भी कहती है कि वहीं के मालूशाह से बचपन में तेरी मंगनी हो गयी थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

राजुला वैराट जाना चाहती है और जमुना (छमुना) ऊँचे पंवाली डांडे से उसे रंगीली वैराट दिखाती है।

राजुला वैराट की ओर चल पड़ी। अचानक सोनूशाह के भैरव को इस वात का पता लग जाता है। वह राजुला का रास्ता रोकता है। राजुला उसे बुरा-भला कहती है और वह रास्ता छोड़ देता है।

राजुला चलते चलते रंगीली वैराट पहुँचती है। भैरव पहले ही वहाँ पहुँच कर मालूशाह पर जादू कर देता है और मालू वारह वरस की गहरी नींद में पड़ जाता है।

राजुला उसे हिलाती-डुलाती है, पर उसकी नींद नहीं टूटती। तब वह एक पत्र लिखती है और अपनी हीरे की अंगूठी उसकी उँगली में पहना देती है।

राजुला के जाने के वाद मालू उठ बैठता है। अँगूठी देखता और पत्र पढ़ता है। सब वातें उसे मालूम हो जाती हैं। योगी बनकर वह बावा गोरखनाथ की शरण में जाता है।

गुरु गोरखनाथ उसे माँ के हाथ का भोजन करने के लिए कहते हैं। वह साधु के वेश में घर आता है। माँ को लगता है कि यह योगी तो मेरे बेटे की तरह है, किन्तु योगी इस वात को टाल देता है और कहता है कि मुझे कुछ खाना खिलाओ।

माँ खाना परोसती है। मालू हमेशा खाने से पहले चार कौर दान देता था। वही इस योगी ने किया। माँ समझ गयी कि यह मेरा मालू है। वह उसे बहुत समझाती है। कहती है, 'तुमने अपनी सात रानियाँ क्यों छोड़ दीं?'

मालू ने गुरु गोरखनाथ से 'यक्षिणी विद्या' सीख ली थी। वह अन्तर्धान होकर जलन्धर की ओर रवाना होता है। बीच में उसे विषल्या शहर मिलता है। वहाँ की रानी थी विषल्या। उसकी विष की ब्रावड़ियाँ थीं। मालू विषैला पानी पीता है और मर जाता है।

कुछ देर के वाद विषल्या रानी वहाँ पहुँचती है और उस सुदर्शन मालू पर मोहित हो जाती है। वह उसे जिन्दा कर देती है और अपने साथ ब्याह करने को कहती है। मालू उससे वायदा करता है कि जलन्धर से लौट कर वह उससे ब्याह करेगा।

मालू योगी के वेश में विघनी विजयपाल के यहाँ पहुँचता है और चार कंकड़ फेंक कर उसके घराट (चक्कियाँ) बन्द कर देता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वह फिर राजुला से मिलता है और विजयपाल पर आक्रमण करता है। मंत्र-बल से कई भैरव पैदा होते हैं और विजयपाल पर टूट पड़ते हैं। विजयपाल मर जाता है।

राजुला मालू से लिपट जाती है और खूब सजधज कर मालूशाह के साथ रंगीली वैराट पहुँच जाती है।

मालू राजुला

रंगीली वैराट[1] मा, रन्दो छयो रंगीलो दोलाशा[2]
छौ राजा दोलाशाही, रंगीली को राजा !
रंगीली दोलाशाही, ह्वैगे असी को विरबै[3]
बुडयांदी[4] बगत लगो, तीजा जसी[5] जोन[6]।
दोलाशाही राजा की, राणी पंवारी बतैं छै
वीं रांणी को विधाता गर्भ रई गए
एको दूजो मास लैगे, तीजो चौथो मास,
पाँचों सातों मास लैगे, आठों नवों मास,
दसाँ मास राणी, वैदन[7] लगी गए !
बुड्यांदी बगत हे राजा, कनो गरण[8] लैगे।
विधाता की लेख[9] छई, राजा को बेटा ह्वैगे !
गया का बरमा[10] बुलौंद राजा, काशी का पण्डित,
देखा मेरा बरमा, ये को राश-भाग !
तब बरमा, पातुड़ी देखदा;
राजा इनो जरम, यो भौंपति भौंपाल
रंगीली को राजा जरमे, मालूशाही नाम होलो येको !
हे राजा, गया को बरमौन कुछ अलप[11] बतैले,
हे राजा, मालशाही को पंचुला ब्यौ करण !
नितर[12] तुम पर पाप लगण !
सौक्यानी देश मा, सौक्यानी सोनूशाही,

१. एक जगह, २. दोलाशाह (नाम), ३. वर्ष, ४. बुढ़ापे में, ५. जैसी, ६. चाँद, ७. दर्द, ८. ग्रहण (कलंक), ९. माया, १०. ब्राह्मण, ११. अल्प (अल्प ग्रहो), १२. नहीं तो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

सोनूशाही की नौनी, नौरंगी राजुला
तब्र गैन गया का बरमा[१], सौक्यानी देश मा,
सौक्यानी देस मा, माँगल छा गायेणा !
राजा सोनशाही की, जरमी[२], नौरंगी राजुला
आनन्द बड़ई बजदी, सौक्यानो कोट मा !
तब बोलदा गया का बरमा–
हे राजा सोनूशाही, तेरी नौनी जरमे,
हमारा राजा दोलाशाही को, नौनो होलो मालूशाही,
अपणी नौनी की तू, जबान[३] दी दे।
नौरंग राजुला होलो, दसरंग मालूशाही।
तब सोनूशाहीन, राजुला की जबान
दीयाले वीं, रंगीली वैराट।
पंचुला की नौनी छै, पंजुला को नौनो,
जौ जबान ह्वैगे, माँग जाग।
मँगल पिठाई लगे, ढोल दमौं जज्या।
पर राजुला को छौ, बल नाड़ी वेद[४],
ससुरा तैं तब वो पिड़ाये
राजा दोलाशाही, स्वर्गवास ह्वैगे।
मन्त्री तन्त्रियोंन, इनो मन्त्र करे–
ई निरभागी ब्वारी[५] का मांगण से
ससुरा मरी गए।
या ब्वारी हमून, कतई[६] नी ल्यौण।
मालूशाही छोटू छ, तै मा नी सुपौणा
कि राजुला की करीं छै जुवान।
हे जी, बरसू[७] बीती गैन[८] तब,
पंचुला की नौनी, राजुला अक रंगीली,
सुघर[९] तरुणी ह्वैगे।
बुरांस[१०] को-सी फूल, फूली गए राजुला।

१. ब्राह्मण, २. जन्मी, ३. वचन, ४. भेद (दोष), ५. वहू, ६. कैसी भी,
७. बरसों, ८. गये, ९. सुन्दर, १०. एक फूल।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूप की छलार[1] आँख्यों मा वीं का,
जवानी भरेणी, पाणी को-सी ताल।
राजुला होली, राजों की बेटी,
देवी को-सी रूप होलो,
सूरज को-सी झल्यारो[2]।
होई गए राजुला, ब्यौवोणा का लैख[3],
पर हे जी रंगीली का राज की
औणी[4] नी छ जाणी[5]।
पंचुला की नौनी माँगी छई,
तब बिटी[6] करे, नी कैन[7] खबर सार।
राजुला माँगण तब, औंदा दूरु-दूरुन राजा,
राजुला होली भली बाँद[8], व्यवैक ल्यौण।
राजा सोनूशाही पर, भौत खरी[9] ऐगे,
धरम को बाँध्यूं छौ, शरम की मार्‍यूँ।
रंगीली राजान हमारो, कनो नाक कटाये,
ई बेटीन कनी दशा कराये।
बड़ा-बड़ा राजा ऐन, टालदो रैन ऊंतैं[10]।
पर जलन्धर देश मा, रन्द छा विघनी विजैपाल,
राजुला की चारजोइ, सूणी तब तौन,
घूमदा-घूमदा आई गैन, सौकानी देश मा,
सेवा मानी, सेवा मानी, राजा सोनूशाही,
राजुला को डोला हमन, जलन्धर देश पौंछोण।
देन्दी छै ससुरा त, कट दे जुबान।
नितर[11] तेरो सौकानी राजा, बाँजा[12] डाली द्यौला।
अपणा नौ[13] का, विघनी छौं हम, विजैपाल छौं।
डर का मारा सोनू शाहीन, ना किलै[14] बोलणू छौ ?

१. लहर २. चमक, ३. लायक, ४. आना, ५. जाना, ६. से, ७. किसी ने, ८. सुन्दरी; ९. मुसीबत, १०. चर्चा, ११. नहीं तो, १२. बर्बाद, १३. नाम, १४. क्यों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

राजुला की जुवान, वैन ऊं दियाले।
आठवाँ ऐत्वार[1], औली हमारी बरात,
तब विघ्नी विजैपाल, अपणा जलन्धर गैन।
रूवसी राजुला छई, आम जसी फाँक,
कनी तकदीर फूटे, गई जलन्धर देस ?
तब बोदी वा राजुला, चल चाची छमुना,
सारा जाँद अपणो देस देखाइयाल,
वण देखाइयाल वासो।
उच्च पर्वत बिटी[2], सारी दुनिया देखदी,
हे चाची, शैरू[3] मा, कै कु शैर पियारो ?
राजों मा कु राजा पियारो ?
मेरी तकदीर फूटे, गये जलन्धर देस।
तेरी तकदीर फूटे, बेटी गई जलन्धर देस,
ओ रंगीली बैराट मा, तेरी जुबान दियेणी छै
रंगीली को राजा छयो, नौरंग मालूशाही,
नौरंगू मालूशाही, दसरँगी राजुला।
ओ कख छ रंगीलो बैराट हे चाची।
ऊँचा पंवाली काँठा[4] देख तै राजुला।
अच्छुत मैं जांदूं छमुना चाची, वै रंगीलीकोट मा,
हात धरे टालखी[5] राजुला न,
वैराट[6] पैटी गए राणी।
हाँ, सु कनो सोनशाही को, छयो इस्टदेव भैरव,
भैरव का कानू मा, खबर पौंछी गए।
विधनी विजैपाल, सोनगढ़ तोड़ी जाला
वो राजुला की, कनी[7] मति[8] हरे।
डेढ़ हात भैरों, जान्द राजुला की ढूँड,
वैराट को राजा, स्यो रंगीली मालूशाही,

१. रविवार, २. से, ३. शहर, ४. चोटी, ५. चुररिया, ६. प्रस्थान किया, ७. कैसे; ८. बुद्धि।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मालू शाही का होला, रौल्या[1] जौल्या[2] घट।
तौं घटू मू पौंछीगे, तब रंगाली राजुला,
हे जी भैरव न, तब टाड[3] कैले बाड !
घर त त्वई राजुला, औणू होल
मैं सोनूशाही को, डेड हात भैरव !
तेरो मड़ो[4] मरयान, कुलदेव भैरव,
किलै[5] रस्ता रोकदी, मैं जाण दे !
छट छोड़े भैरव न, रस्ता राजुला भागी,
रूबसी राजुला पौंछीगे, रंगीला बैराट !
राजुला से भी पैले, पौंछीगे भैरव,
मालूशाही क तैं, निन्दरा[6] जाप[7] ह्वैगे,
बार बरस की वै निन्दरा पड़ोगे !
दस रंग राजुली को, हिया भरी औन्द,
हे मेरा भैरव, कनो करे त्वैन मैकू ?
तेरी जोई[8] भैरव, जु राँड होयान।
लपटौन्दी[9] झपटौदी[10], मालूशाही नी बीज[11],
रूबसी राजुला, तब कागली लेखदी--
मैं पंचुला की कन्या मालूशाही,
माँगणी[12] कबूल कै छई।
विघनी विजैपाल लिजाणा छन मंई[13],
त्वै बियाणी[14] होली मंई त,
ऐ जाणू जलन्धर देस मा।
हीरा की गुण्ठी चढ़ाये वैका हात,
रोन्दी-बरांदी राजुला, सौकानी देस मा ऐ गए।
तब डेढ़ हात भैरवन मालूशाहा को
जाप[15] खोली याले।
हीरा की गुण्ठी[16] देखे, वैन अपणा हात,

१. शोर मचानेवाले, २. दो, ३. रोक दिया, ४. मुर्दा, ५. क्यों, ६. नींद, ७. खुमारी (सम्मोहन), ८. स्त्री, ९. उठाया, १०. जगाया, ११. उठा, १२. सगाई, १३. मुझे, १४. ब्याहना, १५. सम्मोहन, १६. अंगूठी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

तब राजा को, हिया भरी औंद,
राजुला मेरी राणी, होली मेरो पराणी ।
हे राम, वा कतना, दुख सैणी होली,
आँसू छोड़दी होली, पथेणा[1] नेतर ।
हे राजा, तब धरे, जोगी को रूप,
कनो छोड़े रंगीलो वैराट,
माता जी छोड़ दी, वैका पथेणा नेतर,
कख गई होलो, मालूशाही मेरो लाडो[2] ।
तब सूणदी माता, रंगीली बैराट को राजा
गै[3] गुरू गोरख की थली[4]
गुरू जी गोरख तब, वै सणी देन्दा विद्या ।
बोदा तब गुरू गोरखनाथ--
जा मेरा चेला, तू मां का घर,
भोजन करी अऊ ।
तब औन्द मालूशाही रंगीली वैराट
माता को शरीर तब भरी ओन्द
कनो[5] दिखेन्दी[6] मेरा मालूशाही की चार[7] ।
मेरो मालूशाही भी इनी ही छौ ।
हे माता, एक सरूप का कना कना होण्दान,
हे माता, तू मैं आशिर्वाद दे
आज भोरजन तेरा घर मा होलू ।
पकौंदी भोजन तब बुड्ढ़ी माता,
हे जी माता को शरीर धीरज धरद–
मेरो मालूशाही छयो पंचग्रास्या ज्वान ।
यो पंचग्रासी होलो त मेरो मालू ही छ ।
तब बुलाये वींन जोगी भोरजन जिमौणा–
एक गास धरे जोगीन गाई का नौऊ[8],

१. रोती हुई, २. लाडला, ३. गया, ४. स्थान ५. कैसा, ६. दिखाई देना,
७. तरह, ८. नाम ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हैको गास छोड़े विरालीक[1] तई।
तीसरो गास छोड़े अगनी का नऊ।
चौथो गास देन्द कुत्ता तई,
पाँचों गास वो अफू भोरजन कर्द।
छोड़ याले तब साई न माता को थाल,
मालूशाही की माता झप[2] अंगवाल[3] मारदे।
तू जोगी नी छई तू छई बेटा मेरो।
किलै[4] छोड़ी तिन रंगोली बैराट?
किलै छोड़ी बेटा, सात राणी बौराणी?
किलै छोड़ी राजा अपणो रैत[5] मैत?
नि छऊ माई मैं तेरो मालूशाही,
न मेरी राणी छई न मेरो राज।
मालूशाही माता दणमण[6] रोन्दे:
तू बोल न वोल बेटा, तू मेरो मालू छई।
कनो[7] निरमोही होई तु
कै[8] पापीन भरमाई[9]।
कंचन काया छै तेरी उजलो आतमा,
केक बेटा त्वैन यो राखो रमाई?
मैं नी छऊँ मेरी माता, तेरो जायो[10],
मैं छऊं माता गुरु गोरख को चेलो।
तब गाडे जोगीन बोकसाड़ी[11] विद्या,
वैई[12] बगत[13] मा वो अन्तर्ध्यान ह्वैगे
छोड़ तब्री रंगीली वैराट,
चली गए वो जलन्धर देस मा–
जलन्धर देस मा विषल्या का शैर[14]।
वै शैर मा रन्दी छई वा राणी विषल्या,
जै राणी की छई विष की मगरीं[15],

१. बिल्ली, २. एकदम, ३. आलिंगन, ४. क्यों, ५. घर-बार, ६. टप-टप (लगातार आँसू बहना), ७. क्यों, ८. किस, ९. भरमाया, १०. बेटा, ११. यक्षिणी, १२. उसी, १३. वक्त, १४. शहर, १५. बावली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

ऊ मगरियों मा विष चारियूं छयो,
जु तें पाणी पेंद छौं, विष खै मरी जांद छयो,
मालशाही जोगी पौंछीगे दोफरी का धाम,
विष की मगरी पाणी पीयाले।
जोगी तई तब विष लगी गए–
ढली गये वो चन्दन-सी गेंडो[1]।
राणी विसल्या तब पाणी भरण ऐगे,
देखे वैन जोगी पड्यूं–
हात हात भर की जटा बेत[2] बेत भर का नंग[3],
पर मुखड़ी पर वैकी बाला[4] सुरज की उद्यों[5] छौं
वीं स्वाणी[6] सूरत भोली मूरत देखी,
वीं दया ऐगे।
लक[7] लगाये वींन, विष गाडीयाले,
जीतो[8] होई गए मरयूं मालूशाही
तनौ[9] जीती[10] रयान सुणली[11] सभाई।
तब बोलदी विषल्या रौतेली–
तुम मेरा नाथ साई, मैं तुम्हारी जोगीणा।
विसल्या मैं जाग जलन्धर देस,
जब घर औलू त्व विवै ल्यौलू।
रंगीली को राजा छऊँ, मैं रंगीलो मालूशाही।
तिन मेरा पराण बचाया,
त्वै मैं विषल्या, भुलण्या नी विसरण्या।
हे जी, तब जांदू मालूशाही जलन्धर देस मा,
विघनी विजैपाल छा घट[12] मू,
तब मिली गैन विघनी विजैपाल।
चार गारा मन्त्रीन साई न,

१. गेला (लकड़ी), २. वालिश्त, ३. नाखून, ४. बाल, ५. किरण (चमक), ६. सुन्दर, ७. जादू, ८. जिन्दा, ९. वैसे ही, १०. जागृत, ११. सुनने वालों, १२. घराट (चक्की)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देखा दूं तब तौंका घटा बन्द होई गैन,
तब औंदन जोगी मू कये विघनी विजैपाल,
हे भायों, केव घट बन्द होइन ?
हे भाई, तू छई मातमी[1] जोगी,
हमारा घट बन्ध्या गैन।
तु कुछ तन्त्र जाणनी त
हमारो कारज साधी ले।
अहा, ई क़िसम को साधू हम नी मिलणो ?
तब बोलदो जोगी—हे विघनी विजैपाळ,
राजुला न व्यायान, तुमन मारीइ जाण।
जोगी पौंछीगे तब राजुला का पास,
राजुलीन देखे रूपवन्तो साई,
कनू देखेन्द यो मालूशाही की तरौं।
मालूशाही बोल्द—राजुला रौतेली,
तेरा नौं को जोगी छौ, तेरा रूप को भोगी।
भौं[2] कुछ होइ जान, मैन तू बेवैक ल्याणी।
तेरा बाना[3] छोड़ी राजुला रंगीली बैराट,
तेरा बाना छोड़ी राजुला, राण्यों का भौन।
तेरा बाना छोड़ें राज़ुला, माता की माया,
तेरा बाना धरे जोगी को ध्यान।
आई गैन तबारे विघनी विजैपाल,
राजुला हमारी होली, तू जोगी कखन[4] आयो ?
विघनी विजैपाल छा बांका भड़,
ऊं देखी पड़[5] कम्पदा छा, डाल्यों[6] का जड़ला[7]।
ऊँन तब जुद्ध शुरू करीयाले।
मालूशाही होलो बोक्सा[8] को चेला,
कनी खोली वैन बगसाड़ी[9] विद्या—

१. पहुँचा हुआ, २. चाहे, ३. कारण, ४. कहाँ से, ५. पहाड़, ६. पेड़, ७. जड़, ८. यक्ष, ९. यक्षिणी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

इना भैरव तब पैदा ह्वैन
जौन विघनी विजैपालू का कलेजा
कौरी-कोरी खैन।
एक नी ऊँन छोड़ीन विघनी विजैपाल,
गाबा[1] सी काटीक, निमो[2] मी निचोड़ीन[3]।
तब प्रफूल ह्वैगे राजुला राणी,
तुम होला स्वामी मेरा पूर्वला[4] का सांगाती[5],
मैं तुमारी छऊँ, तुम मेरा छतर[6]।
तब सिंगार करदी राजुला रंगीली,
आँख्यों गाजल[7] चढौंदी, माथा वेंदी
भली गाड़दी[8] स्यू[9] द पाटी, फूलून सजैक।
तब सजीगे वींको औला[10] सरी[11] डोला,
नौरंग मालूशाही छौ दस रँगी राजुला।
रंगीलो मालूशाही औंद रंगीली वैराट,
रंगीली वैराट मा जै जै होंद !

८. कालू भण्डारी

कालू भंडारी के बड़े ठाठ थे। सोलह साल का गबरू जवान। अन्न-धन की कमी नहीं। मस्ती और मौज का जीवन।

एक बार सपने में उसने नवलीगढ़ की सुन्दरी ध्यानमाला देखी। उसके सौन्दर्य और लावण्य पर वह लट्टू हो गया और चल पड़ा उससे मिलने। कुछ दिनों में वह नवलीगढ़ पहुँच गया।

एक दिन ध्यानमाला पनघट पर पहुँची हुई थी। दोनों ने एक-दूसरे को देखा और हमेशा के लिए एक दूसरे के हो गये। दोनों जब-तब जैसे-तैसे मिलते, परन्तु कालू ने कहा—'ऐसे कब तक चलेगा? हमारा ब्याह हो जाय तो फिर कोई रोक-टोक न रहेगी।'

१. कन्दमूल, २. नीबू, ३. निचोड़े, ४. पूर्वजन्म, ५. साथी, ६. सिर के छत्र, ७. काजल, ८. निकालती, ९. माँग, १०. आँवला, ११. तरह।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कालू ने एक दिन अपने मन की बात ध्यानमाला के पिता धर्मदेव के सामने रखी। उसने कहा, 'मेरे राज्य में बाहर के पांच उपद्रवी जनता को परेशान कर रहे हैं। उन्हें ठीक करो तो ध्यानमाला से तुम्हारी शादी हो सकती है।'

कालू उनसे लड़ने चल पड़ा। इधर धर्मदेव ने गंगाड़ीहाट के रूपू से ध्यानमाला की चट मंगनी कर डाली। ब्याह की धूमधाम से तैयारियाँ होने लगीं।

कालू को पता लगा तो वह भागा-भागा आया और ध्यानमाला से मिला। उसने उससे कहा, 'चाहे जो हो जाय, तुम रूपू के साथ सातवाँ फेरा न फेरना।'

रूपू की बरात आयी। बड़ी चहल-पहल। फेरे होने लगे। ध्यानमाला छठे फेरे के बाद रुक गयी। इसी बीच कालू साधु के वेश में आया। ध्यानमाला ने उसे पहचान लिया। साधु के वेश में आये हुए कालू ने सबका काम तमाम कर दिया, लेकिन रूपू का भाई लूला गंगोला वहीं कहीं छिप गया था। उसने कालू को पीछे से मार डाला।

कालू और रूपू दोनों का दाह-संस्कार होने लगा। ध्यानमाला दायीं जांघ पर कालू को और बाँयीं पर रूपू को रखकर सती हो गयी।

कालू भण्डारी

होलो कालू भण्डारी मालू[१] मा को माल,
अन्न का कोठारा[२] छा वैका, वसती[३] का भण्डारा।
गाड़ू[४] घटड़े[५] छई, धारू[६] मरूड़े[७],
धनमातो[८] छौ, अनमातो[९],
जोवनमातो छौ कालू स्यो भण्डारी।
कालू भण्डारी छौ जब सोल बरस को,
आदी रात मा तैं सुपिनो होयो,
सुपिना मा देखे बैन स्या ध्यानमाला,
देखे वैन वरफानी कांठो[१०],
बरफानी कांठा देखे ध्यानमाला को डेरो[११]।
चाँदी की सेज देखे, सेना का फूल,

१. योद्धा, २. भंडार, ३. वस्तुओं, ४. नदियों, ५. घराट, ६. पहाड़ियों पर, ७. छानी (झोपड़ी), ८. धनी, ९. अन्नवाला, १०. चोटी, ११. घर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

आग जसी आँख देखी, दिया जसी जोत।
वाण-सी अरेण्डी[१] देखी, दई-सी तरेण्डो[२],
नौण-सी गलखी[३] देखी, फूलू-सी कुटखी[४]।
हिया सूरज देख, पीठी मा चन्दरमा।
मुखड़ी को हास देखे, मणियों कू परकाश,
कुमाली-सी ठाणा[५] देखे, सोवन[६] की लटा।
तब चचड़ैक[७] उठै कालू, भिभड़ैक[८] बैठे,
तब जिया[९] बोद[१०] : क्या ह्वैलो मेरा त्वई ?
आज को सुपिनो जिया, बोलणो नी औन्दो।
ना ले बेटा कालू सुपिना को बामो[११],
सुपिना मा बेटा, क्या नी देखेन्दो ?
कख नी जायेन्दो, क्या नी खायेन्दो ?
मैन ज्यूण मरण जिया हिंवाला ह्वैक औण,
तख रन्दी माता, वा बाँद[१२] ध्यानमाला।
कालू भण्डारी मोनीन[१३] मोयाले[१४],
तब पैटी[१५] गए वो तैं नवलीगढ़।
भैर[१६] को रूखो छयो कालू भीतर को भूखो।
कथी[१७] समझाये जियान[१८] वो,
चली आये वो ध्यानमाला का गढ़।
ध्यानमाला औणी छै पाणी का पंद्यारा[१९],
देखी औन्द कालू भण्डारीन वा,
हे मेरा परभू वा बिजली कखन छूटे हैं
सुपिना मा देखी छै जनी[२०], तनी[२१] ही छ नौनी या—
आछरी-सी सची, सरप की-सी बची,
अर देखे ध्यानमालान कालू भण्डारी वो,
बांको ज्वान छौ वो, बुराँस को-सी फूल।

१. लता, २. भलाई, ३. टिरी, ४. गुच्छा, ५. रूप (सज्जा), ६. सोना, ७. हड़बड़ा कर, ८. बड़बड़ा कर, ९. माँ, १०. कहती, ११. बहम (या सहारा), १२. सुन्दरी, १३. मोहनी, १४. मोह लिया, १५. चल पड़ा, १६. बाहर, १७. कितना ही, १८. माँ ने, १९. पनघट, २०. जैसी; २१. तैसी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तू मेरी जिकुड़ी छै बांकी ध्यानमाला,
त्वै मा मेरो ज्यू छ।
सुपिना मा देखी तू, तब यख आयूँ,
आज तू मैसणी[1] प्रेम की भीख दे।
तब ली गये वै तैं ध्यानमाला अपणा दगड़ा[2],
कुछ दिन इनी ही रैन वो गुपती रूप मा।
तब बोलदो कालू भण्डारी,
कब तैं रण रौतेली इनू लकी लूकीक।
तब ध्यानमाला का बुवा[3] धरमदेव,
कालू भण्डारी मिलण गैगे।
सूण सूण धरमदेव,
मैं आयौं डाँड्यों[4] टपीक[5], गाड़ू[6] बगीक[7]।
मैंन जिऊण मरण राजा,
तेरी नौनी ध्यानमाला ल्याण।
ऐलैन्दो बैलोन्दो तब राजा धरमदेव,
मेरा राजा मा आयाँ होला
हैका[8] राज से पाँच भड़,
साधीं[9] लीलो ऊँ तै जु कालू भण्डारी
व्यौवोलो त्वे ध्यानमाला।
कालू भण्डारी का जोंखा[10] बबरैन[11],
वैकी छाती का बाल जजरैन[12]।
उठाये तब्री वैन नंगी शमशीर,
चली गये हैका शैर भड़ साधण।
इतना मा गंगाड़ी हाट[13] को रूपू,
आये ध्यानमाला मांगण।
व्यौ को दिन तब निच्छै ह्वै गये—
पकोड़ा पकीन, हल्दी रंगीन,

१. मुझे, २. साथ, ३. पिता, ४. पहाड़ियों, ५. पार कर, ६. नदियों, ७. तैर कर। (बह कर), ८. अन्य, ९. जीत लो, १०. मूछें, ११. हिली, १२. खड़े हो गये, १३. शहर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

नवली गढ़ मा कनौ उच्छौ[१] छाये।
कालू भण्डारी लड़दू रैये भड़ू का सात,
तै का कानू मा खवर नी पौंछी।
पिता की मरजी, अपणी नी छै वीं की,
करांदी[२] छ किरांदो[३] वा नौनी ध्यानमाला।
तब सुमिरण करदे वा कालू भण्डारी,
तेरी मेरी प्रीत दूजा जनम ताई।
किसमत फूटे मेरो विधाता,
जोडी को मलेऊ फंट्याओ।
तब देखे वैन ध्यानमाला रोणी छै बराणी।
जाणी याले वैन होई गये कुछ खटको,
रौड़दो-दौड़दो आये माला का भौन।
हे मेरी माला, क्या सोची छयो मैंन,
अर क्या करी गये दैव ?
कालू भण्डारी, हे कालू भण्डारी,
मेरा पराणू को प्यारो होलो कालू भण्डारी।
मेरो सब कुछ तू छ, मैं छऊँ तेरी नारी।
देखे वीन कालू भण्डारी, क्वांसी[४] आँख्योंन,
हाथ बुरैयां[५] छा वंका, खुटा[६] छा फुक्यां[७],
काडो[८]-सी होयूं छौ वो सूखीक।
मेरा बाबा येन कतना तरास सहे ?
गला लगाये वींन तब कालू भण्डारी,
मरण जिऊण मैंन येक ही जाण।
तब बोलदू कालू भण्डारी:
तेरी माया[९] ध्यानमाला मैंकू स्वर्ग का सामल[१०]।
कु जाणी क्या हेन्द विधाता की लेख,
पर मैं औलू व्यो का दिन,

१. उत्सव, २. बड़बड़ाती, ३. रोती, ४. रोती, ५. छिले, ६. पैर, ७. जले, ८. काँटा, ९. प्रेम, १०. सामग्री।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तू मेरी माला आखरी फेरो ना फेरी।
तब वखन चलीगे वो कालू भण्डारी।
कुछ दिन बाद आये ब्यौ को दिन,
गंगाड़ीहाट मा तब बरात सजे,
ब्यौ का ढोल दमौऊँ धारू गाडू गाजीन।
नवलीगढ़ राज मा भी बजदे बड़ई,
मंगल स्नान होंदू, माला लैरेन्दी[1] पैरेन्दी,
धार[2] मा गँणी[3]-सी देखेदी माला।
बोलदी तब वींकी जिया[4] मुल[5] हैंसी,
ध्यानमाला होली राजौं का लैंख[6]।
गंगाड़ीहाट का रूपू गंगसारा की
तब नबलीगढ़ बरात चढ़े।
मँगल पिठाई होये, षट रस भोजन।
तब व्यौ को लगन आये, फेरों की बगत,
छं फेरा फेरीन मालान, सानों नी फेरे–
मैं अपणा गुरू देखण देवा।
तवरेक[7] ऐ गये तख साधू एक,
कालू भण्डारी छ कालू भण्डारी,
पछाणीयाले[8] मुखड़ी वैकी मालान !
वीं की आँख्यों मा तब आस खिलीगे,
प्रफूल ह्वैगे तब वा ध्यानमाला !
मेरा गुरू जी होला तरवारी[9] नाच का गुरू,
मैं देखणू चाँदऊँ जरा नाच आज ऊँको।
तब गुरू-साधु वेदी का धोर[10] ऐगे,
नंगी शमशीर चमकाई वैन,
एक फरकणा[11] फुन्डो[12] मारी, एक मारे उन्डो[13]
पिंडालू[14] सी काटीन वैन, मोदड़ा[15] सी फाड़ीन।

१. सजी-धजी, २. चोटी, ३. तारा, ४. माँ, ५. मन्द, ६. लायक, ७. तभी, ८. पहचान ली, ९. तलवार के, १०. नजदीक, ११. चक्कर, १२. उधर, १३. नीचे, १४. धुइयाँ, १५. तोरी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

कुछ भागीन, कुछ मान्या गईन,
मान्या गये वो रूपू गंगसारो भी।
तब वख मू ध्यानमाला ही छुटी गये।
लौटी औन्दू तब वीं मू कालू भण्डारी—
ओ मेरी माला आज जनम सुफल होये,
अगास[1] की जोन[2] पाये मैंन फूलू-सी डाली।
तब जुकड़ा[3] लेगे हाथू मा धरीले वा
आज मेरा मन की मुराद पूरी होये।
तबरे लुक्यूँ उठे रूपू को भाई
लूला गंगोला वैको नऊँ छ्यो
मारी दिने वैन कालू भण्डारी धोखा मा।
रोये बराये तब राणी ध्यानमाला,
भटके जनी ऊखड़[4] सी माछी।
मैं क तैं पायूँ सोहाग हरचे[5],
मैंक तैं मांगी भीख खतेण[6],
कनो मैंक तई दैव रूठे ?
रखे दैणी जंगा पर वींन कालू को सिर,
बाई जांग पर धरे वो रूपू गैंगसारो।
रौंदी बरांदी चढ़े चिता ऐंच,
सती होई गये तब ध्यानमाला !

९. जसी

एक था राजा हरिश्चन्द्र। उसकी रानी थी धर्मावती। दोनों दानी और उदार। शील-स्वभाव के बहुत अच्छे। सब कुछ था उनके पास। कमी थो तो केवल सन्तान की। बहुत उपाय किये, परन्तु सन्तान नहीं हुई।

तब दोनों ने पंचनाम देवताओं की पूजा की। उन्हीं के प्रताप से एक कन्या

१. आकाश, २. चाँद, ३. हृदय ४. बिना पानी (ऊसर), ५. खो गया, ६. गिर गयी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जनमी। गया और बनारस के पंडितों ने सोच-समझकर कहा कि बड़ी यशस्विनी होगी। उसका नाम पड़ा—'जसी'।

जसी चाँद-सी सुन्दर थी। धान की बाल की तरह बढ़ने लगी। रूप और सौन्दर्य में अद्भुत।

कोटलागढ़ में था एक नामी योद्धा—बीरुवा भंडारी। हट्टा-कट्टा बाँका नौजवान। उसका ब्याह हुआ जसी से। दोनों की सुन्दर जोड़ी। दोनों में बेहद प्रेम।

एक रात बीरुवा ने सपने में अपने पिता को देखा। सुबह उसने अपनी प्यारी जसी से कहा—'मुझे गया जाना है, पिंडदान करना है। जल्दी ही लौट आऊँगा।' जसी टपटप आँसू गिराने लगी।

बीरुवा गया के लिए चल पड़ा। इधर बेचारी जसी रात दिन उसी के ध्यान में खोयी रहती। उसकी सास पद्मावती उससे चिढ़ती थी।

एक दिन जसी अपनी सहेलियों के साथ पनघट पर गयी। वह काफी देर तक वहाँ अकेली बैठी रही, सहेलियाँ सब चली गयीं। उसे अचानक पानी में किसी की परछाहीं दीख पड़ी। उसने इधर-उधर देखा तो पता चला कि पेड़ पर उसका जीजा—पद्मू रौत (रावत) चढ़ा है। उसने उसे नमस्कार किया। पद्मू ने उसे खूब सजाया।

कुछ देर बाद जब जसी घर लौटी तो उसकी सास उस पर बहुत गुस्सा हुई। बोली "किसके साथ बैठी थी—इतनी देर तक ?" जसी ने साफ-साफ बात दिया।

बुढ़िया ने उसे बुरा-भला कहा और कटार से उसे मार डाला। फिर नींबू के बाग में उसकी लाश डाल दी।

बीरुवा को सपना हुआ। वह भागा-भागा घर आया। सब बातें उसे मालूम हुईं। वह फफक-फफक कर रोने लगा और जसी से लिपट गया। बेहोश हो गया। उसने सपने में शिव-पार्वती देखे। उन्होंने उसे एक युक्ति बतायी।

उसने कहा कि यदि जसी सती होगी तो जिन्दा हो जायगी। जसी जिन्दा हो गयी।

जसी

रूप आगलि[1] होली वा धर्मावती राणी,
रूप आगलि होली सेली[2] सीतली[3]।

१. अग्नि, २. शील (चरित्र), ३. पवित्र।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

भुका देखीक बा खाणू नी खांदी,
नांगा देखीक वस्तर नी लांदी।
जनी[१] छई राणी बल तनी छयो राजा,
दान्यों मा दानी होलो बल हरिचन्द राजा,
रिंगदी[२] डिंड्याली[३] छै जैकी उडदी[४] अटाली[५],
धारु[६] गरुड़े[७] छै जैकी गाड़ू[८] घटूडे[९]।
ढुंगा[१०] जसो धन छयो मेघ जसो मन,
गाड़ू का ढुंगा पूजीन राजान, धारु का मशाण,
पर राजा का घर बेटा नी जरमे।
तब सुमरदो राजा पंचनाम देव,
जरमी गए नौनी एक वैकी देवत्तौं का वर न।
बुलौन्द राजा गया का बरमा[११], काशी का पंडित—
तुम मेरा बरमो, देखा मेरी कन्या को राश भाग?
भली होये नौनी तेरी राजा जसीली[१२], जसी नौं[१३] की।
जौन[१४]-सी टुकड़ी नौनी, फ्यूँली-सी कोंपली।
सेरा[१५] का बीच जना साट्यों[१६] की बोटली,
तनी कबलांदी[१७] डाली-सी वा ह्वै सुघर तरुणी।
वीरुवा भण्डारी होलो भड़ू मा को भड़,
नौं को ही बीर छयो बड़ा बाबू को बेटा।
लम्बी भुजा छई वैकी चौड़ी छई छाती,
वीरुवा भण्डारी बांको होलो ज्वान।
व्यौं की बात होये ढोल बज्या खुशी का,
नारैण आये लगसमी[१८] व्याण,
मादेवन जनी पारवती पाये।
वीरुवा जसी की बांधेणे मलेऊ[१९] जसी जोड़ी।

१. जैसी, २. घूमती, ३. ऊपरी बैठक, ४. उड़ती, ५. हवेली, ६. पहाड़ी, ७. छानी (मवेशियों के लिए), ८. नदियों, ९. घराट, १०. पत्थर, ११. ब्राह्मण, १२. यशस्विनी, १३. नाम १४. चाँद, १५. खेत, १६. धान, १७. हरी-भरी, १८. लक्ष्मी, १९. हंस।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

अगासन[1] जोन[2] पाये फूल तै मिले भौंर।
धरती तै स्वाग[3] मिले, मनखी तैं भाग।
तब जसी बीरुवा को ह्वैगे माछी पाणी ज्यू,
एका बिना हैका[4] नी खांदो,
एक बिना हैको नी रन्दो।
द्वि होला वो पर एकी होलो शरील।
धातुओं मा सोनू जनो होन्द जसी—
तनी नारियों मा वा होली नार।
मायान[5] लुपटाणे जिकुड़ी वीं की,
शर्त[6] मा जनी होन्दी माखी[7]!
घर बार भूले बीरुवा भूले संगसार।
तब एक दिन वै सुपिनो ह्वै गये—
सुपिना मा अपणो बुबा[8] देखे वैन—
चचड़ैक[9] बैठे वीरु, भिबड़ेक[10] बैंठे।
मैं जान्दू गया जसी राणी,
मैंकू बणाऊं कलेऊ, गाड[11] वस्तर मेरा।
तेरी माया[12] मेरा दगड़ी[13] ईश्वर की-सी छाँया।
मैना[14] दुय्येक[15] मा घर औलो,
आँगड़ी[16] टालखी[17] त्वैक लौंलो
रोन्दी दणमण[18] तब जसी नारी,
तुम होला स्वामी मेरा सिर का छतर,
गला की माला होला, स्वाग की बेन्दी!
छुड़ाये भण्डारीन वीं की अंग्वाल,
तब भण्डारी गया गैंगे।
रातू की सेन्दी नी जसी तब, दिनू कू खांदी नी।

१. आकाश, २. चाँद, ३. सुहाग, ४. दूसरा, ५. प्रेम, ६. शहद, ७. मधुमक्खी, ८. पिता, ९. हड़बड़ाकर, १०. भड़भड़ाकर, ११. निकाल, १२. प्रेम, १३. साथ, १४. महीने, १५. दो-एक, १६. अंगरखा (ब्लाउज़), १७. चुनरी, ८१. टपटप।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

लांदी नी वा पैरेन्दी नी च,
वीं क तैं बस सोच एक ही होई च।
मैंलो ह्वैगे घुमैलो रूप वीं को,
फूल नी अलसै वा, घूल जसी ह्वैगे।
सासू छै वीं की पद्मावती,
ब्वारी[१] देखी वीं की आँखी होंदी छई लाल,
ईन करे मेरा नौना पर जाप[२],
वै का नौ अब वै[३] नी बोदो,
पूत पालीक होई ब्वारी भौंदो[४]।
दांत किटकदी सासू काल-सी भिटगदी[५]।
भ्वाँ[६] तड़गे[७] तमानो[८] नी च ईं को,
अभागी राँड की जाई[९] या,
पाणी तक को स्वारी[१०] नी भरोसो जैंको।

× × ×

हल्कदी[११] ढलकदी तब एक दिन जसी,
पाणी पंद्यारा[१२] पैटे[१३]।
लोसेन्दी[१४] घाघुरी पैरी वींन, सूवा-पंखी[१५] धरे।
हिंवालू[१६] मा नन्दा जसी गागर लीक पाणीक गैगे।
पैटीन दीदी भुली चौदिशा बिटा[१७],
बीच मा चलदी जसी गैणी[१८] जनो[१९]।
दगड़ा[२०] की दगड़्याणी घर ऐन वर,
जसी पंद्यारा नहेन्दी च धोयेन्दी खूब कैकी।
तब हेरदे[२१] वा छैलुड़ी[२२] वा पाणी मांग[२३],
दुई छैल[२४] देखीक वा चौदिशा नजर लांदी।

१. बहू, २. जादू, ३. माँ, ४. अधिकार, ५. उछलती ६. जमीन, ७. पर, ८. मिजाज, ९. पैदा की, १०. सहारा, ११. हिलती-डुलती, १२. पनघट, १३. गयी, १४. लौटती, १५. चुनरी (दुशाला), १६. हिमालय, १७. से, १८. तारा, १९. जैसी, २०. साथ की, २१. देखती, २२. छाया, २३. में, २४. छाया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

झपन्याली डाली का छैल देखे वींन,
पदमू रौत छौ बैठ्यूँ जख मांज।
नजोक जांदी जसी, सेवा लगौन्दो
मुल-मुल[1] हँसदो पदमू रौत।
मुख मोड़ी जसीन, शरमैंन आंखी,
गोरी गल्वाड़ी[2] वीं की भरेन ज्वानी का ल्वेंन।
देखदो रै गए पदमू वीं रूप की जोत,
जसीन हात पकड़ीक थो भ्वां बैठाये।
पदमू सणी जनू सेयां मा होश आये,
काख[3] गाडे[4] वेन वा, धौंपेली[5] मलासे,
वखी मू फुल्याँ वण का फूलून
वा डांडू[6] की आछरी[7] जनी सजाये।
दीदी की छुई[8] लगीन दीदी का नौनों की,
मैत[9] खबर सार सुणाई, सैसर[10] की भी।
तब भेना[11] का खुटो[12] मा सेवा लैक,
घर को पयाणो, तैन कैले।
चौक का छोड़ जब जसी आये,
चट नजर रौल[13] की लैंगे,
ब्वारी[14] की देखे वींन फूलू भरी स्यूंद[15] पाटी,
सासू की जिकुड़ी[16] जनी किरमोलीन काटी।
सुबेरी बिटी[17] तू पद्यारा[18] रै बेगणी,
दुनिया दुखैण्णी तू ब्वारी क्यूं च।
एतरीं[19] बगत[20] तू क्या करदी रई,
बुवा[21] छौं आयों तेरो वख या बई[22],
भाई छौ आयों या मामा तेरो ?

१. मन्द-मन्द, २. गाल ३. बगल, ४. ली, ५. चुटिया, ६. पहाड़ी, ७. अप्सरा, ८. बातें, ९. मायका, १०. ससुराल, ११. जीजा, १२. पैर, १३. सास, १४. बहू, १५. माँग, १६. हृदय, १७. से, १८. पनघट, १९. इतनी, २०. वक्त (देर), २१. बाप, २२. माँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

ना बोला सासु जी तु यनी बात,
दिन की न बणावा यनी रात।
विराणा बैख[१] वै-बाबु का सामान।
पदमू रौत होन्द मेरो भेना[२],
पंद्यारा मिले वो बीच बाट
दिदी की खूश खबर पूछे मैंन।
ना लावा ठणा[३] मैं विष खोलों,
गंगा फाल[४] द्यूलो, अबि मरी जौलों।
सासू बुड्ड़ी छ बुवारी की वैरी,
वींन ब्वारी को मुख गबदाये—
लबार[५], पातर[६] छै तू दारी[७],
वार[८] पार लैक मेरा नौना बमौन्दी[९]।
ढाटी[१०] जिकुड़ो तेरी बाघ खालो,
दाग[११] लगेक ज्वानी पर यख आई केक ?
देख त्वै आज मै ज्यूंदा[१२] न छोड़ों।
बुड्ड़ीन तब कटार मारे, खून की धार बगे।
धार की गेंडकी[१३] सी रूड़े[१४] जसी,
निमो[१५] का बग्वान[१६] दिने धोली।

× × ×

भण्डारी तब सुपिनो ह्वै गए बुरो,
बाटा लग्यूं छौ वो घर पौंछीगे।
इथैं देखद उथैं जसी भैर[१७] नी आई।
तब भट्यांद[१८] भण्डारी वीरूवा—
भैर औदू, भैर जसी मेरी राणी।
बाटा को थक्यूं छौं, घाम को सुक्यूं,

१. व्यक्ति (पुरुष), २. जीजा, ३. लांछन, ४. कूद, ५. गप्पी, ६. वेश्या, ७. कुलटा, ८. इधर-उधर, ९. भरमाना, १०. ढीठ, ११. पाप, १२. जिन्दा, १३. गोला (लकड़ी का टुकड़ा), १४. फिसली, १५. नीबू, १६. बाग, १७. बाहर, १८. चिल्लाया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गंगा जी को सेलो[1] पाणी दी जा।
भैर आये तब जिया[2] वेकी पद्मावती,
मुख झोसो[3] छौ पड्यूं वींका मोसो[4],
पूछद तब भण्डारी, वैं जसी का च ?
आँख्यों मा जिया का रात पड़ी गए।
न ले मेरा वीं पातर को नऊँ[5],
पदमू रौत आई छौ वीं को भेना[6],
पाणी पंद्यारा वा पाप करीक आए।
अपणा पापन बेटा, वींन मौत अपणी अफी बुलाए।
हकदक[7] रै गए भण्डारी भारी—
हा, त्वैन मेरी जोड़ी को मलेऊ[8] फंट्याए[9] ?
कख जैक पौणा मैंन जसी जसी नार ?
तब रोन्दू बबरान्दू भण्डारी जांदू निमौं का बग्वान।
वोंकी पिंगूली मुखुड़ी देखद, कौडी सरीं दाँतुड़ी।
हा, जसी तू मैं छोड़ी कै का घर गई ?
कै देवन हरे तेरी या अल्हर ज्वानी।
फफडांद[10] छ वीरूवा लफरांद[11] छ,
कना कना कारणा कर्द।
अंग्वाल[12] मारीक वीं बेहोश ह्वै जाँद।
तब वैंका सुपिना मा औन्दन मादेव पारबती।
धीरज धरौन्दन, जतन करौन्दन।
तब वीरूवा गंगाजल को लगोंद छीटो,
सते[13] होली तू दुयो[14] की जाई[15], एक की जोई[16],
त उठी जा सेयाँ की चार।
जु त्वैन नी करे हो पाप, मन रै हो साफ[17],
जु कैंक खोटी नी बोली, पराई नी ताकी होली,

१. ठंडा, २. माँ, ३. कुम्हला, ४. काला, ५. नाम, ६. जीजा, ७. हक्का बक्का, ८. हंस, ९. अलग करना, १०. तड़पता, ११. कलपता, १२. आलिंगन, १३. सच्ची, १४. दोनों, १५. पैदा की, १६. पत्नी, १७. साफ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

त तू खड़ी होई जा जसी मेरी नार,
बिजी[1] जा बिजी, हे सेयाँ की चार।
प्रभु की माया देखा—सतियों को सत—
जसी कबलाण[2] लैगे, आँख्योंन टपराण[3] लैगे,
बीरु न वा साँका[4] लैले, हरचीं[5] जनी पैले[6]।

१०. सूरज कौंल (सुरजू कुँवर)

नागवंशी सुरजू को सपना आया। उसने सपने में कमल के समान सुन्दर ताता लूहागढ़ की रानी जोत्रमाला को देखा। उसके साफ बिस्तरे पर चमकदार झालर थी। सूर्य के समान चमकनेवाला उसका हृदय था, चन्द्रमा जैसी पीठ। पर्वत-श्रेणी की तरह वेणी। गँगा की फाट की तरह उसकी माँग।

जोत्रमाला उसे चुनौती देती है कि 'तू शेरनी का बेटा होगा तो मेरे ताता लूहागढ़ आयेगा। गीदड़ का होगा तो अपने भीमली बाजार रहेगा।'

नौ दिन, नौ रात तक वह सपने के ही बारे में सोचता रहा। उसकी माँ ने उससे पूछा—'बेटा, तुझे क्या हो गया? तेरी बहन सूरजी तुझे बुला रही है।'

सुरजू हड़बड़ा उठता है और सपने की बात कहता है।

माँ उसे बहुत समझाती है कि 'वहाँ जो जाता है, लौटकर नहीं आता। तेरा भाई, तेरा दादा जो भी भोटन्त गया, कोई लौटा नहीं।'

सुरजू किसी की नहीं सुनता और भोटन्त जाने का निश्चय कर लेता है। वह गुरु गोरखनाथ के पास जाता है और उनसे साँवर (सम्मोहन) विद्या, बोक्सणी (यक्षिणी सिद्धि), जाप और पंजाबी चुंनरी माँगता है।

गुरु गोरखनाथ भी उसे बहुत समझाते हैं, किन्तु वह जाने के लिए ही जिद्द करता है। गुरु उसे सब सिखा देते हैं और कहते हैं कि जब कभी कोई मुसीबत आये, मुझे याद कर लेना।

सूरजू घर आता है और रास्ते के लिए खाने-पीने का सामान लेकर अपनी सूरजमुखी घोड़ी पर बैठकर भोटन्त के लिए चल पड़ता है।

१. जाग जा, २. हिलने डुलने, ३. टपटप आँसू गिरने, ४. गोद, ५. खोयी, ६. मिल गयी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वहुत-सी कठिनाइयाँ झेलता हुआ सुरजू भोटन्त पहुँचता है। चाँदनी चौक में वह अपनी घोड़ी दौड़ाता है। जोत्रमाला उसे देख लेती है और अपनी दासी स्वाँरा से कहती है कि 'उसे मेरे पास वुला ला।'

सुरजू जोत्रमाला के महल में जाता है और उसके पलंग पर वैठ जाता है। जोत्रमाला उसे पाँसे खेलने के लिए ललकारती है। दोनों वैठ जाते हैं। बात-की-बात में जोत्रमाला हर चाल पर उसे हराने लगती है।

सुरजू जोत्रमाला से कहता है, 'मुझे प्यास लगी है, अपने हाथ से पानी पिला दो।' वह पानी लेने जाती है। इस बीच सुरजू उसकी जगह पर बैठ जाता है और पानी पीने के बाद हर चाल पर उसे हराता जाता है। जीत्रमाला हार गयी और उसकी रानी वन गयी। उसको लेकर वह भीमली बाजार पहुँच जाता है।

सूरज कौंल

एक दिन कुंवर त्वैकु[1], राति का बीखैमा[2],
नागू का सूरजू बाला, सुपीनो ह्वै गये।
राति हैवै थोड़ा त्वीन, स्वौंणो जम्पे भौत,
पौछिगे सूरजू जैकी ताता लूहागढ़।
सुपीना मा देखे तिन राणी जोत माला,
देख्याले सूरजू तिन, राणी को बंगला।
जै राणी को होलो आज ठैठाई को रंग,
सुतरी[3] पलंग जैं को नेलू झमकार।
कवासुली[4] सेज जैंको धावणिया घांड,
हिया च सुरीज[5] जैंको पीठी चंदरमा।
कमरी दिखेंद जैंकी कुमाली सी ठांणा,
बिणोटी दिखेंद जैंकी डांडा सी चुडीणा।
सिंदोली[6] दिखेंद जैकि धौली[7] जैसो फार्ट[8],
फिलीरी दिखेद जैकि धोबी सी मुंदरी,
नाकुणी दिखेंद जैंकि खडक सी धार,
ओठणी दिखेंद जैकि दालिमा सी फूल,
दांतुणी दिखेंदी जैकि जाई जैसी कली।

१. तुमको, २. बीच, ३. साफ, ४. गद्देदार, ५. सूरज, ६. माँग, ७. गंगा, ८. फैलाव।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

बैठायो को रंग तै को कोठायँ टूटद,
सोवन[१] सिन्वाणी[२] जैंकी रूपा[३] की पैद्‌धाणी[४]।
रांड की जोतरा देंदा जलमू की बोली,
तु ह्वेलू कुंवर सांचू सिंहणी सपूत,
तू ऐल्यो कंवर मेरा ताता लूहा गढ़।
सिंहणी को ह्वैलो ऐलो ये बांका भोटंत,
स्यालणीं[५] को ह्वेलो रैल्यो भीमली बजार।
नौ दिन नौ राति बाला गिजनारै गये,
नौ लाख कैतुरी कौल धाम झअल एगे।
धाम झअल येगे बेटा सभा सुन्न रैगे,
चचड़ैकी[६] उठीकौल बवरैकी[७] बीज।
जाग दो ह्वे जांदी हे नाग सुरीज।
जागदो ह्वे गये बाला कांटो को सुरीज।
तेरि जिया[८] नागीण ब्राला धावड़ी[९] लगौंदा।
किलैकी सुरजू बेटा कछड़ी नी औन्दो,
किलैकी सूरजू आज ठउ नी जिमदो।
नौ दिन ह्वेगैना मैंन सूरजू नि देख्यो,
कागई सूरजू मेरा यकुला येकन्तू।
त्वी बिना कुंवर तेरी भीमली सुन्न ह्वेगो।
तेरी भुली सूरजी त्वे धावड़ी लगौंदा,
त्वीकुणी सूरज कनी उनिन्दा पड़ी च।
घाम झअल यैगे बेटा, सभा सुन्न ह्वेगे।
चचडैकि उठी कौल बवरैकि बीजे।
ऐगये सूरजू कौल नौरंगी तिवारी।
मैं सणी जिया ब्वै आज सुपीनो ह्वेगे,
सुपीन मा देखे मैंन राणी जोतमाला
मैंन जाणा इजा वे ताता लूहागढ़।

१. सोना, २. तकिया, ३. चाँदी, ४. पायदान, ५. गीदड़, ६. हड़बड़ाकर,
७. बड़बड़ाकर, ८. माँ, ९. आवाज़।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रांड की जोतरा देंदा, जलमू की बोली,
सिहणीं को ह्वेलो ऐली ताता लूहागढ़।
स्यालणी को ह्वैलो रैलो भिमली बाजार।
क्वी सोरो[1] जांचदो वैकू बांट-बांटी देन्दो।
क्वी बैरी जांचदो मीकू हत्यारा भीड़ देन्दू।
तिरया को जांचणो मीकू मारणो ह्वे गयी।
मोरणो ह्वे जाना जिया जोतरा का बाना।
भौंकुछ ह्वे जाना मैंन जाणा लूहागढ़
कित[2] लेलो जोतरा इजा कित रौलो नाटो[3],
ह्वेगैना जिया ब्वे मेरा बांही का बचन।
त्वेतई जिया ब्वै बाला, बुझौणी बुझौंद,
नि जाणों कुंवर मेरा बैरा का भकौंणा,
निल्हौणो सूरजू तिन जोतरा को भामों।
नि जाणो सूरजू बाला ताता लूहागढ़।
तू छई कुंवर मेरो इकलो यकन्तो
तु छई कुंवर मेरो कांठा सि सूरज।
तू छई कुंवर मेरो चन्दन सि गेंद,
तू छई कुंवर बाला पालिगा सि गेंद।
तू ह्वेलू सूरजू मेरा धार्णिया सि ठुंसू।
तेरो बाबू गैछो[4] बेटा घर बौड़ो[5] नि होये,
तेरो दादो गैछो बेटा बौड़ी कि निआयो,
जो गैना भोटन्त बेटा बौड़ी[6] को नि आया।
तेरो दिदा[7] गैछयो बाला घर बौड़ी नी आयो,
तेरो दिदा बरमी रैंगे बरमी डुग्यूँ पर।
तेरी तिर्ल्लू[8] बाखारि[9] बेटा छट-पट छ्यूंदा[10],
मान्याल कुंवर त्वेकु असगुन ह्वेगे।
हून्दी मऊ कु बेटा कांदली नि हून्दी,

१. सहजाति वाला, २. या तो, ३. अविवाहित, ४. गया था, ५. लौट कर,
६. लौटकर, ७. बड़ा भाई, ८. बकरी का नाम, ९. बकरी, १०. छींक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

जाँदी मऊ कू बेटा अडयो नि लांदी।
बिराणा देशा को बेटा गारो बैरी होन्दा,
नि जाणो कुंवर मेरा वैरयूंकी भकौणा।
मान जा सूरजू बेटा माता की अड्याई[1],
दानों[2] कू बोलियूं बाला ओला[3] को सवाद।
तेरो होलो सूरजू बाला भिमली बजार
कनि होली कुंवर तेरी नौरंगी तिवारी।
तेरि खोली गणेश वाला मुख च झूमदो,
तेरी भुली सुरजी बाला दणमण[4] रोंदा।
कुदेलो[5] दिदाजी[6] भीमली को दैजो[7],
को ऋतु जणाली, को बसन्त बौडाली।
मिन जांणा सुरजी भुली[8] ताता लूहागढ़,
मी ल्हौलो सुरजी त्वीकू मल्यागिरी सोनो।
मल्यागिरि सोना की त्वीकू सोन चूड़ी गडौलो।
त्वी को लौलो सुरजी भुलो भिमली को दैजो।
घर बौडी येजौली द्यीलो सरनामी दैजो।
त्वी ऋतु जणौलो त्वी बसन्त बौडोलो।
आज का भोल भुलो भौं कुछ ह्वेजैन,
मरदू को बचणो भुली चार दिन हुन्द।
त्वीतई[9] जिया[10]ब्वै बाला बुझौणो बुझौंद,
मान्याला सुरजू बेटा दाना[11] की अडायीं[12]।
त्वी सणी कुंवर बाला नयो ब्यो करुंला,
नयो ब्यो करुंला नाम जोतरा धरुंला।
तेरी तिल्लू बाखरी बेटा छट-पट छयूंदा[13]।
निल्हेणो सूरजू तिना जोतरा को भामो।
मैंन जाणा इजा ब्वै आज भोटन्त का राज,

१. सलाह, २. बूढ़ों, ३. आँवला, ४. टप-टप, ५. कौन देगा, ६.।बड़े भाई, ७. दहेज, ८. छोटी बहन, ९. तुमको, १०. माँ, ११. बूढ़ों, १२,. बात, १३. छींकना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मौरणो ह् वैजाना इजा जोतरा का वाना[१]
नयो ब्यऊ करीली तू सूरत कौक ल्हैली,
घर बौड़ी येजौलू इजा तिलू मारी खौलो,
भैं[२] कुछ ह्वैजैन जाण बालुरी भीटन्त।
त्वी तई इजा ब्वै बाला बुझौंणी बुझौंद,
तू जांदी सूरजू गुरु गोरख का पास,
बागुरी गोरख तेरी रकसा[३] करलो।
जैलागे सूरजू गुरु गोरख की धुनी,
गोरख की धुनी होला नौ नाथ की सिद्धी।
बारा नाम बैरागी सोळ नाम संन्यासी।
गोरख का पास बाला अलक लगौंद,
तू बोल सूरजू बाला कै काम को आयी।
मैंसणी देदणा गुरु सांबर[४] की विद्या।
बोकासी[५] जाप देणा पंजाबी चुंगटी।
तै दिन गोरख त्वी कू समझौंण लागे,
तेरो माता को छई बेटा तु येको येकन्तू।
मान्याल सूरजू बाला भोटन्त नी जाणों,
सुपीना की बात जन बगड़ का माछा
जो गैना भोटन्त बाला घर बौड़ी नी आया।
तै दिन सूरजू बोदा भौं[६] कुछ ह्वे जैना,
मैंन जाणा गुरजी आज भोटन्त का राज।
जो बैरी जांचदा वैकू हत्यार भीड़ देदों,
जो माता जंचदी गुरु थाल छोड़ि देदों।
तिरिया को जांचणौं मीकू मरणों ह्वे गये।
नौ दिन नौ राति रैगे गोरख का पास,
धूनी लगौंद चला आसण बिछौंद।
गाड़याले गोरख तिन हाथ ताल छुरी,
ताल-छुरी गाडू तैकि भूंड्याले।

१. बहाने, २. न-जाने क्या कुछ, ३. रक्षा, ४. सम्मोहन, ५. बोक्सा विद्या, (यक्षिणी विद्याः आदमी जानवर बन जाये), ६. न-जाने क्या कुछ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

रूपसी[1] कन्दूणियं[2] धनी खुरसानी चीरा[3],
पैरने सुरीज त्वीकु फटीक[4] मुन्दरा।
सुफेद कपड़्यूं भगोया चार्याले,
पैराये गुरु त्वींकू भगोया मुड्वासी।
काँधू मां धर्याले तेरा खरवा की झोली,
एक हाथ देये तेरो तेजमली सोटा,
दूजा हाथ द्ये तेरा नौपुरी को बांस।
धर्याले बगल पर बगमरी आसण।
त्वीसणे दियाले बाला कानू को मंतर।
बोकसाडी[5] जाप देये कांवर की धूल,
साबर[6] की विद्या देये पंजाबी चुंगटो।
त्वीकुणे कुंवर जब विपदा पड़ली,
मीकुणी सूरज तब याद करी याली।
ऐगये सूरज लौटी नौलाख कैंतुरी,
पकैदे जिया ब्वैं मींक द्वी पाथा[7] कलेउ
चौपथा[8] सामल[9] मीक बाटा[10] को धरियाल[11],
मिन जाँणा जिया ब्वै आज ताता लूहागढ़।
औडू नेडू ये जादी मेरी तेलिया बाड़णी,
लगैदे बाडणी[12] मेरी जुलफिळंमा[13] तेल।
औडू नेडू देजादी मेरी हे माला धोबणीं,
लगैदे धोबड़ी मेरा कपड़ौ छुयेड़ों।
कपड़ि सजैदे मेरी तूमी जसो फूल,
मिन जाणा धोबणीं वे बांका भोटन्ता।
पैराले सूरजू तीन झिलमिलों[14] जामो[15],
ओडू नेडू वुलावा मेरी घोड़ी का बखड्या[16]।
गाड़ी दे बखड्या मेरी सुर्जमुखी घोड़ी,
मल्यो रंग घोड़ी मेरी सजाई देवा।

१. सुन्दर, २. कान, ३. कनफट, ४. स्फटिक, ५. यक्षिणी विद्या, ६. सम्मोहन, ७. आठ सेर, ८. सोलह सेर, ९. सामग्री, १०. रास्ते, ११. रखना, १२. तेलिन, १३. बाल, १४. दमकता, १५. पहनावा, १६. सईस।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सजैदे बखड्या घोड़ी कांसी का घूंघर,
घोड़ी को पैरेदे मेरी नेओरी की माला।
सजयाले सूरजूतिना सरपेंच कलंकी,
पैर्याले कुंवर तिन बखतरी जामो।
काँधि माँ धर्याले तिन चौंसी को गलेप,
धर्माले बगल तिन, पैनी समशीर
सजीगे सूरजू आज कांठ सी सूरज,
ह्वेगये कुंवर झट घोड़ी को सवारी।
मार्याले घोडी को तिन निगुरो कुरडा,
तेरी घोड़ी जै लागी बाला वीं काली बदली।
तेरी घोड़ी पहुँची वाला सूरज मंडल,
तेरी घोड़ी पहुँची गे, बाला वे मेघ मंडल।
तेरि घोड़ी यैगये वाला वीं थाली चौरड़ी।
पौंछिगे[1] सूरजू आज नागणीं का सेरा[2],
मिलीगे कुंवर त्वीकू हिमा मारछ्याल।
त्वोकुणी कुंवर हिमा बुझौंणी बुझौंद,
नागणीं का सेरा बाला चुड़ीणू का घेरा,
मल्यो रंग घोड़ी तेरी धावड़ी लगौंद।
नौ दिन नौ राति रैगे नागिण्यों का घेरा,
बिपदा का मारा जादू गुरु का सुपीना।
रैगउं गुरजी आज चुड़ींण का घेरा,
फूक्याले गुरु न गाड़ी धुनी की बभूत।
चचड़ैकी उठी बालो बबरैकी बीजे,
गाड्याले कुंवर तिन नंगी समशीर,
मार्याले कुंवर तिन रांड कि चुड़ीण।
घोड़ी को सवार पौंछी[3] उचां खैटाखाल,
धार मा बैठीक तिन आसण लगाये।
खैटाखाल रौंदी वाला खैट की अछरी[4],
बजौण सूरजू बैठी नौसुर बांसुरी :

१. पहुँच गया, २. खेत (धान), ३. पहुँचा ४. अप्सराएँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

मुरली की धुन पौछी धार वार पार,
मुरली को सुर पौछी आछर्यूं का कान,
नौछमी मुरली बाजी अनमनी भाँति,
डांडि कांठी गूँजी गये मुरली को सुर।
सूणीं सूणीं सुरसौरी बेसुध ह्वेगेना,
को ह् बोलू हौंसिया[1] इनो बंसी को बजैया !
अछरी निमानी यैने सूरजू का पास,
राणियूं को रसिया छैंठे फूलू को हौंसिया।
नौदिन नौराति रैग आंछिर्यूं की फेरा,
आछिर्यूं तैं बाला तब बुझोणीं बुझौंद,
मैंन जाणा दगड़्यों[2] आज बालुरी भौटन्त,
मैंन लाणा दगड़्यों आज जोतरा को डोला।
मौटेन्त औलू रौलो भो तुम्हारा पास,
पौछिगे सूरजू हुणियों का देश,
एक खुट्यूं को राज जौंकि बोली निबिगींदी।
फेंक्याले सूरजू तिन पजाबी चुंगटी।
पोड़िगे राक्सु जख मां काली को ज्वाप,
तेरी घोड़ी पहुँची गें तब बिषैली कांठो,
नौ दिन ह्वैगेन तब त्वीकू विष लागी गेयै।
एक हड़ सूरजू तेरा किरम पड़ी गेना,
तब जांद सूरजू फेर गुरु का सुपीना
रैगउं गुरु जी आज बिषूली कांठ्यूं।
गाड़ी याला गुरु न संजीवनी विद्या,
हैंसदाज्यूँ दाल[3] गाड्या अमृत की तुम्बी।
मारिने ज्यूँ दाल बालों बबरैकि बीज,
तेरी घोड़ी जैलागी गैरी रुंदरो।
तेरी घोड़ी पौछिगे बाला वे बांका भोटन्त,
जै लाग्या कुंवर बालां ताता लूहागढ़।
चान्दनी का चौक बाला घुड़दौड़ लगौंद,

१. शौकीन, २. साथियों, ३. अक्षत।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देख्याले सूरजू तिना भावी को बंगला।
नजरु ये गये त्वीकू राणो जोतमाला,
नजरु यैगये बांकू घोड़ी को सवार।
जाधऊँ हे छोरी स्वारा पूर्व की मोरी,
को बैख यैहोलो मेरी चान्दनी का चौक।
ओड़ू येजादी मेरी आज स्वारा छोरी,
ल्ही औदी सूरजू मेरा छतोश अवासू।
बैठिगे कुंवर जैकि सुतरी[1] पलंग,
त्वी सणी जोतरा बाला बोली मरदी।
तब बैठी पलंग पैली पांसा खेली याला,
गाड़ीने जोतरा तीन हार जीत पांसा।
रांड की जोतरा पैली भोजन दोयाला,
नौ दिन ह्वेगेना मिना भोजन नी जीम्यों।
भोजन जिमै की खेल हार जींत पांसा।
बणैन जोतरा तिन बावन बिंजन[2],
निर्पाणीं[3] की खीर सौर सदबेली घिऊ।
औ बाला सूरजू झट भोजन जीम्याल,
भोजन जीमिकि गाड़े हार जीत पांसा।
गाड़ीन जोतरा तिन हस्ती दाँत पाँसा,
खेलण बैठीगे बाला पांसड्यों को खेल,
खेलद-खेलद नौ दिन ह्वेई गेना।
खेलद-खेलद हारमान होइगे,
बोलद सूरजू भारी प्यास लगीगे।
जाधऊं तू स्वाणीं छोरी जल लेऊ भोरी,
हरगिज नी पिऊँ पाणो छोरी को लयूं।
अपणा हाथ को पाणी मीं तै पिलै याल,
तब लौंद जोतरा भैर[4] जेकी जल भोरी।
झट उठे सूरजू बैठे जीत की तरफ,
पैले-पैले[5] को दऊं डाले धरती का नऊं,

१. साफ, २. व्यंजन, ३. बिना पानी, ४. बाहर ५. पहला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

दूजो दंऊ डाले पंचदेवों का नऊँ।
तीजो दऊं जीते तिन धन दी दरब,
चौथी दऊं जीते तिन भावी को बंगला।
पांच्वीं दऊं जीते तिना राणों जोतमाला,
जै लाग्ये, जोतरा बालो नौरंग तिवारी।
राणी का आवास मा जांदा छतीस भवन,
पैर्यालि जोतरा तिन ल्होसेडो घाघरो।
पैर्यालि जोतरा तिन मखमखी आंगी,
धर्यालि शिर मा तिन पामड़ी दुशालो।
पाये का पोलियां पैर्या शिर शीसफूल,
तेरा नौ कू सूरजू मिना स्वाँग धरियाले।
यैगये जोतरा तब गगन सीड्यूं पर,
पौछिगे जोतरा जैकि चाँदनी का चौक।
तेरा बाना जोतरा छोड़े नौ लाख कैतुरा,
सजी गये जोतरा तेरो औला सारी डोला।
मार्यालि घोड़ा कू तिना निगुरों कुरड़ो,
पोछिगे सूरजू यैको नौ लाख कैतुरा।
तेरी घोड़ी पोंछिगे बाला भीमली बजार,
पौछिगे भीमली बाला जोतरा को डोला।
धर्यालि जोतरा राणी छतीसू अवास,
नौलाख कैतुरा तैका मांगल गयेला।
बाजली भीमली आज आनन्द बधाई।
नौरंग तिवारी तख हास बरेंद,
बुलायें सूरजू तिन भुली[1] सूरजी,
घर बौड़ी[2] ह्वेगऊं भुली राजे दैजो ल्हीजा।
दियाले सुरजी त्वीक द्वी बैलों की जोड़ी,
गायूं गोठियार देई बाखुरियों की ताँदी
तू हवेली सूरजू सोंचो सिंहणो को जायो।

१. छोटी बहन, २. लौट कर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पौराणिक गाथाएँ

पौराणिक गाथाएँ या 'जागर'

गढ़वाल में देवता नचाने की प्रथा है। एक ही गाँव में कई व्यक्तियों पर कई देवता आते हैं—किसी पर नरसिंह, किसी पर भैरों (भैरव), किसी पर नाग, किसी पर भूम्याल। यहाँ तक कि स्त्रियों पर भी आछरियाँ (अप्सराएँ) आती हैं और वे भी खुले आम नाचने लग जाती हैं। रात में जागरण कर कई दिनों (रातों) तक देवता नचाने की परम्परा वहुत पुरानी है।

डौंरु-थाली (डमरु-थाली) पर घड़ियाल्या (वादक), ढोल-दमों (ढोल-दमामा) पर औजी (हरिजन वादक) और हुड़की हुड़क्या जागर-गीतों के साथ देवताओं को नचाते हैं। जिन व्यक्तियों पर देवता आते हैं, उन्हें पस्वा, धामी या औतारु कहते हैं। देवता चढ़ने पर ऐसे व्यक्ति धीरे-धीरे काँपने लगते हैं, फिर उन्हें धूप-द्वीप दिया जाता है और फिर वे डौंरु-थाली की ताल पर, घड़ियाल्या के स्वरों पर नाचने लग जाते हैं।

देवताओं में मुख्य नागरजा, सिदवा, विदवा, भैरों, नरसिह, नगेलो, और बग-डवाल हैं। देवता नचाने के इन आयोजनों को 'मँडाण' या जात (यात्रा) कहते हैं। रात में अधिक देर तक जागरण करने के कारण ही इन गीतों को 'जागर' कहते हैं।

१. कृष्ण सम्बन्धी लोक-गाथाएँ

गढ़वाल के कण-कण में कृष्ण समाये हुए हैं। गाँव-गाँव में कृष्ण की कई रूपों और नामों से पूजा होती है और हर गाँव की अपनी गाथा इससे जुड़ी हुई है। वैसे तो 'गढ़वाल जनपद' महाभारत कालीन सभ्यता और संस्कृति का घर है।

गढ़वाल के जागरी जागर-गीतों में 'डौंरु-थाली' के साथ कृष्ण के ही गुणगान करते हैं—वाल गोविन्द से लेकर नागरजा तक। शक्ति, प्रेम और शालीनता के प्रतीक कृष्ण गढ़वाल में बहुत ही व्यापक हैं। नाना प्रकार की लीलाओं और राजनीतिक संघर्षों की एक धारावाहिक ऐतिहासिक गाथा कृष्ण और गढ़वाल के बीच जुड़ी हुई है।

नागरजा

सभा लैगे[1] द्वारिका, सभा लैगे गोविन्द,
सोवन[2] द्वारिका होली, सभा लैगे गोविन्द।

१. बैंठी, २. सोना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

सभा बैठी गैन, तेतीस करोड़ देवता,
सभा बैठी गैन, सोल सोऊ राणी।
इनो रइ भगीवान्, गर्वियों का गर्व चलैन,
पाप्यों का मोचद पाप, बिर्वलियों को छै बल।
राण्यों को रौंसिया[1] छई, फूलू कू हौंसिया[2]।
धनि पारबरम, मैं लेन्दू तेरु नऊं,
तेरो नऊं लेन्दू, सांझ सबेर।
तेरो नऊं लीक संकट कटेन्दी, बिप्ता बंटेंदी,
दुख होन्दू दूर, काया होंदी कंचन।
इना रैन भगीवान् राँडू का मालिक,
छोरों का बाप, अनाथू का नाथ।
नंगा देखी खाणू नी खायो,
भूखा देखी वस्त्र नी लायो।
तिन लिने जन्म देवकी का कोख,
देवकी का कोख कंसकोट राज मा
वैरियों की भूमि, मामा की मथुरा।
माता तेरी देवकी, पिता वसुदेव।
सुण्याला[3] कंसू तुम देवकी का आठवां गर्भ,
होण कंसू को छै।
एक गर्भ होये तौन नदी सौंप करे,
दूजो गर्भ होये तौन नदी सौंप करे,
तीजों चौथो पांचों सातों गर्भ होये,
तौन नदी सौंप करे।
तव ह्वेन भगवान आठवाँ गर्भ।
तेरी जिया[4] देवकी एको लगे मास,
तेरी जिया देवकी दूजो लगे मास।
कंस कोट राज मां बुरो ठाण्याले,
कंस कोट लग अब शीशा को मेलाण[5],

१. रसिया, २. शौकीन, ३. सुन लो, ४. माता, ५. इकट्ठा करना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सौ मन शीशा की गागर बणैले।
चलीगे देवकी तब निकट जमुना,
ल्यौ बैणी[1] देवकी गागर भरी।
नौ दिन नौ राती गागर नी भरेणो,
भरेण क भरेगी, मैं कनै उठौलू ?
कायरी होइगे देवकी राणी,
इन रया भगवान निर्धन्यों का धनी,
गर्वियों का गर्व करदू चूर।
तै दिन भगवान, निरणी को बालो,
सु गर्भ छुई लांदो,
सुन जिया कायरो नी होणू।
तै दिन देवकी राणी गागर उठौंदी।
इनी माया तेरी भगवा—
कनी ह्वैगे गागर बुरांस को-सी फूल।
ल्या भाई कंसू ई गागर उठावा,
सुणीक कंस पिछुंडा[2] ढलीग्या[3]।
दस मास लैगे श्यामल भगवान्,
वीं देवकी लैगे बैठण्या वेदन,
पिता वसुदेव तौन बंदीगिरै धरोले।
भदर मास छयो, शुक्ल पक्ष,
रोहणी नक्षत्र छयो बुधबार।
कई पैरादार छा धर्यां, सुण्याला पैरादीरु[4] तुम
जु होलू गर्भ तै करिया हाजिर।
वसुदेव सुणीक इनो कुरोध लांदो,
सुण्याला कंसू तुम—
बैठीक विनत, उठीक अरज।
न लया कंसू तुम कन्या को पातक।
तब भगवान पृथ्वी पैदा नी होंदा,

१. बहन २. पीछे, ३. ढुलका, ४. पहरेदार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

तेरी जिया छई कली-बेकली।
मैं त मेरी माता पृथ्वी पैदा होन्दू—
तू कायरी ना होई मेरी जिया।
तब कृष्ण द्वारिकानाथ पैदा होई गैन।
देवता सभी खुश होइन, पिता की बेड़ी टूटीन।
चली आयो स्यो देवकी का पास,
क्या होये राणी तेरा गर्भ ?
तब भगवान इनो बोद:
सुणा सुणा मेरा मात पितौं मेरी अरज,
मैं कू लीजा पिता जी धौं[1] बै का पास।
नंदू मौसा का त डेरा।
तै वक्त भगवान उठैले पिता न,
रस्ता लगी गैन, आईन अधवार।
निकट जमुना आईन।
तब भगवान का चरण छूण,
जमुना अथाह होई गैगे।
पिता वसुदेव को उत्सा ख्वैगे[2]।
कनु[3] कैक रे बाला मैंन पार लीं जाणी ?
सुणा मेरा पिता जी कायरो नी होई।
कृष्ण बालो घनश्याम खुटी बढ़ौंद,
चरण चूमीक जमुना जी घटी गैन।
चलदा चलदा तब स्ये पहुँच्या—
नंदू का बांजा[4] वैराट[5]।
जनम का औंता[6] था स्ये, कर्म का नाटा[7]।
तै दिन बोदो नन्दू मौसा—
ये बांजा वैराट बाला
क्या खालू[8] तू, क्या त पेलो[9] ?

१. मौसो (यशोदा), २. खो गया, ३. कैसे, ४. ऊसर, ५. जगह (गोष्ठ),
६. निपूता, ७. खोटा, ८. खाना, ९. पीना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

केको भाग लालो, केन करलो स्नान।
तब बोदा सांवल भगीवान—
तेरा बांजा वैराट मौसा, मैं चलदू बणौल।
यनी फैलाये भगवानन लीला—
गायों का करेन गोठ, भैसू का खरक
नन्दू का यख लगीन दूध का धारा।
दूध का लगीन, नाज का कोठारा[१]।
बालपन मा ही बणी गये कृष्णा—
नन्दू को ग्वैरे[२], गायों को गोपाल।
गऊ चुगौंदू मोहन, वांसुली बजौंदू।
चला भाई ग्वैर छोरौं, मथुरा वृन्दावन,
बांसुली बजौला, कौथीक[३] करला।
तब बजाई कृष्णा त्वैन मोहन मुरली,
तेरी मुरली सुणीक कामधेनुन चरणो[४] छोड़याले,
सभी ग्वैर छोरा मोहित करयाला।
कुन्दन शैर मंग तेरी मुरली सणी,
रुक्मणी रोज रंदी सुणन लगीं।
कोंपलू[५]-सी फल-रुक्मणि सोना की-सी टुकड़ी।
ताल-सी माछी,[६] सरप की-सी बच्चो।
सुण्याले तैंन मुरली अनबन[७] भांती,
मन होइगे मोहित, चित चंचल।
भौं[८] कुछ होई जाई मैंन मुरल्याक[९] जाण।
एसी एकी बांसुली अफू[१०] कनू होलू!
पाणी की-सी बूंद की, नौण[११]-सी गोंदकी,
तै दिन वा रुकमणि लैरेन्दी[१२]-पैरेन्दी,
चलदी चलदी आइगे अघबाट।

१. कुठार (भंडार), २. ग्वाला, ३. विनोद (कौतुक), ४. चरना, ५. कोंपल, ६. मछली, ७. असंख्य, ८. चाहे, ९. मुरलीवाला, १०. अपने आप, ११. मक्खन, १२. सजीधजी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

कृष्ण भगवान इना रैन छली,
बीच बाट मां नदी दिने उपजाई।
अफू ह्वैगे भगवान धुनार[1]-सी लम्बो।
लुहार-सी कालो, भाड़ को-सी मुछालो[2]।
तबरेक रुकमणि भली बणीक बांद
तख[3] मुंग[4] एक बोलण लैगे—
हे धुनार छोरा तराई[5] दियाल[6]।
तराई क्या लेण छोरा तराई बोल्याल ?
तराई क्या बेल्ण मैंन, भौं कुछ[7] दियान।
जनानी की जात, डोंडा[8] मा बैठीगे,
आधी गाड बीच कृष्ण भगवान्
डोंडू खड़ू[9] करयाले, पाणी मा छोड़याले।
हे धुनार छोरा, मैं पल्या[10] छोड़ गाड।
पाल्या छोड़ लिजौलू त्वे, पैले[11] तराई दियाल।
कनु छै तू धुनार, अधबीच तराई तू लेन्दू,
हजारू को धन दिउलू करोड़ू की माया।
सुण सुण रुकमणी हजारू को धन,
नी मांगदू, न करोड़ की माया।
जरा रुबसी[12] घीचीन[13] राणी मैं भेना[14] बोल्याल।
हि रि[15] रि कैक डोंडू लैगे बगण[16],
डोंडू बगण लैगे, दिल लैगे डिगण।
तै दिन रुकमणि राणी रोंदी छ तुडादी[17],
ये काला औधूत तैं मैं भेना नी बोलौं।
एक दिन संसार न मरी जाण,
त्वै क तैं मैं कभी भेना नी बोलौं।
डोंडा का डांड तैन ढीलो करीले,
रुकमणि को शरील पंछी-सी उड़ीगे।

१. नदी पार कराने वाला, २. लकड़ी, ३. वहाँ, ४. पर, ५. पार करा, ६. दे, ७. जो-चाहे, ८. नाव, ९. खड़ी, १०. पार, ११. पहले, १२. सुन्दर, १३. मुँह से, १४. जीजा, १५. हिर हिर करके, १६. कहने, १७. बिलखती।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ऐथर देखदी पेथर राणी,
हे भेना ठाकुर मैं पल्या छोड़ गाड ।
गर्वियों का गर्व तोड़या त्वैन,
धजियों[1] का तोड़या धज[2] ।
तब भगवान न हैको छदम धारे,
बणी गए प्रभु बांको चुरेड़[3] ।
हाथ मा धरयालीन[4] चूड़ो अनमन भांति ।
चूड़ी पैरयाला तुमू स्वामियों की प्यारी,
राजमती[5] चूड़ी ह्वोली, भानुमती[6] छेको[7] ।
ढलकदी[8] छणकदी[9] रुकमणी औंदी,
बोल रे बोल चुरेड़, चूड़ियों को मोल ?
तै दिन भगवान त्वैन वीं को हात पकड़याले,
राजौं की कन्या छई, क्या बैन बोदी :
हजारू को धन दिऊलू, करोड़ू की माया ।
हे चुरेड़े तू मेरो हात छोड़ दे ।
पैली मेरी चूड़ियों को मोल दियाल ।
सुण्याल रुकमणि, तू मैं कू—
रुबसी घीचीन भेना बोल्याल ।
नौनी रुकमणि रोंदी छ तुड़ांदी,
हेरदी छ देखदी राणी तब बोदी—
हे मेरा भेना, मेरो हाथ छोड़याल !
तब ऐगी रुकमणि मथुरा वृन्दावन,
देख कना ऐन गोकुल का ग्वैर ।
सुण रुकमणि बोद कृष्ण भगीवान्—
बिना ब्यौ राणी त्वै नी रखदू ।
कठा[10] होई जावा मथुरा का ग्वैरू[11],
ई का साथ मेरो ब्यौ करी देवा ।

१. शान वाले, २. शान, ३. चूड़ीवाला, ४. रख दी, ५. राजकुमारियों, ६. सूर्य, ७. चमक, ८. झूमती हुई, ९. छनछनाती, १०. इकट्ठा, ११. ग्वाले ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

ग्वैर छोरा क्वी[१] बण्या बामण, कुई औजी[२],
घैंट्या[3] केला कुलैं[४] का स्तंभ,
तै दिन तौंकू ब्यो होई गये।

× × ×

पूतना रागसेण रदी कंस की वैण[५]।
कना वैन बोदू तब दुष्ट कंगस--
कु जालू गोकल मेरा बैरी मार्‍यालो ?
तब पूतना रागसेण बोदे--मैं जौलू गोकल मां !
तू मेरा वैरी मारी औली त पूतना,
त्वै मैं आदा राज द्योलो।
तब पूतना रागसेण तयार होये।
नहेन्दी व धुयेन्दी तब वा,
स्यूंद श्रृंगार तब सजौण लगदे।
तब धरे पूतनान मोहनी को रूप,
अपनी दूधियों मांज विष चारियाले,
रमकदी छमकदी जांदी पूतना रागसेण,
रौड़दी-दौड़दी गगे गोकुल का राज।
यसोदा का पास जांद मुंडली नवौंदे।
तब पूतना रागसेण कना वैन बोदे--
मैंन सूणे दीदी तेरो नौनो होये।
उंडो दे दी दीदी अपणा नौना,
तुमारो बालक दीदो, भलो छ प्यारो।
कृष्ण भगीवान गोद मा गाडदे।
तब पूतना रागसेण लाड करदे,
हाती खुटी फलोसदी, घीची[६] छ पेंदी[७]।
कृष्ण भगीवान तब दूदी पिलौंदी।
हे भगवान जी दीनू का दयाल,
नरु का नारैन भक्तू का राम।

१. कोई, २. बाजे बजानेवाले, ३. खड़े किये, ४. चीड़, ५. बहन, ६. मुँह, ७. प्यार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हे बिष्णु तब दूदी पेण लैगे,
हे देव जी विष तेरा घिचा पर
अमृत त बणीगे ।
पूतना हेरदी रै यशोदा को बालीक,
अभी मरदो तभी छ मरदो ।
निराशे गए वा जब दूद्यौं दूँद नी रयो !
तब बोलदे—हे दीदी यशोदा,
अपणा बालक तू फुँडो[1] गाडीयाल[2] ।
तब विष्णु भगवान वीं की छाती पर चिपटीन
पूतना को सारो खून चूसयाले !
तब पूतना बणैयाले आम जनी गुठली,
बांज जनो बक्कल !
बराँदी[3] तैं तरांदी[4] पूतना रागसेण,
भगवान वा मारी तिने ।

× × ×

छ्या धेनु का चरैया हे मोहन,
ह्वैल्या द्वारिकानन्दन हे मोहन ।
छ्या वसुदेव का जाया हे मोहन,
ह्वैंल्या दंवकी का लाडा हे मोहन ।
छई दई को दूपकी, हे मोहन,
ह्वैल्या दूद की बिराली हे मोहन ।
त्वैकू बार मास होळा हे मोहन,
बोण घोर से प्यारा हे मोहन ।
तेरी नौसुऱ्या मुरुली हे मोहन,
एक भौण[5] मा मिलौंद हे मोहन ।
औदू बाँसुली बजौंदू हे मोहन ।
यूँ चीड़ू की बणायों हे मोहन,
तेरी बार बीसी धेनु हे मोहन,
ओड़ू नेड़ू औंदन, हे मोहन ।

१. वापस, २. ले ले, ३. बड़बड़ाती, ४. बिलखती, ५. लय ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

त्वै विना ग्वैरू की, हे मोहन,
सभा नी शोभदी हे मोहन ।

× × ×

चला ग्वाल बाल भायों, तुम खेला गेंदुवा[१],
सोना को गेन्दुवा मेरो, विष्णु पटन मढ़्यूँ छ ।
सोना को बण्यू छ, चांदी का घुंघर ।
हे प्रभु सोवन गेन्दुवा तेरो हाथ नी लियेंदू,
भ्वां नी धरेन्दू !
तब खेलण जाँदा सब कुंज वन मा,
कुंज वन मा खिल्या बार भाँति का फूल ।
अनमन भाँति की औंदे फूल की वासिनी,
भौंरा छन गुँजणा, मारी[२] रूणाणी छन,
कि अनमन भाँति की केसर लेला ।
सारा कुंज वन मा खेल गेन्दुवा ।
व्रज की गुजर्यों संग खेल गेन्दुवा !
छट छुटे गेंदुवा जमुना मा गिरिगे ।
वीं गैरी[३] जमुना माछीन[४] धूल्याले[५] ।
तब विष्णु भगीवान धावड़ी[६] लगौंदा ।
ग्वाल बाल सब घर बोड़ी ऐन,
जिया को बालीक जमुनी छाला छुटिगे ।
तब जिया जसोमती इना बैन बोदी—
हे प्रभो, मेरो बाला जमुना छाला रैंगे ।
सबूका बाला घर ऐन, मेरो कृष्ण नी आयो ।
जागदी रै गये त्वै स्या राणी सत्यभामा ।
काली नाग रंदो तैं गरी जमुना,
हे मेरा कृष्ण नाग डसी जालो ।
कृष्ण भगीवान इना रैन बली,
गाडी दिने गेन्दुवा, साधी लिने नाग !

१. गेंद, २. मधुमक्खी, ३. गहरी, ४. मछली ने, ५. निगल ली, ६ आवाज़ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

भेंटद भाँटद छन गेन्दुवा कृष्ण भगवान,
अनमन भाँति को खेल लांद गोविन्द।

× × ×

ओड़ू[1] नेड़ू ऐगे कातिक मास,
कातिक मास बगवाली[2] ऐन, जोन्याली[3] रात!
बग्वाल्यों का खेल मधुवन मा,
रचला रास राधिकोंका संग।
सात सई[4] गुजरी, आठ सई राणी,
नौ सई आछरी[5] तेरी मोहन!
रूप को रौंसिया छई, फूलू को हौंसिया।
राधिकौंका संग खेल बोल,
करदो रास पोथल्यों[6] को ख्याल!
तब गुजरी बोदीन, मोहन मायादार,
हाथी मिलैक खेल लौला।
तब मोहन नारेणन मोहन रूप धरे,
मोहन रूप धरे गाडे मोहन मुरली!
तब सभी राधिका राम, मोहित होई गैन,
कि चित होइगे चंचल देव्यो,
मन होइगे उदास।
ये मुरल्यान हमारो मन मोहित देव्यो।
तब गुजर्यों का साथ हाथी मिलैक,
नाचदो मोहन कालिया नाच।
जोन्याली रातू मा तब पूरणमासी की
खिलदी जोन छन कई मधुवन मा।

× × ×

चल दीदी[7] भुल्यों, ल्यूला असीनान,
कठा होई गैन राम जी की गुजरी।
राम जी की गुजरी खट की आछरी।

१. पास, २. दिवाली, ३. चाँदनी, ४. सौ, ५. अप्सरा, ६. चिड़ियाँ, ७. छोटी बहन।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

चला दीदी भुल्यों जमुना का छाला,[१]
तब तउँ देव्योंन शृंगार सजाये,
दांतुड़ी मंजैन जई जसो फूल,
स्यूंदोली[२] गाडीन[३] देव्योन धौली[४] जसो फाट,
हाथ की पौंछी पैरीन, गला की कंठी,
रमछम बाजेन देव्यों, खुटौं[५] का घूंघर।
रमकदी छमकदी गैन वीं नीली जमुना,
वीं गैरी जमुना देव्यों, जमुनी छाला।
जमुनी का छाला देव्यों, ल्यूला असीनान !
कपड़ी गाड़ीक देव्यों, भुयां[६] धरी देवा,
नंगी ह्वैन गुजरी, जल मा गैन।
तबारी ए गैन विष्णु भगवान,
नंगी गुजरी देखेन तौन,
देखे कपड़्यों को ढेर जमुनी छाला !
लीला पुरुष छा भगवान,
कपड़ी उठैक डाला चढ़ी गैन।
मोहन नारेण गाड़े तब मोहन मुरली,
तीन ताल मुरली आज सुणौंदा।
नंगी गुजरियों सूणे मोहन बांसुली,
चकोर की बच्ची सी तपराण[७] लै गैन।
तब देखे डाला मा तौन नारैण,
हे कनो भाग ह्वैलो ! शरम खांदीन।
तब धरे देव्योंन दूद्यों[८] मती[९] हाती[१०]
ओ नंगी गुजरी जल मां बैठेन।
हाथ जोड़दा मोहन, माथो नवौंदा,
हमारा वस्तर दी द्या, रख्याला लाज।
मुलमुल हैंसदा तब मोहन छलिया,

१. किनारा, २. मांग, ३. निकाली, ४. धौली गंगा, ५. पैरों; ६. जमीन, ७. तड़पने, ८. स्तन ९. पर, १०. हाथ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रतन्याली आंख्योंन मोहित ह्वैग्या।
क्यक गुजऱ्यों, नंगी गै छई जल मा?
आज बटी [1] देव्यों नंगी न नह्यान!

× × ×

सारा गोकुल वासो करद छ्या
तै इन्द्र की पूजा।
कठा होई गैन तब सब स्ये
कनो बोद तब इन्द्र को बालक–
केकू होलू जाज यो हल्ला?
आज गोकुल का लोक,
सुण मेरा बाला करदा इन्द्र की पूजा।
तब बोलदू कृष्ण भगवान–छोड़ा इन्द्र की पूजा।
आज से करला गोवर्धन पूजा।
लाया गए पूजा को समान,
थालू परात मा मेवा मिष्टान,
षट् रस मीठ रस भोजन,
बार पकवान, बाबन व्यंजन।
घी दूध नैवेद, दीप, धूप, दान,
जौ तिल हवन, पिठैं टीका चंदन।
तब पूछदू कृष्ण भगवान:
इन्द्र क्या कभी तुम दरसन भी देंद?
तब बोलदा गोकुल का लोक—
नी देन्दू इन्द्र, दर्शन नी देन्दू।
तब तुम इन्द्र की पूजा छोड़ा हमेशाक
करी तब त्वैन लीला इनी कृष्ण
गोबर्धन फूटी, उपजे नारैण [2],
जौंका गात पीताम्बर,
भुजा मा मणिबन्ध,
सिर मोर मुकुट, हाथ बांसुली।

१. से, २. नारायण।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

दर्शन देंदू दीनों कू दयाल,
मगन होई गैन गोकुल का वासी।
तब इन्द्र माराजा इनो बोद:
ब्रज वासियोंन आज मैं पूजा नी लगाए।
जा मेरा मेघो, ब्रज मा जावा, प्रलै मचावा!
तबरी ही गरजीन मेघ घनघोर,
बिजली कड़के, सरग गिड़के,
बज्र तडातड़ तड़केन।
कंपी गये नौखंड धरती थर थर
हा हा मचीगे तै गोकुल मा,
हे कृष्ण तिन यो क्या करे?
कृष्ण भगीवान् तब बोलदा बैन–
गोकुल का लोगू कायरो नी होणू।
तब ऊन गोबर्धन आंगुली मा धरयाले!
गोकुल मा नी पड़े पाणी को छीटो।
तब सोचदो इन्द्र क्या ह्वै ह्लो आज?
क्या तै गोकुल ह्वैगे कृष्ण अवतार!
तब इन्द्र माराजन साथ लिन्या,
तेतीस करोड़ देव, कामधेनु गाई
चलदा चलदा ऐग्या गोकुल मांज।
कृष्ण भगवान गाई चरौंदा छया,
बंसी बजौंदा छा, पृथी मोहदा छा।
कुछ ग्वाल आग छा, कुछ छा पीछ,
गौऊन घिर्यां छा, कृष्ण भगीवान।
तभी करी इन्द्रन गौ को स्वरूप,
बार बार तब परिक्रमा करदू।
ज जै कार करदा पंचनाम देव,
इना रैन कृष्ण भगवान,
गर्वियों गर्व चलैन,
छलियों का छल!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

सिदुवा

सिदुवा और विदुवा दो भाई थे। वे मंगू रमोला के बेटे थे। सिदुवा परमवीर था। उसने अनेक साहसिक कार्य किये। कृष्ण का वह अनन्य मित्र था। आज भी गाँव-गाँव में उसका नाच होता है।

तिन मथुरा मा जनम लीने, विष्णु मेरा करतार,
तिन देवकी का गर्भ लीने, मेरा अवतार।
तुम द्वारिका का धनी होला, मथुरा का ग्वैर[1],
गायों का गोपाल होला, गोप्यों का मोहन।
तुम तैं प्यारी होली, मधुवन की कुँज स्ये,
तुम तैं प्यारा होला, जमुना का त छाला[2]।
तब सुपिना मा देखे कृष्ण, गंगू की रमोली,
रौंत्याली रमोली[3] होलि, तौं ऊँचो डाँडयों[4] मा।
बाँज की वणीई[5] होली, तख होली कुलाई[6],
अनमन भाँति का फूल, अनमन भाँति की वासिना[7]!
दूरू फैल्याँ सौड़[8] होला, होलो ऊँचो शतरंज[9]!
देखे भगवानन बाँकी रमोली लागे मन!
तब इना बैन बोदा साँवल भगोवान्--
हे गंगू रमोला, मैं तेरी रमोली औंदू।
द्वारिका नारैण छौं, मैं तेरो कुलदेव,
जगा दियाल मैं, तेरी रमोली लग्यो मन।
मैं नी माणदू कै सणी[10], देवता सुण्याल[11],
गंगू रमोलो छऊँ मैं, मेरा अग्वाड़ी[12] क्वी नी!
समझलू देवता त्वै, नितर रिङ्वा[13],
जु रागसीण मारी देलो, सेम छ वींको वासो।
मैन हरणाकंस मारे, मैन असुर संहारया,
रागसीण मारणी गंगू, मेरा अग्वाड़ी क्या छ?

१. ग्वाला, २. किनारा, ३. रमणीय, ४. पहाड़ियों पर, ५. जंगल, ६. चीड़, ७. सुगन्ध, ८. मैदान, ९. शतरंग (शिखर), १०. किसी को भी, ११. सुन ले, १२. आगे, १३. घुमन्तू।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

कला पूरा छयो कृष्ण, जसीलो देवता,
मारी दिन रागसीण, चीरे चारी दिशौं मा ।
तब तई सेम मुखम, तेरा बजदा घाँड,
दस घड़ी सजा[1] होन्दी, बीस घड़ी की पूजा ।
सिदुवा लिजाँद डौंरू-थाली,
कृष्ण लिजाँद शंख ।
चलदऊ सिदुवा जौला[2], पंडौंऊ की जैन्ती[3] ।
रौड़दा-दौड़दा गैन, तब खैट की खाल[4] ।
खैट की खाल गैन, चौपता चौराड़ी ।
चौपता चौराड़ी गैन, कोंकू[5] डाली छैलू[6] ।
तब कृष्ण भगीवान, कना बैन बोदान :
कूंकू डाली नीस सिदुवा, छम धड्याली[7] लौला ।
तब अनमन भाँति की, तौन धड्याली लगाये ।
खैट की आछरी[8] तब देव्यो, कना बैन बोदीन,
खैट की खाल देव्यों, कू होलू धड्याल्या ?
चला दीदी भुल्यों, धड्याला भू जौला ।
आज की धड्याली सूणी, मन ह्वैगे मोहित,
चित होइगे चंचल ।
तब निकलीन भैर[9], आछरियों की टोली—
अगास की गैणी छै वो, धरती की चाँदना ।
रूप की जोत छई, काँठ्यों को उद्यौऊ ।
धाड थाला मू जैक, देव्यों रास रचीयाले,
अनमन भाँति को, लगे रास मंडल ।
रूप की छलार पड़े, शीशू चमलाणी ।
सिदुवा बजौंद डौंरू थाली,
कृष्ण करद अनमन, भाँति को नाच

१. सन्ध्या, २. जायेंगे, ३. राज्य, ४. चोटी, ५ कुंकुम, ६. छाया, ७. डमरू-थाली बजाना, ८. अप्सराएँ, ९. बाहर ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

चन्द्रावली हरण

द्वारिका मा लै गैन कृष्ण घणी[1] सभा,
कबीर कमाल बैठ्या, नारद मुनि-रिषि ।
कछड़ी[2] बैठी गैन कृष्ण का सूरदास
अंतरजामी कृष्ण को अंतरध्यान होइगे !
सुकली[3] कोठड़ियों लगी सुतरी[4] पलंग,
सुतरी पलंग गेलुवा[5] विछोणा ।
तख कृष्ण बैठी छई सत्यभामा राणी,
दूध केला, छई राणी रुकमणी ।
राणी रुकमणी प्रभो, इना बैन बोलदी—
तुम बतावा बांदो[6], प्रभु मैं बतौलू बैखू[7] ।
द्वारिका नारैण कृष्ण पूछण लैं गैन—
बतावा रुकमणी बैखू मा बैख
तुम बतावा बैखू, मैं बतौलू बांदू ।
हां बैखू मा[8] बैख होलू सांवलो नारैण !
मैंन बतैन बैख प्रभु, तुम बतावा बाँदू ।
बांदू मा की बांद इन्दर की परी ।
मैं सी रूपवंती सी न भुंच्यान[9] ज्वानी[10],
सबू से रूपवंती मेरी बैण[11] चन्द्रावली ।
चन्द्रगढ़ मा रंदी बैण चन्द्रावली,
तैंका रूपन सूरज धुमैलो[12],
रूप की बातुली[13] होली बाली चन्द्रावली ।
तब समझलू मैं तुम रौलू को रौतूलो,
जब बेवैक[14] लाला मेरी बैणी चन्द्रा ।
द्वारिका ठाकुर खरो दीलो आणो[15] ।
तब मेरा नारैण कृष्ण पूछण लैगैन—

१. बडी, २. सभा, ३. सफेद, ४. साफ, ५. गद्देदार, ६. सुन्दरियाँ, ७. मर्द, ८. में, ९. भोगना, १०. जवानी, ११. बहन, १२. धूमिल, १३. बाती (ज्योति), १४. ब्याह कर, १५. ताना ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

बतावा रुकमणी तुम खरो मनसूबो,
कनकैक बिवै ल्यौण तेरी बैण चन्द्रा।
तुम बणा भगवान बद्री[१] का फेग्वाल[२],
तब जावा नारैण चन्द्रावली गढ़।
अपणी चाडी[३] को कृष्ण ब्रम तिलक पैरी,
कृष्ण तब बणी गैन फग्वाल।
मातमी फेग्वाल छऊँ, टीका पैऱ्याला चंदन।
सूणी चन्द्रान बोलण लैगे।
जा दू स्वांरा[४] चेली[५], टीको लौ परसाद!
तब जांदी स्वांरा चेली फेग्वाल का पास,
तेरा हात चेली, मैं टीकू नी देन्दू!
टीको-परसाद द्यूलो राणी-बौराण्यों[६],
टीको-परसाद द्यूलो पदों का डोलौं[७]।
स्वांरा चेली जांदी चन्द्रावली का पास,
नी देन्दू फेग्वाल वो टीको चन्दन।
राणी चन्द्रावली तब बोलण लै गैन:
वो फेग्वाल नी छ, वो छ द्वारिका नारैण।
द्वारिका भेना की तेरी जोई[८] राँड ह्वान।
तब मेरा नारैण ऐगे[९] श्रवण[१०] द्वारिका!
बतौवा रुकमणी हैकौ मनसूवा,
कनकैक[११] बेवैक[१२] ल्यौणे तुमारी बैण चन्द्रावली?
तुम धरा नारैण छोरा[१३] को भेष,
चन्द्रावली का सात तुम नौकर होई जावा।
गरीब गता[१४] करे कृष्णन, चीरी[१५] लत्ता[१६]।
तब जांद कृष्ण चन्द्रावली का गढ़।
मैं गरीब छौरा छौं क्वी नौकर धऱ्याला।

१. बदरीनाथ, २. पंडित (पंडा), ३. लिए, ४. स्वारां (नाम), ५. दासी, ६. बहूरानी, ७. बहुएँ, ८. स्त्रियाँ, ९. आ गये, १०. सोने की, ११. किस प्रकार, १२. व्याह कर, १३. लड़का, १४. दशा, १५. फटे, १६. कपड़े।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

इनू पूछद सुँवार, तू नयो छोरा छई,
तिन[1] तनखा क्या लेण ?
हजार बैठण की ल्यूलो, हजार उठण की ।
इनू पूँछ सुँवार, तिन काम क्या देण ?
पेन्दो[2] बाछलो[3] न पकड़ौं,
रोन्दो बच्चा नी थामौं ।
नौकर छोरा नी यो, यो छ द्वारिका को भेना ।
द्वारिका भेना, तेरी जोई रांड ह्वान ।
तब कृष्ण भगवान निराश ह्वैक,
लुबड्याँदी[4] घौणी[5], तिरछी मोणी[6],
श्रवण द्वारिका लौटीक आई ।
हे रुकमणी, मेरी कनी फजीती होई !
कनुकै[7] बेवैक[8] लयौण राणी चन्द्रावली ?
दया ऐगे तब राणी रुकमणी,
तुम धरा विष्णु रुकमणी को रूप ।
तु जावा नारैण त चन्द्रागढ़,
चन्द्रावली मा बोल्यान[9] तुम रोइक—
तेरो भेना[10] चन्द्रा, स्वर्गवासी ह्वैन !
आज भुली[11] चन्द्रावली तेरी दीदी राँड ह्वैगे ।
दणमण[12] आँसू धोल्यान[13] तुम,
तोई छोड़ी भली, कुई आसरो नी मेरो ।
अपणी चाड़ी[14] को भगवान धरे रुकमणी को रूप,
स्वाग[15] उलारे, वणी गैन रांड !
पहुँचीने भगवान चन्द्रा का भौन[16] ।
छोड़दे पथेणा[17] नेतर[18], रांग जसा बुंद,
आज भुली चन्द्रा, मैं रांड होई गयूं ।

१. तुमने, २. दूध पीता, ३. बछड़ा, ४. लटका, ५. सिर, ६. गर्दन, ७. किस प्रकार, ८. ब्याह कर, ९. बोलना, १०. जीजा, ११. छोटी बहन, १२. टपटप, १३. गिराना, १४. लिए, १५. सुहाग, १६. भवन, १७. रोते, १८. नेत्र ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

तेरो भेना कृष्ण स्वर्गवास ह्वै गैन।
सेवा लगौंदी बैणी तैं तब चन्द्रावली,
लीगे गुप्त कोठड्यों सुतरो[१] पलंग।
गेलम[२] बिछौणा, सुकला भौन।
रातुड़ी[३] समै[४] होय संझा की बेला,
होई गये देवतौं की देवा[५] देन्दी बगत।
मेवा मिष्टान भोजन खलौंदी वा,
सेई गैन तब कृष्ण भगवान।
चन्द्रावली वीं रात नींद नी आई,
देखदी रै वा रुकमणी बैणी।
तबरेक[६] वीं को ढक्याण[७] फरके—
ढबरियाली[८] पीठ देखी वीन कंकरियालो[९] माथो,
जजरियालो[१०] गात देखे नौन्याली आतमा।
देवी चन्द्रावली का मन सुभा[११] पड़ीगे।
यात होली आतमा बैख कों,
देवी चन्द्रावलीन ससूं को रूप धरे।
आफू तब कृष्ण भौंर रूप होइगे।
चन्द्रावली न ससू[१२] को रूप छोड़े,
पोथला[१३] को रूप धरे।
अगाड़ी[१४] पोथली भागदे, पिछाड़ी द्वारिका नारैण भौंर[१५]!
चन्द्रावली पौछीगे[१६] नारैण जमुनी[१७] छाल,[१८]
चन्द्रावली बणी गए पाणी की माछी,
कृष्णन तबारे ही ओद[१९] को रूप धरियाले।
वीं जमुना मां ओदन मछी पकड़ीयाले।
हे कृष्ण मच्छी पकड़ी लैगीन छाला।

१. साफ, २. गद्देदार, ३. रात, ४. समय, ५. दीपदान, ६. तभी, ७. ओढ़ना, ८. पुष्ट, ९. चौड़ा (चमकता) १०. खुरदरा, ११. शक, १२. खटमल, १३. पक्षी, १४. आगे, १५. भौंरा, १६. पहुँच गयी, १७. यमुना, १८. किनारे, १९. मछियारा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तब भगवान प्रकट होई गैन,
मोर मुकुट पैरे, गाडे[1] मोहन मुरली।
देवी चन्द्रावली देखदी ही रै गए।
तब जंदेऊ[2] लगौंदी स्या—
अपण भेना कृष्ण।
तब सजे भगवान औंला[3] सरी डोला।
पंचनाम देवता ऐन, देवी पार्वती ऐन,
कुन्ती, द्रोपदी मांगल गांदी !

ब्रह्मकौंल

प्रभो, जौं[4] चरणू से गंगा पैदा होई,
सोई चरण सुमिरण करदौं।
जु चरण रैन नन्द का आंगण,
जु चरण रैन जसोदा की गोदी,
सोई चरण सुमिरण करदौं।
प्रभो, एक दां कृष्ण भगवान
द्वारिका मा बैठीक खेलणा छा पासो[5]।
छुयौं[6] पर छुई ऐन[7], नारद जी न बोले:
हिमाचल कांठा[8] मा जौलाताल
राजकुमारी रंदी तख एक मोतीमाला !
सोना का पासा छन वीं मू,
चाँदी की छन चौकी।
रूप की आछरी[9] छ वा दिवा[10] जसी[11] जोत,
रघुकुंठी घोड़ी साजी वैन[12],
लाडलो बरमी पौंछे[13] कृष्ण का पास।
बोल बोल दिदा[14], क्या काम होलू मैकू ?
तब बोलदा कृष्ण भगवान मन की बात—

१. निकाली, २. जयदेव (नमस्कार), ३. आंवला, ४. जिन, ५. पांसा, ६. बात, ७. आयी, ८. चोटी, ९. अप्सरा, १०. दीप, ११. जैसी, १२. उसने, १३. पहुंचा, १४. बड़ा भाई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

त्वै[१] जाणू होलू[२] बरमी हिंवचल काँठा,
सोना का पासा लौणन, चांदी की चौकी !
जौलाताल रैंदा[३] बल मोतीमाला,
जीतीक लौण भुला[४] मोतीमाला मैकू तई।
तब चलीगे बरमी हिंवचल काँठा,
सत होलू सत विमला रौतेली,
सत पीनी होली मैन सहस्त्रधारी दूदी,
मेरी रगुकुँठी घोड़ी गगन चढ़यान।
तब गगन मा चढ़ीगे, अगास उड़ीगे,
रघुकुँठी घोड़ी वा वैकी।
पौछीगे बरमी हिंवचल कांठा !
जौलाताल मू वो नहेण लैगे।
तब जांदीन चेली[५] पाणी भरण,
तब आई गए सौंली शारदा—
रूप की प्यासी छै वा मोतीमाला की दासी !
सौंली शारदा तब दृष्टि घुमौंदी,
देखीले तन लाडलो बरमी—
साँवली सूरत वैकी, मोहनी मूरत।
रौड़दी-दौड़दी गै[६] बल सौंली शारदा,
मोतीमाला का त पास—
अंगूठी गैणुवा[७] जीं का, बाल काली बादुली[८]।
चीणा[९] जसी चम[१०], फ्यूँली[११] जसो फूल,
नौण[१२] सी लुटकी[१३], हिसर[१४] सी गुन्दकी,
मोतीमाला होली बांदू[१५] मां की बांद,
चांदू मा की चांद होली, कृष्ण त्वई लैख[१६]।

१. तुम्हें, २. होगा, ३. रहती है, ४. छोटा भाई, ५. दासी, ६. गयी, ७. तारे; ८. वादल, ९. चीणा (चावल जैसी आवाज), १०. चमकती, ११. फ्यूंली, १२. मक्खन, १३. टिकिया, १४. हींसर (एक फल), १५. सुन्दरी, १६. लायक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रूप का रसिया छया कृष्ण, फूलू का हौंसिया[1] ।
रसीलो ज्यू[2] भगवान को रसपैस[3] गए,
पूछे ऊन एक एक करी सब ज्वान[4],
पर वख जाणक कैन हुँगारो[5] नी भरे ।
तब रगड़े कृष्णन बदन अपणो,
पैदा होई गए कनी भौंरों की टोली ।
भेजीन तब भौंरा हिवंचल काँठा,
ब्रह्मकोट रंदो छयो लाडलो ब्रह्मकौंल ।
बथौं सी उड़ीन भौंरा, अगास चढ़ीन,
घूमदा घूमदा गैन ब्रह्मकौंल का भौन ।
बठीन वो देणी भुजा मा बरमी को,
जाणीयाले तब वैन बड़ा भाई को रैबार[6] आयो ।
तब तैयार होन्दू द्वारिका जाणक,
हे मेरी जिया[7] विमला सहस्त्रधारी,
मैंन जाण द्वारिका, मैं कू आयूं हुकम छ !
नि जाणू बेटा, दखिण द्वारिका,
वीं रतन द्वारिका रंदो कालो नाग ।
लाडला बरमीन बल एक नी माणी,
मरण बचण जिया, मैन द्वारिका जाण ।
सुण सुण मोती, पीफल चौरी[8] देख,
सौंली[9] सूरत कू कुई चौरी मू बैठ्यूँ छ ।
रतन्याली[10] आँखी छन वेकी, पतन्याली फिली[11] ।
मोतीमाला तब देखी बरमी को रूप :
जा दू जा दू शारदा वै लाऊ बुलाई ।
शारदा तब ऐगी बरमी का पास,
छेद[12]-छेदी पूछदी तब वैसे बात ।

१. शौकीन, २. मन, ३. पसीज, ४. युवक, ५. हाँ, ६. संदेश, ७. माँ, ८. चबूतरा, ९. सांवली (सुन्दर), १०. लाल, ११. जोड़ (भुजा), १२. कुरेद ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

मैं विमला को जायों[1] छऊँ, जाति को जादव,
मिलण आयूँ मैं भाभी मोतीमाला।
मोतीमाला कन्या छ कुँवारी,
तीन सौ साठ राजा ऐन आज तैं,
कुछ हारी गैन, कुछ मा-या गैन।
बोल बोल बरमी, तेरी वा भाभी होई कनाई[2] ?
सौंली शारदा मुलकुल[3] हैंसण लैगे :
केकू[4] आई होलू छोरा, वैरी का वदाण[5],
वैरी का वदाण आई, काल का डिल्याण।
फ्यूँली को फूल देखी वीं दया ऐगे।
तब बोलदी शारदा: जिया को लाडलो होलू तू,
अगास को गैणो होलू तू, कै दिल को फूल।
राणी मोतीमाला छ पांसा की शौकी,
तिन[6] हारीक बरमी मा-या जाण !
पर जु बचणू चांदू[7] त मेरी बात सुण्याला,
जैं[8] चौकी मा बिठाली, वीं मा न तू बैठी।
तब सौली शारदा ली गए वे मौती का भौन।
सेवा मानी सेवा, भाभी मेरी मोतीमाला।
मोतीमाला न उठीक बैठाये बरमी,
बैठीक जिमाये खटरस भोजन।
खिलैक पिलैक तब वा बोलण लैग—
सुण्याल बरमी जरा पांसुड़ी[9] खेल्याल।
गाडीन वींन चांदी का चौपड़, सोना की पाँसुड़ी !
अपणी चौकी गाडे[10] वींन[11], बैठी गए,
बैठैयाले बरमी हैका[12] चौकी पर।
तब लाडलो बरमी पाँसा दऊ[13] देन्द—
पैला दऊ हारिगे बरमी, रघुकुँठी घोड़ी,

१. बेटा, २. कैसे, ३. मंद-मंद, ४. क्यों, ५. देश, ६. तुमने, ७. चाहता, ८. जिस, ९. पाँसा, १० निकाली, ११. उसने, १२. दूसरी, १३. दाँव।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

तब हारीन बरमीन कानू का कुण्डल,
तब हारीन बरमीन हाथू का मणिबंध।
हाथू का मणिबंध, गात का बस्तर।
तब छूटिगे बरमी, खाली मास-पिंड।
माता की बोलीं तब याद औंदी।
कैं घड़ी मां पैटी[1] होलू मैं ये हिंवंचल कांठा,
प्रभू ई विपत से मैं आज कू बचालू?
याद आये तबारी शारदा बोलीं,
बोले बरमीन: भाभी मैं तीस लैगे।
जादू मेरी सौंली पाणी लौ-मोतीन बोले
तब मुँडली[2] ढगड्योंद[3] लाडलो बरमी,
तू पिलौ भाभी अपणा हाथ पाणी,
चेली[4] को लायूँ पाणी मैं नी पेन्दो।
तब जाँदी मोतीमाला पाणी पन्यारी[5],
लाडला बरमी क पाणी लौंदी[6] बाँज[7] को जड्यों[8] कू।
बरमीन हार चौकी छोड़े, मोती की चौकी बैठे।
मोतीमाला लौटीक देखदी—
मेरी चौकी छोड़ बरमी, पाणी पे तू!
जगा उठा की होण या बैठा की?
मैन तब पेण पाणी, जब पांसू खेल्यान।
बबराँदी[9] छ ककलाँदी[10] मोतीमाला,
मड़ो[11] मन्यान[12] तेरो जैन धोका करे।
खेलण बैठीन दुई फेर पाँसुड़ी—
बरमीन पैला दाऊ जीतले रघुकुण्ठी घोड़ी,
कानू का कुण्डल जीतेन, तब हाथू का मणिबंध।
विजोरिया हँसुली जीती, झंझरियाली बेसर,
सोवन पाँसुड़ी जीतीले, चाँदी की चौकी।

१. चला; २. सिर, ३. हिलाया, ४. दासी, ५. पनघट (सोत), ६. लाती, ७. एक पेड़, ८ जड़, ९. बड़बड़ाती, १०. बुड़बुड़ाती, ११. मुर्दा, १२. मरे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

तब भाभी मोतीमाला खोसी[१] गए मोसी,
गात की घाघुरी छोड़े लाज का मारा।
तब सजाये वन रघुकुण्ठी घोड़ी,
चल भाभी मोतीमाला श्रवण[२] द्वारिका
मेरो भैजी कृष्ण त्वै जागणू होलो।
बाँठी छई वा भाभी मोतीमाला—
हे लाडला बरमकौंल, मैं वचन बोलदू,
विमला रौतेलो होलो, जादव जायो
जब तू चन्द्रागिरि जालो।
मेरी भुली पत्थरमाला ब्याईक[३] लालो।
तब जैक[४] मैं द्वारिका जौलू,
नितर[५] तू मेरी सात दाँ[६] टाड[७] छोरी।
बरमकौंल न सूणे त्रिया को आणों[८]
त्रिया को आणो ह्वैगे कपाल का मुँडारो[९]।
माता आणो देन्दी[१०] मैं खाणो नी खाँदो,
बाबा आणो देन्दो, मैं काम नी जाँदो।
भाई आणो देन्दो मैं बाँट नी लेन्दो।
त्रिया को आणो ह्वैगे जिकुड़ी[११] को बाण।
तब गैगे बरमी चन्द्रगिरी बीच,
तख रंद छयो गैरी नाग एक।
नागों मां कोण नाग भूपू नाग छायो।
रिंगदी[१२] अटाली[१३] छई वेकी, उड़दी[१४] डंडयाली[१५];
त्रिकूट का घाँड[१६] छया लग्याँ काँसी का घूँघर।
भौन[१७] की चारी तरफ सात छई बाड़ी[१८],
कनों भीतर जौलू सोचदू लाडलो बरमी।

१: निकाला, २. सुनहरी, ३. ब्याह कर, ४. कहीं (जाकर), ५. नहीं तो, ६. बार, ७. टाँगों के नीचे से निकलना, ८. ताना, ९. सिर दर्द, १०. देती, ११. हृदय, १२. घूमती, १३. हवेली, १४. उड़ती, १५. बैठक, १६. घंटे, १७. भवन, १८. घेरे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ज जैकार करदो, सत करदू याद त्रिमला को,
सती होली मेरी माता, साती[1] बाड़ी टपी जौलू।
तब मारे बरमीन रघुकुंठी घोड़ो थाप,
घोड़ी गगन मा चढ़ीगे, साती बाड़ी टपीगे।
पौंछी गए तब बरमो पत्थरमाला का भौन,
देखी तब वींन मोहनी मूरत साँवल सूरत
कंकरियालो माथो देखी वींन ढब्ररियाली पीठ।
मायादार[2] आंखी देखीन, बुराँस[3] को सी फूल।
नारी पत्थर माला तब मोहित ह्वे गए।
आँसुडी[4] गेरदे वा, साँसुड़ी[5] भरदे—
कै[6] राज[7] कू[8] होलो, कै दसावर[9] जालू?
यख केक[10] आयो वैरी का बदाण?
केक पंथ ग भूली, बाटो गै डूली,
कै बैरीन भरमायो, साधून सन्तायो?
तू अभी देख तेरी सौंलो सूरत,
मेरो नाग डसो जालो।
लाडलो बरमी तब मुलमुल हैंसदो—
सूण[11] सूण पत्थरमाला, मैं पंथ नी भूल्यों[12],
वैरीन नी भरमायो, साधून नी सन्तायो।
आणा[13] का ऊपर मेरी ज्वानी को विणास[14]।
ब्याईक ली जाणी मैन तू पत्थरमाला।
जबरेक[15] तेरु नाग नागलोक मां छ जायूं,
तबरेक[16] द्वारिका चली जौला।
मुलमुल हैंसदी रानी पत्थरमाला—
यू ही बल लीक यख आयी?
कायरो नी होणू बरमी, सूण सूण

१. सातों, २. प्यारभरी, ३. एक फूल (लाल), ४. आँसू, ५. साँसें, ६. किस, ७. राज्य, ८. का, ९. देश, १०. किसलिए, ११. सुन, १२. भूला, १३. ताना, १४. विनाश, १५. जब तक, १६. तब तक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

नारी चोरीक नी लि जाणी।
ठीक बोले त्वेन, अच्छा, हारी जीतोक जौलू।
लाडलो बरमी वींन पलंग बैठाये,
वजी गैन तबारे पलंग का घुंघर !
घांडू का स्वर पौंछीन नागलोक—
भिभड़ैक[1] उठे भूपू नाग—
सूणा सूणा रे नागों, मैं घर जांदो,
मेरा गढ़ मा रिपु पैदा ह्वैग।
लौट आये तब नाग चन्द्रागिरि गढ़ मा।
वेका[2] नाक को फुँकार चढ़न लैगे,
भादों को सी रवाड़ो[3] उस्कारा[4] भरण लैगे
थरथर कंपीगे बरमी, कबूतर-सी बच्चा,
छिपी गैगे वो टुप[5] पलंग मा।
हे रानी पत्थरमाला कु छ तेरो छिपायूँ ?
बतौ झट कैको आयो स्यो काल ?
हे मेरा नाग कैन[6] औणा[7] साती[8] बाड़ी[9] टपीक[10],
तेरी मति कैन हरे ?
भौं कुछ[11] वोल तू रानी पत्थरमाला,
यख मनखी की बास छ औणी।
तब नाग आणा देण लैगे—
जु मेरी चन्द्रगिरी मा छिफ्यूं रलू,
वैसणी[12] मां का सुगन्ध छन !
अइऐ बरमी छेतरी[13] को रोष,
छेतरी को रोष दूध-सी उमाल।
नी रै सके छिप्यूँ बरमी, ऐगे भैर,[14]
देखीक नाग मुलकुल हैंसदो—
हाथी का सामणे प्यूँली को फूल,

१. हड़बड़ाकर, २. उसके, ३. बाढ़, ४. उसाँसें, ५. चुप, ६. किसने, ७. आना, ८. सात, ९. घेरे, १०. लाँघकर, ११. चाहे जो, १२. उसको, १३. क्षत्रिय, १४. बाहर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

बोल बोल छोरा, किलै[1] तू आई,
कै रांडो को होये यो कुल को विणास
सूण सूण नाग, मैन तू साधण[2],
साधीक त्वै पत्थरमाला व्यैक ली जाण।
सुणीक बुरा वचन, नाग गुस्सा ऐगे,
कनो[3] पकड़ीले[4] नागन लाडलो स्यो बरमी।
बोल बोल छोरा तेरो कु छ बचौण वालो ?
सूण सूण नाग, मरी जौलू बीती,
पर वैरीक मैं बाबू[5] नी बोलूँ।
दोसरो लपेटो मारी नागन—
बोल बोल कू त्वै बचौण वालो ?
सूण सूण नाग, मैं बचौण वालो,
द्वारिका नारैण छ, कृष्ण भगवान।
गाडयाले नागन नागपाँस[6],
पड़ीगे भ्वां बरमी गेंडगू[7] सी।
आंख्यों सेंवर्ल[8] सरीगे[9], दांतु मा कौड़ी[10]।
सुपिनो ह्वैगे कृष्ण द्वारिका नारैण।
कमरी कुसाण[11] लैगे, दूदो चचड़ाण[12],
ओखी फफड़ाण[13] लैगीन माता विमला की।
आदेशू लगौंदू मैं गुरु गोरख,
बचैक लावा मेरा बरमी।
तब कृष्णन भौंर भेज्यों वीं रमोली,
तख[14] रंदू छयो सिदुवा रमोलो।
पौछीगे सिदुवा चन्द्रागिरी गढ़ मा,
छिपीगे नाग तिमंजल्या कोणी।
आदेशू लगौन्दू मैं गुरु सतनाथ,
भैर औ नाग आयो तेरो काल।

१. किस लिए, २. साधना (वश में करना), ३. कैसे, ४. पकड़ा, ५. बाप, ६. नागफांस, ७. लकड़ी का टुकड़ा, ८. काई, ९. फैल गयी, १०. कालापन, ११. टूटने, १२. दर्द, १३. फड़फड़ाने, १४. वहाँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

मात की दुहाई त्वै हे नाग,
गुरु से निगुरु ना होई ।
सिदुवा छ्यो बांको भड़[१],
एक ही चोट मा तैन नाग,
जत्ती लम्बो तत्ती चौड़ो कर्याले ।
तब आयो वो बरमी का पास,
मारे वैन निल्लाट[२] को ताड़ो[३],
कांउर की जड़ी लिल्लाट[४] थापे ।
खड़ो उठीगे तब लाडलो बरमी,
यनी जीता रया सजन पुरुष, पिरेमी[५] भगत ।
रानी पत्थरमाला तब स्यूंदोला[६] गाडदी[७],
धौली[८] जसो[९] फाट[१०] ।
वेन्दुली[११] रखदी कुमौं[१२] जसो घट[१३] ।
लाडला बरमी की सजीगे रघुकुंठी घोड़ी,
बजीन ढोल[१४] दमों ब्यौ का ।
चलीगे पत्थरमाला को डोला, बुरांस जनो फूल,
मोतीमाला न भी पूरा कन्या वचन ।
मोतीमाला पत्थरमाला द्वी बेणी,
चली ऐन दखिण द्वारिका ।
मोतीमाला ब्याहेण कृष्णक तैं,
बरमीन ब्याहे पत्थरमाला ।
इना रैन भगवान कला का पूरा,
द्वारिका बीच लोग मंगल गांदा ।

२. पाण्डव सम्बन्धी लोक-गाथाएँ

गढ़वाल में गाँव-गाँव में पांडव नचाये जाते हैं। उनके सम्बन्ध में बहुत-सी गाथाएँ हैं :

१. योद्धा, २. अक्षत, ३. ताड़ा, ४. माथा, ५. प्रेमी, ६. माँग, ७. निकालती, ८. अलकनंदा, ९. जैसा, १०. पाट, ११. बिन्दी, १२. कुमाऊँ, १३. घराट, १४. बाजा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

पांडुकेश्वर, पन्नों का सेरा, पन्नों बाड़ी, पन्नाई आदि कितने ही मन्दिर, गाँव और तीर्थ पांडवों के नाम पर आधृत हैं। 'पांडव-नृत्य' आज भी गढ़वाल में खूब प्रचलित है। महाभारत-काल में यह भाग 'पांचाल-देश' के नाम से विख्यात था। महाभारत के 'सभापर्व' के अनुसार पांडवों का जन्मस्थान पांडकेश्वर ही है।

पाण्डव जन्म

परगट ह्वै जान, परगट ह्वै जान,
परगट ह्वै जान, पाँच भाई पंडऊं[1]।
परगट ह्वै जान कोन्ती माता,
परगट ह्वै जान राणी द्रोपता।
कोन्ती माता होली पंडौं की माता,
नंगों कू बस्तर देंदी, भूकों के अन्न।
नंगों देखीक वस्त्र नी लांदी,
भूकों देखीक खाणू नी खांदी।
कोन्ती माता होली धर्म्याली माता,
बार बरस तैं करदी रै दुर्बासा की सेवा
तब रिषि दुर्बासा परसन्न ह्वैन,
कोन्तीं माता तैं पुत्र बरदान दीने!
तेरा पाँच पुत्र होला छेतरी[2] माल[3],
काटीक नी कटोन मारीक नी करोन।
तब पाँच मंत्र रिषीन दीन्या,
रण लैगे कोन्ती तब मैत[4] घर।
एक दिन धर्म्याली तीर्थ नहेन्दी,
सूरज तैं वा पाणी चढ़ौंदी।
मंत्र जाप करे तब वीन—
प्रभु की लीला छई, कर्ण पैदा ह्वैगे!
बार वर्ष पढ़े मातान धर्म मंत्र,
धर्म मंत्र पढ़ीक ह्वै गैन धर्मराज!

१. पांडव, २. क्षत्रिय, ३. मल्ल (योद्धा), ४. मायका।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MHI

बार वर्ष पढ़े मातान वायु मंत्र,
पैदा ह्वैन तब बली भीमसण !
बार वर्ष करे मातान इन्द्र को जाप,
पैदा ह्वै गैन हाँ जी, अजुन धनुर्धारी !
तब बार वर्ष पढ़े मातान पाँडु मंत्र,
त पैदा ह्वैन नकुल कुँवर !
बार वर्ष पढ़े माता ने ब्रह्म मंत्र,
पढ़ीक कनो ह्वैगे सहदेव ब्रह्म !
पाँच पुत्र पंडौ छा कुन्ती का,
धरती की शोभा छ्या, देवतौं माण्याँ !
धर्मराज युधिष्ठर होला धर्म का ज्ञानी,
जौन गरीब नी संतायो, बुरो नी मण्यायो !
बंध्या रैन जु धर्म की डोरी,
धर्मराज होला सत का पुजारी !
अरजुन राजा होलू बीर भारी,
कृष्ण सारथी जैका रैन !
वैका बाण बैरियों का काल,
वैको गुस्सा जिन्दड़ी[1] को ज्यान[2] !
कनो होलो स्यो वीर विभीषण[3],
सौ मण की गदा होली नौ मन की ढाल !
आगी को खेलाड़ी होलो बीर,
ऐड़ी हत्यारी[4] को पैरवारी[5] !
जंगल जंगल भाबर,[6] भाबर—
होईन बीरु, तुमूक प्यारा।
बार मास रये, बणवासी जोगी,
कंद-मूल खैक, दिन बितैन।
दुरजोधन छयो, कौरव राजा,

१. जिन्दगी, २. प्राण (जानेवाला), ३. भीम, ४. हथियार, ५. पहननेवाला, ६. घाटी (गर्म प्रदेश)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

हस्तिनापुर को राज, पंडौं नी देन्दू ।
लोरा-छापर-सी, तब पंडीऊँ,
बणू-बणू रीड़दा छा, लूकी-लूकोक ।
ऊँक तैं धाम नी छौ, नी छौ पाणी,
पेट की नी छे, रुड़ी[1] सी वणाँग,
भूक नी छै, तीस ऊँकू ।

द्रोपती स्वयंवर

घूमदा घूमदा तब, गैन पाँचाल देश,
द्रुपद राजा की छै, तख एक नौनी,
राजौं की नौनी छै, देखणी दरसनी,
रूप की छलार[2] छै, ज्वानी उलार[3] ।
राजा द्रुपद न, राज्यों भेजीन परवाना
अर्जुन का पास गैन, तब ब्यास जी ।
सुणा सुणा पंडऊँ, पांचाल देश मा
छ द्रोपती स्वयंवर ।
बामण का भेष मा, छया पाँच पांडव ।
पौंछी गैन द्रुपद का राज मा !
वै पाँचाल देश मा, आयाँ छया राजा,
राजा कर्ण छयो, जरासंध शीशपाल ।
वै द्रुपद गढ़ मा छयो, लोखर[4] को खंभा,
तै खंभा का ऐंच, धरीं छई एक माछी
नीस बिटे, एक तेल की चासण[5] ।
राजा द्रुपद तब, यना बोदो वैन-
जो बालो, बेधलो तं माछी की आँखी
वे कुंवर तैं द्यूलो मैं, दुरपता को डोला[6] ।
जु छाति का बालुन, कीवाड़ खोललो,
ओ माल[7] लिजालो, दुरपता को डोला ।

१. गर्मी, २. किरण, ३. लहर, ४. लोहा, ५. कढाही, ६. डोली, ७. योद्धा ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

जु थामलो सौ मण को, गोला जोंगों[१] मा,
वे कू बिवौण मैन, राजकिंवली अपणी।
तैं तेल की चासण, जो बवोती खेललो,
वे राजा द्यूलो मैं, द्रुपता लाडली।
देस-देस का रजा उठीन, शग्ति अजमौण,
कैन मछी की आँखो, बेधी नी सकी।
तव द्रुपद राजान, क्षेत्री हँकारीन,
क्षेत्री हँकार चढ़े, बीर अर्जुन।
भेदी दिने वैन, माछी की आँखी।
तब राणी दुरपती, जैमाला अगास फेंकदे,
जैमाला रींगीक ऐ गए, अर्जुन का गला।

नागलोक में अर्जुन

द्रोपती अर्जुन, सेयां छया।
रातुड़ी[२] होये थोड़ा, स्वीणा[३] ऐन भौत[४]
सुपिना मा देखद अर्जुन—
बाली[५] वासुदन्ता, नागू की धियाणा[६]।
मन ह्वैगे मोहित, चित्त ह्वैगे चंचल।
वीं की ज्वानी मा, कनो उलार[७] छौ,
वीं की आँख्यों मा, मार्या[८] को रैबार[९] छौ।
समलीक मुखड़ी वीं की, अर्जुन सोचण लैगे—
कसु[१०] कैक जौलू, नाग लोक मा।
तैं नाग लोक मा, नाग होला डसीला,
मुखड़ी का हंसीला होला, पेट का गसीला।
मद पेन्दा हाथी होला, सिंगू वाला खाड़ू[११],
मरक्बाल्या भैंसा होला, मैं मार्न औला।
लोहा की साबली होली, लाल बणाई

१. मूँछों, २. रात, ३. सपने, ४. बहुत, ५. कुमारी, ६. बहन, ७. मजा, ८. प्रेम, ९. संदेश, १०. कैसे, ११. मेटे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

चमकदी तरवीरी होली, उंकी पल्याई[1]।
नागू की चौकी बाड़, होली पैहरा,
कसु कैक जौलू मैं, तैं नागलोक मा।
कमर कसदो अर्जुन तब, उसकारा भरदो।
मैन मरण बचण, नागलोक जाण।
रात को बगत छयो, दुरपदा सेयीं छयी,
वैन कुछ बोल न चाल्यों, चल दिने नागलोक।
मदपेन्दा हाती वैन, चौखालू चीरेन,
लुवा की साब्रली, नंगून तोड़ीन।
तब गैं अरजुन, वासुदन्ता का पास।
तब देखी वासुदन्ता, हाम[2] से हाम[3],
धाम से[4] धाम, पूनो जसो चाम।
नोणीवालो[5] नामो, जीरा[6] वालो पिंड[7],
सुवर्ण तरुणी देई, चन्दन की लता,
पायी पतन्याली, आँखी रतन्यालो,
हीरा की-सी जोत, जोन सी उदोत।
तब गै अरजुन, सोना रूप बणी,
बासुदन्तान वो, उठीक बैठाये अर्जुन,
वीं को मन मोहित होई गये--
तब वींन जाण नी दिने घर वो--
तू होलो अर्जुन, मेरो जीवन संगाती,
तू होलो भौंर, मैं होलू गुलाबी फूल,
तू होलो पाणी, मैं होलू माछी-
तू मेरो पराण छई, त्वैं मैं जाण न देऊँ।
तब तखी रगे अरजुन, कई दिन तई।
जैन्तीवार मा, दुरपदा की निंदरा खुले,
अर्जुन की सेज देखे, वींन-कख गैहोला नाथ ?

१. तेज किये, २. सोना, ३. चमक, ४. अलौकिक, ५. मक्खन, ६. बारीक चावल, ७. कौर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MH

जाँदी दुरपदा, कोन्ती मात का पास–
हे सासु रौल तुमन, अपणू बेटा भी देखे ?
तब कोन्ती माता, कनो स्वाल देन्दी–
काली रूप धरे, अर्जुन तिन भक्ष्याले,
अर भैंमू सच्ची होण क आई गए।
तब कड़ा बचन सुणीक दुरपती,
दममण रोण लगदे।
तब जांदे दुरपती, बाणू कोठड़ी,
बाण, मुट्ठी बाण, तुमन अर्जुन भी देखे !
तब बाण बोदान, हम त सेयां छा,
हमून नी देखे, हमून नी देखे !
औंदा मनखी, पूछदी दुरपता,
जाँदा पंछियो, तुमन अर्जुन भी देखे !
रोंदी छ बरांदी तब, दुरपता राणी,
जिकुड़ी पर जना, चीरा धरी होन।
तीन दिन होईन, वीन खाणो नी खायो,
लाणो नी लायो।
तब औंद अर्जुन को, सगुनी कागा—
तेरो स्वामी दुरपती, ज्यूंदो छ जागदो।
नागलोक जायूं छ, वासुदन्ता का पास !
तब दुरपता को साँस ऐगे,
पर वासुदन्ता को, नौ सुणीक वा
फूल-सी मुरझैगी, डाली-सी अलसैगी।
तबरेक रमकदो छमकदो—
अर्जुन घर ऐगे।

ताछुम् ताछुम्

कोन्ती माता सूपिनो ह्वै गए, ताछुम् ताछुम्।
पांडु का सराधक[1] चैंद गैण्डो, ताछुम् ताछुम्।

१. श्राद्ध।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

ओड़ू आवा नेड़ू मेरा पांच पंडाऊँ, ताछुम् ताछुम् ।
तुम जावा पंडऊँ गैंडानाकि खोज : ताछुम् ताछुम् ।
सराध क चैंद पंडौ, गैंडा की खाल, ताछुम् ताछुम् ।
तब पैट्या पंडौ, गैंडा की खोज, ताछुम् ताछुम् ।
नारी दुरपता तप कना बैन बोदा, ताछुम् ताछुम् ।
मैं भी मेरा स्वामी, संगमांग औंदू, ताछुम् ताछुम् ।
भूख लगली, मैं भोरजन ह्वै जौलो, ताछुम् ताछुम् ।
प्यास लगली, मैं जली ह्वै जौलौ, ताछुम् ताछुम् ।
ऊकाल[1] लगली, मैं लाठी बणी जौलो, ताछुम् ताछुम् ।
पसीना होली स्वामी, रुमैल ह्वै जौलो, ताछुम् ताछुम् ।
सेज की बगत मैं, नारी होई जौलो, ताछुम् ताछुम् ।
जुद्ध लगलो, मैं कालिका होई जौलो, ताछुम् ताछुम् ।
त्वैकू नी होलू मेरी नारी, भूषण बस्तर, ताछुम् ताछुम् ।
तू घर रलो बैठी दुरपता, ताछुम् ताछुम् ।
तब घूमदागैन पडऊँ, गैंडा की खोज, ताछुम् ताछुम् ।
ऐ गैन पंडऊँ, हरियाली का ताल, ताछुम् ताछुम् ।
वख देखी तौंन, सीतारामी गैण्डी, ताछुम् ताछुम् ।
तब सीतारामी गैंडी, कना बैन बोदी, ताछुम् ताछुम् ।
मैं छऊँ पंडौ, जनानी की जात, ताछुम् ताछुम ।
मैं मारी तुमारो, काम नी होण को, ताछुम् ताछुम् ।
तुम जावा पंडौ, गागली का बण, ताछुम् ताछुम् ।
मेरो स्वामी रंदो, वख स्वामीपाल, ताछुम् ताछुम् ।
तब गैन पंडौं, गागली का बण, ताछुम् ताछुम् ।
गैण्डा को ग्वैर, छयो नगार्जुन, ताछुम् ताछुम ।
मालू ग्वीरयाल मेरो, गैंडो नी खांदो, ताछुम् ताछुम् ।
पीली छचरी, मेरा गैंडाक चैंदी, ताछुम् ताछुम् ।
तब मारे पंडौं न, स्वामीपाल गैंडो, ताछुम् ताछुम् ।
तब गाड़े पंडौन, गैंडा की खगोती[2], ताछुम् ताछुम् ।

१. चढ़ाई २. खाल ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MI

कद्रू-बिनता

कद्रू और बिनता सौतें थीं। दोनों में बड़ा सौतिया डाह था।

एक बार कद्रू ने बिनता से कहा–'बहन, तेरा बेटा भानपँखी सूरज का रथ चलाता है। सूरज के रथ का रंग क्या है ?'

'सफेद' बिनता ने कहा।

'काला' कद्रू ने कहा।

दोनों में शर्त लग गयी। यदि सूर्य के रथ का रंग काला हुआ तो बिनता कद्रू की दासी और यदि सफेद हुआ तो कद्रू बिनता की दासी बनेगी।

कद्रू नागों की माँ थी और बिनता गरुड़ों की।

कद्रू ने अपने बेटे कालागिरि नाग को बुलाया। उसने कहा,—'माँ तुम चिन्ता न न करो।' कालागिरि नाग ने सब नागों को बुलाया और सुबह सारे-के-सारे नाग सूरज के रथ के सामने खड़े हो गये। कद्रू ने बिनता को दिखाया—'देख, रथ का रंग काला है।' बिनता बेचारी हार गयी और कद्रू की दासी बन गयी।

बिनता को दुख हुआ कि उसके बेटे भानपंखी ने बताया था कि सूरज के रथ का रंग सफेद है। उसी का फल है कि उसे कद्रू की दासी बनना पड़ा। दुखी होकर उसने अपने बेटे मिश्री गरुड़ को बुलाया और सारी बात कह दी।

मिश्री गरुड़ ने कालागिरि नाग को बुलाया और धमकाया—'तुमने जालसाजी की।' कालागिरि नाग ने कहा—'तुम स्वर्गलोक में रहते हो। वहाँ से अमृत लाओ तो हम तुम्हारी माँ को मुक्त कर देंगे।'

कालागिरि नाग ने सब नागों को बुलाया। नहा-धोकर सब अमृत पीने की तैयारी करने लगे। भगवान ने गरुड़ मिश्री नाग को सलाह दी कि जैसा कपट उन्होंने तुम्हारे साथ किया, वैसा तुम भी उनके साथ करो। अमृत को स्वर्गलोक ले आओ।

मिश्री गरुड़ ने वैसा ही किया और फिर नागों से भिड़न्त हो गयी। कालागिरि नाग को छोड़कर बाकी सारे नाग मारे गये।

कालागिरि नाग 'मिश्रीदह' में घुस गया।

एकाएक एक मछली किनारे पर आयी। नाग समझ कर मिश्री गरुड़ ने उसे मार डाला। वहाँ एक ऋषि तप कर रहा था। मछली का खून ऋषि पर गिर पड़ा। ऋषि ने क्रोध में शाप दे दिया कि इस कुण्ड में तेरी छाया पड़ते ही तेरी मृत्यु हो जायेगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

भगवान को मालूम हो गया। उन्होंने मिश्री गरुड़ को मना कर दिया। मिश्री गरुड़ ने उधर मँडराना बन्द कर दिया।

फिर भगवान कालागिरि नाग को बन्द कर बाहर लाये और कहा—'नागो और गरुड़ो, तुम भाई हो। आपस में मेल से रहो।' उन्होंने मिश्री गरुड़ से कहा, 'तुम महीने में सिर्फ एक नाग को ही खाना, ज्यादा नहीं।'

कद्रू-बनिता

कद्रू का नाग ह्वैन, बनिता का गरुड़,
कद्रू बनिता, दुई[1] होली सौत,
सौति डाह छै, तौं मा।
कद्रू बोलदी तब—
हे भुली बनिता, तेरो बेटा भानपँखी,
रंद सूर्य का लोक माँग[2]—
सूर्य भगवान को रथ चलौंद।
बोलदऊँ हे भुली,
सूर्य को रथ, कै रंग को होलो ?
तब बनिता बोलदे,
सूर्य को स्वेत रथ होलो।
तब नागूना[3] की माता कना बैन बोदे—
आज भुली बनिता, तेरा मेरा बीच,
कौल[4] होईं जाला
मैं सणी तू भुली, धरम दीयाल।
सूर्य को सफेद रथ होलो,
तब मैं, तेरी दासी होई जौलो।
अर कालो रथ होलो तब तू,
मेरी दासी, बणी जालो।
तब कौल-करार, करीगे नागू की माता,
रोंदड़ा[5] लगौंदी[6] तब, छुँयेड़ा[7] चारदे,
मन मारीक अपणा, कालागिरि नाग।

१. दोनों, २. में, ३. नागों, ४. शर्त, ५. रोने, ६. लगी, ७. सोचने लगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

याद करदे वा, ध्यान धरदे।
तब औंद कद्रू को, कालागिरी नाग
अपणी माता का, चरणू मा गिर्दु[१]।
क्या होलू माता, मैं कू तै हुकूम,
केक याद कर्यूं, त्वैन मैंई।
माता तब बाच,[२] नी गाड़दी[३]।
कालागिरि तब, सोच मा पड़ीगे—
क्या ह्वै माता, इनो होणी होन्यार।
तब कद्रू बोलदे, क्या होण बेटा,
आज बिटे मैं, गरूड़ की माँ की दासी छऊँ।
कालागिरो पूछद—क्या कारण होलो ?
कद्रू न बोले—मेरा अर बनिता का बीच,
बचन होई गैन—
गरुड़ की माँन बोले, सफेद रथ सूर्य को,
मैंन बोले सूर्य को काळो रथ होलो।
सफेद रथ सूर्य को सची होलो
तब मेरा लाडा[४], भोळ[५] बिटे[६]—
मैन गरुड़ की माँ की, दासी होई जाण।
बनिता होली कनी स्या डैणा[७],
वीं की दासी, कनु होण बेटा, मैन ?
कालागिरि बोद : हे मेरी माता,
नागू की माता छई तू,
बनिता तेरी मैं दासी बणौलू।
मैं अभी अपणा, सभी नागू बोलदौं
ऊँ सणी स्वर्ग लोक भेजदौं।
उदंकारी[८] काँठा माँग[९],
जै वक्त सूर्य को, रथ औलू,

१. पड़ता, २. आवाज़, ३. निकालती, ४. बच्चे, ५. कल, ६. से, ७. डायन, ८. उदयाचल, ९. में।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वै वक्त सब, अपणा नागू।
सूर्य का अग्वाड़ी पिछाड़ी, खड़ा करी द्यू लो
नागू का छैल[1] से, सूर्यं को रथ,
कालो होई जालो।
तब मेरी माता, बनिता देखली,
सूर्य को रथ, कालो ही कालो ?
कालागिरि नाग, तब नागू लीक,
उदंकारी काँठा, पौंछी गए ?
उदैकाल माँ नागून,
सूर्य को रथ घेरयाले ?
गौ सरूप पृथी, सूती बिजीगे
पृथी मा सूर्य को, झलकारो ऐगे ?
अँध्यारी पृथी, उदयंकार होइगे,
तब निकलदे भैर[2], नागू की माता,
सूर्य की तरफ देखण लगदी—
सूर्य का रथ की काली छाया,
तब देखेण लगदी।
तब लौंदी धावड़ी,[3] कद्रू खुशी माँग—
औ भुलि बनिता, देख सूर्य को रथ !
कालो रथ छ त, तू मेरी दासी ह्वैजा,
सफेद रथ छ त, मैं तेरी दासी ह्वै जौलू।
तब गरुड़ की माता, देखदे सूर्य को रथ।
सूर्य का रथ तैन, काली छाया देखे
तब बोलदे बनिता—
आज बिटी दीदी कद्रू मैं, तेरो दासी बणोग्यूँ।
तब ह्वैगे बनिता, नागू की दासी।
तब दणमण[4] रोंदे, पथेणा नेत्र धोलदे।
जना कना[5] बेटऊँ, चुली[6] तनी रणू भलो।

१. छाया, २. बाहर, ३. आवाज़, ४. टपटप आँसू गिराने लगी, ५. जैसे-तैसे,
६. से।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मेरा बेटा भानपंखीन मेरो अपमान कराये।
मैं मूँग[1] त बोले सफेद रथ सूर्य को,
और दखा त कालो रथ देखेंद।
मैं कौल[2] हारी करेऊं, दासी बणायूं।
तब गरुड़ की माता,
मन मारी, जी हारी, नखारो सांस लेंदे।
तब वीं को बेटा मिश्री गरुड़,
रंद देवलोक मा भगवान मा बोद :
मैं घर जाँदू मेरी माँ पर क्वी कष्ट आई गए।
रौंड़दो दौड़दो औंद माँ का पास।
वै की मांन औंदो दखी,
तब वीन पीठ फरकाई दीने।
मिश्री गरूण माँ का चरणू मा गिर्द।
कद्रू माता दणमण रोंदे—
इनो बेटा नी होंदो मेरो,
तब त मैं खूब रदी !
तब मिश्री गरुड़ बोद—
क्या होई माता होणी होन्यार ?
तब माता बोदे : तेरा भाई भानपंखीन
मई माक झूठ बोले—
कि सूर्य को रथ सफद होंद !
मैंन नागू की माता दगड़े कौल करीन
आज ऊंकी दासी बणी गयूं।
तब मिश्री गरुड़ बोलदो—
धीरज धर माता, मैं अपणो जायो[3] नी बोली,
जु मैंन त्वै छुड़ायो नी।
तब रौड़दौ-दौड़दो वो जांद
कालागिरी नाग का पास—

१. से, २. शर्त, ३. बेटा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

हे कालागिरी नाग, तिन कपट करी
मेरी मां दासी किलै बणाये ?
तब कालागिरी नाग इनो बोलदो—
हे मिश्री गरुड़, तू देवलोक मां रंदी
बख विटी अमिर्त को घड़ो लैक हमू दियाल,
तेरी माता सणी हम छोड़ी दिऊला।
मिश्री गरुड़ होलो दिल को भोलो,
तब अमृत ल्याईक गरुड़ नाग देन्द।
तब कालागिरि नागन सब नाग बोलैन—
नहेक-धुयेक औला, अमृत प्यूला।
तब नाग नहेण धुयेण जांदन,
भगवान सुँणदन, दौड़दा-दौड़दा ऐग्या—
गरुड़, तिन यो क्या करे ?
जनो कपट ऊन त्वैक करे,
तनो कपट तू भी ऊँक कर !
जबारेक वो नहेक औंदन,
तबारेक अमृत देवलोक धरी हौऊ।
तब मिश्री गरुड़ अमृत उठैक,
सुर्की [1] देवलोक मा धरी आये।
तब औंदन नाग ऐन, ऊन अमिर्त नी पायो।
तब कालागिरि मिश्री गरुड़ मू औंद।
तब मिश्री गरुड़ का साथ माँज,
कालागिरी नाग जुद्ध करण लै गये।
मिश्री गरुड़न तब नाग मारयालीन,
तब कालागिरी नाग अकेलु रै गये :
तब कालागिरी नाग गरूड़ की डर,
मिश्रीदऊ मा घुसीगे।
तब माछी बणीक वो छाला आई गये,
तब मिश्री गरूड़न वा माछी मारी आले,

१. चुपचाप।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

वख एक रिषी तप करदो छयो,
वीं माछी को खून वे रिषी का अंग पड़ीगे !
वै रिषीन गरूड़ सराप दियाले—
जनो तिन मेरो तप भंग करे,
तनी तेरी ये कुंड माज[1] छाया पड़न से मृत्यु होई जान !
जनो रिषीन सराप दिने गरुड़ सणी,
तनी भगवान मालूम होई गये ।
भगवानन तब गरूड़ को कुंड मा,
घूमणो बन्द करी दीने !
तब भगवान जी कालानाग नाथीक,
भैर ली ऐन !
तुम भाई भाई छया गरुड़ो नागो,
आपस मा मेल से रवा ।
तब मिश्री गरूड़क भगवान न बोले :
तू सिर्फ मैना[2] राक एक नाग खाई ।

निरंकार

गढ़वाल में 'निरंकार' निर्गुण भक्ति की परम्परा का द्योतक है । कबीर की निराकार भावना यहाँ निरंकार के रूप में विद्यमान है ।

निरंकार

ओंकारं सतगुरू प्रसाद,
प्रथमे ओंकार, ओंकार से फोंकार,
फोंकार से वायु, वायु से विषंदरी[3],
विषंदरी से पाणी, पाणी से कमल,
कमल से ब्रह्मा पैदा होइगे ।
गुसैं[4] को तब देव ध्यान लैगे,
जल का सागरू मा तब्र गुसैं जी न,
सृष्टि रच्याले ।

१. में, २. महीना, ३. बादल, ४. भगवान ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

तब देन्दो गुसैं ब्रह्मा का पास–
चार वेद चौद शास्तर, अठार पुराण,
चौबीस गायत्री।
सुबेर पढ़द बरमा, स्याम भूली जांद।
अठासी हजार वर्ष तब ब्रह्मा,
नाभि कमल मा रैक वेद पढ़दो।
तब चार वेद, अठार पुराण, चौबीस गायत्री,
वैका कंठ मा आइ गैन।
वे ब्रह्मज्ञानी तब गर्व बढ़ी गये—
वेद शास्त्रों को धनी होईग्यूं,
मेरा अग्वाड़ो कैन होण ?
मैं छऊँ ब्रह्मा सृष्टि को धनी।
तव चले ब्रह्मा गरुड़ का रस्ता,
पंचनाम देवतो की गरूड़[1] मा सभा लगीं होली
बूढ़ा[2] केदार की जगा बीरीं होली।
सबूक न्यूतो दियो वैन गुसांई नी न्यूतो।
वे जोगी कू हमन जम्मा नी न्यूतण,
स्यो त डोमाणा[3] खै औंद, स्यो त कनो जोगी होलो!
तब पूछदो ब्रह्मा—कु होलो भगत।
नारद करद छयो गंगा माई की सेवा।
पैलो भगत होलू कबीर कमाल तब को भगत होलू!
तब को भगत होलू रैदास चमार!
बार वर्ष की धुनी वैकी पूरी ह्वै गए।
तब पैटद्द ब्रह्मा गंगा माई का पास–
तुम जाणा छया ब्रह्मा, गंगा माई का दरसन!
मेरी भेंट भी लिजावा, माई कू देण!
एक पैसा दिन्यो वेन ब्रह्मा का पास,
तब झिझड़ांद ब्रह्मा—यो रेदास चमार—

१. गरुड़ पर्वत, २. बूढ़ा केदार (एक धार्मिक स्थान), ३. डोमों के घर।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

कनकैक[1] लिजौलू[2] ये की भेंट ?
तब बोलदो रैदास भगत–
मेरी भेट कू ब्रह्मा, गंगा माई हाथ पसारली,
मेरी भेंट कू ब्रह्मा, गंगा माई वाच[3] गाडली[4] !
चली गये ब्रह्मा तब गंगा माई का पास,
नहाये-धोये ब्रह्मा, छाला[5] खड़ो होई गये :
घावू[6] मारे वैन, गंगा न वाच[7] नी गाड़ी ।
तब उदास ह्वैगे ब्रह्मा, घर बौड़ीक[8] आए,
रैदास की भेंट वो भूली गए !
अथवाट आये ब्रह्मा ओखा फूटी गैन,
गंगा माई जयें देखद, आंखा खुली जांदन !
तब याद आये ब्रह्म रैदास की भेंट !
धौबी तब धों गया माई का छाला–
रैदास की भेंट छ दीनी या माई ।
रैदास को नौ सूणीक तब,
गंगा माई न वाच दियाले ।
रैदास होलो मेरो पियांरो भगत—
एक शोभनी[9] कंकण गंगा माईन गाडयो–
ब्रह्मा मेरी ई समूण[10] तू रैदास देई !
ब्रह्मा का मन कपट ऐगे, लोभ धमीरो,
यो शोभनी कंकण होलू मेरी नौनी[11] जुगन[12] !
तब रैदास का घर का घाटा
ब्रह्मा लौटीक नी औंदो !
पर जै भी बाटा जाँद रैदास खड़ो ह्वै जांद–
ब्रह्मा गंगा माई की मैं सम्पूण दीईं होली !
त्वैकू बोल्यूँ रैदास–

१. कैसे, २. ले जाऊँगा, ३. आवाज, ४. निकालेगी, ५. किनारे, ६. आवाज़, ७. आवाज़, ८. वापस, ९. सुन्दर, १०. स्मृति चिह्न, ११. लड़की, १२. योग्य ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

व्याखुनी[1] दां मैंन तेरा घर औण।
सुणदो रैदास तब परफूल[2] ह्वैगे,
सुबेरी बिटे[3] गौंत[4] छिड़कंदो,
घसदो छ भितरी, लीपदो छ पाली[5]।
आज मेरा डेरा गंगा माई न औण।
वैकू चेला होलू जल कुँडीहीत,
जादू मेरा हीत बद्री का बाड़ा, केदार की कोण्यों,
लो आवो मैंकू अखंड बभूत !
देवतों न सूणे रैदास की बात,
जोगी हीत तब पिंजड़ा बन्द करयालें !
इन होलो सत जत्त को पूरो,
जोगी पाखुड़ी[6] बणी उड़ी जांदो !

१. शाम को, २. प्रसन्न, ३. से, ४. गोमूत्र, ५. दीवाल, ६. पक्षी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

८

गढ़वाली लोक-कथाएँ

गढ़वाल में लोककथाएँ मुख्यतः दस प्रकार की मिलती हैं :

१—देवी-देवताओं की कथाएँ
२—पशु-पक्षियों की कथाएँ
३—भूत-प्रेत और जग्सों (यक्षों और राक्षसों) की कथाएँ
४—परियों (मात्रियों और आछरियों) की कथाएँ
५—वीर-वहादुरों की कथाएँ
६—हास्य कथाएँ
७—राजा-रानियों और राजकुमार-राजकुमारियों की कथाएँ
८—जीव-जन्तुओं की कथाएँ
९—उपदेशात्मक कथाएँ
१०—तन्त्र-मन्त्र, जादू-टोनों की कथाएँ ।

गढ़वाली लोककथाओं में गढ़-जन-जीवन के चिर-परिचित रूप-चित्र मिलते हैं । युग-युग की भाव-धाराओं, सामाजिक रूप-कल्पनाओं तथा सांस्कृतिक गतिविधियों का यथार्थ निरूपण मिलता है । समाज की विभिन्न समस्याओं की सुन्दर व्याख्या और मानव के सुख-दुःख का जीवन्त रूप मिलता है ।

इन लोक-कथाओं की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं—

(क) शाप का प्रचुर प्रयोग

प्राचीन साहित्य की तरह इन लोककथाओं में भी शाप का प्रचुर प्रयोग मिलता है । शाप के कारण मनुष्यों का पशु-पक्षी, पत्थर, वेल, पेड़, साँप, चूहा, बिल्ली आदि बन जाना, चेहरा विकृत होना, अंग-भंग होना—इन सबके पर्याप्त उदाहरण इन लोक-कथाओं में मिलते हैं ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

(ख) कर्मानुसार फल-प्राप्ति

अपने-अपने कर्मों के अनुसार फल पाना, यह भी एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति है। 'सरग दादू पाणी दे' कथा में लड़की को अपनी करनी का फल भोगना पड़ता है। प्यासे बैल की तरह वह भी जीवन-भर चिड़िया के रूप में पानी के लिए तरसती रहती है। 'गुरु और चेला' कथा में अपने गुरु को धोखा देने के कारण चेले को अपनी जान गँवानी पड़ती है। 'सियार और भगवान' कथा में सियार को अपनी करनी का फल—मौत मिलती है।

(ग) मनुष्यों का पशु-पक्षियों की और पशु-पक्षियों का मनुष्यों की भाषा समझना

कई कथाओं में मनुष्य सियार, चूहा, बाघ, हिरन, रीछ, कौआ आदि से बातें करता है। पंचतन्त्र और कथा-सरित्सागर की कथाओं का इन लोक-कथाओं पर पर्याप्त प्रभाव मिलता है। 'स्याल और रीछ' कथा में सियार गाँववालों को भैंसे के मारने के विषय में बताता है। तब गाँववाले सियार के कथनानुसार जंगल चले जाते हैं। 'भट्ट कुटक' कथा में पति चिड़िया बनी हुई और चिड़िया की तरह बोलती अपनी पत्नि की भाषा समझता है।

(घ) तन्त्र-मन्त्र और जादू-टोनों का प्रयोग

'मार-मार सोटा, बाँध-बाँध डोर' में मन्त्र के प्रभाव से रस्सी दुश्मन को बाँध देती है और डंडा पीटने लग जाता है। तन्त्र-मन्त्र के प्रभाव से प्राणियों का झील बन जाना, पत्थर के रूप में बदल जाना, 'राजकुमार अर जग्सै नौनी' कथा में राजकुमार का अपनी जादुई तलवार से सात परियों को मारना बताया गया है। सात परियाँ सुन्दर झील, बाग, सुहावना मौसम, सोने का सिंहासन, मोतियों का पेड़ और जेवरों के फल-फूल के रूप में बदल जाती हैं। छोटी-सी डिबिया में सौ मन भोजन तैयार होना, छोटी-सी हँडिया में छत्तीस प्रकार और बावन व्यंजन पकना, जलती आग में कूद जाना, उफनती नदी-नालों को पार करना, दुर्गम चोटियों पर चढ़ना, पक्षियों की भाँति उड़ना, रूप बदलना—यह सब तन्त्र-मन्त्र और जादू-टोनों से आदमी के बायें हाथ का खेल हो जाता है।

(ङ) प्राणों की अन्यत्र स्थिति

जग्सों (राक्षसों) के प्राण सात समुद्र पार ऊँचे पेड़ पर लटके पिंजरे के अन्दर बन्द तोते के रूप में मिलते हैं। तोते का गळा घोटने से राक्षस का गला घुट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

जाता है, टाँग तोड़ने से राक्षस की टाँगें टूट जाती हैं। इसी प्रकार किसी के प्राण मैना में, किसी के पत्थर की मूर्ति में, किसी के पेड़ में मिलते हैं।

(च) भूत-प्रेतों की भयभीत कर देनेवाली घटनाओं का चित्रण

भूतहे मकान में रात में भूतों का नाच और हल्ला-गुल्ला करना, मकान में रहनेवालों का बेहोश होकर मर जाना, भूतों की अनोखी करामातें--जैसे, आदमियों का पीछा करना, कभी-कभी स्त्रियों की सहायता करना, रुपया-पैसा देना, सौ-सौ गज की दूरी की चीज उठाना, पहरा देना आदि अनेक बातों का उल्लेख मिलता है।

(छ) प्रेम, रूप और सौन्दर्य का अद्भुत वर्णन

सौन्दर्य के वशीभूत होकर पुरुष परियों और मात्रियों को अपना जीवन समर्पित कर देता है। प्रेम के प्रभाव से सब कुछ करने को तैयार रहता है। इसी प्रकार राजकुमारियाँ, अप्सराएँ और रानियाँ भी प्रेम और रूप के वशीभूत होकर सब कुछ करने को तैयार रहती हैं।

(ज) मनुष्यों और पशुओं की बलि

'माधोसिंह' लोककथा में माधोसिंह को सपना आता है कि जब वह अपने लड़के की बलि चढ़ायेगा, तभी नहर में पानी आ सकेगा। इस बात को जब वह दुःखी होकर अपनी स्त्री को सुनाता है तो किसी प्रकार माँ-बाप की बात बेटा सुन लेता है और तब वह बलि चढ़ाने के लिए जोर देता है। बलि चढ़ने पर नहर में पानी आ जाता है। अपनी मनोकामना पूरी करने के लिए बकरों और भैंसों की बलि चढ़ाकर देवी-देवताओं को प्रसन्न करने का गढ़वाल के प्रायः सभी गाँवों में प्रचलन है।

(झ) पशु-पक्षियों का सहायक होना

कौआ द्वारा खतरे की सूचना पाना, हंसों द्वारा पंखों पर बिठाकर सात समुन्दर पार कराना, नेवले द्वारा साँप के टुकड़े-टुकड़े किये जाना आदि घटनाओं से यह प्रवृत्ति मिलती है कि ये सब मनुष्य की सहायता के लिए सदा तत्पर हैं।

(ञ) ईश्वर, धर्म और भाग्य पर अटूट विश्वास

(ट) सास का बहू पर घोर अत्याचार

(ठ) सौतेली माँ का दुर्व्यवहार

(ड) बहन और पत्नी का स्वार्थी रूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

(ढ) बोक्सा विद्या द्वारा परिस्थिति के अनुसार शरीर (चोला) का परिवर्तन

(ण) साधू-संन्यासियों के कथन में विशेष अनुभव की स्थिति

(त) सपनों की अजीब सृष्टि

(थ) सतीत्व की रक्षा के लिए साहसिक कार्य

उफनती नदियों को लाँघना, ऊँची दीवारों को फाँदना, शेरनी का दूध लाना, आग में वैठना, अँगारों को हथेली पर रखना, भूत-प्रेतों से मुकाबला करना आदि अनेक विचित्र घटनाओं का उल्लेख मिलता है।

१. देवी-देवताओं की कथाएँ

गढ़वाल में 'नागरजा', भूम्याल् (भूमिपाल), खितरपाल (क्षेत्रपाल), नगेलो, नाग, भैरूँ (भैरव), पन्नों (पांडव), घड़ियाल, देवी, बिनसर, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, राम आदि कुछ प्रसिद्ध देवता हैं किन्तु इनमें राम, विष्णु और ब्रह्मा के विषय में लोक-कथाएँ नहीं के बराबर हैं। गढ़वाल के आराध्यदेव कृष्ण ही हैं। गाँव-गाँव में कृष्ण की कई रूपों और नामों से पूजा होती है। पाण्डुकेश्वर, पन्नों का सेरा, पन्नों वाड़ी, पनाई नारायण आदि गढ़वाल के कितने ही मन्दिर, गाँव, तीर्थ आदि कृष्ण और पांडवों के नाम पर आधृत हैं। यहाँ के जागरी 'जागर' गीतों में डौंर-थाली के साथ कृष्ण के ही गुणगान करते हैं। कृष्ण के सभी रूपों का उनमें वर्णन होता है। 'बाल-गोविन्द' से लेकर 'नागरजा' तक शक्ति, प्रेम और शालीनता के प्रतीक कृष्ण गढ़वाल में वहुत ही व्यापक हैं।

कृष्ण सम्बन्धी लोककथाओं में कृष्ण के अद्भुत कार्य-कलापों की सुन्दर झाँकी मिलती है।

(क) नागरजा[1]

महाभारत की लड़ाई समाप्त हो गयी थी। सारे देश में एक प्रकार की भयंकर उदासी छायी हुई थी तथा देश में ही क्या, समस्त विश्व में अकाल, भुखमरी और मुर्दनी दीखती थी। लोग जीवन और मृत्यु दोनों से ऊब गये थे।

कृष्ण के मन में स्वयं इस नृशंस मार-काट से शान्ति नहीं थी। वे परेशान होकर इधर-उधर चक्कर काटते थे। विक्षिप्त, दुःखी और उदास कृष्ण की ऐसी हालत

१. डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश' : कृष्ण सम्वन्धी लोककथाएँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

देख देवकी ने पूछा—'बेटा तुम्हें क्या हो गया है ? क्यों इतने चिन्तित हो ?' कृष्ण ने उत्तर दिया—'माँ, मुझे शान्ति नहीं। मुझे कोई ऐसा स्थान बताओ, जहाँ मेरे मन को परम शान्ति मिले। बस, अब मैं यहाँ एक क्षण भी नहीं रह सकता।' बहुत समझाने-बुझाने पर भी कृष्ण जब नहीं माने, तब देवकी ने उन्हें हिमालय की गोद में जाने के लिए कहा।

कृष्ण चलते-चलते भूखे-प्यासे, थके-माँदे बहुत दिनों के बाद एकान्त स्थान की खोज में 'खरसाली' पहुँच गये, जहाँ से यमुनोत्री केवल चार मील है। वहाँ एकान्त देखकर वे बालक रूप धारण कर गाँव के एक आदमी की भेड़-बकरियाँ चराने लगे। उस आदमी को कोई सन्तान नहीं थी। वह कृष्ण को बहुत चाहने लगा। अब वह बहुत बूढ़ा हो गया था। इसलिए उसने अपना मकान और जो कुछ जमीन, भेड़-बकरियाँ आदि थीं, सब इन्हीं को दे दीं। कृष्ण भेड़-बकरियाँ पालते, अलगोजा बजाते, जीवन यापन करते।

गांव की सारी सुन्दरियाँ कृष्ण को चाहने लगीं। सब अलगोजा की तान पर लट्टू हो गयीं। गाँव के बच्चे-बूढ़े सभी कृष्ण को चाहने लगे। संध्या को सभी चौक में इकट्ठे होकर गाते-नाचते और कृष्ण अलगोजा की तानें सुनाते।

यह देखकर उद्दाम ईर्ष्या से गाँव के कुछ लोग उनसे जलने लगे। कारण, गाँव की सारी सुन्दरियाँ कृष्ण को ही चाहने लगीं और इन मनचलों की ओर कोई ध्यान भी नहीं देती।

एक दिन कृष्ण भेड़-बकरियाँ चराने जंगल गये हुए थे। जंगल में दो काले नाग आपस में लड़ रहे थे। कृष्ण ने एक पत्थर उठाया और एक के ऊपर दे मारा, वह मर गया। लेकिन दूसरा जो जीवित था, वह गुस्से के मारे फुंकारें मारता हुआ कृष्ण की ओर लपका। कृष्ण झट से पेड़ पर चढ़ गये।

साँप ने इधर-उधर जा कर एक जगह से कुछ उठाया और मरे हुए नाग के मुँह पर उसे रगड़ा। थोड़ी ही देर में मृत साँप जिन्दा हो गया और दोनों वहाँ से चले गये। कृष्ण पेड़ से उतर कर उस जगह आये और वहाँ पड़ी हुई एक चमकती-सी चीज को उठाकर कुछ देर के बाद भेड़-बकरियों सहित घर लौट आये।

इधर गाँव के जले-भुने लोगों ने रात को साजिश की और कृष्ण की सारी भेड़-बकरियों को विष खिला दिया।

अगले दिन कृष्ण जब उठे और भेड़-बकरियों को देखने गये, तो उन्हें बड़ा अचम्भा हुआ। वे सब-की-सब मरी पड़ी थीं। कृष्ण ने उसी चमकती हुई चीज को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

सबके मुँह पर रगड़ा और एकदम सब-की-सब जीवित हो गयीं। थोड़ी देर बाद कृष्ण उन्हें चराने के लिए फिर जंगल ले गये।

भेड़ बकरियों को जीवित होते देख गाँव के लोगों को बड़ा आश्चर्य हुआ, लेकिन वे चुप कहाँ रहनेवाले थे? उन्होंने फिर भयंकर विष भेड़-बकरियों को खिला दिया और अच्छी तरह से देख लिया कि वे सब मर गयीं। किन्तु दूसरे ही दिन उन्हें जीवित देखकर वे बहुत शर्माये और तब वे कृष्ण को ही मारने की बात सोचने लगे।

दो-तीन दिन के बाद वे कृष्ण को फुसलाकर जंगल ले गये और सबने खेलना आरम्भ किया। जहाँ खेलने का छोटा-सा मैदान था, वहीं से नीचे बन्दर पूँछ से निकली हुई नदी बहती है। यहाँ ऊपर से जो नीचे गिर जाय, वह चकनाचूर हुए बिना रह ही नहीं सकता।

खेलते-खेलते उन सबने मिलकर कृष्ण को ऊपर से नीचे गिराया, किन्तु कृष्ण का कुछ भी नहीं बिगड़ा, क्योंकि कृष्ण के पास वही चमकदार बूटी थी। सब-के-सब विस्मय में पड़ गये। इधर सारे गाँव में यह बात फैल गयी। सब लोग कृष्ण को उठाकर रात को नाचने-गाने लगे।

अगले दिन कृष्ण का कहीं पता न लगा। कृष्ण वहाँ से और आगे चले गये। कुछ दिन बाद कृष्ण ने साधु-वेश में जाकर अपनी सारी कहानी सुनायी। लोग तभी से कृष्ण को 'नागरजा' कहने लगे और उनकी पूजा होने लगी।

(ख) गंगू[1]

टिहरी गढ़वाल की बात है। रमोलीगढ़ में गंगू नामका एक प्रसिद्ध जागीरदार था। कुबेर उसका खजांची था और अन्नपूर्णा उसके भंडार की देख-रेख करनेवाली। इतनी धन-दौलत होते हुए भी वह बहुत परेशान-सा रहता था। एक सौ वर्ष की अवस्था; बूढ़ा शरीर, किन्तु सन्तान एक भी नहीं। रानी मीनावती के बार-बार कहने पर भी गंगू को देवी-देवताओं पर कोई विश्वास नहीं जमा। उसे अपनेपन का अभिमान था। जीवन में कभी किसी के लिए आदर प्रदर्शित करना उसने सीखा ही न था। भयंकरता में वह चरम सीमा को भी पार कर चुका था। अपनी प्रजा की भेड़-बकरियों को जबर्दस्ती लूट-खसोट कर वह खाया करता था। यहाँ तक कि अविवाहित लड़कियों और बाँझ भैंसों पर भी उसने कर लगा दिया था। लोग उसका नाम सुनते ही काँपने लगते थे। उसके आतंक से सभी दुःखी थे, किन्तु कोई चारा न था।

१. डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश': कृष्ण सम्बन्धी लोककथाएँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

जब कृष्ण को पता लगा, तो उन्होंने उसके पास सन्देशे भेजे और अपनी बात मनवाने के लिए जोर डाला, किन्तु गंगू टस-से-मस न हुआ। अन्त में कृष्ण को द्वारका छोड़कर ब्राह्मण का वेश बनाकर रमोलीघाट जाना पड़ा। गंगू अपनी भेड़-बकरियों को लेकर 'हर्याली' गया हुआ था। 'हर्याली' एक ऐसा चरागाह था, जहाँ नाना प्रकार की जड़ी-बूटियाँ और औषधियां थीं।

माया या मीनावती तथा और दूसरे लोगों ने जब ब्राह्मण का दिव्य रूप देखा तो सब हैरान रह गये। बाप-रे-बाप, ऐसा सौन्दर्य ! रानी के पूछने पर कृष्ण ने बताया कि वह उनका खानदानी ज्योतिषी है और इस समय गंगू की जन्मपत्री देखने के लिए आया है कि उसके भाग्य में पुत्र है या नहीं। ब्राह्मण ने जल्दी-जल्दी गंगू के ग्रह देखे, कुछ कहा और फिर अचानक अन्तर्धान हो गया।

गंगू जब घर लौटा तो उसकी रानी ने ब्राह्मण की बात सुनायी, लेकिन गंगू ने अपनी रानी को बुरा-भला कहा और ज्योतिषी की बात पर कोई विश्वास नहीं किया। पर कुछ देर बाद ही उसकी पीठ में भयंकर दर्द होने लगा। देखते-ही-देखते उसकी सारी सम्पत्ति मिट्टी हो गयी और सारे अनाज को चींटियाँ चट कर गयीं। उसकी भेड़-बकरियाँ एक-एक कर मरने लगीं और सारी फसल सूखकर समाप्त हो गयी। गंगू ने अपने दुर्भाग्य और इस अकाल-तांडव के बारे में अपनी रानी से पूछा कि इसका क्या कारण हो सकता है, तो रानी ने बताया कि इसका कारण ब्राह्मण का कोप ही हो सकता है।

गंगू का सारा परिवार त्राहि-त्राहि कर रहा था, लेकिन उसकी हठ ज्यों की त्यों थी। कुछ दिन बाद गंगू ने एक विचित्र स्वप्न देखा। कृष्ण ने गंगू को काल्या पहाड़ की चोटी पर आने को कहा। गंगू ने कृष्ण से पूछा कि 'तुम कौन हो ?' 'मैं तुम्हारा इष्टदेवता हूँ'—कृष्ण ने प्रत्युत्तर दिया। 'यदि तुम वारणी सोमा में मेरा एक मन्दिर बनवा दोगे तो तुम्हारी सारी धन-दौलत तुम्हें वैसी-की-वैसी मिल जायेगी।' किन्तु गंगू को इस पर विश्वास न हुआ। कहने लगा कि 'शायद तुमने लोगों से सुना होगा, मेरी सम्पत्ति समाप्त हो गयी। मैं तुम पर तब विश्वास करूँगा, जब तुम 'हेडम्बा' नाम की डायन को मार डालोगे'।

कृष्ण ने अपनी मुरली बजायी। मुरली की तान सुनते ही 'हेडम्बा' दौड़ी-दौड़ी कृष्ण के पास आयी और सुन्दर स्वस्थ कृष्ण को देखकर खुश होकर कहने लगी कि, 'ओह, मैं कितने दिन से भूखी थी। आज अच्छे मौके पर मुझे खाना मिला।'

कृष्ण ने कहा, 'पहले हम दोनों अपनी-अपनी ताकत दिखायें। सामने यह झूला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

है। बारी-बारी से एक-दूसरे को झुलायें। देखें, कौन ज्यादा झुला सकता है?' हेडम्बा तैयार हो गयी। पहले कृष्ण झूले पर बैठे। हेडम्बा ने अपना पूरा जोर लगाया, किन्तु वह झूले को हिला तक न सकी। अब हेडम्बा के बैठने की बारी थी। जैसे ही वह झूले पर बैठी, कृष्ण ने उसे इतना ऊपर उठा दिया कि वह धड़ाम से धरती पर गिर पड़ी। उसके टुकड़े-टुकड़े हो गये। उस समय सारा रमोलीगढ़ काँप उठा, जैसे कोई भयंकर भूकम्प आ गया हो। यह देख गंगू ने दो गूंगे कृष्ण के पास भेजे कि देखो क्या हुआ।

गूंगे कृष्ण के पास पहुँचते ही बोलने लगे और लौटकर जब गंगू के पास आये तो उन्होंने सारी कहानी सुनायी, फिर भी गंगू को विश्वास नहीं हुआ। अन्त में कृष्ण स्वयं साधु का वेश बनाकर गंगू के यहाँ गये और खाने के लिए दूध-दही माँगा। गंगू ने उन्हें धक्का देकर निकाल दिया, किन्तु मीनावती ने उन्हें खूब दूध-दही खिलाया। साधु ने मीनावती को आशीर्वाद दिया और गंगू को कोढ़ी हो जाने का शाप दिया। कोढ़ी हो जाने पर भी गंगू टस-से-मस नहीं हुआ। उसने अपनी जिद नहीं छोड़ी। जब गंगू पर इन सब बातों का कोई असर नहीं हुआ, तब कृष्ण स्वयं नाग का रूप धारण कर उसके बिस्तर पर बैठ गये। गंगू चालाक था, उसको नाग का कुछ आभास-सा हो गया और वह उस रात चुपचाप बाहर बैठा रहा। अन्त में कृष्ण ने रमोलीगढ़ के पानी के सारे स्रोत सुखा दिये। कहीं पानी की एक बूंद भी नहीं रही। पशु-पक्षी सब प्यास के मारे मरते जा रहे थे। गंगू गंगा का पानी पीने गया लेकिन वह खून में बदल गया। अब गंगू भी कुछ परेशान-सा हो गया। लौटने पर उसने अपनी रानी से पूछा। रानी ने कहा कि किसी पंडित से पूछ लो कि यह सब क्यों हो रहा है। अब कोई चारा न था। गंगू ने ज्योतिषियों से पूछा। उन्होंने बताया कि कृष्ण नाराज हो गये हैं। उनको मनाने तुम्हें भूखा-प्यासा जाना होगा। गंगू ने द्वारिका के लिए प्रस्थान किया और वहाँ पहुँचकर कृष्ण के चरणों में पड़ गया। कृष्ण ने उसे क्षमा कर 'सद्या' और 'सेम' में मन्दिर बनवाने को कहा। गंगू ने सेम में मन्दिर बनवाया, किन्तु मन्दिर पूरा होते ही धरती के अन्दर समा गया। अब गंगू ने अपने सारे इलाके में जगह-जगह कृष्ण के मन्दिर बनवाये। थोड़े ही दिनों में उसकी सारी खोयी सम्पत्ति उसे वापस मिल गयी। वह बिलकुल ठीक हो गया और सौभाग्य से उसे दो लड़के (सिदवा और बिदवा) हो गये।

(ग) जोत्रमाला[1]

तिब्बत में सोनपाल नामक एक राजा हुआ है। उसके सात लड़कियाँ थीं।

१. डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश' : कृष्ण सम्बन्धी लोककथाएँ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

सातों में सबसे बड़ी जोत्रमाला, सौन्दर्य और लावण्य में रति और तिलोत्तमा से भी बढ़कर थी। उसने कई वर्षों तक पार्वती की पूजा की थी। फलस्वरूप प्रसन्न होकर पार्वती ने उसे विश्व का सारा सौन्दर्य दे दिया और साथ ही ऐसा वरदान दिया कि स्वयं द्वारिकाधीश श्रीकृष्ण उसके पति होंगे।

कृष्ण ने जोत्रमाला को एक दिन स्वप्न में देखा। उसके अनुपम रूप-माधुर्य को देख कृष्ण उस पर मुग्ध हो गये। जोत्रमाला के प्रेम में विह्वल एवं विकल होकर कृष्ण ने अपने छोटे भाई सुरजू को अपने पास बुलाकर उसे तिब्बत जाने के लिए कहा। सुरजू ने जब माँ से तिब्बत जाने की बात कही तो वह फूट-फूटकर रोने लगी और कहने लगी कि 'बेटा, वहाँ मत जाओ। वह भूतों, डायनों, परियों और जादू-टोनों का देश है। जो भी वहाँ गया, वह कभी लौटकर नहीं आया,' किन्तु सुरजू ने कहा 'माँ, मैं अपने बड़े भाई की आज्ञा टाल नहीं सकता। चाहे कुछ भी हो जाय।'

उसी समय कितने ही अशुभ लक्षण दिखाई दिये। पानी काला हो गया। सुरजू की प्यारी बकरी 'टिला' मर गयी। उसके सिर के बाल गिर पड़े, किन्तु सुरजू ने इन सबकी कोई चिन्ता नहीं की। वह अपने 'श्यामकर्ण' घोड़े पर बैठ तिब्बत के लिए रवाना हो गया। चलते-चलते थका-माँदा वह एक दिन कैलास पर्वत पर पहुँचा, जोकि सात डायनों और नौ परियों का घर था। कुछ क्षणों की विश्रान्ति के लिए वह लेट गया और उसे गहरी नींद आ गयी। इसी बीच सात डायनों ने आकर उसे भेड़ बना दिया और अपने साथ ले गयीं।

सुरजू की पत्नी 'बिजोरा' ने, जो स्वयं एक डायन थी और जादू-टोना, तंत्र-मंत्र जानती थी, सुरजू को स्वप्न में भेड़ बना देखा। वह पुरुष का वेश बनाकर अपने साथ जादू-टोनों की पिटारी लेकर एक सफेद घोड़े पर बैठकर वहाँ पहुँची। वहाँ पहुँचते ही उसने अपने घोड़े को मक्खी बना दिया और अपने आप एक पेड़ पर मुरली बजाने लगी। मुरली की मीठी तान सुनकर सात-की-सातो डायनें भागी-भागी वहाँ आयीं और उसको अपने घर ले गयीं। बिजोरा की मुरली की मधुर तानों ने डायनों को मोहित कर लिया। डायनें इतनी तल्लीन और आत्म-विभोर हो गयीं कि अपनी सारी सुध-बुध ही खो बैठीं। बिजोरा ने सुरजू को फिर आदमी बनाकर घर चलने के लिए कहा, किन्तु सुरजू ने कहा कि पहले मैं द्वारिका जाऊँगा, फिर कहीं और।

द्वारिका में कृष्ण ने सुरजू का हृदय से स्वागत किया और सारी कहानी सुनकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

फिर तिब्बत जाने के लिए कहा, लेकिन सुरजू ने प्रार्थना की कि मेरे साथ आप रमोलीगढ़ के सिदवा को भी भेजें।

कृष्ण ने झट से म्वारी (शहद की मक्खी) द्वारा सिदवा के लिए संदेश भेजा। म्वारी ने सिदवा के चारों ओर चक्कर लगाया और गुन-गुनाकर कृष्ण का रैबार (सन्देश) सुनाया।

रमोलीगढ़ में सिदवा-विदवा, दो भाई ऐसे पराक्रमो और शक्तिशाली थे कि उनका सामना करना किसी के बस की बात नहीं थीं। उनका पहनावा, खाना-पीना इतना और ऐसा था कि धरती पर न कोई ऐसे कपड़े पहन सकता था और न इतना खाना ही खा सकता था। उनके पास हजारों भेड़ बकरियाँ और गाय-भैंसें थीं।

सिदवा ने द्वारिका जाने की तैयारी की। वह तूफान की भाँति उड़ा और 'खैट' पहाड़ के समीप उसने अपना सात मुँहवाला अलगोजा (पहाड़ी वंशी) बजाया। अलगोजे के मधुर संगीत ने खैट पर्वत की अप्सराओं को आकर्षित किया और वे नौ-की-नौ उसकी सेवा में उपस्थित हो गयीं। वह बोला—'जब तुम्हारी आवश्यकता होगी, तब तुम्हें बुलाया जायेगा।' इस प्रकार अनेक विघ्न-बाधाओं को पार कर वह द्वारिका पहुँचा। वहाँ कृष्ण ने सिदवा का शानदार स्वागत किया।

दूसरे दिन सिदवा और सुरजू तिब्बत के लिए रवाना हो गये। सुरजू फिर अपनी माँ से मिलने गया। माँ ने उसको फिर रोका, लेकिन उसने न माना। अन्त में बहुत सुनने के बाद उसने माँ से कहा कि 'तुम एक कटोरे में दूध, एक फूलों की माला और एक तलवार खड़ी करके रखो। यदि मैं मर गया तो दूध खून हो जायेगा, माला सूख जायेगी और तलवार गिर पड़ेगी।' ऐसा कहकर वह चल पड़ा।

सिदवा और सुरजू चलते-चलते थके-मांदे जब एक पहाड़ पर पहुँचे तो दोनों को नींद आ गयी। पहाड़ से नौ अप्सराएँ आयीं और सुरजू को हर ले गयीं। सिदवा अकेला वहाँ पड़ा रह गया। थोड़ी देर में जब उसकी नींद टूटी तो उसने सुरजू को नहीं देखा। परेशान हो उसने अलगोजा बजाया। सब-की-सब परियाँ वहाँ खिची चली आयीं। साथ-ही-साथ सुरजू भी आया, किन्तु परियों ने सुरजू की सुन्दरता को हर लिया था।

पीपलधार पहुँच कर सिदवा ने फिर अपना अलगोजा बजाया और नौ-की-नौ परियाँ उसके सामने आ खड़ी हुईं और सिदवा के कथनानुसार उन्होंने सुरजू की सुन्दरता इस शर्त पर लौटा दी कि जब वह तिब्बत से लौटेगा तो उनमें से एक से शादी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

करनी होगी। सुरजू ने शर्त मान ली। अन्त में वे एक दिन तिब्बत पहुँचे और एक नदी के किनारे बैठ गये। वहीं विश्वुत्संक्रान्ति का मेला लगता था, जिसमें जोत्रमाला भी आनेवाली थी।

दोनों ने कहानी-चुटकले सुनाये और कुछ देर बाद गहरी नींद में डूब गये। सुरजू की नींद बीच में टूट गयी। जोत्रमाला पालकी पर बैठकर वहाँ आयी। सुरजू ने जोत्रमाला को देखा और एकदम उसके पास जाकर कृष्ण का पत्र दिया। वह सुरजू को अपने महल में ले गयी। सिदवा अभी तक सोया ही था।

जोत्रमाला की बहनें उससे जलने लगीं और उन्होंने सुरजू के मारने का षड्यंत्र किया। एक दिन जब जोत्रमाला बाहर गयी हुई थी तो उसकी बहनों ने खाने में जहर मिलाकर सुरजू को मार डाला और उसके शव को गाड़ दिया।

सुरजू की मृत्यु से दूध का खून हो गया, माला सूख गयी, तलवार गिर पड़ी। सुरजू की माँ रोती-पीटती कृष्ण के पास गयी। कृष्ण ने इस घटना को सुनकर विदवा को बुलाया और उसको तिब्बत भेजा। विदवा बहुत बड़ा जादूगर था। उसने साधु का वेश बनाया और तिब्बत पहुँचा। नदी के किनारे सिदवा को देख, उसको जगाया और सुरजू की मौत के बारे में बताया। सिदवा यह सुन गुस्से के मारे काँपने लगा और फिर दोनों भाई महल में पहुँचे। उन्होंने सोनपाल की राजकुमारियों को बुलाकर मारने की धमकी दी। 'सुरजू कहाँ है? बताओ नहीं तो कच्चा चबा जाऊँगा।' ऐसा सुनते ही सब-की-सब डरती-काँपती एक दूसरे को देखती, दोनों को वहाँ ले गयीं, जहाँ सुरजू गड़ा हुआ था। दोनों भाइयों ने अपने जादू के बल से सुरजू को जिन्दा किया। इसी बीच सोनपाल ने अपनी लड़कियों के बहकावे में आकर उन पर चढ़ाई कर दी। दोनों भाइयों ने बात-की-बात में सोनपाल, उसकी सेना और छह लड़कियों को मारकर अजयपाल को गद्दी पर बैठा दिया। जोत्रमाला को लेकर वे द्वारिका पहुँच गये।

२. पशु-पक्षियों की कथाएं

इन लोक-कथाओं में लोक-व्यवहार पटु बनने की सीख के साथ-साथ धरती के सब प्राणियों का परस्पर तादात्म्य-भाव भी झलकता है। सभी प्राणियों के स्वभाव का चित्रण भी इन कथाओं में रहता है। जैसे—बाघ जंगल के राजा के रूप में शक्ति, बुद्धि और शौर्य का प्रतीक माना गया है। हाथी मोटी बुद्धिवाला और मदमस्त जानवर चित्रित किया गया है। बन्दर, सियार और बकरी चुस्त, चालाक और दूरदर्शी माने गये हैं। कुत्ता और बिल्ली बड़े स्वामिभक्त और विश्वासपात्र माने गये हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDH

(क) बाघ-बामण (बाघ-ब्राह्मण)

एक था गरीब ब्राह्मण। उसकी थी एक जवान बेटी। रूप और सौन्दर्य की देवी। ब्राह्मण अपनी बेटी का ब्याह अच्छे परिवार में करना चाहता था, किन्तु उसके पास देने के लिए कुछ नहीं था। फलतः एक दिन वह कमाने के लिए घर से निकला। रास्ते में उसकी मुलाकात बाघ से हुई। बाघ ने परदेश जाने का कारण पूछा तो ब्राह्मण ने अपनी राम-कहानी सुना दी। बाघ को दया आयी और उसने काफी धन-दौलत ब्राह्मण को दे दी। शर्त यह रखी कि लड़की की शादी में उसे भी बुलाना पड़ेगा। ब्राह्मण ने खुशी-खुशी उसकी शर्त मान ली।

ब्राह्मण घर लौटा तो उसने जल्दी ही अपनी लड़की की शादी की बात पक्की कर दी। ब्याह का दिन आया, बाराती आये। बाघ भी आया। चारों ओर चहल-पहल थी, किन्तु बारातियों को कुछ दुर्गन्ध-सी मालूम पड़ी। बारातियों ने जब इस सम्बन्ध में ब्राह्मण से पूछा तो उसने 'मरा हुआ चूहा' कहकर बात टाल दी। बाघ ने ऐसा सुना तो उसे बहुत बुरा लगा।

दूसरे दिन बारात विदा हुई तो बाघ ने ब्राह्मण को बुलाया और कहा कि मेरे सिर पर कुल्हाड़ी से मारो। ब्राह्मण किंकर्तव्य-विमूढ़ हो गया। बाघ ने फिर अपनी बात पर जोर दिया और तब ब्राह्मण ने बाघ के सिर पर कुल्हाड़ी मारी। बाघ जंगल की तरफ भाग गया।

कुछ दिन के बाद फिर ब्राह्मण की मुलाकात बाघ से हुई। बाघ ने अपना सिर दिखाकर कहा—'देखो, तुम्हारी कुल्हाड़ी की चोट ठीक हो गयी, लेकिन वाणी की चोट अभी तक ठीक नहीं हुई, दिल का घाव अभी तक नहीं पुरा।' ऐसा सुन कर ब्राह्मण को अपनी बात पर बहुत दुःख हुआ।

(ख) स्यार अर रिक (स्यार और रीछ)

एक दिन स्यार ने रीछ से साझा व्यापार करने के लिए कहा। रीछ राजी हो गया। दोनों ने एक भैंस खरीदी। वे दोनों बारी-बारी से भैंस को चराया करते थे और फिर बारी-बारी से दूध पिया करते थे। जिस दिन रीछ की बारी होती, वह बड़ी मेहनत से भैंस को अच्छी-अच्छी घास खिलाया करता। उसका फल यह होता कि सियार को दूध खूब पीने को मिलता और जब सियार की बारी आती तो वह भैंस को भूखा ही रखता और मारता-पीटता। इसलिए रीछ को दूध बहुत कम मिलता। एक दिन सियार को रीछ और भैंस, दोनों का मांस खाने को सूझी। सियार भैंस को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

एक ढलवा स्थान पर ले गया। भैंस एकाएक फिसल पड़ी और भाग्यवश गिरते-गिरते एक पेड़ पर रुक गयी। सियार रीछ को बुलाने गया। रीछ आया तो वह भैंस को खींचने लगा। सियार ने अच्छा मौका देखकर दोनों को धक्का देकर नीचे गिरा दिया। फलतः दोनों मर गये। सियार ने कई दिनों तक बड़े चाव से दोनों का मांस खाया।

(ग) स्यार अर हाथी (सियार और हाथी)

एक दिन कुछ सियार हाथी के पास गये और उन्होंने कहा, 'महाराज, आपको इधर-उधर दौड़-धूप करने की कोई आवश्यकता नहीं। आप यहीं बैठे रहें। हम आपके लिए हरी-हरी घास यहीं ले आयेंगे।' हाथी उनके चक्कर में आ गया। सियार रोज हरी-हरी घास लेकर हाथी के पास पहुँच जाते। हाथी को घास बहुत अच्छी लगी। एक दिन उसने कहा,—'तुम लोगों को यहाँ घास लाने में बड़ी तकलीफ होती है, चलो मैं वहीं चलता हूँ, जहाँ ऐसी हरी-हरी कोमल घास है।' सियार तो ऐसा चाहते ही थे। वे हाथी को ऐसी जगह ले गये, जहाँ दलदल था। ऊपर से अच्छी घास उगी हुई थी। हाथी घास खाने में मस्त हो गया, पर धीरे-धीरे दलदल में फँसता गया। हाथी जैसे-जैसे वहाँ से निकलने की कोशिश करता, वैसे-वैसे अपने बोझ से डूबता जाता। अन्त में वह मर गया। सियारों ने कई दिन तक उसका मांस खाया।

(घ) बकरी अर बाघ (बकरी और बाघ)

एक बार पालसी (गडरिया) की गलती से एक बकरी जंगल में छूट गयी। उसने बाघ को अपनी ओर आते देखा, किन्तु वह बिलकुल घबरायी नहीं। बाघ ने उसे निश्चिन्त खड़ी देखकर पूछा कि 'तुम्हें डर नहीं लगता है, मैं तुम्हें मार कर खा डालूँगा।'

बकरी ने कहा, 'मैं बहुत बूढ़ी हो गयी हूँ। घर में मेरे नाती-पोते हैं, किन्तु मेरा मालिक बड़ा स्वार्थी और मक्कार है। उसने मुझे अब चारा देना छोड़ दिया और वह जल्दी ही मुझे मारना चाहता है। इसलिए मैं चाहती हूँ कि उस मक्कार के बजाय तुम्हीं मुझे मार डालो।' बकरी की बात सुन कर बाघ का दिल पसीज गया। उसने बकरी को अपना दोस्त बना लिया और रोज अपनी पीठ पर चढ़ाकर चुगाने लगा। कुछ दिनों के बाद बकरी बाघ को चकमा देकर घर लौट आयी तो गडरिये ने उससे पूछा 'जब जंगल में तुम छूट गयी तो अपनी रक्षा तुमने कैसे की?'

बकरी ने कहा—'मेरे साथ मेरे चार भाई (चार पैर) थे जिनके सहारे मैं भाग सकती थी, दो बहनें (सींग) थीं, जिनके सहारे मैं अपनी रक्षा कर सकती थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

दो सहेलियाँ (कान) थे, जिनसे मैं सचेत रहती थी। एक नौकर (पूँछ) था, जिससे मैं मक्खियाँ भगाती थी।'

(ङ) स्यार अर भगवान (सियार और भगवान)

सियार ने जब कई लोगों को ठगा तो भगवान ने स्वार्थी सियार को दंड देने की बात सोची। भगवान ने लीसे को एक देवी बनायी। सियार ने देवी को देख कर उससे मिठाई माँगी। देवी चुप रही तो सियार उसे मारने-पीटने लगा और उसके हाथ-पैर देवी से चिपक गये। सियार भूखा-प्यासा कई दिनों तक सिर धुनता रहा। तब एक दिन उधर भगवान आये। उन्होंने उसे धूप में रख दिया। लीसा जैसे ही गला, सियार भगवान को अँगूठा दिखा कर रफूचक्कर हो गया।

भगवान ने फिर उसे दंड देने के लिए पंडित का रूप धारण किया। सियार ने पंडित को देखा तो अपने ग्रह दिखाये। पंडित ने बतलाया कि उसके ग्रह बहुत खराब हैं और जल्दी ही कोई उपाय न किया गया तो उसकी मृत्यु हो जायेगी। सियार ने ग्रह-शान्ति का उपाय पूछा तो पंडित ने उसे (घट्ट) पानी की चक्की की भेरण से बँध जाने के लिए कहा। सियार राजी हो गया। पंडित ने सियार को भेरण से बाँध कर खूद पूजा की पोथी लेने के बहाने चल पड़े। पंडित ऊपर गया तो उसने पानी कूल लगा दी। भेरण जोर से चलने लगी और इस प्रकार घूमते-घूमते सियार की मृत्यु हो गयी।

पक्षियों-सम्बन्धी लोककथाएँ (कवि-प्रसिद्धियाँ)

भारतीय साहित्य में पक्षियों के सम्ब्रन्ध में अनेक कविप्रसिद्धियाँ हैं। हिमालय के आँचल में बसे पर्वतीय प्रदेश गढ़वाल में इन कवि-प्रसिद्धियों के स्रोत हैं—जन-जीवन में प्रचलित लोककथाएँ।

चातक या पपीहा के विषय में सम्पूर्ण भारतीय साहित्य में, चाहे प्राचीन हो या अर्वाचीन, यह कवि-प्रसिद्धि है कि वह केवल स्वाती नक्षत्र में बादलों से टपकते पानी की बूंद ही पीता है, अन्यथा 'पी-पी' रटता ही रह जाता है।

(क) चकोर

पपीहा धरती का पानी क्यों नहीं पीता, गढ़वाल में इस सम्बन्ध में एक मनोरंजक दन्तकथा प्रचलित है :

एक थी बुढ़िया। उसका लड़का परदेश कमाने गया हुआ था। घर पर थी एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

बहू और एक जवान बेटी। गर्मियों के दिन थे। आँगन में गेहूँ की बालें कटी पड़ी थीं। बहू और बेटी गेहूँ की बालों पर बैलों से दांय चला रही थीं। चिलचिलाती धूप के कारण सभी हाँफ रहे थे! खास तौर से बैल। थके-माँदे प्यासे बैलों को देखकर बुढ़िया ने अपनी बहू और बेटी से कहा—'जो बैलों को जल्दी पानी पिला कर लायेगा, उसे मैं खीर दूँगी।' दाँय समाप्त हो गयी थी। बहू और बेटी दोनों अपनी-अपनी जोड़ी के बैलों को लेकर पानी पिलाने चल पड़ीं। गाँव से पानी लगभग एक मील दूर था। गाँव का एक सोता सूख गया था। इसलिए इस वर्ष सारा गाँव पानी के लिए परेशान था। चलते-चलते बहू के बैल आगे बढ़ गये। बेटी ने सोचा कि भाभी से जीतना कठिन है। इसलिए वह आधे रास्ते से ही प्यासे बैलों को वापिस ले आयी और गौशाला में उन्हें बाँध दिया। वह दौड़ी-दौड़ी घर आयी, माँने उसे शाबाशी दी और खीर भी। पर उसी बीच एक बैल प्यास के मारे मर गया। मरते हुए उसने लड़की को शाप दिया—'जा, तू चिड़िया हो जा और पानी के लिए मेरी तरह सदा तरसती रह।' लड़की चिड़िया बन गयी और तब से उसे तालाब, झरने, नदी, नाले, कुएँ आदि के पानी में खून-ही-खून नजर आता है!

(ख) चक्रवाक

चकवा-चकवी के विषय में प्रचलित है कि वे रात में बिछुड़ जाते हैं। नदी के दो छोरों पर विरह की रातें काटते हैं और रात में कभी नहीं मिल पाते।

इस सम्बन्ध में दन्तकथा इस प्रकार है कि एक दिन गाँव की एक युवती अपनी गोदी की लड़की को साथ लेकर जंगल में घास काटने गयी। पति परदेश गया हुआ था। घर पर वह अकेली थी। उसका और कोई न था, सिर्फ डेढ़ साल की लड़की थी। इसलिए उसे लेकर वह जंगल गयी। घास काटकर बोझा पीठ पर लादे, गोदी में लड़की लिये जब वह शाम को लौट रही थी तो भालू ने उसका पीछा किया। वह डरके मारे दौड़ने लगी, भालू बिलकुल नजदीक आ गया। वह बेचारी बहुत घबरायी और एकाएक फिसल पड़ी। कुछ देर के बाद होश में आयी तो उसने देखा कि उसकी लड़की नदारद है। इधर-उधर देखा तो कहीं पता न लगा। गाँव के लोग भी उसे खोजने गये। कई दिन खोजते रहे, पर कहीं कोई पता न चला। इस प्रकार कई महीने बीत गये।

दो तीन साल के बाद एक दिन एक स्त्री ने कहा कि उसे जंगल के एक टीले पर कोई नंगी-सी लड़की दिखाई पड़ी है। लोगों को उसकी बातों पर विश्वास न हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

दो-तीन बार फिर ऐसी बातें उड़ीं, किन्तु लोगों ने इन्हें बे-सिर-पैर की बातें मानकर टाल दिया, पर एक दिन गाँव के दो-तीन लड़के, जब गाय चराने जंगल गये तो उन्हें वहाँ ऊपर टीले पर एक लड़की-सी नजर आयी। टीले के नीचे खोह थी, जिसमें गाँव वालों का विश्वास था कि शेर या भालू रहता है। वहाँ कोई जाता न था।

गाँव के उन लड़कों ने जब लड़की को देखा तो वे कुछ ऊपर बढ़ने लगे। जैसे ही वे आगे बढ़े कि एक शेरनी दहाड़ती हुई उनपर झपटने के लिए दौड़ी। जानवर छोड़कर लड़के बेतहाशा भागे। अब यह बात पक्की हो गयी कि ऊपर लड़की रहती है। कोई कहता कि वह जंगल की देवी है, कोई कहता भूतनी। इस प्रकार और कई साल व्यतीत हो गये।

एक बार एक राजकुमार शिकार खेलने के लिए उधर गया। उसने देखा कि एक सुन्दर लड़की के चारों ओर जंगली जानवर बैठे हैं और वह कुछ जंगली फल खा रही है। राजकुमार घोड़े से उतर कर पेड़ पर चढ़ा। उसने उस लड़की को कुछ इशारा किया। लड़की ने तालियाँ बजायीं और सब जानवर इधर-उधर चले गये।

राजकुमार ने लड़की के पास जाकर उसे घोड़े पर बिठा लिया और उसे लेकर वह महल में पहुँचा। उसने उससे शादी कर ली, किन्तु लड़की को कुछ अजीब-सा लगता रहा। कुछ दिनों के बाद लड़की ने राजकुमार को किसी दूसरी लड़की से बातें करते देखा। राजकुमार भी लड़की के पास अब कभी-कभी-आता और जल्दी-जल्दी एक-आध बात करके चला जाता। लड़की ने सुना कि राजकुमार दूसरी लड़की के पास रहता है और उससे घृणा करता है। लड़की वहाँ से जंगल भाग गयी और वहाँ आते ही राजकुमार के वियोग में उसके प्राण छटपटाने लगे। इसी प्रकार तिलतिल घुल-घुलकर उसके प्राण निकल गये। मरते समय उसने राजकुमार और उस नयी लड़की को शाप दिया कि वे दोनों चिड़ियाँ हो जायँ और आपस में मिलने के लिए तरसते रहें।

(ग) कुरेरी

क्रौंच (कुरेरी) कें सम्बन्ध में प्रचलित है कि वह टीस भरी स्वरलहरियों में अपनी वेदना व्यक्त करती है—'हाय रे, मैं क्या करूँ ?'

दन्तकथा इस प्रकार है कि एक परिवार था, जिसमें सात भाई और उनकी सात बहुएँ रहती थीं। रोपण का दिन था। धान की रोपाई के लिए सबेरे ही सब लोग खेत पर जाने की तैयारी में थे। उन्होंने तय किया सबसे छोटी बहू घर पर रहेगी और सबके लिए खाना बना कर दोपहर तक खेत में पहुँचा देगी। उसकी गोदी में बच्चा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

था। इसलिए उसे यह काम सौंपा गया। सातों भाई और छह बहुएँ खेत की तरफ चल पड़ीं।

छोटी बहू ने चूल्हा जलाया, सब्जी चढ़ायी और आटा गूंदने लगी। एकाएक बच्चा रो पड़ा। वह उसे दूध पिलाने गयी। उसने सोचा कि इसे सुलाकर फिर चैन से खाना पकाऊँगी। इसलिए वह बच्चे के साथ लेट गयी और दूध पिलाने लगी। वह थकी हुई थी ही। बेचारी बच्चे के साथ स्वयं भी सो गयी। घण्टों बाद जब उसकी नींद खुली तो वह हड़बड़ा कर उठी। देखा चूल्हा बिलकुल ठंडा पड़ा था, सब्जी जल गयी थी, आटा चिड़िया और चूहों ने कुतर-कुतर कर समाप्त कर दिया था। सूरज ढल गया था। बेचारी घबरायी कि शाम हो गयी, घर के लोग खेत में भूखे ही काम कर रहे होंगे। वे क्या सोच रहे होंगे। वह इतनी घबरायी कि उसके प्राण-पखेरू उड़ गये और अब वह चिल्लाती फिरती है—'हाय रे, मैं क्या करूँ ?'

(घ) हारिल : 'हमारे हरि हारिल की लकड़ी'

हारिल के विषय में प्रसिद्ध है कि वह सदैव अपने पंजों में लकड़ी का एक टुकड़ा या तिनका लिये रहता है। लकड़ी से उसे इतना प्रेम है कि वह एक पल को भी उसे छोड़ नहीं सकता।

हारिल के बारे में दन्तकथा है कि गाँव में एक अनाथ बालक रहता था। वह बड़ा मेहनती और जिन्दादिल था। बचपन में ही उसके माँ-बाप मर गये थे। अपनी मेहनत से ही वह जीवन में आगे बढ़ा और जब अट्ठारह-उन्नीस साल का हुआ तो उसका ब्याह हो गया। गाँव से कुछ दूरी पर उसने अच्छा सा मकान बनवाया। कुछ कर्ज सिर पर था, उसे चुकाने की बात सोचकर वह कमाने के लिए परदेश चल पड़ा। चलते समय उसने अपनी स्त्री को एक डंडा दिया और कहा कि इसे सदा अपने पास रखना; यहाँ अकेली जगह है। उसकी स्त्री थी रूप की परी और सौन्दर्य की देवी। इसलिए उसे उसकी बड़ी चिन्ता थी। कई महीने हो गये, पर पति लौट कर नहीं आया। पति की प्रतीक्षा में वह तिल-तिल कर गलने लगी। चार पाँच वर्ष बीत गये, पति की कोई खबर नहीं मिली। वह बेचारी देवी-देवताओं की मनौती करती, साधु-संन्यासियों को भर-भर कर भिक्षा देती, दीन-दुःखियों की सेवा करती और इस तरह दूसरों की सेवा करके अपना दुखड़ा भुलाती।

एक दिन की बात है। गाँव के लोग सो गये थे। गाँव के इक्के-दुक्के कुत्ते भौंक रहे थे। एक मुसाफिर आया और उसने रात काटने के लिए जगह माँगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

अकेली जगह थी। बेचारी डरी और सहमी, पर मुसाफिर की बेबसी को देखकर उसे रहम आया। इसलिए उसने उसके लिए जगह दे दी। मुसाफिर आधी रात को उठा और उस कमरे का दरवाजा खटखटाने लगा जहाँ वह बेचारी सोयी थी। उसने दरवाजा नहीं खोला तो मुसाफिर ने जोर से धक्का मारा, और झट से दरवाजा खुल गया। अपनी रक्षा के लिए वह बेचारी डंडा लेकर सामने खड़ी हो गयी। मुसाफिर को अपनी ओर बढ़ते देख उसने जोर से डंडा मारा। मुसाफिर की खोपड़ी पर जोर से चोट लगी तो वह उसका नाम लेते हुए जमीन पर गिर पड़ा। अपना नाम सुनते ही उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। मुसाफिर उसी का पति था और उसी के हाथों उसकी मृत्यु हो गयी। बेचारी बहुत घबरायी और छटपटाते हुए उसके प्राण उड़ गये। वही स्त्री चिड़िया बन गयी और वह अपने पति की निशानी सदा अपने पास रखती है।

३. भूत-प्रेत-जसो (भूत-प्रेत, यक्ष और राक्षस) की कथाएँ

(क) भूत अर गरीब छोरा (भूत और गरीब लड़का)

एक गरीब लड़का था। वह नौकरी के लिए परदेस को निकल पड़ा। रास्ते में रात होने पर उसे एक गाँव में ठहरना पड़ा। उसने गाँववालों से रहने के लिए जगह माँगी तो गाँव वालों ने उसे एक भुतहा मकान बता दिया। लड़का उस मकान में गया। उसने इधर-उधर से लकड़ियाँ बटोरीं और खाना पकाने लगा। अंधेरा काफी हो गया था। खाने की सुगन्ध से भूत की लार टपक पड़ी और उसने लड़के से खाना माँगा। लड़के ने सारा खाना भूत को दे दिया।

खाना खाकर भूत बहुत खुश हुआ और उसने लड़के को बहुत सा धन दे दिया। लड़का परदेश जाने के बजाय अपने घर की ओर लौट पड़ा। विदाई के वक्त भूत ने उसे अपनी मूँछ का एक बाल दे दिया और कहा जब कभी तुम पर मुसीबत आये, इस बाल को हथेली पर रख लेना।

लड़के ने घर लौटते हुए सोचा कि चलो, शहर होता चलूँ। वहाँ से कुछ मिठाई और सामान लेकर घर जाना ठीक होगा, ऐसे खाली हाथ जाना ठीक नहीं। रुपया-पैसा कौन देखता है?

इसी विचार से वह शहर की तरफ चल दिया। उस समय शहर में बड़ा उत्पात मचा हुआ था। दुश्मनों ने राजा को चारों ओर से घेर लिया था। राजा की ऐसी हालत देखकर उसकी सहायता के लिए लड़के ने वह बाल अपनी हथेली पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

रखा। बाल हथेली पर रखते ही एक भयंकर तूफान-सा आया। राजा के दुश्मनों की खूब पिटाई हुई और वे भाग खड़े हुए। राजा ने लड़के को अनेक धन्यवाद दिये और और अपना आधा राज्य उसे दे दिया। उसने अपनी एक राजकुमारी का ब्याह भी उसके साथ कर दिया।

(ख) भूत अर सात जनानी (भूत और सात स्त्रियाँ)

एक गाँव में सात स्त्रियाँ रहती थीं, जिनका कोई नजदीक का रिश्तेदार न था। वे बेचारी दुःख की मारी नौकरी के लिए राजा के यहाँ गयीं। राजा ने उनकी दुखः भरी कहानी सुनकर उन्हें नौकरी पर लगा लिया, पर दुर्भाग्य की बात, उसी रात राजकुमार का देहान्त हो गया।

राजा ने इन सात औरतों को भला-बुरा कहा और निकाल दिया, क्योंकि राजा ने अपने मन में सोचा कि ये सात स्त्रियां आयीं, तभी मेरा इकलौता बेटा चल बसा। ये स्त्रियां नहीं, डायन हैं।

राजा के आदमी राजकुमार को लेकर मशान गये। वहाँ जैसे ही उन्होंने राजकुमार को नीचे रखा कि भूतों ने उनपर धावा बोल दिया। वे बेचारे डर के मारे भागे-भागे वापस आये और राजा से उन्होंने कहा कि हमने राजकुमार को जला दिया है।

राजा के यहाँ से निकाली गयी सातों स्त्रियां आत्म-हत्या करने के लिए मशान पर गयीं। वहाँ उन्हें एक भूत मिला। उनमें से एक ने भूत को अपने बालों में फँसा लिया। भूत ने बहुत भागना चाहा, पर वह अपने को छुड़ा न सका। तब वह स्त्री एक शर्त पर उसे छोड़ने के लिए तैयार हुई कि वह राजकुमार को जिन्दा कर दे। भूत राजी हो गया।

भूत ने राजकुमार को फिर जिन्दा कर दिया। वे सातों स्त्रियाँ जीवित राजकुमार को लेकर जब फिर राजा के पास गयीं तो राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने उन्हें रानियाँ बनाकर महल में रख लिया।

४. परियों (मात्रियों और आछरियों) की कथाएँ

गढ़वाल में लोगों की ऐसी धारणा है कि जो अविवाहित किशोरी बचपन में ही मर जाती हैं, उनकी आत्माएँ आछरियाँ या परियाँ बन कर चोटियों, गुफाओं, श्मशानों, झीलों, तालाबों और वायुमण्डल में चक्कर काटती रहती हैं। परियों और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

आछरियों (अप्सराओं) के अतिरिक्त मात्रियों और मराड़ियों को भी कथाएँ मिलती हैं।

(क) परी अर राजकुमार (परी और राजकुमार)

सात समुद्र पार एक सुन्दर परी रहती थी। एक बार एक राजकुमार हंसों के पंखों पर बैठ कर वहाँ गया, क्योंकि उसने हंसों से ही उसके रूप और सौन्दर्य के बारे में सुना था। वह उस परी से ब्याह करना चाहता था।

राजकुमार जब परी के पास पहुँचा और उसने अपना मन्तव्य व्यक्त किया तो परी ने उसे लौट जाने के लिए कहा, पर राजकुमार अपनी बात से टला नहीं। उसका अनन्य प्रेम देख कर परी भी उससे प्रेम करने लगी और तब उसने लोहे की बाड़ में बन्द तोते की ओर संकेत किया कि इस तोते में उस राक्षस के प्राण हैं, जिसने उसे यहाँ कैद कर रखा है।

राजकुमार लोहे की बाड़ लाँघ कर तोते के पास पहुँचा। राक्षस की तबियत कुछ खराब-सी हो गयी। राजकुमार ने तोते को हाथ में लिया तो राक्षस लड़खड़ाने लगा। 'दाल में कुछ काला है'—ऐसा सोच कर वह राजकुमार की ओर लपका। राजकुमार ने तोते की दोनों टाँगें तोड़ दीं। राक्षस धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ा। राक्षस लुढ़कते हुए राजकुमार की तरफ आने लगा तो अन्त में राजकुमार ने तोते का गला घोंट दिया। तोते की मृत्यु के साथ राक्षस भी मर गया। तब राजकुमार ने परी से ब्याह किया और वे दोनों आराम से रहने लगे।

(ख) आछरी अर पालसी (अप्सरा और गडरिया)

नौ आछरी बहनें एक चोटी पर रहती थीं। उनमें सबसे छोटी को एक दिन सपना आया। उसने सपने में सोने की दीवार, चाँदी की सीढ़ियाँ, हीरों का सिंहासन, कल्पतरु, जेवरों के फल-फूल और मणियों की पत्तियाँ देखीं।

दूसरे दिन जब एक पालसी उधर भेड़-बकरियाँ चरा रहा था तो उसकी दृष्टि उस सुन्दर आछरी पर पड़ी। वह उस पर मुग्ध हो गया और उसने उससे ब्याह कर लेने का प्रस्ताव रखा। आछरी ने जो वस्तुएँ सपने में देखीं थी, उन्हें ला देने के लिए कहा।

पालसी (गडरिया) वहाँ से चला तो रास्ते में उसे एक बाबा (साधु)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मिले। उसने साधु को प्रणाम किया तो साधु ने कहा—'जाओ बच्चा, तुम्हारी मनोकामना पूरी हो।'

पालसी (गडरिया) ने अपने मन की बात बतलायी तो साधु ने उसके हाथ में एक पुड़िया दी और कहा, 'यहाँ से कुछ दूर तुम्हें सात परियाँ मिलेंगी। इस पुड़िया की राख उन पर फेंक देना।'

गडरिया साधु के कथनानुसार कुछ आगे बढ़ा तो उसे सात परियाँ दिखायी पड़ीं। उसने वैसा ही किया, जैसा बावा ने कहा था। वे सातों परियाँ वही चीजें बन गयीं, जो आछरी ने सपने में देखी थीं। गडरिया बड़ा खुश हुआ और तब वह उस आछरी को अपने साथ ले गया और सातों वस्तु उसे दिखायीं। तब आछरी ने पालसी (गडरिया) से ब्याह कर लिया।

५. वीर-बहादुरों की कथाएँ

गढ़वाल सदा से ही वीर-प्रसू प्रदेश रहा है। अनेक वीरों की लोककथाएँ इस प्रदेश में मिलती हैं। गढ़वाल में वीरों को 'भड़' और 'माल' कहा गया है। माल शब्द संस्कृत के 'मल्ल' शब्द का तद्भव रूप है और भड़ 'भट्ट' शब्द का। बाद में माल एक जाति-विशेष से सम्बन्धित हो गया। इनकी वीरता, शौर्य और जिन्दादिली की कथाएँ सारे गढ़वाल में फैली हुई हैं।

(क) माधोसिंह

एक समय अनावृष्टि के कारण सर्वत्र भयंकर अकाल पड़ा। लोग दाने-दाने के लिए तरसने लगे। पानी के विना धरती का कण-कण सूख गया।

मलेथा में माधोसिंह नाम का एक वीर रहता था। उसने अपने गाँववालों की पंचायत की। गाँव से ढाई मील की दूरी पर चन्द्रभागा नदी थी। उसने सबसे कहा कि चन्द्रभागा से कूल (नहर) निकालनी है। सब राजी हो गये। श्रमदान का श्रीगणेश हुआ। माधोसिंह की देख-रेख में नहर खोदी गयी। सबके चेहरों पर प्रसन्नता की लहर-सी आ गयी कि अब जल्दी नहर में पानी आयेगा और खेत हरे-भरे हो जायेंगे। पर भाग्य की बात, चन्द्रभागा का पानी नहर में आया ही नहीं। कई उपाय किये, देवी-देवताओं की मनौतियाँ मानीं, बकरों की बलि चढ़ायी, पर कुछ परिणाम न निकला। सब लोग निराश हो गये। सबके चेहरों पर उदासी छा गयी और हृदय में दुःख की रेखाएँ खिच गयीं। लोग पंडितों के पास गये, वाक्या के पास गये, देवता नचाये, पर कुछ न हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

एक रात को माधोसिंह ने एक भयानक सपना देखा। सपने से ऐसा लगा कि नहर में पानी तब आयेगा, जब वह अपने एकमात्र लड़के गर्जेसिंह की बलि चढ़ायेगा। सपना टूटते ही माधोसिंह परेशान हो गया। क्या किया जाय ? एक ओर पूरा गाँव, दूसरी ओर उसकी एकमात्र सन्तान। यह उसकी बहादुरी और जिन्दादिली की परीक्षा थी।

उसने अपने सपने की बात अपनी स्त्री को बतायी। गर्जेसिंह ने दोनों की बात सुन ली। उसने अपने मन में सोचा कि यदि मेरे कारण सारा गाँव बर्बाद हो गया, तो मेरा जीना बेकार है। वह अपने पिता के पास गया और उसने अपनी बलि चढ़ाने के बारे में आग्रह किया।

माधोसिंह ने बहुत सोच-विचार कर आखिर यही निश्चय किया कि इसी में भला है। थोड़ी ही देर में सारे गाँव में यह बात फैल गयी कि माधोसिंह अपने इकलौते लड़के की बलि चढ़ायेगा।

सुनकर सब हैरान रह गये। गर्जेसिंह की बलि चढ़ायी गयी। नहर में पानी आ गया और जोर की मूसलधार वर्षा हुई।

सारे गढ़वाल में माधोसिंह और गर्जेसिंह की वीरता और त्याग की अमर गाथा व्याप्त हो गयी।

६. हास्यकथाएँ

वैसे तो, सम्पूर्ण लोककथाओं का मुख्य उद्देश्य जन-जन का मनोरंजन और नयी सीख देना है, परन्तु कुछ लोककथाओं की सृष्टि मात्र हँसने-हँसाने के लिए ही की गयी है। बच्चों के मनोरंजन के लिए ऐसी अनेक कथाएँ गढ़वाल में प्रचलित हैं।

(क) चन्दू

एक बामणा की द्वी जनानी छई। जेठी जनानी का सात नौना अर कणसि[1] को एक नौनो[2] छयो। उ सात से छोटू छयो। बामण बिचारो पेले ही मरी गे छौ। सातु मा रोज झगड़ा होंदो छयो। एक दिन सब भायोंन बोले, भाई अलग-अलग होई जावा। सोत बाँटा होयेन। आधा जायदाद सात भायों मा अर आधा एक भाई मूँ। सात जो छाया ऊन सोचे कि ये मुंगे[3] बड़ो खेत फुडी गाड़ी जाव। अब चलन लगे झगड़ा-फिसाद। वैन बोले,

१. छोटी, २. लड़का, ३. से।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

भाई जेक ते धरति माता बोले याली वैको खेत रयो। उन बोले ठोक छ। वेको नाम चन्दू छयो। वैन रात भर खेत मां एक खड़ा खोदे अर वख अपनी खडयाई दिने। सुबेर होई। अब आठ ही खेत में पहुँच्या। वैन बोले—हे धरति, युँ खेत कैकु छ, सच-सच बतो। खाड से आवाज आयी–चन्दू को। अब सब दुखीः होइक घर पहुँच्या। ऊँ सातुन सोचे कि ये माचद सणी यख से भगोण की युक्ती सोचा। सोचदो-सोचदो यो तय होय कि रात मा वैकी भैंसी खोलीक विटा[1] फेंक द्या। ऊन उने करि।

सबेर जब चन्दू उठो, वैन भैंसी फरकायू देखे। वो झट से गये अर भैंसी की खाल निकालिक ली आये। वेन खूब सुक्खैक साथ मां और खाल लीक चल दिने। चलदो-चलदो वे सणि एक जंगल मां रात पड़िगे। अब वैन सोचे रात को मामलो छ, जमीण मा रण से कुई जानवर खै जालो। ये वास्ता वे बड़ा डाला मा रात बिताये जाओ। पास ही एक बड़ को पेड़ छयो, ओ वैकी फोग्यें[2] मा बैठिगे।

ये पेड़ का निस[3] चौरू को घर छयो। चौरू कखि चोरि करण जायाँ छया, कुछ देर मा चोर चोरी करीक ल्याँया अर पेड़ का निस बाँट करण लैग्यों, लेकिन ऊन बाँट ही नि करी जाणे, कुछ-न-कुछ बचत रे जावो। एक चोर न बोले—ये डाली उँदे[4] इने बजर पड़दो एक-द्वी बड़दी जाँदी, तब त रन्दा सब चैन से। वो डाली मा बैठ्यूँ छयो। वैन एक दम ओ भैंसा की खलड़ी फैंकी। सुखी खलड़ी[5] जब ऐंच गड़ागड़हट करण लगे चोरू न समझे—अब मर्या, बजर सचमुच पड़िगे। ऊ सब माल-मत्ता[6] छोड़े और बस वख से भग पड़ेन। वो एकदम उतरे और वेन सब माल-मत्ता उठाये, पली बाँधे अर चल दिने। जब घर पहुँचे, वैन भायों मा रुप्या भरण पाथू[7] माँगे। ऊन सोचे क्या लाये, वा पाथी का निस सेल[8] लगाई दिने। वैन रुप्या भर्यां जाणी-बूझीक एक रुप्या चिपकाई क उन्को पाथी वापिस करि दीने। उन देखे रुप्या चिपक्यूँ। वेका पास गया पूछे कि कत्त से लाई। तुमारो भलो होया भायो, जोन तुमने मेरी भैंसी लमडाये[9], मैंक वैकी खाल्ड़ी ही रुप्या देगयी। ऊन बोले कनै। वैन वोले, अरे वाजार मा लोग खल्डी का मुख मांगदा दाम देणा छन।

१. पहाड़, २. टहनी, ३. नीचे, ४. पर, ५. खाल, ६. सामान, ७. मापने का वर्तन, ८. लीसा ९. फेकी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

उन सोचे, चला तब त हम भी इने करदा। योत एक खल्डी से यथ्गा[1] रुप्या ल्याए। हमारा त सात भैंसा छन। उन सात भैंसा ढंगार[2] उंद गिरया और सात खाल सुकाई-तपायेक लिजाण लग्या। चन्दू बोलण लेगे ये वक्त ठीक नि अबारे क्वीनि खरीदण्या। तुम सबेर जा, जे वक्त उठणा को समय होंद, वे वक्त ली जा। अर आवाज लगान, जुतों की खाल जी ल्या। ऊन वनी ही करे। लोग बाग सबेर उठण्या ही छाया कि ऊन बजार मा हल्ला करणे आरम्भ कर दिने।

लोगू सणी बड़ो गुस्सा आई, ऊन वो पकड़ीन और ऊकी बुरी गत[3] करी। सैर से भैर निकालीक भेजा दीन्या। ऊँ सणी गुस्ता आई। चन्दू की झोपड़ी पर आग लगाई दिने। चन्दू सबेर उठे अर वेन सब खारो कठा करे, एक कण्डी सजाये, पीठ मा उठाईक चल दिने। जब यो कछु दूर चली गे, रास्ता मा वे सणी एक ढकरोई[4] मिले ओ कणाकण लग्यू। चन्दू न बोले सतू खाई होला त्वीन। वैन बोले हाँ। वैन बोले तब तू बचणों मुश्किल छ। ढकरोई न बोले कि क्या होलो। अब वैन बोले मैं तेरी इतना सेवा[5] करी सकदू कि जब तक तू चाटि ओंदी के तेरी कड़ी देखलो। वैन बोले अच्छो। ढकराई उने गै और वैन वैकी कंडी पीट पर लगाई चल दिने।

घर आय, फिर पाथो मांगे। ऊन फिर सेल चिपकाये दिने। मालूम होये कि यो नमक ल्याए। उन पूछे कि कना ल्याये भाई? वैन बोले बजार मा खारो छोइके वास्ता बिको। जतना कि खारो हो, वाँकू दुगुणा नमक मिलणू छ। उन बोली कि यार यनि करा। और अपणी छानी[6] फूँकी। बजार मा गया फिर जुत्ता खाईक वापस घर लौटा।

उ सत्यौन बोलि अब ये माचद सणी काटीक गंगाल[7] फंक द्या। वो चन्दू से बोलण लगेन कि भाई देख हम सातु क त व्यो छन् तु रेगि वियोणक[8]। लड़की को इन्तजाम हमारी गंगा पार करियूँ छ। और भोल[9] वख जाण छ। ज्यादा ठंड तूफान[10] किले करण। सात भाई हम छा अर एक तू होईगे। वैन बोले ठीक छ। सबेर वर नाराण पालकी पर बैठाये और चल दियो। ऊँ सणी कुछ दूर जाईक भूक लेगे। पालिकी वखि मा विछाई अर

१. इतने, २. पहाड़, ३. हालत, ४. भार ले जाने वाला, ५. सहायता, ६. झोपड़ी, ७. गंगा, ८. शादी करने लायक, ९. कल, १०. साजबाज।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

खाण बणोण लेग्याँ। वो सबका सब तो लाखड़ा पाणी की खोज लग्या। इतना मा एक पालसी[1] वख मा आये। वैन बोले ए भाग्यानो कनो छ व्यो होणू। चंदू बोलण लगे, भाई जी इनौ व्यो परमात्मा चाहो त वैको नहीं हो। वैन बोले किले। चन्दू बोलण लगे मेरी सात जनानी घर छन और ये जबर-दस्ती आठों व्यो करणा छन तेरी व्यो नी।

वैन बोले हे राम भैजी, व्यो ही होई जान्दो त। चंदू न बोले—यख औ अर पैर[2] मेरा कपड़ा अर तो सणी में दीदे। जब तक तु वापस नि आई तब तक मे तेरा भेर बखरा[3] देखलो। जनानि भी मिली जाली अर भेड़-बखरा भी, वैन सोचे ठीक छ। ऊन कपड़ा बदली करयाँ। चन्दू न चलदी द बोले कि देख ये चन्दू त्वेक बोलला कि ओ: भात खन्दू, तू हाथ से ना बोलि। वैन बतायाँ मुताबिक ना बोलि। ऊन दुबारा केकू बोलण छयो। ऊन पालकी उठाये और गंगा सरण कर दिने। घर चलि गैन। वख देखे त सारी छान्यो[4] मु भेड़-बकरा अर चन्दू जी अलग छोट। चेनखी[5] दगड़े खोलणा छन।

ऊन बोले, देखा ये माचद[6] मौत भी कुछ दी गये। ऊन बोले कि भाई तू कने ल्याही भेड़-बकरा। वैन बोले तुम त व्यो करण लीग्याँ छया अर गंगा मा फेकी याले छो। वख जब में पहुँच्यो, गंगा का निस एक सुन्दर जंगल मा भोत सारी भेड़ बकरी छई। सिफ वख यूंक घास नी छवो। मैन वख का लोगूमा बोले कि कुछ बाखरा मी सणि दी द्या। ऊन बोले सभी ल्हीजा। मैं थोड़ा सी लियायों। अब दूसरी बार कभी जौली तब ले ओलो। ऊन बोले त हमसणिमि रस्ता बतो। वैन बोले ठीक जख भू तुमन पालकी छोड़ी, वखि बिटिनँ रस्ता छ। पर तुम इनी न जाव। पैली बिल्ली अर एक कुत्ता भेज्यान। अगर ओ हाथ ओण को इसारो कराने त झट छंऽांग मार्या।

ऊन कुत्ता अर विल्ली डाले[8]। सी किनारा ओएक हाथ मारण लग्यां। ऊन सोचे, बुलाणा छन। वो भी सब का सब गंगा शरण होअ गैन। डेरा की सात जनानि वैकि ह्वेगीन अर आराम सि दिन काटण लेगे। वे वास्ता त पुराणो की मिसाल छ कि जु हेंका कू खड्ड खणदा वैकू अग्वाड़ि कुंआ तय्यार रिन्दा।

१. बकरी चुगाने वाला, २. पहनना, ३. भेड़ बकरियाँ, ४. झोपड़ी, ५. छौना, (बकरी के बच्चे), ६. साले, ७. से, ८. फेके।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

(ख) हाँ-मा-हाँ मिलौण

बीरबल को देखकर अकबर के सभी दरबारी जलते थे कि बादशाह सबसे ज्यादा बीरबल का ही सम्मान करते हैं। रहीम खानखाना, मौलवी, मानसिंह आदि ने मिलकर एक चाल चली। वे बादशाह के पास गये और कहने लगे कि महाराज बीरबल तो आपकी बहुत काट करता है। और आप हैं कि उसको सबसे ज्यादा प्यार करते हैं।

अकबर बादशाह भी अपने मन में कई दिनों से सोच रहे थे कि बीरबल के सामने बुद्धि और चातुर्य में मैं कुछ नहीं हूँ। कई उपाय किये, लेकिन बीरबल कभी हारे नहीं। अकबर की भी इच्छा थी कि कभी-न कभी ऐसा मौका आजाय कि बीरबल को मुँह की खानी पड़े।

इसलिए उन्होंने इन सबसे कहा कि तुम जानते हो बीरबल के सामने तुम्हारी एक नहीं चलती। हम जो भी सवाल करते हैं, बीरबल तुरन्त उसका उत्तर दे देते हैं। आप लोग ऐसा कोई उपाय बताइये कि बीरबल की बोलती बन्द हो जाये।

दरबारियों में रहीम वृद्ध और चतुर थे। उन्होंने कहा, जहाँपनाह, आप ऐसा सवाल पूछिये कि बीरबल चकरा जाये। वह सवाल मैंने कई महीनों सोचकर तैयार किया है।

अकबर ने पूछा कि क्या सवाल है वह ?

रहीम ने कहा—जहाँपनाह, आप बीरबल से पूछें कि दुनिया में सबसे अच्छी चीज क्या है ? वह जो भी बतलाये, आप 'ना' कर दीजिये। फिर देखिये उन्हें मुँह की खानी पड़ेगी।

बादशाह अकबर राजी हो गया। अगले दिन दरबार में उन्होंने बीरबल से यही प्रश्न किया बोले; 'राजा साहब, हम कई दिनों से सोच रहे हैं कि दुनिया में सबसे अच्छी चीज क्या है, पर इसका कोई अच्छा जवाब हमें अबतक नहीं मिला।'

बीरबल मुस्कराया ! बोला—'यह भी कोई बताने की बात है, आप खुद जानते हैं कि सबसे अच्छी चीज क्या है।'

'नहीं' कहने को बादशाह ने सिर हिलाया; 'यही तो तुमसे पूछता हूँ।'

'झूठ-मूठ हाँ-में-हाँ मिलाना।' बीरबल ने जवाब दिया। बादशाह हँसते-हँसते लोट-पोट हो गया, पर दरबारी जल उठे। सबने मिलकर कहा—'बीरबल को इसका सबूत देना चाहिए।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

बीरबल तैय्यार था। उसने कहा—'ठीक है, मैं इसका सबूत दूँगा। पर वह सबूत मैं नहीं दूँगा, अगली अमावस को बरगद के पेड़ के नीचे एक साधू आपको इसका सबूत देगा।'

सबने बात मान ली। अब क्या था, अमावस के दिन गिने जाने लगे। बीरबल भी अपनी तैयारी में लगा। एक रात पहले उसने साधू का वेश बनाया और बरगद के नीचे जा बैठा। उसने बड़े जोर-शोर से 'राम' 'राम' जपना शुरू कर दिया और चारों ओर यह बात फैला दी कि साधू जी बड़े सिद्ध जोगी हैं।

अमावस आयी। बादशाह अपने दरबारियों को लेकर बरगद के पेड़ के नीचे गया। वहाँ सचमुच एक साधु बैठा था। सबने झुककर उसे प्रणाम किया। साधु ने आशीर्वाद दिया और कहा—'बोलो बच्चो, क्या माँगते हो? हम तुम्हें तुम्हारे मरे हुए बाप-दादा के दर्शन करा सकते हैं।'

दरबारियों के मुँह खुले-के-खुले रह गये। साधु फिर बोला, 'पर वही आदमी अपने बाप को देख सकेगा, जो अपने बाप की औलाद होगा।' साधु ने तब उन्हें एक-एक कर पेड़ पर चढ़ने का इशारा किया और आकाश की ओर देखने को कहा।

सबसे पहले मौलवी साहब चढ़ाये गये। साधु ने पूछा, 'क्यों जी, तुम्हारा बाप तुम्हें दिखाई दे रहा है?' मौलवी साहब, 'ना' कहने ही वाले थे कि उन्होंने सोचा तब लोग उन्हें अपने बाप की औलाद न मानेंगे, जिससे हँसी होगी। वे बोले, 'हाँ-हाँ, देख रहा हूँ। अब्बा की दाढ़ी दिखाई दे रही है।'

मौलवी साहब नीचे उतरे। फिर रहीम की बारी आयी। उन्हें भी अपना बाप नहीं दिखाई दिया, पर 'ना' करने का साहस न हुआ। वे भी 'हाँ-हाँ' कहने लगे। बोले,—'हाँ देख रहा हूँ। कितने कमजोर हो गये हैं अब्बा! पहचाने भी नहीं जाते।'

फिर क्या था! सबने हाँ-हाँ कर दी।

आखिर बादशाह की बारी आयी। पेड़ पर चढ़कर उन्होंने देखा, एक बार नहीं, दो बार नहीं, दस बार देखा, और झुँझला कर कहा—'कुछ भी तो नहीं दीखता।'

मौलवी साहब के कान खड़े हुए। बोले, 'मैंने भी कुछ नहीं देखा।' दूसरे लोगों ने भी कहा—'हमें भी कुछ नहीं दिखाई दिया।'

वे सब साधु पर बड़े नाराज हुए। पर देखते क्या हैं कि पेड़ के नीचे से साधु गायब है और बीरबल खड़ा मुस्करा रहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

बादशाह गरजा—'बीरबल, तुमने हमको बेवकूफ बनाया है।'

बीरवल ने झुक कर जवाब दिया, 'अन्नदाता, आपने ही तो सबूत माँगा था। मैंने कहा था न कि 'हाँ'-में-'हाँ' मिलाना, झूठ बोलना ही दुनिया में सबसे प्यारी चीज है!'

बादशाह सलामत खुश हुए और उन्होंने बीरवल को बहुत-सा इनाम दिया।

(ग) मुरखे कथा (मूर्ख-कथा)

एक मूर्ख ससुराल जाने के लिए तैयार हुआ। घरवालों ने उसे मौके के मुताबिक 'हाँ' या 'ना' में प्रश्नों के उत्तर देने के लिए कहा। उसके बाप ने उसे 'समनन' कहकर सेवा लगाने के लिए कहा। वह रास्ते भर 'समनन' जोर-जोर से चिल्लाता हुआ चला।

रास्ते में एक बहेलिया पक्षियों को फँसा रहा था। मूर्ख के चिल्लाने से उसकी चिड़ियाँ उड़ गयीं। उसने गुस्से में भरकर उसे खूब पीटा और कहा कि तू आगे इस तरह कह—'आओ और पकड़े जाओ'। मूर्ख 'आओ और पकड़े जाओ' रटता हुआ आगे बढ़ा। कुछ दूर पर चोर चोरी करके लौट रहे थे। जब उन्होंने ऐसा सुना तो उन्होंने उसे खूब पीटा और 'आये और जमा होता रहे' कहने के लिए कहा। मूर्ख 'आये और जमा होता रहे', कहता हुआ आगे बढ़ ही रहा था कि एक मुर्दा लिये हुए लोग आते मिले। इन लोगों ने भी उसे खूब डाँटा और ''ऐसा किसी को न हो' कहने के लिए कहा। मूर्ख को आगे एक बारात मिली। उसकी बात सुनकर बारातियों ने उसे खूब पीटा।

इतने में मूर्ख की ससुराल आ गयी। उसकी सास ने उससे पूछा—

'तुम राजी खुशी हो?'

मूर्ख बोला, 'हाँ'।

'क्या मेरी लड़की ठीक है?'

वह बोला, 'ना'।

'क्या वह बीमार है?'

उसने जबाब दिया, 'हाँ'।

'क्या वह ठीक नहीं हो रही है?'

उसने कहा, 'ना'।

'क्या वह मर गयी है?'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मूर्ख बोला 'हाँ' ।

मूर्ख की बात सुनकर घर में सब रोने लगे, जबकि उसकी स्त्री घर में राजी खुशी थी ।

(घ) चार मूर्ख

एक राजा था । वह कुछ सनकी-सा था । उसे हर रोज विचित्र बातें सूझती थीं । उनमें उसे बड़ा आनन्द आता था । बेचारा मंत्री उससे बड़ा परेशान रहता था । राजा हठी था । मंत्री को उसकी हर उल्टी-सीधी बात माननी पड़ती थी ।

एक दिन राजा को न जाने क्या सूझी, उसने सुबह ही मंत्री को बुलाया और कहा—'हमारे सामने चार मूर्ख लाकर खड़े करो ।' मंत्री ने उसे सिर झुकाया और फिर वह मूर्खों की तलाश में बाहर निकल पड़ा ।

मन्त्री बड़ी उलझन में था । सोचता था कि मूर्ख कहाँ मिलेंगे । यों तो सारी दुनिया ही मूर्खों से भरी पड़ी है; पर वे ऐसे ही थोड़े दिखाई देंगे ! वह इस प्रकार झुंझला ही रहा था कि सामने से एक आदमी आता दिखाई दिया । वह टट्टू पर चढ़ा था, पर अपनी गठरी वह अपने सिर पर रखे हुए था । मंत्री उसे देखकर खुश हुआ । मन-ही-मन बोला, यह मिला ! गठरी सिर पर और टट्टू पर आप ! वह अपनी इस खोज पर बड़ा प्रसन्न हुआ और उसने मूर्ख को रोक कर कहा, 'वाह भाई, अच्छे मिले । चलो मेरे साथ । राजा ने तुम्हें बुलाया है ।' मूर्ख मान गया और वे दोनों साथ हो लिये ।

कुछ दूर आगे बढ़े ही थे कि मंत्री को एक दूसरा आदमी मिला । वह खुशी में मस्त होकर मिठाई बाँट रहा था । मंत्री ने उसकी खुशी और मिठाई बाँटने का कारण पूछा । उस आदमी ने कहा कि मेरी औरत एक दूसरे आदमी के साथ भाग गयी, जिससे उसे बच्चा हुआ है, उसी की खुशी में मिठाई बांट रहा हूँ । मंत्री उसकी बात सुन कर जोर से हँसा, क्या आदमी है ! मंत्री ने उसे शाबाशी दी और कहा, 'राजा को भी तुम्हारे बच्चे की बड़ी खुशी है । उसने तुम्हें बुलाने के लिए मुझे भेजा है ।' वह दूसरा मूर्ख भी उसके साथ हो लिया ।

मंत्री उन मूर्खों को लेकर दो और मूर्खों की खोज में निकला । उसने तमाम गली कूचे छान डाले, पर कोई और मूर्ख न मिला । तब मंत्री डरता-डरता उन्हीं दोनों को लेकर राजा के पास पहुँचा । राजा ने मंत्री से पूछा,—'ये तुम्हें कैसे मिले ? क्या

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

सबूत है कि ये मूर्ख हैं ?' मंत्री ने उन दोनों की कथा सुनायी। राजा को संतोष हुआ। बोला 'ठीक है, मूर्ख ही हैं।'

मूर्खों को राजा की वात चुभी। वे सोचने लगे कि यह हमको 'मूर्ख' कहता है! वे झुंझला उठे।

मूर्खों की संख्या कम होने से मंत्री डर रहा था, तब तक राजा ने पूछ ही दिया, 'क्यों, और दो मूर्ख कहाँ हैं ?'

मंत्री ने काँपते हुए हाथ जोड़े। बोला, 'कसूर माफ हो, महाराज! मैंने वहुत खोज की। और कोई मूर्ख दिखा नहीं !'

राजा गरजा,–'मेरे इतने वड़े राज में तुझे दो मूर्ख नहीं मिले ?' तभी एक मूर्ख तपाक से वोल पड़ा: 'गुस्सा क्यों होते हो महाराज ? हम से कहिये तो हम आपको दो मूर्ख वता दें।'

राजा ने पूछा, 'अच्छा वताओ, तीसरा मूर्ख कौन है ?' मूर्ख बोले—'तीसरा मूर्ख आपका मंत्री।'

मंत्री गुस्सा हुआ—'मैं मूर्ख कैसे ?'

मूर्ख बोला: 'जो मूर्ख की खोज करता है, वह मूर्ख नहीं तो क्या है ?'

मंत्री चुप हो गया। राजा ने भी उसकी बात ठीक मान ली और बोला—'चौथा मूर्ख ?'

मूर्ख अब सकुचाये—'अगर सरकार बुरा न मानें...........।' राजा ने उन्हें अभय दान दिया, बोला, 'डरो नहीं।' मूर्ख तो कहने का मौका ही ढूंढ़ रहे थे। राजाके कहने पर उन्होंने कह दिया—'चौथे मूर्ख हैं आप पृथ्वीनाथ। खता माफ हो!'

राजा का लहू-पसीना एक हो गया। मंत्री का मुंह खुला-का-खुला रह गया। दोनों क्रोध से आग-बबूला हो उठे।

मूर्खों ने कहा,—'नाराज होने की बात नहीं है, महाराज। जो राजा विद्वानों के वजाय मूर्खों की खोज करता है, वह मूर्ख नहीं तो क्या है ? हमने क्या गलत कहा है ?'

राजा का गुस्सा ठंडा हो गया। उसने कहा,—'तुम बड़े चतुर मालूम होवे हो।' उसने उन्हें बहुत-सा इनाम देकर घर भेजा।

सचमुच, कुछ मूर्ख भी चतुर होते हैं!

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

७. राजा-रानियों की कथाएँ

(क) एक छौ राजा (एक था राजा)

एक राजा छयो। वैकी एक राणी अर द्वी नौना[1] छया। राणी दमा की बीमारी से पीड़ित छई। एक दिन राजा शिकार खेलण का वास्ता जंगल चल दिने अर राणी रोगी अवस्था मा महल का एक किनारा पड़ी छै।

महल का छत पर एक घेडुड़ी[2] को घोल छयो अर वीका भी बच्चा छया। वह भी कुछ रोगी छई अर कुछ समय बाद खत्म होई गै। कुछ देर बाद घेडुड़ी दुसरी घेडुड़ी ले आये। वा घेडुड़ी सौतेला बच्चो सणी बड़ी बुरी तरह पीटो। हनो होंदो करदो। एक दिन घेडुड़ी का बच्चा मरीन। राणी न सोचे मेरा मरण का बाद राजा भी दूसरी सादी करलो अर वा होण वाली राणी भी है तरह से मेरा बच्चा मारी देली। वा अपण मन मा दुखी होये। वे दिन व पैली से अधिक दुखी छई। राजा आये। राजा ने बोले, क्या आज ज्यादा तकलीफ छ? राणी ने बोले मै आज मर्यूं, भोल[3] मर्यूं, लेकिन तम मै सणी धर्म[4] दीया[5]। राजा ने बोले ले यो धर्म छ। धर्म दीक राजा न बोले, अब बोल क्याकु धर्म तिन क्या मांगे। वीन बोले तुम दूसरी शादी न करियान। वेन बोले ठीक छ। कुछ दिन बाद राणी मरीगे, राजा अपनी शर्त का अनुसार साल द्वी साल ब्यो टालदो ही रहे। लेकिन एक दिन मन्त्री, आदि सब लागून राजा से आग्रह करे कि आप ज्वान छन, आप सणो ब्यो करियूँ चैन्द। राजा, बिना राणी का शोभा नि देगा। राजा जब सबून मजबूर कर दिने तब राजा न दूसरो ब्यो करि दिने। राजा अवस्था मा कुछ अधिक छयो अर राणी ज्वान छई।

एक दिन वे द्वी बच्चा गेन्द खेली रे छया कि गेन्द उछलीक रनवास गिर पड़े। तब बच्चा गेन्द का वास्ता वख गेयन। रानी ऊंकी जवानी पर मोहित होई गये। वीन उ अपण काबू मा निकालना चाहेन। किन्तु ऊन साफ इन्कार करे। अब वी राणी भी शक होये कि ये लोग हो न हो राजा से बोल द्यून। वीन अपणा मुख पर दही लपोड़ि अर बिराली[6] से चटवाई दिने। ई

१. लड़के, २. गौरेया (चिड़िया), ३. कल, ४. वचन, ५. दो, ६. बिल्ली।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

तरह से वींका मुख पर खून निकलन लगे। राजा आयो अर वीन राजा का पास झूट-मूट बोल दिने कि तेरा नौना मेरा साथ व्यभिचार करण छया। राज सणि[1] गुस्सा आये और वैन खोलि[2] पर बच्चों का वास्ता तलाक[3] लिख दिने। कुवर, टीका स्कूल से अपना घोड़ो मा आया उन देखे खोलि पर हमारा वास्ता तलाक लिखीं छ अर वो वख से वापस जंगल की ओर चल दिने।

कुछ दूर चलन पर उ सणि रात पड़िगे, जंगल को मार्ग छयो। अब एक एड का पेड़ मुड़े रात काटणी निश्चित करे और द्वी-द्वी घंटा की बारी लगाई दिने कि बारी-बारी से स्यूंला। पैले जेठा भाई सेगे। जब जेठा सेगे, वे समय आकाश बाणी हुये कि ये वृक्ष पर एक हंस रंदा। जो वे मारीक वैको सिर खालो वो राजा होलो और जो धड़ खालू वह वजीर होलो। छोटा भैया न तीर मारे हंस मरिगे। वैन भड़ियाये-भुड़ियाये[4]।

सिर बड़ा भाई का वास्ता रखे अर धड़ खाई दिने। थोडी देर बाद जेठा की बारी आये और छोटु सेगे। वैन देखे यख मांस भड़ियाया की गन्द आणी छ। इनै[5]-उनै देखण पर वे सणी हंस को सिर मिले। वैन अपण दिल मा सोचे कि देखा अपणो कोई नी होन्दो। येन मांस आफू खाये अर खुपड़ी मैंक धरो। गुस्सा मा वेसणि वखी भूख सेयूँ छोड़िगा चल दिने। कुछ दूर गये अर वेसणि रास्ता में धर्युं[6] एक तम्बाकू का मुंडी और हुक्का मिले। वख मू शर्त लिखी छै कि जो ये तम्बाकू सणि हुक्का मा भरिक एक बार फूकलो ओ वख को राजा होलो। वैन तम्बाकू हुक्का मा भरि अर एक सोड़ मा तम्बाकू खतम कर दीनी। वह वख को राजा होई गै। इने जब दूसरा की नीन्द खुली, बैन देखि कि भाई साहब घोड़ा का समित गायब छैना। वैन भी अपणो घोड़ो खोलो अर चल दिने। वैकी घोड़ी अपना दगिड़िया[7] घोड़ा का कदम पछाणदी छई। वे वास्ता वे ही राजा का राज मा वो घोड़ी वे सणि ली गे। रात पड़ गै छई अर एक बुढ्ढी एक रात रहना का वास्ता जगा मांगण लेगे।

बुढ्ढी बोलदे—बाबू यख रागस[8] लग्यूँ छ अर आज मेरी नौनी को बारी छ। तू कैकू[9] रन्दी यख। वैन बोले मैसणि रागस की फिकर नी। सिर्फ रैण का वास्ता जगा दी दे। बुढ्ढी न बोले कि नी मानदो त एक कोणा

१. को, २. दरवाजे, ३. घर में घुसने की मनाही, ४. पकाया, ५. इधर-उधर, ६. रखा, ७. साथी, ८. राक्षस, ९. क्यों।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

मु तू भी सो जा। थोड़ी देर बाद रागस ऐ पहुँचे। वैन आवाज लगाये भितर कु छ। वैन बोले कि, रागस को भाई भेगस। रागस न बोले अपणी टाँग दिखौ दो। वेन हलसूंगा[1] की लाट वतै दिने। वैन दाँत, नाखुन काफी उपाय करी लेकिन वी लाट पर कोई भी असर नि पड़ो। वैन बोले कि तू मी अपणी टाँग दिखो। वेन दिखाई अर वैन तलवार से काट दिने। फिर रागस बोलदो—अपणा हाथ दिखौ। वेन जुआ दिखै दिने।

अब वैन रागस को फिर बोले कि तू अपना हाथ दिखो। वैन ई तरह से वेका हाथ काट दिने। अब सिर की नौबत आई। रागस न बोले कि अपनो सिर दिखो। वैन परेठो[2] दिखे दिने। अब राजा न बोले कि तु भी अपणो सिर दिखो। रागस ने सिर दिखाये और वैन काट दिने। अब ओ बुढ़िया का घर रहण लेगे। वे गाँव मा एक सेठ रन्दो छयो। वेन बुढ़िया मा बोली कि ये लड़का सणी मैं परदेस जाणो छौं, मेरा साथ भेजी दे।

बुढ़िया न मनाई करे, लेकिन वेन बोले कि मे अवश्य जाणा चान्दो अर ओ सेठ का साथ चल दिने। उ एक अनपढ़ राज्य मा पहुँचे। लड़का वेन वखी छोड़ दिने अर अपना आप कखी दूर देश चल दिने। लड़का का वास्ता बोले कि जब तक मै नि ओंदू, तब तक तू मेरी यखी मू इन्तजार करी। सेठ चल दिने। सांयकाल को उ अपनी संध्या मा बेठी। वख का लोग न देखे कि यो कुई बड़ो भारी विद्वान हमारा राज्य मा आयूँ छ। सुबेरे होण पर वख का राजा मू यह खबर पहुँचाई कि हमारा गौं मा एक बड़ो विद्वान आयूँ छ। राजा न उ वश बुलाई दिने अर वे से प्रार्थना करी कि तू हमारा बच्चों तैं शिक्षित बणाई दे। अब ओ राजा का लड़को पढ़ौण बैठे।

हेतरह से बारह साल बीति गैन। राजा का लड़का भी अच्छा पढ़-लिख गैन अर सेठ भी वापिस आई गे। लड़का जब वख से चलण लेगे त राजा न विदाई मा अपणी लड़की वे सणी दी दिने। सेठ न देखे कि मैं त इतनी दूर आयूँ अर पैसा भी मेरे पास नी छन। इतनी सुन्दंर रागी मि मैं भू नीछ। ये फुण्डो डोल्या मू[3] देखा कतनी सुन्दर राणी छ। अब सायंकाल का समय सेठ न बोली कि भाई तू त संध्या करियाल गंगा किनारा जेक, अर मैं तब तक खाण पकोण की बन्दोबस्त करदु। उ गंगा किनारा ऊँचा डला

१. हल, २. लकड़ी का वर्तन, ३. बेकार।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

मा बैठिक संध्या करण लैगे। इने सेठ न वे पर धक्का मारे अर वो गंगा जी मा डुबाई दिने। उ मछली न धूलि[1] दिने। सेठ राणी लीक, तैं नजदीक ही हको गाँव छयो, लीगे। सेठ न रात्रि का ही समय बामण बुलाये और साथ रहण को दिन करदणि लगे। राणी न बामण का वास्ता इशारो करे। अपणा पास बुलाये, समझाये कि पाँच साल पहले नी जुड्दो छनो बताई। मै त्वे सणी काफी धन-दौलत द्यूलो। बामण न भी वीको बोल्या करे।

अब सबरे मछोई आई। अर मछोई का जाल पर ओ माछी पड़े। वो मोटो होण का कारण सेठ का पास बिकौण की वास्ता लीगे। सेठ न बोले कि भाई मेरी नई राणी ब्याई छ। वीं सणी पूछ। अब राणी न वा मच्छी लिने अर पेट चाकर करे त वख उ मिले। वीन सेठ का वास्ता बोले कि मेरा वास्ता एक पिटारी बणाया जावो। सेठ न बणावाये अर वीन उ वख पर बन्द करि दिने। वे राज्य मा उ को भाई को राजा छयो। कहान्यूँ को बड़ो शौकीन छयो। एक दिन वैन सेठ मा बोले कि कुई कहानी सुणावा। सेठ न बोले कि भाई मैं त नी जाणदो पर मेरी एक राणो ल्यांई। वा कहानी अवश्य जाणदी। राजा न पेश करवाये अर वी से कहानी सुणौण क बोले। वीन स्या कहानी राजा का सामणे रखी अर साथ ही पिटारी की चाबी खोलीक उ भि दिखाये।

राजा न अपणो भाई मंत्रि बणाये।

(ख) पाँच राजकुमार

एक छौ[2] राजा। वेका छया पाँच राजकुमार। सी सभी भौत[3] चालाक अर सुन्दर छया। राजा सबू तैं बराबर प्यार करदू छयो। सबू तैं एक ही प्रकार का कपड़ा, एक ही किस्म का महल बणाया छया।

जब राजकुमार खूब बड़ा ह्वेगेन तब राजा न चारों तरफ अपणा दूत भेजीन कि पाँचू राजकुमारुँ तैं इक-नस्सी[4] खुबसूरत अर योग्य राजकुमारी ढूँढो ल्या। लेकिन दूत-मंत्री सब हार गयाँ। ऊन सात द्वीप की यात्रा करे, सात समुन्द्र पार करीन बड़ा-बड़ा राजा देखीन, महल से लेतई झोपड़ी तक कू कोणोकोणो छाण मारे लेकिन कखी भी एकी-नस्सा ब्वारी नि मिली।

१. खा, २. था, ३. बहुत, ४. एक ही प्रकार की।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

राजा स्वयं परेशान छयो। अब क्या किया जौ, सबका मुख पर यो ही सवाल छयो।

आखिर मा राजा का एक बुढ्या मंत्री न एक राय दिने कि महाराज, एकी-नस्या ब्वारी मिलणी त भौत ही कठिन, क्या असम्भव छ—हाँ, सबू की भाग्यकी परीक्षा किया जौ। जैका भाग पर जनी ह्वली, वे तैं तनी मिली जाली। राजा न भी भोत सौची-समझीक 'हाँ' बोली देने अर पाँचूँ राजकुमारूँ तैं यांकी खबर दियाले।

अगला दिन पाँच-का-पाँच राजकुमार बुलायाँ। ऊँका पास एक-एक तीर अर एक एक धनुष दीने अर बोले कि जख तुम्हारी इच्छा छ तख तीर मारा। जैकू[2] बाण जख लगलू, वे तैं तखी से ब्वारी लेण पड़ली। राजकुमार तैयार ह्वेगेन।

सबून सोची अर देखीक अपणा बाण चलाया, जूँ पर ऊँको नाम लिख्यूँ छयो। राजा का आदमी जख-जख बाण पड्या तख गया। चार राजकुमारूँ तै अच्छा-अच्छा घरानु की सुन्दर अर योग्य ब्वारी[3] मिली, लेकिन सबसे छोटा राजकुमार कु बाण एक डाला पर लगे, वे पर एक बन्दरी बैठी छई। जब राजा का नौकरु न बन्दरिया देखे त सब चुप ह्वे गयाँ अर लौटीक सब बात बतै दीने। सु राजकुमार तख गये ते बन्दरी ते अपणा महल मा ल्याए। राजा अर सरदारू न छोटू राजकुमार भौत समझाये कि तू अर ब्यौ करले, लेकिन वेन बोले कि जु मेरा भाग पर छ वे तैं मैं कने मिटै सकदू। अब चाये कुछ भी हो, मेरु ब्यौ[4] ईका साथ ही होलू।

चारु राजकुमारु को ब्यौ बड़ा धूम-धाम से होये। सरा[5] राज मां खूब नाच-गाणा हाईने। गाँव-गाँव शहर-शहर मा लोगू न अपणा मकान बन्दनवार अर महारावूँ से सजायाँ। अच्छी भली चहल-पहल रहें। छोटू राजकुमार दुखी और रुणपिथ्या[6] सी अपण ही महल मा रहे। वेन भी अपणो ब्यौ बन्दिरी का साथ करी दीने। बन्दरी सणी अच्छ अच्छा गहणा पहरे दीन्या। सोने की थाली मा एक से एक चीज खाणक दीने अर आठू पहर वी का साथ बवणादूँ[7] छयो।

१. ढूंढा, २. जिसका, ३. बहुएँ, ४. विवाह, ५. सारे, ६. रोता-सा, ७. बातचीत।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

लोग वे ते सनकी अर पागल बलोण लाग्यो। चारु तरफ बन्दरी और छोटा राजकुमार की चर्चा होण लगे। राजा न बार-बार समझाये कि तू दूसरो ब्यौ करले। मंत्री, सरदार, प्रजा सबी गैन, लेकिन राजकुमार टस-से-मस नी होये।

एका दिन राजा न सब-का-सब राजकुमार अपणा पास बुलायाँ अर बोले कि देखा मे भौत खुश छौं, तुम सबको ब्यौ ह्वगे। मैं तुम सबू सणी प्रसन्न देखणू चान्दू अर तुम सणी तथा तुमारी ब्वायूं तैं भेंट देण चान्दू।

वैका बाद बड़ा राजकुमारन सबसे पैली राजा ते निमन्त्रण दीने। राजा प्रेम अर प्रसन्नता का साथ बड़ा राजकुमार का यख गये अर तख राजा तैं सुन्दर भोज दिया गे। एक-एक-से पदार्थ अर व्यंजन परस्या[1] गैन। राजा भौत खुश होये अर अपणा सबसे बड़ा राजकुमार ते खूब भेंट दीने। ये प्रकार से औरुन भी बारी-बारी से राजा बुलाये अर खूब धका-धूम से राजा को स्वागत करे। राजा न जी-खोलिक भेंट दीने। अब सबसे छोटा राजकुमार की बारी आई।

ऊ बड़ो चिन्तित अर[2] परेशान होये कि अब के प्रकार से राजा कू स्वागत किया जो। लोग मेरी हँसी उड़ौला। पिता जी अपणा दिल मा क्या सोचदा। भगवान, मेरी बन्दरी बोलदी त न जाणि क्या होन्द। इनी राजकुमार बबणादू[3] रहे लेकिन थोड़ी देर मा क्या देखद कि बान्दरी बिल्कुल अच्छी प्रकार से बात करण लैगे। वे बड़ो अचरज होये। बन्दरी बोलदी, जा राजकुमार, घबरो ना, अपणा पिता जी तें अर साथ-ही-साथ मंत्री, सरदार, सिपाई सबू तैं निमन्त्रण देया। अर तू बिलकुल कै बात की फिकर ना कर।

राजकुमार राजा, मंत्री, सरदार, सिपाई सबू तैं निमन्त्रण देन्द। सबू तैं आश्चर्य होन्द कि एको दिमाग अब भौत खराब ह्वेगे। लोग आपस मा तरह-तरह की बात करणा छ्या।

राजकुमार निमंत्रण देण का बाद बन्दिरी से पूछे, बोल मेरी राणी, अब कै प्रकार से स्वागत किया जो। बान्दरी बिलकुल चुपचाप रये। राजकुमार अब अर

१. परोसना, २. और, ३. बोलता।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

भी परेशान होये कि अब क्या करण। सु बड़ो चिन्तित होये, लेकिन थोड़ी देर राजकुमारन चिट्ठी पढ़े। चिट्ठी मा लेख्यूं छयो कि चिन्ता ना कर—जे जगा[1] से तू मैं सणी ल्याए, तखी डाला का ठोर[2] मा ही चिट्ठी डाली दे अर जो कुछ उत्तर मिलली, तनी करे।

राजकुमार चिट्ठी लीक ढूँढदू खोजदू बड़ी कठिनाई का बाद तख पहुँची अर वैन चिट्ठी ते पुराणा डाला का डोर उन्दो डाली दीने। थोड़ी देर मा लाल साड़ी अर किसम-किसम का गैणा[3] पहनीक एक सुन्दर-सी स्त्री ओदी अर बोलदी कि चल मेरी पिछनै-पिछनै।

राजकुमार वींका पिछनै-चलद अर कुछ देर बाद एक भौत सुन्दर बाग मा पहुँचद। बाग मा एक सुन्दर महल छयो, जे का चारुँ तरफ किसम-किसम का फल-फूल लग्याँ छया। राजकुमारन आज तक कभी इना सुन्दर फल-फूल नी देख्यां छया। महल का पास ही एक भौत बड़ो तालाब छयो। वैकूं[4] पाणी बिलकुल मिठो अर सुगन्धित छयो। हिलांस[5] अर मेल्वड़ी[6] वाता-वरण मा जान सी देणा छया। महल कू बड़ो दरवाजू खुले। भितरभी देखीक राजकुमार का आंखी रंगशाली[7] गैन, लेकिन थोड़ी देर मा क्या देखद कि सामणे एक सुन्दरी छ, जैका सामणे तिलोत्तमा, उर्वशी, रम्भा, मेनका आदि को रूप फिको छ। सैं सुन्दरी न बोले कि राजकुमार तुम अब चली जा अर सब इन्तजाम होई जाली। राजकुमार ते ये दृश्य देखीक बड़ी अचरज होये।

यख से लौटीक जब राजकुमार अपणों महल मा आये न, तेन अपणी यात्रा की सबी छबीं अपणी राणी बन्दरी मू लगाये अर छवी लगोंदी-लगोंदी वे सणी नींद ऐगे। सबेर हड़बडान्दू जब राजकुमार उठी त क्या देखदू कि महल का भैर[8] भितर रंग बिरंगा फूल लग्याँ छन। एक-से-एक कालीन बिछ्याँ छन। ऊँका ऊपर बढिया-से-बढिया दन्ना[9] बिछ्याँ छन। बत्तीस व्यंजन अर चौसठ प्रकार का खाण तैयार छेन। सोना की थाली लगी छ। इत्र की सुगन्ध, वाजू की मधुर आवाज, नौकर-चाकर की चहल-पहल सबू तैं देखीक राजकुमार हेरान होंद। राजकुमार का महल बटि[10] राजा का

१. जगह, २. कोटर, ३. गहने, ४. उसका, ५. एक पहाड़ी पक्षी, ६. पक्षी-विशेष, ७. चकित, ८. बाहर, ९. कालीन, १०. से।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

महल तक कालीन बिछ्याँ छया अर द्वी तरफ नौकर-चाकर हाथ मा फूल लीक खड़ा छन।

थोड़ी देर मा राजा, चार राजकुमार, मंत्री, सरदार अर फौज का सारा लोग ओन्दा। भैर कू ठाट-बाट देखीक सबी हैरान हुये जान्दा अर जब राजकुमार का महल का भीतर जान्दा त तखकी रौनेक अर खाणू देखिक सबू ते इनो लगे जनी के दूसरी दुनिया मा चली गया होला।

भोजन होण का बाद राजा न राजकुमार से बोले कि बेटा, तू सबसे बड़ो भाग्यवान छई। तेरा पास त हनी-हनी चीज छन, जु कि है दुनिया मा कखी भी नी मिलदी। अब मैं तेरी ब्वारी का दर्शन करण चान्दू, जु इतनी भाग्यवान छ। राजकुमार कुछ घबराये कि अब बन्दरी तैं देखिक फेर मेरी हँसी होली। पर सू से क्वठंड़ी[1] मा गै, जख बन्दरी छई, लेकिन तख बन्दरी की जगा[2] पर एक सुन्दरी, जुकि बाग का महल का भितर छई। वी सुन्दरीन बोले कि राजकुमार मैंन तेरा आदम्यू[6] को स्वागत करले, अब तू मेरा साथ ब्यो कर। देख मैं इतना खूबसूरत छौं! अर बन्दरी! छि! राजकुमार तैं गुस्सा चढ़े। वेन बोले कि मै अपणी बन्दरी सणी चान्दू। तेरा साथ मेरु क्वी[3] रिश्ता नी छ। तू मेरी बन्दरी सेणी ल्यौ।

सुन्दरी का कथणा[4] समझैण पर राजकुमार नी आये। तब खुश ह्वेक सुन्दरीन बोले कि मैं छौं तेरी बन्दरी। देख, कोण पर मेरु बन्दरी की चोल़ा[5] पड्यू[6] छ। राजकुमार भौत खुश होये अर राजा तथा राजकुमारु तैं यख ल्याये। यख सब राजा अर राजकुमार तैं सुन्दरी सणी देखदा त तोंका छक्का छूटी जाँदा। राजा न सबसे अच्छी भेंट दीने अर खुश ह्वे तैं चली गये। राजकुमारु सणी बड़ी जलन अर ईर्ष्या होये। ऊन छूटो राजकुमार पूछे कि बन्दरी कख गये। वेन सारा हाल लगाया त ऊन बोले कि तू तेकी की वीं खाल जलै दी। तब स्या हमेशा सुन्दरी बणी रहली। राजकुमारन तनी करे, लेकिन जनी खाल पर आग लगे तनी आवाज आये कि मैं जली गयू, मरी गयूँ अर तब राजकुमार सणी न बन्दरी ही दिखेणी न स्या सुन्दरी ही। राजकुमार भौत पछताणे अर जोगी[7] बणिक चल पड़े।

१. कमरा, २. जगह, ३. कोई, ४. कितना ही, ५. चोला, ६. को, ७. साधू।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

८. जीव-जन्तुओं की कथाएँ

(क) सोने मुँदड़ी (सोने की अँगूठी)

एक पंडितजी की द्वी जनानी छई। पहली जनानी का तीन लड़का छया अर दूसरी को एक काल़ो लड़का। तीनों की शादी होई छई। काल़ो व्योणोक[1] छयो। पंडित जी तीन लड़कों की शादी करण का बाद मर्यां गया छया। तीन भाई एक तरफ और काल़ो एक तरफ रहदा छयो। ऊं तीनू न अपणी मां से बोले कि हम त खील बणोण चाँदा। हमु तैं साटी[2] दियाल। काल़ो भी सुणदो रयो, वैन भी अपणी माँ मू बोले—'माँ, मैं भी खील बणोण जाँदू, मैं तैं भी साटी दियाल ?' माँ न वेतैं साटी दिने अर सो बरुण मा खील बणोण गयें। वैकी माँ न रोटी बणाये, लोटिया पर पाणी धरे अर जख ओ खील बणोण छयो वख पहुँचे। काल़ो अपणा काम पर लग्यों छयो। वैकी व्वैन रोटी पाणी की लोटिया डाला निस[3] धरे अर चल दिने। जब कुछ देर बाद काल़ो सुस्ताण का खातिर डाला छैल निस आये। वैन रोटी देखीन अर खायेन। पाणी पी दिने अर एक लाठी बणये। एक गौं की तरफ चल दिने। वख एक सेठ की नौनी छज्जा मा बैठीं छई अर मुँड बनोणी छई। काल़ा जीन सीधो वींका कमर उंदो डंडा जमाये अर बोलन लगे–रोटी वख मू धरे अर अफु चल दिने। आखिर तीन बोलन त छयो कि ल्या रोटी खयाल। सब लोग वखण काल़ा पीटाण ते इकट्ठा ह्वेग्याँ।

गौं का लोग तै पर डंडा बरसोंदा ही छया कि लड़की न बोले–ये विचारा मारी तैं क्या फायदा ? मेरो भाग्य मा यनो ही छयो। मैं एका ही साथ शादी करी द्यूलो। सेठ जी न बोले–जब तेरो इच्छा ह्वेगे त ठीक छ। सेठ जी न सारो बन्दोवस्त करो अर नौनी काल़ा का साथ विदा कर दिने। काल़ा घर जैक सेठ की नौनी न मैलो-कुचैलो साफ करे अर सफाई रखे। अब खाणकी बड़ी दिक्कत छई। खावन क्या ? सेठ की नौनी न अपणा पास से पाँच रुपया निकाल़ीन और काल़ा तैं दिने कि याँकी गल्ला ल्यो। काल़ो पाँच रुपया लोक जब कुछ दूर गये त वेन देखे कि कुछ लोग एक सर्प का बच्चा सणे[4] लाठियान[5] मारण छन। कालो बोन बेठे, ना मारो भाई। वों आदमियों न बोले दस-

१. व्याह के योग्य, २. धान, ३. नीचे, ४. को, ५. डंडों से।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

बारह रुपया द्याल्यो भाई, तब हम छोड़ी द्यूला। कालो सिरफ पाँच रुपया देणक तैयार हुवेन।

वैन पाँच रुप्या लीक सर्प का बच्चा छोड़ी दिने। काला न बांस का लट्ठा पर सर्प का बच्चा रखीक घर ली दिने। घर-वालीन बोले—सर्प को बच्चा ही पाये त्वैन। गल्याक[1] तैं भेजे छयो। सेठ की लड़की न साँप को बच्चा हिफाजत से रखदीने। फेर काला सेणी पाँच रुपया दीन्या। तब वो मूर्ख कुत्ता और बिराली ल्योंदो रये। सेठ की नौनी न सी भलि कैक पाल्या। एक दिन सबून बोले तू हमारी माँ छे, बोल हमु से क्या माँगदी। नौनी न बोलें, तुम पशु छन। मैं तैं क्या दी सकदा। अगर तुम देणी ही चान्दान त मेरा जी की अगूंठी ली चा जो सोने की बणों छ।

सेंदी[2] बगत पिता जी की स्या अंगूँठी नाक का अन्दर धरी रन्दी। सबी अंगूँठी लेण गया। सेठ सेयूँ छयौ। पैले मूसी गये। वीन अपणी पूँछ सेठ का नाक पर धरे। सेठ की जोर से छींक आये। अंगूँठी भ्वाँ मा[3] गिर पड़े। मूसीन न झट से उठाये अर चल दिने। थोड़ी दूर पर बिराली खड़ी छई। मूसी न बिराली तै अगूँठी दीने अर स्या चल दिने।

बाटा मा पुल पड़दो छयो। बिराली न अंगुँठी कुत्ता का पास दीने। कुत्ता अंगूँठी मुख पर धरीक नदी का किनारा पर गये। झट से तैका मुख से अंगूँठी छूटी। पाणी मा गिर पड़े और माछी न धूलि[4] दिने। माछी किनारा पर आई कि चील न झपटा मारे और माछी खै दिने। चारी-का-चारी[5] किनारा पर चार दिन तक भूखा रेग्याँ। बिराली अर कुत्ता न बोले—भाई देखा, चील धूमणो छ। वे सणी मारला। कुछ खाणो पीणो होई जालो। बिराली न माने की मुक्ति बताये। तीनों न हुँगारो[6] भरे। बिराली न बोले—मूसी अर सर्प त सड़क पर पड़ि जाला अर मैं कुत्ता येका दीब[7] रला। जनी चील तुम मा पड़लो हम भी एक दम पड़ी जौला।

सर्प अर मूसी सड़क मा पड़ी गैना। चील की नजर ऊँपर पड़ी और वैन झपटा मारे। इतना मा बिराली अर कुत्ता न भी झपटा मारे। चील मारी

१. सामान, २. सोते, ३. जमीन, ४. निगल ली, ५. चारो के चारों, ६. हाँ, ७. ताक।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

दीने। वेका पेट सोने की अगूँठी मिली। सबू बड़ी खुशी हाये। चारों न भूख मा चील खाये अर सोने अगूँठी सेठ की लड़की का पास दी दिने।

(ख) सर्पद्यौ (सर्प-देव)

एक गरीब स्त्री भूख का कारण कंडाली[१] लेण[२] जाणी छई। तबारे[३] रास्ता मा वी सणी एक अर स्त्री मिले वा स्त्री न बोले तू कख छे जाणी। वीने बोले कंडाली ल्येण। ब्याली[४] बिटे[५] भूखी छौं, कंडाली त खौलो। दूसरी स्त्री न बोले खाणक त मी द्यूलो तू मेरा मुँड जुँवा मार दे। वी स्त्री न दिन भर वीं का मुँड का जुँवा मार्या।

शाम की वक्त जब वा चलण लैगे त वीन भी अपण मुँह पर हाथ लगाये, अर एक जूँ पकड़ीक वीन बोले, त्वीन बोले कि मैंन सभी जुँवा मारया-लेन। यू देख दौं, युं जूं कनी छ अर अनाज देण से इन्कार कर दिने। स्या[६] जल्दी मा गये अर कंडाली लाये। घर मू जाईका वीन झाड़ी-झूड़ी अर चूल्हा मा रख दिने। वीं कंडाली का झाड़न से एक कीड़ी जमीन मा गिरे।

वीं स्त्री न वो कीड़ो टोकरी मुड़े[७] ढकाई दिने। कुछ समय बाद वह कीड़ो देखे जो वहुत बड़ो होईगै अर वी टोकरी निर्स[८] कुछ पैसा भी पडियाँ छया। वीन वो कीड़ो उठाई अर बड़ा टोकरा निस दबाई दिने। तब थोड़ी देर मा देख त ओ सर्प बणगे। ओ सर्प बोलदो कि मै सर्प-देव छौं। तू मेरी माँ छै। मैं त्वे रुप्यूं की थैली देदूँ। निकाल़ीका वैन अपनी माँ मू दिने अर बोले कि मेरा वास्ता ब्यौ[९] ढूढी ल्यो।

तब ओ बुढ़िया ब्यो की ढूंढ जांदी। बहुत कोशिश करण पर वी सणी एक लड़की मिले। जैकि कि सोतिया मां छई। वीन हजार रुप्या वीं सोतिया माँ मू दिने अर लड़की को हाथ पकड़े अपना यख लीगे। सर्प-देव राजा न वीं का वास्ता सुनहरा जेवराज बणाया अर आनन्द से रहण लगेन। एकदिन बुढ़िया न लड़की से बोले—तू सर्प दगड़ि कनै[१०] रंदि सेई। लड़की न बोले—ओ रात मा सुन्दर पुरुष बणिजांद। वीन पूछे पुरुष कने बणदो। लड़की न वोले—ओ सर्प का खाल उतारी देंद, अर सुबेर पैरि[११] देंद। बुढ़या न बोले

१. बिच्छू घास, २. लेने, ३. उसी समय, ४. कल, ५. से, ६. वह, ७. नीचे, ८. नीचे, ९. ब्याह, १०. साथ, ११. पहनना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

कि वीं खाल फूकी देई। तब ओ आदमी ही रहलो। वीन खाल जलाये अर तब ओ आदमी ही वण्यू रैगे। कुछ दिन व्यतीत होण पर लड़की न बोले कि मैं मैत[1] जाणू चान्दू। वैन नौकर का साथ मैत भेजी दीने।

मैत जब गाई त वींकी सौतिया मा[2] न सौचिकि मैत या छोरी सर्प का वास्ता दिने छई अर या त खूब सुन्दर सुनहरा गहणा पैरीक आई। वीन सोचे कि या मारे जाव और ईं की जगा[3] पर अपनी लड़की वख भेजे जावो। वीन वी तवा गरम कर्या अर द्वी सेरी[4] लाल करी। स्नान करण का बहाना स्या बुलाये। एक तवा ऊ मुड़े[5] अर एक मुँड मा रखीक, द्वी कन्दूड़[6] गर्म सरी कोचीक मारिदिने।

अपनी लड़की पर वीन जेवरात व कपड़ा पैराया अर वख भेज दिने। जो लड़की मरी गये छे, वी को प्राण एक पक्षी मा पड़ी। वह पक्षी बोलदो छ्यो। राजा का पलंग को सूतो[7]। इने राजा न जब लड़की देखे तब वे सणी बड़ो संकोच होये। राजा वी देखीक समझ गये कि यख मा जरूर कुछ राज छ। घोड़ा का साइस हमेशा घोड़ा तै पानी पिलौण का वास्ता तालाब पर लिजाओ। तब पक्षी रोज कभी घोड़ा का सिर मा, कभी कमर मा बैठीक बोले कि 'राजा का पलंग को सूतो ?' घोड़ी भी रोण लगी जाओ। ई तरह से काफी दिन होई गैन अर घोड़ी कमजोर होईगे। राजा न पूछे कि भाई सईस या घोड़ी किलै कमजोर होई। सईस न सारी कहानी राजा का पास लगाई। दूसरा दिन खुद राजा घोड़ी तैं पानी पिलौण लीगे अर वेन भी वो पक्षी देखे, दुःखी होई क रोण लैगे।

सामणे[8] पर्वत पर शंकर-पार्वती रहन्दा छया। पारवती त बड़ो दुख होये। वीन शंकर भगवान मा बोले कि भगवान, तुम लोगों की दुख दूर कर दाई और ये विचारा की देखा, कनि मुसीबत आई। यो विचारो सही रास्ता पर छ और ये सणी कनो धोका दिया गये। तुम अवश्य ही वको दुख दूर करा अर न करदा त मै फांस खांदू। भगवान शंकर न बोले कियो दुख एक ही तरह से दूर होई सकदो। अगर यों हंसदा ज्यूंदाल[9] अर बोलादी पाती, तै

१. मायके, २. लड़की, ३. जगह, ४. सींक, ५. नीचे, ६. कान, ७. सोता, ८. सामने, ९. अक्षत (चावल)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

पक्षी पर चढ़ावो त फिर वा मनुष्य रूप मा होई जावो। वैंन वनी ही करी अर फिर ओ पक्षी स्त्री बण गै। राजा न वा दूसरी लड़की मार दिने।

९. उपदेशात्मक कथाएँ

(क) फकीर की सीख

एक राजा था। वह एक फकीर को भोजन दिया करता था। एक दिन राजा का स्वर्गवास हो गया। राजकुमार ने उसी प्रकार प्रतिदिन फकीर को भोजन देने का हुक्म दिया। एक दिन राजकुमार भोजन लेकर फकीर के पास पहुँचा। फकीर रोने लगा। राजकुमार ने रोने का कारण पूछा। फकीर बोला, दरबारी लोग तुम्हारी दौलत ले लेना चाहते हैं। तुम अपनी दौलत लेकर बाहर चले जाओ, और मेरी ये चार बातें याद रखना—

१. रास्ता छोड़ी ठेरी।
२. बिना झण्या बिस्तर नि से।
३. वेण अच्छा समय कि होंद।
४. दोस्त गर्दिश कु होंद।

राजकुमार फकीर की बात मान कर धन-दौलत सहित चल पड़ा। रास्ते में उसे थकान मालूम हुई। वह रास्ता छोड़कर एक पेड़ के नीचे सो गया। ज्योंही उसकी नींद खुली, वह चल पड़ा। कुछ दूर जाकर उसे अपने धन की याद आयी। वह लौट कर उसी स्थान पर आया। राजकुमार को अपनी छोड़ी हुई दौलत मिल गयी। आगे चलकर उसे जंगल में एक चुड़ैल मिली। चुड़ैल ने उसे बिस्तर पर लेट कर आराम करने को कहा। राजकुमार को फकीर की याद आयी। उसने बिस्तर झाड़ा। बिस्तर के नीचे उसे गड्ढा दिखाई दिया। उसने चुड़ैल को मार डाला।

राजकुमार दूसरे शहर पहुँचा। वहाँ उसकी बहन ब्याही थी। राजकुमार ने बहन से मिलना चाहा, लेकिन बहन ने भाई को भिखारी समझ कर मिलने से इनकार कर दिया।

राजकुमार का एक दोस्त था, जो दूसरे शहर में रहता था। राजकुमार उसके पास गया। दोस्त ने उसे गले लगाया और उसकी खूब सेवा की। वहां से राजकुमार दूसरे शहर गया। उस शहर के राजा ने अपनी लड़की की शादी राजकुमार से कर दी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

राजकुमार धन-दौलत लेकर वापिस अपनी बहन के शहर आया। उसने अपनी बहन को संदेश भेजा। भाई को धन-दौलत सहित आते देख बहन ने उसका खूब सत्कार किया। फकीर की चारों बातें ठीक निकलीं। राजकुमार जीवन भर फकीर की बात पर चलता रहा।

(ख) स्थानम् प्रस्थानम् (जगह का असर)

एक समय की बात है। शंकराचार्य अपने शिष्यों के साथ देश का भ्रमण कर रहे थे। एक दिन किसी जंगल में उन्हें एक लकड़हारा दिखाई दिया। लकड़ियों का गट्ठा एक तरफ पड़ा था। दूसरी तरफ थका-माँदा लकड़हारा गहरी नींद में डूबा हुआ था। उसका दाँया हाथ जमीन पर सीधा पड़ा था। उसकी रेखाओं को देखकर शंकराचार्य ने कहा, 'अरे, इसे कल राजा बनना है। यह यहाँ कैसे पड़ा है!'

शंकराचार्य की बातें सुनकर सभी शिष्यों को बड़ा अचरज हुआ। एक लकड़-हारा एक-ही दिन में राजा कैसे हो जायेगा? यह तो जंगल में पड़ा हुआ है।

शिष्यों के चेहरों पर आये अविश्वास के भावों को शंकराचार्य ताड़ गये। उन्होंने फिर कहा,—'तुम्हें विश्वास नहीं होता, पर देख लेना कल यह लकड़हारा राजा बन जायेगा!'

इस बीच में लकड़हारे की नींद टूटी। अब उसकी थकान मिट चुकी थी। उसे अपना बदन हल्का-हल्का लगा। जल्दी-जल्दी उसने अपनी लकड़ियों का बोझ उठाया और बेचने के लिए शहर की ओर चल पड़ा। शहर पहुँचने में उसे देर हो गयी। दुकनदारों के दीपक बुझ गये थे। उसने रात को आवाज लगानी ठीक नहीं समझी। उसने मन में सोचा कि कल सुबह होते ही लकड़ी बेचूँगा, रात को कौन लेगा? इन्हीं विचारों की धक्का-मुक्की में वह एक सुन्दर भवन के बाहर सो गया।

वह भवन एक राजा का महल था। राजा बूढ़ा हो गया था, पर उसके कोई सन्तान न थी। उसने बहुत पूजा पाठ, यज्ञ, व्रत किये, पर उसे सन्तान न हुई। राजा इसी चिन्ता में बीमार रहने लगा। बीमारी बढ़ती देख उसी रात राजवैद्य ने घबराते हुए राजा से कहा,—'महाराज, आप नाराज न हों तो एक बात कहूँ।'

'कहो कहो'—राजा ने आज्ञा दी।

'महाराज, आज की अँधेरी रात बहुत खतरनाक मालूम पड़ती है। आप अपना कोई उत्तराधिकारी चुन लें तो फिर कोई चिन्ता न रहेगी।'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

राजा का मन भी बड़ा अशान्त था। बार-बार उठता और बैठता। उसे आज अजीव-सा लग रहा था। जी घबरा रहा था। उसने मंत्री, पुरोहित, राजवैद्य और सेनापति को बुला कर कहा—'देखो, मुझे लगता है कि आज की रात मेरे लिए अच्छी नहीं है। मुझे अभी याद आया। राजपुरोहित भास्कराचार्य ने मेरी जन्म-पत्री देखकर कहा था कि साठवां साल मेरे लिए बहुत ही खराब है, खासकर माघ का महीना और अष्टमी का दिन। आज वही दिन है। मेरा तनमन मेरे बस में नहीं। इसलिए मरने से पहले मैं एक बात कहता हूँ, उसे पूरा करना। कल सुबह सबसे पहले जो रास्ते पर दिखाई दे, उसे मेरा उत्तराधिकारी घोषित कर देना।'

इतना कहने के बाद ही सहसा राजा के प्राण-पखेरू उड़ गये। सभी बहुत दुखी हुए। अगले दिन सुबह मंत्री, सेनापति, पुरोहित और राजवैद्य जैसे ही महल के फाटक पर आये, उनकी नजर उस लकड़हारे पर पड़ी। बस, फिर क्या था! राजपुरुषों को हुक्म दिया गया कि लकड़हारे को महल में ले जायँ और उसे सुन्दर ढंग से राजसी कपड़े पहनाये जायँ।

राजपुरुषों ने वही किया। इधर उन्होंने राजा का विधिवत् दाह-संस्कार किया और उधर लकड़हारे को राजा घोषित कर दिया।

एक दिन नया राजा दरबार में राजसिंहासन पर बैठा था। बैठे-बैठे काफी देर हो गयी थी। दरवार का काम खतम हो गया था। सब लोग चले गये थे। रह गये थे केवल राजा और मंत्री। राजा ने उठने के सहारे के लिए मंत्री के कन्धों पर हाथ रखा तो मंत्री एकाएक हँस पड़े। राजा ने हँसी का कारण पूछा, पर मंत्री सकपका गया, साथ ही कुछ घबराया भी।

राजा ने फिर जोर डाला। काफी जोर डालने पर मंत्री ने गिड़गिड़ाते और डरते हुए कहा—'राजन्, एक दिन था कि आप लकड़ियों का बोझ लादे फिरते थे और आज आप से स्वयं उठा भी नहीं जाता।'

राजा ने हँसते हुए कहा—'मंत्रिन्, तुम इसीलिए तो राजा न हुए। तुम्हें इतनी समझ नहीं कि तब तो मेरे सिरपर लकड़ियों के केवल एक गट्ठे का बोझ होता था, आज तो इतने बड़े राज्य का बोझ मेरे सिर पर है। तुम्हारी सहायता के बिना वह कैसे उठेगा? और फिर जगह का भी तो असर होता है!'

(ग) भाग्य और धर्म

भाग्य और कर्म में एक दिन लड़ाई हुई। एक ने कहा, 'मैं बड़ा हूँ'; दूसरे ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

कहा 'मैं'। अन्त में यह निर्णय हुआ कि दोनों अपना-अपना बल और चमत्कार दिखायें।

एक लकड़हारा था। वह रोज जंगल से लकड़ियाँ लाता और बाजार में बेचकर जो-कुछ मिलता उससे अपना और अपने परिवार का भरण-पोषण करता था। एक दिन जब वह लकड़ियों के लिए जंगल में जा रहा था, तो रास्ते में उसे भाग्य मिला। भाग्य उसे ऐसी जगह ले गया, जहाँ चन्दन-ही-चन्दन के पेड़ थे। लकड़हारे ने बहुत प्रसन्न होकर चन्दन की लकड़ियाँ काटीं। बोझ बाँधा और बेचने के लिए राज-दरबार में ले गया। वहाँ उसने आवाज लगायी—'चन्दन की लकड़ी ले लो।' राजा के कानों में बात गयी। उसने मंत्री को आज्ञा दी कि 'एक अशरफी देकर चन्दन की लकड़ियाँ खरीद लो।' मंत्री ने वैसा ही किया।

लकड़हारा अत्यन्त खुश होकर घर की ओर चल दिया। रास्ते में एक नदी पड़ती थी। पत्थरों पर रखी एक लकड़ी के सहारे नदी पार करनी थी। जब वह बीच में पहुँचा तो उसे क्या सूझा कि झुककर बिना हाथों के सहारे मुँह से पानी पिया जाय। जैसे ही वह पानी पीने लगा, उसकी अशरफी नदी में गिर गयी। वह बहुत दुःखी हुआ, लेकिन अब क्या चारा था!

दूसरे दिन फिर वह उसी जंगल में गया, चन्दन की लकड़ियाँ काटीं और फिर उन्हें दरबार में ले गया। इस बार उसे लकड़ियों के बदले मोतियों का हार मिला। जब वह नदी के किनारे आया तो उसने सोचा कि कल की तरह पानी पीते हुए कहीं हार नदी में न गिर जाय, इसलिए हार को एक पत्थर पर रख कर वह पानी पीने लगा। इसी बीच एक चील हार उठाकर उड़ गयी।

वह फिर जंगल में गया। लकड़ियों का बोझ लेकर फिर दरबार में पहुँचा। इस बार राजा ने उसे बहुत सी अशर्फियाँ दीं। अब उसने सोचा कि नदी में पानी पीना ठीक नहीं है। इसलिए सीधे घर चला आया। घर जब वह पहुँचा तो उसकी स्त्री घर पर नहीं थी। उसने सुरक्षा के लिए अशर्फियों को चूल्हे की राख के अन्दर दबा दिया और अपनी स्त्री को ढूँढ़ने के लिए बाहर चला गया।

इसी बीच में एक पड़ोसिन आग लेने के लिए आयी और चूल्हे की राख में दबी अशर्फियाँ निकाल ले गयी।

लकड़हारा जब अपनी स्त्री को लेकर चूल्हे के पास आया तो देखा कि चूल्हे में राख तक नहीं थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

फिर किसी प्रकार हिम्मत बाँध कर लकड़हारा जंगल गया। लकड़ियाँ लेकर दरबार के आगे जोर-जोर से आवाज लगाने लगा।

राजा को बड़ा अचरज हुआ कि इस लकड़हारे को इतना देने पर भी इसने लकड़ियाँ बेचना बन्द नहीं किया। इसका पता लगाने के लिए राजा ने मंत्री को आवाज़ दी कि 'उसे मेरे सामने पेश करो।' राजा ने उससे कारण पूछा। लकड़हारे ने अपनी आप-बीती सुनायी।

इस बार राजा ने उसे चावल, दाल, घी, नमक, मसाला और रुपये दिये। लकड़हारा जब राशन लेकर नदी के पास आया तो उसे वहाँ एक मछुआ मिला। उसने एक रुपया देकर मछुए से एक मछली खरीदी। घर पर पहुँचा और उसने अपनी स्त्री से मछली काटने के लिए कहा। वह खुद एक पीपल के पेड़ पर चढ़कर लकड़ियाँ तोड़ने लगा। वहाँ उसे एक घोंसला दिखाई दिया। उसके पास पहुँचा तो उसने वही मोतियों का हार देखा। लकड़हारा हार लेकर जल्दी-जल्दी 'मिल गया', 'मिल गया' कहते-कहते घर आ रहा था, इधर उसकी स्त्री को मछली के पेट से एक अशर्फी मिली। इसलिए उसने भी कहा, 'हाँ, मिल गयी।'

पड़ोसिन ने सोचा कि इन्हें पता लग गया है, अतः वह सारी राख और अशर्फियाँ लेकर उसके चूल्हे में रख आयी।

भाग्य और कर्म चुप थे—कहीं से आवाज आयी—किसकी जीत हुई? मगर दोनों चुप थे।

१०. तंत्र-मंत्र जादू-टोनों की कथाएँ

(क) फुलदे राणि

एक बुढ़िया को एक नोन्याल़ छयो। वेन अपणि ब्वै मु बोले, ब्वै[१], ई तरह से हम भूखा कब तक रौला। मैं कखि परदेश जौलो। वैकी ब्वौन बोले कि परदेश जाईक अब ल्योंदि तू फुलदे राणि। कींक[२] जाँदी कखी। यख अपणी कोणो[३] त छैच मरण। वे लड़का न पूछे कख छ मां वा फुलदे राणि, अरि कनि छ वा। माँ न बोले बेटा, एक राजा की लड़की छ। वा बड़ी खूबसूरत छ। लेकिन आदमियों की गंध समझदी।

१. माँ, २. क्यों, ३. कोना।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

लड़का न बोले अच्छो माँ, मैं परदेश जाँदू। माँ का समझोण-बुझोण पर भी वैन एक नि मनी, अर चल दिने। चलदो-चलदो वे सणी कई दिन बीति गैन। भूकों-प्यासों।

एक दिन रास्ता मा वे सणि चार जोगी आपस मा झगड़ा कर्दा मिलेन। वैन पूछेन—'भाई तुम क्योंकु छया झगड़ना ?' जोंग्योन बोले 'म चार गुरु-भाई छवाँ। हमारा गुरु को देहान्त होये, अर अब गद्दी का खातिर झगड़ा पड़िगे। एक बोलदो मैं बैठुलो, दूसरो बोलदो मैं। ये वास्ता तुम यो फैसला करिया।' लड़का न बोले—'तुम अपणी-अपणी सिद्धि का मंत्र बता। तब मैं तोलो, जैको ज्यादा ताकतवर मंत्र होलो, ओ गद्दी को मालिक होलो।' पहलो जोगी बोलदो, 'भाई, मंत्र बतौण लायक त नी छ, पर जब तुम पंच बणाया, तब बोलण ही पड़दी।' एक ने बोले 'मेरा मंत्र छः—चल मेरी उडण खटोली देश'!, दूसरा न बोले—'पक-पक डिबिया भोजन अर सोर करीछि भात'। तीसर न बोले : 'मार सोटा बाँध २ पूड़ी।' चौथन बोले 'झड २ खंता सोना चाँदी।'

लड़का न मंत्र याद करियाले और बोले—'चल मेरी उडण खटोली, फुलदे राणी का देश' लड़का एक दम फुलदे राणी का देश पहुँच गये अर जोगी खौल्या देखण लेग्या। लड़का शहर मा पहूँच्यो। वैन सबसे पहलि 'झड खंता' पढ़े, वख मूँ काफी रुपया झड़ि गैन। कपड़ा-लत्ता बणाइना लड़का त अब राजाओं की तरह सीजे। काफी रात मा वैन अपणी उडण खटोली याद करे अर फुलदे राणी का महल मा गये, राणी का कमरा मा गये। वैन राणि पर द्वी चपत लगाई। हे तरह औ काफी दिन चपत मारदो रये। वा लड़की बड़ि कमजोर बणिगे। एक दिन राजा न पूछे कि बेटी तु किले सुखणी छे। वीन सारी बात राजा का पास लगाये। राजा न सोचे आज रात मे मी देखिल्यू, भोल गोलि से मारे जालो। फिर रात लड़का आये अर वीकी पंलग सहित उडउईक ल्हीगे। आखिर वी सणी अपण देश ल्ही जान्दो अर अपणी राणी बणोदो। ●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

१

गढ़वाली लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति जनता-जनार्दन की उक्ति है'—इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि लोकोक्तियों का कितना बड़ा महत्त्व है, उनकी कितनी बड़ी उपयोगिता है। वास्तव में देखा गया है कि जो समस्याएँ या शंकाएँ कई प्रकार के तर्क-वितर्कों से, युक्तियों से सुलझ नहीं पातीं, उनका बात-की-बात में लोकोक्तियों से स्वतः समाधान हो जाता है। इसीलिए लोकोक्तियाँ जन-साहित्य के महत्त्वपूर्ण अंग हैं।

लोक-जीवन की वैज्ञानिक व्याख्या के लिए इनका अध्ययन बहुत ही आवश्यक है। लोकोक्तियाँ जन-जन के अर्जित अनुभूत ज्ञान की महत्त्वपूर्ण निधि हैं, जो युग-युग से जनता की विचारधाराओं और चिन्तन-मनन का प्रतिनिधित्व करती आ रही हैं। इसीलिए लार्ड रसेल ने लोकोक्ति को एक व्यक्ति की विदग्धता और अनेक का ज्ञान माना है।[१]

डॉ० पीताम्बरदत्त बडथ्वाल का कथन है कि लोकोक्ति मात्र उक्ति नहीं है, बल्कि लोक की उक्ति है। इसीलिए उसे 'लोकोक्ति' कहते हैं। लोक का कोई भी कथन चाहे पहेली के रूप में हो, चाहे सूक्ति और मुहावरों के रूप में, जब तक उसे लोक-छाप न मिली हो और लोग प्रायः उसे बोलते हों तो उसे लोकोक्ति का वास्तविक रूप नहीं माना जा सकता है।

स्पष्ट है कि लोकोक्ति एक ऐसा कथन है, जो किसी के द्वारा कहे जाने पर तथा जनता-जनार्दन की कसौटी पर खरा उतरने पर, लोकोक्ति का रूप धारण कर लेती है और फिर भाषा की अमूल्य निधि बन जाती है।

डॉ० वासुदेवशरण अग्रवाल के कथनानुसार लोकोक्तियों में 'गागर में सागर' भरने की प्रवृत्ति काम करती है। इनसे जीवन का सत्य बड़ी खूबी से प्रकट होता है। वास्तव में लोकोक्तियाँ मानस के अनुभव और ज्ञान के चोखे और चुभते सूत्र हैं।

१. 'ए प्रोवर्ब इज दि विट आफ वन एण्ड विजडम आफ मैनी'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

लोकोक्तियों में जीवन के यथार्थ रूप का सत्य या सार, संक्षिप्तता और चटपटेपन से ओतप्रोत रहता है।[1]

लोकोक्तियों में डॉ० श्यामसुन्दरदास के मतानुसार (क) लाघवत्व, (ख) अनुभूति और निरीक्षण, (ग) सरल भाषा, (घ) प्रभावोत्पादक शैली और (ङ) लोकरंजनता रहती है।

भाषा-विज्ञान की दृष्टि से लोकोक्तियों का अध्ययन बड़ा महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि लोकोक्तियों की गंगा लोक-मानस की गंगोत्री से निकलती हैं।

गढ़वाली भाषा में पखाणा (लोकोक्तियाँ) बहुत बड़ी संख्या में मिलती हैं, जिनसे गढ़वाली भाषा का वास्तविक स्वरूप मिलता है।

गढ़वाली में पखाणा (लोकोक्तियाँ) दो प्रकार की मिलती हैं :

तुकान्त और अतुकान्त।

(क) तुकान्त

गढ़वाली	हिंदी अनुवाद
१. अफु चलदा रीता हैरु पड़ोंदा गीता	पर उपदेश कुशल बहुतेरे
२. अंधा डोमन खाई भाँग, उंदो मुंड उबो टाँग	अंधे डोम (नीच जाति) ने खायी भाँग, नीचे सिर ऊपर टाँग
३. अँध्यारा कि मार, खबर न सार	अंधेरे की मार बुरी होती है (कुछ पूछताछ न होना)
४. उम्र ह्वाई सी साट, अकल मति गे नाट	बुढ़ापे में बुद्धि का सठिया जाना
५. एकन ख्यै गौं, सबु पड़्या नौं	एक मछली सारा तालाब गंदा कर देती है।
६. कृष्ण जाणो गीता, मा जाणे पिता	कृष्ण जाने गीता, माँ जाने पिता (असली बात अनुभवी ही जानता है।)
७. कभि तैला घाम, कभि सीला घाम	चार दिन की चाँदनी, फेर अँधेरी रात
८. कपड़ा न लत्ता, चला कलकत्ता	विना किसी तैयारी के काम आरम्भ करना।

१. डॉ० बड़थवाल: गढ़वाली अखाणा—(प्राक्कथन)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

गढ़वाली	हिंदी अनुवाद
९. कब वियालि थोरि, कब खालि खोरि	न नौ मन तेल होगा, न राधा नाचेगी। (कटड़ी को बच्चा होगा तब खीर खायेंगे)
१०. कौड़ी न पल्ला, द्वी ब्यौ कल्ला	पास में फूटी कौड़ी नहीं, करेंगे दो ब्याह
११. खाणि न पीणि, घुँडु घुँडु ठीणि	(खाना न पीना, ठंड-ही-ठंड) बेकार
१२. खै नि जाणो खसम कांगो, नाच नि जाणो खलो बाँगो	नाच न जाने आँगन टेढ़
१३. गुड अँध्यारा भि मिठो, उज्यालः मा भि मिठो	गुड़ अँधेरे में भी मीठा, उजाले में भी
१४. घ्यू न ज्यू, खा मेरो ज्यू	बेकार सिर खाना
१५. चलबे थैला जखि जौला, वखि खौला	जहाँ जायेंगे, वहीं खायेंगे।
१६. चार गौं कू सयाणो अठार गौं कू रौ मेरा काम नि आओ त, ऐसि तेसी मा जो	चार गाँव का मुखिया, अठारह गाँव का रब्ब; मेरे काम न आया, तो ऐसी तैसी में जाय
१७. छुयाल ब्वारी छुयाल भुलि, पगड़ि-पटलि मल्सा फुलि	बातूनी बहू बातूनी बहन (छोटी बहन) खेती-वाड़ी, मलसा (घास) फूला (बातों में लग कर समय खोना)
१८. छोटि जात, करो उत्पात	छोटी जात करे उत्पात
१९. जनाने कि छुई, झंगोरा कि बिई	स्त्रियों की बातें और झंगोरा (एक प्रकार का अनाज) का भूसा (बेकार की बातें)
२०. जत तक सास, तब तक आस	जब तक साँस, तब तक आस
२१. जब तक ल्वै, तब तक सब क्वै	(जब तक लहू, तब तक सब कोई) जब लगि पैसा गांठ में, तब लगि ताको यार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

गढ़वाली	हिंदी अनुवाद
२२. जनि मयेड़, तनि जयेड़	जैसी माँ, तैसी बेटी।
२३. जै द्यो जगदीस, वैकि क्या रीस	जिसको दे ईश्वर, उससे क्या ईर्ष्या ?
२४. जख देखि तवा परात, उख बिताई सरि रात	जहाँ देखा साज-सामान (तवा-परात) वहाँ वितायी सारी रात
२५. जख जोशी चार, तख दिन न वार	जहाँ ज्योतिषी हुए चार, वहाँ कुछ नहीं दिन वार
२६. जनु देश, तनि भेस	जैसा देश, वैसा भेष
२७. जे का पेट लगि आग, उ क्या खुजाली साग	जिसके पेट लगी आग (भूख), वह क्या खोजेगा साग ?
२८. जु नि धोलो अपणो मुख, उ क्या देलो हैका सुख	जो न धोयेगा अपना मुख, वह क्या देगा दूसरों को सुख ?
२९. जुता कु गार, स्वेणि कु जार	जूते का (जूते के अन्दर) कंकर और स्त्री का जार बराबर
३०. जै कु पाप, तै कु छार	जिसका पाप, उसको मार, (जैसी करणी, तैसी भरणी)
३१. जब बिगड़िये काम, तब आये बैसाखु कु नाम	जब बिगड़ गया काम, तब आया बैसाखू का नाम (दुख में सुमिरण सब करे, सुख में करे न कोय)
३२. जे कू मरो, वो क्या न करो	मरता क्या न करता ?
३३. जेकु शर्म, वे कु फुटयुं कर्म	जिसने की शरम, उसका फूटा करम
३४. झूट लगाणि गंगा पार, जु रे जाओ दिन चार	झूट लगाओ गंगा पार (दूर), जो निभ जाये दिन चार
३५. टाट का त थोता, वण्या नबाव का पोता	बोरी का धोता (कपड़ा-लत्ता), बना नवाब का पोता।
३६. टका छन त टकटका, नितर झकझका	टका (पैसा) है तो ठीक, नहीं तो भीख (बेकार परेशान)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

गढ़वाली	हिंदी अनुवाद
३७. टका न पैसा, गौं गौं भैंसा	रुपया न पैसे, गाँव-गाँव भैंसे
३८. डोम चड़ु, काल पड़ु	डोम (छोटी जात) चढ़ा, अकाल पड़ा
३९. तिमला तिमला खत्याँ, नँग्या नँगि दिख्याँ	तिमले के तिमले (फल) गिर गये नंगी की नँगी दिखाई दी (एक स्त्री पेड़ पर चढ़कर धोती ऊपर कर तिमले निकाल रही थी, तभी उधर कोई आ गया, उसने झट से धोती नीचे की तो तिमले नीचे गिर पड़े, किन्तु नीचे के आदमी ने उसकी नंगी टाँग भी देख ली ।)
४०. तु भि राणि मैं भि राणि, कु कुटुलो चोणा दाणि	तू भी रानी, मैं भी रानी, कौन कूटेगा चोणा (चावल) दानी ?
४१. दौड़ी चलि त चढ़ीं रांड, मठु चलित सढ़ीं राँड,	दौड़ी तो बिगड़ी औरत, धीरे चली तो आलसी औरत
४२. धेला न पल्ला, द्वी ब्यौ कल्ला	पाई न पैसे, करेंगे दो ब्याह !
४३. ध्वे ध्वे गोरा, घुस-घुस सोरा	धो-धो गोरा और घुस-घुस कर सो (सम्बन्धी) कैसे ?
४४. धौत्यूँ वाला कमीन, टौप्यूँ वाला समीन	किसान कमाता है, नेता फूँकता है
४५. परायो पूत घोड़ कु मूत	दूसरे का पूत घोड़े का मूत
४६. परदेसि मू रोया ना, अपणि पत खोया ना	परदेशी के सामने रोना न, अपनी पत (मर्यादा) खोना न
४७. पीना पकदि रौ, कवा ककड़ादि रौ	खाना पीना पकता रहा, कौवा बोलता रहा (कुत्ते भोंकते रहे, गाड़ी चलती रही !)
४८. पड़ायो गुणायो जाट, सोल वेणि आट	पढ़ाया लिखाया जाट, सोलह दूना आठ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

गढ़वाली	हिंदी अनुवाद
४९. फाँट न फट्टा नौं क्वे पदान, डालि़ न बोटि नौ क्वे वगान	खेत न बाड़ी नाम का ही मुखिया; पेड़ न पौधे नाम की ही वगिया
५०. बल्द क्या जाण रजै को, राँड क्या जाण कजै को	बैल राजा को क्या जाने, और औरत मर्द को क्या जाने !
५१. वखरो कु भि ज्यु नि जौ, वाघ भि भुखो नि रौ	बकरी के प्राण न जायें, बाघ भी भूखा न रहे (साँप भी मर जाय, लाठी भी न टूटे) !
५२. विधना न मिलाई जोड़ी, एक अंधा एक कोड़ि	राम ने मिलायी जोड़ी, एक अंधा एक कोढ़ी
५३. बच्याँ मा नि पायो माँड, मर्यां मा खाई खाँड	जीते-जी न पाया (भात का) माँड, मरने पर पायी खाँड
५४. बाल़ा कि न मरी ब्बै, ज्वान कि नि मरो ज्वै	बच्चे की न मरे मां, जवान की न मरे जोय
५५. बिंडि खाणो जोगि ह्वै, पैला वासा भूखो रै	ज्यादा खाने को साधु बना, पहले ही दिन भूखा रहा
५६. भोलि़ भोलि़, दिन गयां सोल़्	कल-कल करते दिन वीत गये सोलह
५७. मर्दों खाणो, जनान्यूँ न्हाणो	मर्दों का खाना, औरतों का नहाना
५८. मुखड़ि देखि टुकड़ि	मुख देखकर स्वागत (जस मुंह तस थपड़ा) !
५९. मामा भाणजा डेरा मु रौला, सामल़ थैलि अपणि खोला	मामा-भानजे होंगे घर जाकर, अपना-अपना राशन खायेंगे
६०. मन घोड़ा मा, कर्म लोड़ा मा	मन घोड़े में, काम पत्थर में (कहीं मन, कहीं काम)
६१. यार न आवत, पैट्या चारि मावत	जान न पहचान, बन गये मेहमान (मान-न-मान, मैं तेरा मेहमान) ! दोस्त न रिश्तेदार, चल पड़े चारों जने (मां, बाप, भाई और बहन)
६२. राँडु का पाँजा, गौं पड़्यां बांजा	स्त्रियों के कारण, गाँव हो गये बर्बाद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

गढ़वाली	हिंदी अनुवाद
६३. सोण मरि सासु, भादो ऐंया आँसु	सावन में मरी सास, भादों में आये आँसू
६४. सल न पट, बाँजा घट	साज न बाज, तो चक्की बेकार
६५. सुणणि सबकी, करणी मन की	सुननी सबकी, करनी मन की
६६. सौत अर मौत	सौत मौत की तरह
६७. हंस उड़ी गैन, कागा रै गैन	हंस उड़ गये, कौए रह गये ।

(ख) अतुकान्त

गढ़वाली	हिंदी अनुवाद
६८. काँधि मा जुवा, गौं मा खोज	कंधे पर जुवा, गाँव में खोज (कस्तूरी कुण्डलि बसे, मृग ढूंढे बन माहिं)
६९. न तीन मा, न तेरह मा	न तीन में न तेरह में (साथ नहीं)
७०. दीदी मरी, भेना कैको	बहन मर गयी तो जीजा किसका ?
७१. तेल थोड़ा, चिबड़ाट भौत	तेल कम, पर शुद्ध बहुत (अधजल गगरी छलकत जाय)
७२. ग्यूँ दगड़ि घुंण भि पिसे गैन	गेहूँ के साथ घुन भी पिस जाये
७३. कभि बूड कड़झड़ि, कभि बुडया गड़गड़ो	कभी बुढ़िया नाराज, कभी बूढ़ा नाराज
७४. निमणदा नाजा, भला भला पौणा	खतम होते अनाज के आये अच्छे-अच्छे पाहुने (कंगाली में आटा गीला)
७५. जनि नेत, तनि बरकत	जैसी भावना, वैसी सिद्धि (जैसी नीयत; तैसी बरकत)
७६. देवि छोटी, छल बड़ो	देवी छोटी, असर बड़ा
७७. एकि हातन रोटि नि पकदि	एक हाथ से ताली नहीं बजती
७८. नाक काटी हात मा धर्यूं	बेशर्म
७९. मुँडी नौं कपाल़	सिर का नाम कपाल
८०. अफि औतारी, अफि पुजारी	स्वयं अवतारी, स्वयं पुजारी
८१. दाना कि बोल्यूं, औल़ा को स्वाद	बूढ़े की बात, आँवले का स्वाद (बाद में पता चलता है)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDI

गढवाली	हिंदी अनुवाद
८२. दिख्खूँ मनखी, तप्यूँ घाम	देखा मनुष्य, तपा घाम (अनुभूत)
८३. सीलि ओबरी, झोलि खाट	सीलन वाली कोठरी और ढीली चारपाई (मुसीबत-ही-मुसीबत)
८४. हुण तेलि डालि का चलचल पात	होनहार बिरवान के होत चीकने पात
८५. पौणा पूछि पकोड़ी	मेहमान को पूछ कर खाना (बनाना)
८६. जैं कू बाबु रिखन खाये, उ काला मुनखा देखि डरद	जिसका बाप रीछ ने खाया, वह काली लकड़ी से डरे (दूध का जला छाछ फूंक फूंक कर पीता है)
८७. अफु कोड़ि गिंज-गिंज पाको, होरु तैं दवे बतो	स्वयं कोढ़ी गल रहा, पर दूसरों के नाम रखे
८८. कुक्रो पूंछ थोला डाल्यो, बोगों को बागों	कुत्ते की पूँछ टेढ़ी की टेढ़ी
८९. घुंडु घुंडु जलिगे, किरड़ांण कख आये	घुटने-घुटने जल गया फिर भी पता नहीं कि जलान आयी कहाँ से ?
९०. लोहा का लोहा राल, सोरो कू सोरो	लोहे के लिए लोहा, सम्बन्धी के लिए सम्बन्धी (विषस्य विषमौषधम्)
९१. कितलो कू नाग, बिरलो बाघ	केंचुवे का नाग और बिल्ली का बाघ
९२. मर्द मरि जाला, बोल रै जाला	घाव मिट जाता है, बात रह जाती है !
९३. मां मौस्याण, बाबू कठबाबू	मां सौतेली, बाप पराया
९४. भैंसा का गिच्चा, फ्यूँलि कू फूल	भैंस के मुँह में फ्यूँली (छोटा फूल) (ऊँट के मुँह में जीरा) !
९५. ससुरड़ि कू जवैं, बुड़गड़ि कू बल्द	ससुराल का दामाद और बरसात का बैल
९६. दूधो उमाल, ज्वानि कू ल्वै	दूध का उबाल, जवानी का लहू
९७. जाण न पछाण, फट अँग्वाल	जान न पहचान, मैं मेरा मेहमान
९८. माँ जो पर मरयाद न जो	माँ जाय, पर मर्यादा न जाय
९९. कवा नी छोड़द बल अपणू लवा	कौआ न छोड़े अपना रंग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

गढ़वाली	हिंदी अनुवाद
१००. इतनी कुखड़ी अर कतनो फड़फड़ाट	छोटी मुर्गी, इतना शोर
१०१. कुंडणि क्या देखणी, देखणी मुंडलि़	जन्मपत्री क्या देखनी, देखना है मुँह
१०२. नाज खयेंद सागन, दुनिया खयेंद भागन	अनाज खाया जाता साग से, दुनिया खायी जाती भाग से
१०३. जख नाक तख सोनु नी	जहाँ नाक, वहाँ सोना नहीं
१०४. तू डाँडा, त मैं तिरसूल	तू चोटी तो मैं ऊँचा पहाड़
१०५. पत्थर मा पाणि पड़ो, न उ रुकि, न झीजो	पत्थर में पानी पड़े, न रुका, न गीला हुआ
१०६. बिरालु क्य जाण, मोल को दई	बिल्ली क्या जाने, मोल का दही
१०७. कल को नौं काल़	कल का नाम काल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१०

गढ़वाली पहेलियाँ

गढ़वाली भाषा में पहेलियाँ (आणा) भी वहुत मिलती हैं। इनमें ऐसा चित्र प्रस्तुत किया जाता है; जो व्यक्त होते हुए भी अव्यक्त रहता है। वैसे, भारत में पहेलियों की परम्परा बहुत प्राचीन है।

श्रीरामनरेश त्रिपाठी के मतानुसार पहेलियों का प्रचलन भारत में वैदिक काल से ही है :

चत्वारि श्रृंगाः त्रयो अस्य पादाः
द्वे शीर्षे सप्तहस्ता सो अस्थ
त्रिधा बद्धो वृषभो रोखाति
महादेवो मर्त्या आविवेश। (ऋग्वेद)

अर्थात् जिसके चार सींग (चार वेद या दिशाएँ), तीन पैर (प्रातः, मध्याह्न और सायंकाल), दो सिर (उदय और अस्त) और सात हाथ (सात छन्द) हैं, जो तीन स्थानों से बँधा है (मंत्र, सत्य और ब्राह्मण)—वह मनुष्यों में प्रवेश करता वृषभ (यज्ञ) महादेव है।

संस्कृत में—

न तस्यादिर्नतस्यान्तम्
मध्ये यस्तस्य तिष्ठति,
तवाप्यस्ति ममाप्यस्ति
यो जानाति सः पंडितः। (नयन)

गढ़वाल में भी न जाने कबसे इनकी अखंड परम्परा चली आ रही है। इन पहेलियों का उद्देश्य बुद्धि-परीक्षा, मनोरंजन तथा अर्थ-गौरव है। इसीलिए त्रिपाठी जी ने पहेलियों को बुद्धि पर शान चढ़ाने का यंत्र और स्मरण-शक्ति तथा वस्तुज्ञान बढ़ाने की कला कहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

गढ़वाल में आणा स्यूण-धागू (सुई-धागा), ढोल-दमौं (ढोल-दमामा), लोडु-सिलोटु (सिल-लोढ़ा), गाड-गदना (नदी-नाले), जोनि-गैणा (चाँद-तारे), अनेक पशु-पक्षियों, जीव-जन्तुओं, घरेलू वस्तुओं और शारीरिक अंगों पर आधृत हैं।

१. अफु अगनै जाणी, पिछनै अंदड़ा-पिंदड़ा औणा छन	(सुई)
२. अब्बि इतनी छै, अब्बि भारी ह्वै	(आग)
३. उखन्याला उदें कीड़ा	(चावल)
४. काठा कठगड़ा, लुहा पेच, उखाड़ नी सकेंद कपाल् रेच	(ताला)
५. कालि खुंडकि धम्कि आग, मरणु-बचणु अपणु भाग	(बन्दूक)
६. काला डांडा रौंदु छौं, लाल पाणि पेंदु छौं	(जूँ)
७. गज भर कपड़ा, बार पाट तौंणि लगेंन तीन-सौ-साट	(एक वर्ष)
८. घर औंदु बण मुख, बण जाँदु घर मुख	(कुल्हाड़ा)
९. चाँद्यू बटवा सोनै डोर, चल मेरा बटबा दिल्ली पोर	(सूर्य)
१०. छोटि छोर्यों लम्बु धौंपेलो	(सुई-धागा)
११. छोटि छोर्यों मिठु कल्यो	(मधुमक्खी)
१२. छोटि छोरि बड़बड़ों रुवोंदि	(मिर्च)
१३. धार मा अधा रोटि	(चाँद)
१४. धार मा तिल खत्याँ	(तारे)
१५. पट्ट पकड़ा, चट्ट मारा	(खटमल)
१६. बत्तीस भै कुटदारा अर एक नौनी स्वैरदारी	(दाँत-जीभ)
१७. रात बचि जाँद, दिन मरि जाँद	(जानवरों की बांधने की रस्सी)
१८. सिल्ल-सिल्लकी, पाताल् बिल्लकी	(बन्दूक)
१९. हरीं छौं, भरी छौं, मोत्यून जड़ीं छौं, पुंगड़ा मा खड़ी छौं	(मकई का भुट्टा)
२०. हाड़ न मास, गल्गलू गात	(जोंक)

●

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिशिष्ट

(क) गढ़वाली के कुछ प्रसिद्ध शब्द
(ख) ग्रियर्सन का भाषा-वर्गीकरण
(ग) डॉ० चाटुर्ज्या का भाषा-वर्गीकरण
(घ) सहायक ग्रंथ-सूची

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिशिष्ट : क :

गढ़वाली के कुछ प्रसिद्ध शब्द

१. विशिष्ट शब्द-सूची

अगेलो = आग उत्पन्न करने के लिए बना लोहे का एक विशिष्ट छोटा टुकड़ा

अग्ल्यार = पनचक्की (घट) में पीसने की बारी

अरसा = चावल के बने मीठे पदार्थ

अणसला = लोहार जहाँ काम करता है, वह स्थान

अस्वाण = भोजन प्रारम्भ करने से पहले भोग चढ़ाने के लिए थाली के आगे रखा भोजन का थोड़ा-सा अंश

अगल्या (आगल) = दरवाजों को अन्दर से बन्द करने के लिए, लकड़ी का एक लंबा मजबूत टुकड़ा

अठवाड़ = देवी की आठ दिन की पूजा

अचाणचक = बेकार (बिना किसी उद्देश्य या प्रसंग के)

अंग्वाल = अंकमाल, (दोनों हाथों से पकड़ लेना) आलिगन करना

अक्षत = पूजा के लिए चावल

अड़ाट = भूख, डर या प्यार को अभिव्यक्त करनेवाली पशुओं की ध्वनि

आछरा = अप्सराएँ, गढ़वाल में आछरियाँ नौ मानी जाती हैं, ऊँचे पर्वत-शिखरों पर इनका आवास माना जाता है

आटो = गोशाला में पशुओं के नीचे पत्तों के साथ मिला गोबर

उचाणी = देवताओं की मनौती करने के लिए अगाऊ रखे हुए कुछ पैसे या कोई वस्त्र

उंदकारी = पहाड़ की चोटियों पर आकस्मिक प्रकाश

उज्याल़ = दूसरों के खेतों में पशुओं का चरना

ऊखड़ = ऐसी जमीन, जहाँ पानी की खेती (रोपण) नहीं हो सकती है

ओडी = खेतों के बँटवारे के लिए रखा हुआ पत्थर

ओडार = पर्वतों की सुन्दर गुफाएँ

ओड = मकान बनाने की कला में निपुण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

औसर = पशुओं की गर्भाधान सूचक प्रवृत्ति का पूर्वाभास
औजी = ढोल-दमामा बजानेवाले हरिजन
औतारु = वह व्यक्ति जिस पर कोई देवता आता है
ओल्यों = बच्चों की प्यार से आने की अभिव्यक्ति
ओज्याणा = ओजियों का रहने का स्थान
कल्कली = उत्कंठा से उद्भूत गले पर एक अद्भुत अनुभूति
कल्बली = बिना सोचे समझे कार्य करने की प्रवृत्ति
क्वनको = धान काट कर खेतों में रखे विशेष प्रकार के ढेर
क्वठ्यागाती = एक विशेष प्रकार का पहनावा
कख-क्या = किसी का महत्त्व कम करने के लिए तिरस्कार-सूचक शब्द
करदोड़ा = लँगोट बाँधने के लिए एक प्रकार का कमरबंध
कल्यों = हलवा या स्वाँली-पकोड़ी (छोटी पूड़ियाँ और पकौड़ियाँ); लड़कियाँ जब भी मायके से ससुराल जाती हैं, वे बाँटने के लिए हलवा या 'स्वाँली-पकोड़ी' ले जाती हैं

कड़पट = एकाएक बेहोश हो जाना, भूत लगना

कलोड़ी = वयस्क बछड़ियाँ
कड़कड़ो = असन्तुष्ट होकर बिलकुल अकड़ जाना
काल़ो = महामूर्ख
कुमाल़ी = एक पतंगा, जिसकी कमर बहुत ही पतली होती है
कूल = (कुल्या) पानी की छोटी नहर-जैसी
कै-बै = हड़बड़ाहट, बिना सोचे-समझे काम करने की उतावली
कोदाड़ा = कोदों (कोद्र), अनाज की सारी (खेती)
कौथी = गढ़वाल के विशेष प्रकार के मनोरंजन (कौतुक)
खण्यास = नवजात शिशु
खबेस = कुरूप, दुश्चरित्र और दुष्ट स्त्री
खंखवल्यो = बीच में अकारण अनुत्तरदायी होने की प्रवृत्ति
खंखल्या = अकारण बीच में ही काम छोड़ देनेवाला
खतबत = पानी के हलकने का शब्द या भोजन गिरा देना
खडाड़ = खेतों में अनाज के साथ उत्पन्न घास
खर्क = भैंसों के रहने का स्थान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

खस्या = अशिष्ट और मूर्ख
खुर्या = पशुओं के खुरों का एक रोग
खार = एक माप विशेष
खुद = स्मृति की अद्भुत अभिव्यक्ति
खुदेड़ = एक प्रकार के गीत
खुळा = चिकना पत्थर, जिस पर बच्चे फिसलते हैं
खोळ = पहाड़ों और घाटियों के बीच सड़कों के चक्करदार घुमाव
खों-खों = जंगलों में चरवाहों द्वारा बने लकड़े के एक प्रकार के 'सी-सा'; ऊपर-नीचे उठने और घूमने की चक्की
खौळ = किसी का मजाक उड़ाना
गल्याबल्द = ऐसा बैल जो हल लगाते समय जमीन पर लेट जाता है
गदनी = पानी का छोटा नाला
गत्यादार = पशुओं का झूठा व्यापारी
ग्वरील = हरिजनों का एक विशेष देवता
गड़याळ = मछलियों का अगुवा
गंगाड़ी = गंगा के समीप रहनेवाले ब्राह्मण
गदरा = छोटी नदी
गाड = नदी (तेजी से बहनेवाली)
गाजो = गाय, भैंस, बकरियों आदि पशुओं के लिए प्रयुक्त शब्द
गुणमुण = अस्पष्ट ध्वनि
गुल्थ्या = एक विशेष प्रकार का हलवा
गेंडा = पशुओं को बाँधने की विशेष रस्सियाँ
गैत्या = लंगोटिया यार
गोडति = धान, मँडुवा आदि के निराने का समारोह
गोठ = बकरियों के रहने का स्थान
गोंदकी = हिंसार (एक फल) के फल तथा मक्खन की टिकियाँ
घट्ट = पनचक्कियाँ
घट्वाली = पनचक्कियों में अनाज पिसाने के लिए जानेवाला
घड़ियाल्या (घडियाल्या) = देवता नचानेवाला व्यक्ति
घाण = अनाज का एक भाग, या मधुमक्खियों का एक झुंड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

घात = अपने गृह-देवता के पास जाकर क्रोध में शत्रु की बुराई के लिए पत्थरों का पटकना
चड़गट्यूं = बहुत ही बिगड़ा हुआ
चटि = बेसिर-पैर की बातें
चकड़ैत = मजाकिया
चपट्ट = सब समाप्त करना
चाल = बिजली
चेटक = एक प्रकार का नाटक
चोखू = आटा गूंदने पर शुद्धि के लिए तेल या घी लगाना
चौंफला = एक प्रकार के लोक-गीत, जिनसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष, इन चार फलों की प्राप्ति होती है

छडल् = भूत लगना
छन्दमन्द = कार्य करने की विशेष युक्ति
छरपट, बिरपट = सब कुछ गँवा देना
छवया = कपड़ों को धोने के लिए राख और तिल उबाल कर बनाया गया पदार्थ
छडड़् = झरना
छूंवो (छुईं) = स्त्रियों की गप्पें, बेकार की बातें
छणमण = घंटियों की विशेष ध्वनि
छानो = घास-फूस की झोपड़ियाँ, जहाँ चराने की सुविधा के लिए पशु बाँधे जाते हैं
छिनाल = दुश्चरित्र तथा दुष्ट औरत
छिन्ती = कोलाई चीड़ के वृक्षों के बीज
छ्वींयाल = गप्प हाँकनेवाला
छुड़ा = एक प्रकार के लोकगीत
छोरा, छोरी = अनाथ लड़का, लड़की
छोया = पानी के स्रोत
छौंदाल् = कूड़ा फेंकने की जगह
छौं = (स्पर्श) हरिजनों से स्पर्श हो जाना; 'छौं' हो जाने पर या तो नहाना पड़ता है या पानी के छींटे से शुद्धि की जाती है

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जरजरो = अपराध करने पर भी अपनी सफाई देने के लिए तेज होना
जग्वल्या = रखवाली करनेवाला
जागर = एक प्रकार के लोकगीत
जात = देवताओं की यात्राएँ, नृत्य के समारोह
जागरी = जागर गीतों का विशेषज्ञ, या तंत्रमंत्र जाननेवाला
जान्द्रो = घर में हाथ से चलनेवाली पत्थर की चक्की
ज्यूंदाल़ = मंत्र द्वारा फेंके हुए चावल
जै गोगा माता फ्यूंल्यां फूंल = चैत के महीने में किशोरियाँ ऐसा कहकर घर-घर फूल बिखेरती हैं
ज्योंरा = विधाता, यम
झपन्याली = हरे-हरे फलों से लदी, झुकी
झणा = जन
झुमेलो = एक प्रकार के लोकगीत, या लोकगीतों की अन्तिम कड़ी
टक = उत्कट इच्छा
ठसाक = हल्का स्पर्श
ठठा = अनुकरण
ठणो = एक प्रकार की शीत की अनुभूति
डड्यालो = पहाड़ी मकान का बरामदा
डाँडा-काँठा = पहाड़ और चोटियाँ
डाँड = बेकार का जुर्माना
डागणी = अनिष्ट करनेवाली डाकिनी
ड्यांटी = मायके में आयी हुई विवाहित लड़की, अविवाहिता, लड़की
डोम = हरिजनों के लिए प्रयुक्त शब्द
डोमणा = हरिजनों के रहने का स्थान
डोंरु = डमरू के प्रकार का एक वाद्ययंत्र
डौकी = बड़े सिर वाली (अखाद्य) मछलियाँ
डौल = पहाड़ों के बीच की पथरीली जगह
ढाकी = नाचने-गानेवाली एक जाति
ढाँगू = बहुत ही बूढ़ा
ढाकर = सौदा खरीदने के लिए दूर के हाट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

C-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MID

ढाकरी = सौदा खरीदने के लिए जानेवाला
ढीका = हल लगाने पर खेतों में उठे मिट्टी के डले
ढुंगला़ = जंगल में या घराट में पत्थरों पर बनायी जानेवाली रोटियाँ
ढोलसागर = ढोल के ताल, बोल और मंत्रों का अमूल्य ग्रन्थ
ढोस = अशिष्ट, अनपढ़, दुश्चरित्र स्त्री
ढोल-दमो = ढोल-दमामा
तनीमनी = साधारण; असुन्दर
तिबार = विशेष प्रकार का बरामदेवाला पहाड़ी मकान
थड्या = एक प्रकार के लोकगीत
थाती = देवताओं के रहने का स्थान
थौल़ = पहाड़ियों पर लगे मेले
दणमण = आँसुओं के गिरने की ध्वनि
दल़ी = चीड़ की लकड़ी के अन्दर एक प्रकार की विशिष्ट लकड़ी जो रोशनी के काम आती है
दगड़्या = समय वाले दोस्त
दड्यूण = व्रत के दिन से पहले की रात, जिस दिन नाना प्रकार के पदार्थ खाये जाते हैं
दंदाल़ो = खेतों में घास उखाड़ने के लिए एक प्रकार का यंत्र
दाँई = गेहूँ जौ की बालियों को आँगन में बिखेर कर उन पर बैलों को घुमाकर दानों के अलग-अलग करने की प्रक्रिया
दास = ओजियों के लिए 'दास' भी प्रयुक्त होता है
दिसा (धियाण) = दूसरे गाँव में ब्याही लड़कियों को 'ओजी दिक्षा' कहते हैं
दिदा (दीदी) = बड़ा भाई (बड़ी बहन)
दुमागी = ब्राह्मणों की एक शाखा का नाम
दोण = एक माप विशेष
दोखु (कोट) = मोटी ऊन का चरवाहों का एक वस्त्र
धरम = वचन
धऽड़ = वर्षगाँठ के अवसर पर अनाज के तोलने की प्रक्रिया
धड़ = खेतों की सोढ़ीनुमा पंक्तियाँ
धार = तलवार के समान पहाड़ की चोटी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

धारू = बस्तियों में पानी की धाराएँ
धामी = गढ़वाल के हरिजनों की एक जाति
धुनार = पहाड़ी नदियों पर (साँगो) झूला लगानेवाले
धुंयाल = पूजा के समय उठने वाला धुवाँ, पहाड़ की चोटियों पर प्रातः सूर्योदय के समय उठनेवाला धुवाँ

धौ = पहाड़ में आह्वान के लिए प्रयुक्त शब्द
नवांण = नये अनाज के अवसर का समारोह
नसेटो = भगोड़ा
नगेलो = गढ़वाल का एक देवता
नाग फाँस = रस्सी की एक अद्भुत गाँठ
नागरजा = कृष्ण का एक नाम
निचन्द-नारण = बेकार, असावधान
नोनाज = नये अनाज के उपलक्ष्य में होनेवाला समारोह
पयार = पहाड़ की चोटियों पर हरे भरे चरागाह
पंवाण = बीज बोने की प्रारम्भिक पूजा
पश्वा = गढ़वाल का एक देवता
पंवाड़ा = गढ़वाल के वीर-बहादुरों के गीत
पतबोड़ा = तम्बाकू पीने के लिए पत्तों की बीड़ी
पतालसोल़ = तम्बाकू को बहुत जोर से फूंकने की प्रक्रिया
पन्नों = पांडव
पठाल = लम्बी चौड़ी पत्थर की शिला
परवाण = बेकार अगुवा होनेवाला
पथ्येला = झड़े हुए पत्ते
पालसो = भेड़ बकरियों का चरवाहा
पातर = दुश्चरित्र स्त्री
पाखा = पहाड़ का एक भाग
पिठें = रोली आदि
पुंगड़ा = खेत
पुला = घास या अनाज का पूला
पैरू = खेतों के किसी हिस्से का टूटना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पैतु = प्रस्थान के लिए पूर्व आयोजन
पैणू = पूजा के अवसर पर सारे गांव में बँटनेवाला 'परसाद'
फसग्या = बेकार की बातें करनेवाला, झूठ-सच बोलनेवाला
फसोड़पट = गहरी नींद आजाना
फाँट = हिस्सा
फाट = प्रदेश
फ्वींफ्वाट = बेकार की तड़क-भड़क
फुंडो फूका = रहने भी दो !
फुक्या = अपने आप अगुवा बननेवाला
फेग्वाल (फेलवाल) = टिहरी के इलाके के लोग जो गढ़वाल में घूम-घूम हाथ देखते और भविष्य-वाणियाँ करते हैं
बयाल् = पहाड़ों में आकस्मिक प्रकाश
बन्याथ = बनयात्रा (गढ़वाल में हर बारहवें साल का यात्रा-नृत्य)
बग्याल = दीपावली
बणद्यो = बन देवता, अनिष्टकारी बन देवियाँ
ब्यलख्या = लकड़ी की बनी, बच्चों के लिखने के लिए एक प्रकार की दवात, जिसमें कमेला घोला जाता है
बसग्याल = वर्षाकाल, चौमासा
बमतालि = बिगड़ जाना
बादी = नाचने-गानेवाली एक जाति
बाक्या = मंत्रों द्वारा भूत-भविष्य बतलानेवाला
बाजी = साधु
बाँद = रूप और सौन्दर्य की देवी (नारी)
बाँठो = बड़ा चतुर
बाडुलि = किसी प्रिय जन की स्मृतिजन्य अनुभूति
बिसगौण = धान की एक मात्रा (कटने के लिए)
बिसोणा = विश्राम लेने के लिए आधार
बिगरेल = बहुत ही सुन्दर
बिज्वाड़ = बीज की क्यारियाँ
बुग्याल = पहाड़ियों पर हरे-भरे चरागाह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बेडा = नाचने-गानेवाली एक जाति

बेडवर्ति = एक धार्मिक समारोह, इसमें नट की भांति वेडा (बादी) दो दूर-वर्ती खम्भों से बंधी रस्सी पर लुढ़कता है

बोलाँदा बदरी = बदरीनाथ

बौल = पागलपन

बौल्या = खेतों में अदला-बदली पर काम करनेवाले

बोड़ि-बोड़ि = लोट-लोट कर

भल्ली = दीपावली के अवसर पर दली (चीड़ की विशेष लकड़ी) के बने मशाल

भभराट = आग की लपटों की ध्वनि

भराडियाँ = अप्सराएँ

भग्वाड़ी = घराट में पिसाई का भाग (कर के रूप में आटा रख देते हैं)

भंव्वरी = एक विशेष प्रकार का वाद्ययंत्र

भ्वोड़ा = जमीन से यकायक उठनेवाली पानी की धाराएँ

भुजला = भुने हुए धानों को कूट कर बना चबेना

भुतेर = कुछ गाँवों में गृहदेवता के रूप में पूजा जानेवाला देव

भुला (भुली) = छोटा भाई (छोटी बहन)

भुर्त्या = खेतों में काम करनेवाले मजदूर

भुक्को = प्यार का चुम्बन

भूम्याल़ = भूमिपाल, एक देवता विशेष

भैरूं = भैरव, एक देवता

भोट = तिब्बत

भोजेटू = भाभी से उत्पन्न सन्तान

भौण = तर्ज, गाने की एक पद्धति

मंगण्या = लड़की के रिश्ते के लिए आनेवाले

मरड़ा = गाँव से दूर बनी (पशुओं की) झोपड़ियाँ

मवार्त = खेतों में गोवर डालने का समारोह

मवासो = परिवार

मंडाण = नृत्य का समारोह

मंगल्याल़ी = मंगल गीत-गायिका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

मसाण (डुंडुमसाण) = एक प्रकार का भूत
माणो = एक माप विशेष
मावत्त = माता-पिता (या कभी-कभी बच्चों के सहित)
मातु = पीठ का बोझ बिसाने का आधार
माल़ = बहादुर (मल्ल-माल)
माया = प्रेम
मारछा = नीची माणा की घाटियों में रहनेवाले
मिरासी = नाचने-गानेवाली एक जाति
मित्रों = मारछों के लिए सम्बोधन
मेल़ाग = पूजा के लिए प्रत्येक कुटुम्ब का भाग
मेत्वाड़ = मायका
मैंजी = घर-गृहस्थी को छोड़ भिक्षा माँग कर खानेवाली संन्यासिनियाँ
मेज्यणा = संन्यासिनियों के निवास-स्थान
मोंछग = एक छोटा वाद्य-यंत्र
रख्वाली = भूत आदि भगाने के लिए एक प्रकार की प्रक्रिया
रन्त-रैवार = सन्देश
राकों = पहाड़ियों पर आकस्मिक प्रकाश
राँसा = रासो के प्रकार के गीत
राँछ = कपड़े बुनने का एक यंत्र
रुड़िया = रिंगाल (बांसों) की छोटी-मोटी चीजें बनानेवाला
रुम्क = संध्याकाल
रूड़ = ग्रीष्मकाल
रैम्वड़ी = एक प्रकार का सलाद
रोपणो = रोपण
रोस = एक प्रकार का रस
रौंफो = एक प्रकार की उत्सुकता
रौलू = पहाड़ी नाले
रौ = पानी के गहरे तालाब
लमडेर = आलसी
लपोड़ = बेकार की मुसीबत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लाटी = नासमझ
लाकूड़ (लकुडा) = ढोल-दमामा आदि वजाने के लिए लकड़ी के डंडे
सयाणा = गाँव का मुखिया
स्यमन्या = आपस में सेवा लगाने का सम्बोधन
सरौं = एक प्रकार का देवी-नृत्य
सरोला = ब्राह्मणों की एक जाति
साँगौ = पहाड़ी झूले
सारी = गाँव की बीमारियों, अनिष्टकारी शक्तियों के प्रभाव से बचने के लिए एक प्रकार का आयोजन
सामल़-तामल़ = खाने-पीने का सामान
स्वाणी = बहुत सुन्दर
सिदवा विदवा (सिधवा-विधवा) = दो भाई, जो गढ़वाल में आज भी नचाये जाते हैं
स्वोलीघाम = सांयकाल में पहाड़ों की धूप
सुलकड़ा = जच्चा-बच्चा के रहने का स्थान
सूर = शराब
स्यू ंस्याट = नदियों का स्वर
सेरा = रोपणी करने योग्य खेत
स्वैण = स्वामिनी, स्त्री
सौरा = एक ही जाति के लोग
हरगण = (अहर्गण) एक प्रकार की बात, (मुसीबत)
हीत = गढ़वाल का एक देवता
हुन्यार = मुसीबत
हाँसिया = रसिया

२ : माप, परिमाण, और परिगणन

गढ़वाल में प्राचीन काल में तोलने के लिए कोई तराजू और बाट नहीं होते थे। लकड़ी या रिंगाल (पहाड़ी बाँस) के छिलपटों से बने पैमानों से माप होता था। मध्यकाल में तूल़ (एक प्रकार की तुला) का प्रचार हुआ। इससे आज भी ऊन, आदू (अदरक) आदि तोला जाता है। आज भी गाँवों में पुराने पैमानों का ही प्रचलन है :

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पुराने माप

तामी (एक पाव)
२ तामी (आधा सेर) = १ माणा
२ माणा (एक सेर) = १ कुड़ी
२ कुड़ी या चार माणा = १ पाथा या ना लो
१६ पाथा (३२ सेर) = १ दोण (द्रोण)
२० पाथा (एक मन) = १ बिस्ता
२० दोण = १ खार
२० खार = १ बिस्वा

५ तोला = १ छटाँक
४ छटाँक = १ पाव
२ पाव = १ अधसेरा
२ अधसेरा = १ सेर
५ सेर = १ पंसेरी
२ पंसेरी = १ धड़ी
४ धड़ी = मण, (मन)

भूमि को नापने के पुराने नाप[1]

गढ़वाल में पहले भूमि का भी कोई उपयुक्त नाप न था, केवल बीज की मात्रा के आधार पर खेतों का नाप होता था ।

४ पाथा बीजो = १ लेमणी (८ सेर बीज)
२ लेमणी = १ मैंणी (१६ सेर बीज)
२ मेणी = १ कैणी (३२ सेर बीज)
२ कैणी = १ अध्याली (एक मन २४ सेर)
२ अध्याली = १ ज्यूला (३ मन ८ सेर)
२० गट्ठा = १ जरीव
२० जरीव = १ कड़ी
२० मुट्ठी = १ नाली
१ नाली = २४० वर्ग गज
२० नाली = १ बीसो या एकड़

१. हरिकृष्ण रतूणी; गढ़वाल परिचय, पृ० १८०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कपड़े नापने के माप

(क)	१२ अंगुल (उंगली)	= १ बेथ (बालिश्त)
	२ बेथ या २४ अंगुली	= १ हाथ (हाथ)
	३ हात (हात)	= १ गज
(ख)	४½ अंगुल	= १ गिरह
	१६ गिरह	= १ गज

परिगणन

भारतीय आर्य-भाषा-परिवार की आधुनिक सभी भाषाओं में परिगणन की अत्यधिक समानता है[१]। इस समानता का आधार डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या के अनुसार परिगणन का मध्य-भारतीय-आर्य-भाषा की किसी विशेष बोली से सभी भाषाओं में एक ही रूप ग्रहण किया जाता है, यहाँ तक कि पालि में भी इसकी समानता विद्यमान है। उदाहरण के लिए संस्कृत 'द्वादश' का पालि की प्रकृति के अनुसार दुवादस या द्वादश होना चाहिए और यह रूप पालि में मिलता भी है, किन्तु साथ ही, 'बारस' का प्रयोग भी मिलता है[२]।

गढ़वाली भाषा में भी परिगणन के वे सभी रूप प्रचलित हैं, जो आधुनिक भारतीय आर्य-भाषा की सभी शाखाओं में हैं। जैसे—

१. गणना, २. क्रमात्मक गणना, ३. गुणात्मक, ४. भिन्नात्मक,
५. ऋणात्मक गणना, ६. पहाड़े।

१. गणना

गढ़वाली	हिन्दी	म० भा० आ०*	संस्कृत
एक या यक	एक	एक्क	एकः
द्वी	दो	द्वे	द्वौ (द्वे)

१. राहुल सांकृत्यायनः हिमालय परिचय (१), पृ० ३०४;
डॉ० धीरेन्द्र वर्मा : हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० २६७, २६८-२६९
२. डॉ० उदय नारायण तिवारी : हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास, पृ० ४४७, ४८, ४९, के आधार पर।
* मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़वाली	हिंदी	म०भा०आ०	संस्कृत
तीन	तीन	तिण्णि	त्रीणि
चऽर	चार	: चउरो, चचरि	चत्वारि
पाँच	पांच	पंच	पंच
छै	छः	छह्	षट्
सात	सात	सत्त	सप्त
आठ	आठ	अट्ठ	अष्ट
नौ	नौ	: नउ, नअ, णअ	नव
दस	दस	दस, दह	दश
ग्यार	ग्यारह	एआरह	एकादश
बार	बारह	बारह, बारस	द्वादश
तेर	तेरह	तेरह, तेरस	त्रयोदश
चौदू	चौदह	चउदह	चतुर्दश
पन्द्र	पन्द्रह	पणरह	पंचदश
सोल	सोलह	सोलह	षोडश
सतरह	सत्रह	सतरह	सप्तदश
अठार	अठारह	अट्ठरह	अष्टादश
उन्नीस	उन्नीस	उनवीसह	ऊनविंशति : एकोनविंशति
बीस या बिसि	वीस	बीसह, बीसअ	विंशति
यक्कीस या एक बिसि एक	एक्कीस	एक्क बीसअ	एकविंशति
बाईस या एक बिसि द्वी	वाईस	बावीस	द्वाविंशति
त्याईस या एक बिसि तीन	तेईस	तेवीस	त्रयोविंशति
चौबीस या एक बिसि चार	चौबीस	चउव्वीस	चतुर्विंशति
पच्चीस या एक बिसि पाँच	पच्चीस	पच्चीस	पंचविंशति
छब्बीस या एक बिसि छे	छब्बीस	छब्बीस	षड्विंशति
सतैस् या एक बिसि सात	सत्ताईस	सत्तवीसा	सप्तविंशति
अट्ठेस या एक बिसि आठ	अट्ठाईस	अट्ठावीसा	अष्टाविंशति
उणतीस् या एक बिसि नौ	उन्तीस	अणबीसा	ऊनत्रिंशत् एकोनत्रिंशत्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़वाली	हिंदी	म०भा०आ०	संस्कृत
त्रीस या एक बिसि दस	तीस	तीसअ	त्रिंशत्
एकतीस् या एक बिसि ग्यार	एकतीस	एक्क तीसअ	एकत्रिंशत्
बतीस (इसी प्रकार आगे)	बत्तीस	बतीसा	द्वात्रिंशत्
तैंतीस्	तेतीस	तेतीसा	त्रयत्रिंशत्
चौतीस	चोतीस	चोतीस	चतुस्त्रिशत्
पैंतीस्	पंतीस	पन्नतीस	पंच त्रिशत्
छत्तीस्	छतीस	छतीस	षट्त्रिशत्
सैंतीस्	सेतीस	सत्तीस	सप्तत्रिशत्
अड़तीस्	अड़तीस	अड्तीसां	अष्टात्रिशत्
उणचालीस्	उन्तालीस	उन्तालीस	एकोनचत्वारिंशत्
चालीस या दो बिसि	चालीस	चचालीसा	चत्वारिंशत्
यकतालीस् या दो बिसि एक	एकतालीस	एक्कचचालीसा	एक चत्वारिंशत्
बयालीस् या दो बिसि दो	बयालीस	बायालीस	द्वि चत्वारिंशत्
तेतालीस् (इसी प्रकार आगे)	तितालीस	तेआलीसा	त्रि चत्वारिंशत्
चवालीस्	चवालीस	चौवालीसा	चतुश चत्वारिंशत्
पैंतालीस्	पंतालीस	पन्नचवालीसा	पंच चत्वारिंशत्
छयालीस्	छियालीस	छच्चवालीसा	षट् चत्वारिंशत्
सैंतालीस्	सेंतालीस	सचालीसा	सप्त चत्वारिंशत्
अड़तालीस्	अड़्चालीस	अढ्ढ अतालीसं	अष्ट चत्वारिंशत्
उणपचास्	उन्चास	उण पचासा	एकोन पंचाशत्
पचास्	पचास	पणासा या पंचासा	पंचाशत्
एकावन्	इक्यावन	एक्कावण्यां	एक पंचाशत्
बावन्	बावन	बावणं	द्वि ,,
तिरपन्	त्रेप्पन	त्रेवध या त्रिपण	त्रि ,,
चोवन्	चौवन	चउप्पण	चतुः ,,
पचपन्	पचपन	पचावण	पंच ,,
छप्पन्	छप्पन	छप्पन	षट् ,,
सत्तावन्	सत्तावन	सतावण	सप्त ,,
अट्ठावन्	अठ्ठावन	अट्ठवणो	अष्ट पंचाशत्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़वाली	हिंदो	म०भा०अ०	संस्कृत
उणसठ् या उणासाठ्	उनसठ	एगूणसट्ठि	एकोनषष्टि
साठ्	साठ	सट्ठि	षष्टि
एक्सठ्	इकसठ	एकसट्ठि	एकषष्टि
बासठ्	बासठ	बासट्ठि	द्वा ,,
तिरसठ्	त्रेसठ	तेसटिठि या तिरसठि	त्रि ,
चौसठ्	चौंसठ	चउसट्ठि	चतु ,,
पैंसठ	पैंसठ	पइसट्ठि	पंच ,,
छासठ्	छियासठ	छसट्ठि	षट् ,,
सड़सठ्	सड़सठ	सत्तसट्ठि	सप्त ,,
अड़सट्	अड़सठ	अट्ठसट्ठि	अष्ट ,,
उणत्तर	उन्हत्तर	एगूणसतरि	एकोनसप्तति
सअतर्	सत्तर	सतरि	सप्तति
एकतर	एकहत्तर	एकसत्तरि या एकहतरि	एक सप्तति
बहतर	वहत्तर	बिसतरि, बावतरि	द्वि ,,
तेहतर्	तिहत्तर	तेवतरि	त्रि ,,
चौतर	चौहत्तर	चअतत्तरि	चतुस् ,,
पिचेतअर	पिच्हत्तर	पचहतरि या पन्नतरि	पंच ,,
छहतर	छियत्तर	छावतरि	षट् ,,
सततर	सतत्तर	सतहत्तरि	सप्त ,,
अठौतर	अठत्तर	अट्ठहतरि	अष्ट ,,
उणासि	उन्नासी	उणास्सो	एकोनाशीति
असो	अस्सी	असोह	अशीति
एकासि	इक्यासी	एककासोह	एकाशीति
बयासि	बयासी	बासोई	द्वयशीति
त्यरासि	तिरासी	तेसीह	त्रयशीति
चौरासि	चौरासी	चउरासीह	चतुरशीति
पिचासि	पचासी	पंचासीह	पंचाशीति
छयासि	छियासी	छड़सीह	षड़शीति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़वाली	हिंदी	म०भा०आ०	संस्कृत
सत्तासि	सतासी	सतासीह	सप्ताशीति
अठासि	अठासी	इट्ठासि	अष्टशीति
उणनवे	नवासी	एगूणनउह	एकोननवति
नबे	नब्बे	नउए या नब्बए	नवति
एकाणवे	इक्यान्बे	एकाणउह	एक नवति
बयाणबे	बान्बे	बाणउह	द्वि ,,
त्यराणवे	तिरान्बे	तेणउह	त्रि ,,
चौराणबे	चौरान्बे	चउणउहं	चतुर ,,
पिञ्चाणवे	पचान्बे	पंचाणउहं	पंच ,,
छयाणबे	छियान्बे	छण्णउहं	षण्णवति
सताणवे	सतान्बे	सतानउए	सप्तनवति
अठाणबे	अठान्बे		अष्टानवति
निन्याणवे	निन्यान्बे		नव नवति
सो	सौ	सउ, सव	शत
हजार्	सहस्र या हजार		सहस्र
लाख्	लाख	लक्ख	लक्ष
करोड़	करोड़	कोडि, कोड	कोटि
अरब्	अरब्		अर्बुद
खरब	खरब		
शंख			
मासंख			

२. क्रमात्मक गणना

गढ़वाली	हिन्दी	संस्कृत
पैलू	पहला	प्रथम
दूसरु	दूसरा	द्वितीय
तिसरु	तीसरा	तृतीय
चौथु	चौथा	चतुर्थ
पाँचु	पाँचवाँ	पंचम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़वाली	हिंदी	संस्कृत
छठु	छठवाँ, छठा	षष्ट
सातुँ	सातवाँ	सप्तम्
आठूँ	आठवाँ	अष्टम
नाऊँ	नवाँ	नवम
दसूँ	दसवाँ	दशम

३. गुणात्मक

गढ़वाली	हिन्दी
दूणू या दुगुणु	दुगुना, दूना
तिग्ना या तिगुणु	तिगुना
चौगुणु	(चौगुणा) चौगुना
पंचगुणु	पंचगुना
छैगुणो	छै गुना

४. भिन्नात्मक

गढ़वाली	हिन्दी
पौणा $\frac{1}{4}$	पाव
अद्धा $\frac{1}{2}$	अद्धा या आधा
सवैया १$\frac{1}{4}$	सवा
ड्यूड़ा या ड्येड़ १$\frac{1}{2}$	डेढ़
ढाम या ढैया २$\frac{1}{2}$	ढाई

५. ऋणात्मक

गढ़वाली में ऋणात्मक संख्या कम को मिलाने से बनती हैं—

जैसे एक कम सौ (९९)

जैसे दूकम द्वी बिसि (३८) आदि

६. पाड़ा (पहाड़े)

(क)	गढ़वाली		हिन्दी	गढ़वाली	हिन्दी	संस्कृत
एक	यकं	एक	एक इकं एक	यंक	इंक	एकम्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़वाली			गढ़वाली	हिन्दी		संस्कृत
	हिन्दी					
दो	द्वणि	चार	दो दूना चार	द्वणि	दूना	द्विगुणः
तीन	तियाँ	नौ	तीन तियाँ नौ	तियाँ	तियाँ	तृतीयकः
चार	चौकू	सोल	चार चौका सोलह	चौकु	चौका	चतुष्कः
पाँच	पंजा (पंजे)	पचीस	पाँच पंजा पच्चीस	पंजा	पंजा	पंचकः
छे	छका	छतीस्	छह छका छत्तीस्	छका	छका	षट्कः
सात	सत्ता	उणपचास	सात सता उन्चास	सत्ता	सत्ता	सप्तकः
आठ	अठा	चौसठ	आठ अट्ठा चौसठ (अट्ठे)	अठा	अट्ठा	अष्टकः
दस	दसाकि	सौ	दस दहाम सौ	दसाकि	दहाम्	दशमः

(ख)

गढ़वाली	हिन्दी
द्वी एकं द्वी	दो एकं दो
द्वी दूणि चार	दो दूना चार
द्वी तियाँ छे	दो तियाँ छ
द्वी चौकु आठ	दो चौका आठ
द्वी पंजा दस	दो पंजा दस
द्वी छका बार	दो छका बारह
द्वी सत्ता चौदह	दो सत्ता चौदह
द्वी अठा सोल्	दो अट्ठा सोलह
द्वी नमा अठार	दो नवा अठारह
द्वी दसांकि बीस	दो दहाम बीस

विशेष

गढ़वाल में पत्तों (ताश) में प्रयुक्त होनेवाले रूप अन्य भाषाओं (आ० भा०) की तरह ही मिलते हैं : जैसे

यक्का (इक्का), दुग्गा, तिग्गा, चौका, पंजा, छक्का, सत्ता, अट्ठा, नैला (नहल), दैला (दहला)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

३. शरीर तथा शारीरिक साज-सज्जा

शरीर के विभिन्न अंग :

गात या शरीर-गात्र, देह। ज्यू, जी या प्राण=प्राण। मअ्न या दिल=हृदय। मुंड=सिर। कपाल=कपाल। ताल़ू=तालुवा (सिर का सबसे कोमल स्थान)। ख्वपड़ि=खोपड़ी। वाल=बाल। बुलबुल=अंग्रेजी बाल। जटा=जटा। चुपली=वेणी। स्यूंद पाटी=(सीमन्त) मांग। भों=भोंह। आंख=आँख। डेवली=पुतली। चेपू=बरौनी। कनखी=कोर। आँसू=आँसू। कन्दूड़=कान। कणपटी=कनपटी। नाक=नाक। नथुड़ा या नासा=नासे, नथुने। गिची=मुँह। जीभ=जीभ। दाँत=दाँत। ओंठ=होंठ। दाढ़=दाढ़। मसुड़ा=मसूड़ा। गलोठा=गाल। मूछ=मूँछें। दाड़ि=दाढ़ी। ठ्वडि=चिबुक। गलो या घाटी=गला। कंधा=कंधा। घअ्ण या मअ्ण=गर्दन। कखराली=कांख। वांह। कोनि=कोहनी। पौछि=कलाई। हात=हाथ। अंग्वठो=अंगूठा। कणअगुलि्=छोटी उंगली। हतगुली=हथेली। पंजा=पंजा। नंग=नाखून। बैथ या व्यथ=वालिश्त। दुदलो या दुदला=स्तन। चुचि=स्तन अग्रभाग। प्यदृगो या प्यट=पेट। नौल़ू=नाभि। पीठ=पीठ। क्वबड़=कूबड। कमर=कमर। क्वख=कोख। क्वखला=गोद। ब्वारू=मूत्रेन्द्रिय (पुरुष)। पीकू=मूत्रेन्द्रिय (स्त्री)। मूतरेड़ू या थेलो=अंडकोष। पुठी=गुदा। अंग्रडा या अंगडि=जांघ। घंडा=घुटने। पिलो=पिडली। ख्वटो==पैर। टाँग=टांग। तल़ू=तला। ऐड़ी। पिंजर=कंकाल। मति=बुद्धि। हड़गा=हड्डियाँ। अंदड़ि-पिदंडि=अँतडियाँ। चरबि=चरबी। ओजरू=यकृत। नाड़ी या नाड़ या नस-नाड़ी। ल्वे=खून। खला या खाल=त्वचा। मूसी=मस्सा। खेट या ख्वट=निशान, दाग। तिल=तिल। लखण या शला-खला। लाख। थूक=थूक। सिंगोणु=नाक का मैल। कनगू=कान का मेल। पाक=आँख का मैल। पसिना=पसीना। लाल़=लार। मूत=पेशाब। गू=ट्टटी। जिसम=अंग। पाक=पीप, पस। फुसि-वीर्य।

शारीरिक साज सज्जा : इसमें मुख्यतया तीन प्रकार की वस्तुएँ आती हैं—
(अ) आभूषण, (आ) कपड़े,(इ) प्रसाधन की वस्तुएँ (श्रृंगारिक उपादान)।

गैणो (गहने)

गढ़वाल में जेवरों के कई रूप और नाम हैं। गढ़वाली स्त्रियाँ जेवरों की बड़ी शौकान होती हैं। इसलिए यहाँ अनेक प्रकार के आभूषणों का प्रचलन है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१. स्त्रियों के आभूषण

सिर

गढ़वाल की स्त्रियाँ सिरों पर निम्नलिखित जेवर पहनती हैं—

१. सिसफुल—जूड़े पर, २. वंदा बीड़ी—माँग पर, ३. बिन्दी—माथे पर।

नाक

१. नथली—नाक पर, २. बुलाक—नाक के नीचे की तरफ, ३. फुली—एक प्रकार की लौंग, ४. विसर्या बुलाक।

कान

१. मुर्खला, २. बुजनी।

गला

१. चन्द्राहार, २. हँसुला, माला (रुपयों की माला), ४. तोड़ा, ५. कंठी, ६. गुलबन्द, ७. जन्तर, ८. गल्सरी।

हाथ

१. मुंदड़ी (अंगूठी), २. थगुला (चाँदी के कंगन), शेरमुखा या ग्रहमुखा, ३. च्यूड़ी (चाँदी), ४. पौछी, ५. आरसी, ६. च्यूड़ा।

पैर

१. पौंटा (ऐड़ी से पैर के ऊपरी भाग तक), २. प्वल्या (पैर की उंगलियों पर), ३. कड़ा (पिंडलियों पर), ४. झौवरी (पिंडलियों पर), ५. न्यूरो, ६. चुगटी, ७. पजेव, ८. छल्ला, ९. झांझर।

विवरण

(क) सिर पर—बीड़ी तथा बिन्दी। यह पहले चाँदी की बनती थी, किन्तु अब केवल सोने की ही बनती है। अभी तक यह केवल धनी लोगों तक ही सीमित है।

(ख) नाक पर—नथ या फुली (लौंग) पहनी जाती है और निचली तरफ बुलाक या बुल्ला। कुछ स्त्रियाँ अब इन सभी के बदले केवल झुली धारण करती हैं, क्योंकि काम काज के समय प्रत्येक को लादे रखने में उन्हें अत्यन्त असुविधा होती है। नथ या लौंग को गढ़वाल में सुहागिनी स्त्रियाँ ही पहनती हैं और पति के जीवन तक उसे एक पल के लिए भी नहीं उतार सकतीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(ग) कान पर—उपरले पल्लुओं पर मुर्खले पहने जाते हैं, जो प्रायः चाँदी के ही होते हैं, किन्तु पिछले कुछ वर्षों से इनका स्वर्ण में रूपान्तर हो रहा है और कहीं-कहीं इन्हें मिटाने का भी प्रयत्न हो रहा है। निचले कान पर कर्णफूल, टाप्स, गोरख, बुजनी, मुर्की और कुण्डल आदि पहने जाते हैं। कर्ण-फूल और सिणकियाँ (छोटे-छोटे सोकदरे) अधिक चल पड़े हैं।

(घ) गले पर—पहले हँसुली, चन्द्रहार आदि चाँदी के जेवर पहने जाते थे, किन्तु अब सोने के गुलबन्द, हार, कहीं-कहीं तो छोटी-छोटी हँसलियाँ भी पहनी जाती हैं।

(ङ) हाथ की उंगलियों पर—मुदड़ियाँ (अँगूठियाँ) वैसे तो चाँदी की पहनी जाती हैं, किन्तु अब कहीं-कहों सोने की अँगूठियाँ भी पहनी जाती हैं। इसी प्रकार पहुँचे पर पहुँचियाँ, चूड़ियाँ आदि चाँदी की ही पहनी जाती हैं, किन्तु अब सोने की चूड़ियाँ, दस्तबन्दियां आदि चल पड़ी हैं और पहुँचियाँ भी सोने की बनने लगी हैं।

(च) छाती पर—गढ़वाल में ही कहीं चाँदी के बटन तथा उनको जुड़ाने वाली चाँदी की साँकल भी उपयोग में आती है, किन्तु अधिकांशतः पुरुषों के द्वारा।

इनके अतिरिक्त स्त्रियाँ चाँदी के बटन (अंगिया पर), करधनी (कमर) और स्यूण-सांगल कंधे पर पहनती हैं।

२. पुरुषों के आभूषण

पुरुप अब तो जेवर नहीं के बराबर पहनते हैं, फिर भी कहीं-कहीं निम्नलिखित आभूषण पहने जाते हैं—१. मुर्की (कानों पर), २. धगुला (हाथों पर), ३. मुंदड़ी (अँगूठी)।

३. बच्चों के आभूषण

१. जंगलों जानवरों के नाखून (गले में), २. हिंगलास के दानों की माला, ३. जंत्र, ४. कड़े : लोहे के हाथों और पैरों पर।

कपड़े

स्त्रियों के वस्त्र

गढ़वाल में स्त्रियों के कई प्रकार के वस्त्र मिलते हैं। सीमान्त भागों में इन वस्त्रों का प्रचलन है : १. झुलकी—(सिर के ऊपर एक प्रकार की चुनरिया); २. आँगड़ी-अँगिया, ३. फल्वे—अंगिया के ऊपर, ४. पागड़ो—कमरबन्ध, ५. पाखलो;

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लवा, व्यूलो, या कामलो (पूरे शरीर पर) ऊन का कम्बल जैसा, ६. घाघरो—घाघरा (लवा के भीतर से), ७. जुता—कहीं ऊन के, कहीं चमड़े के।

अन्यत्र इन वस्त्रों का प्रचलन है—

१. धोती-साड़ी, २. कुर्त्ता—वास्कट—कहीं-कहीं जम्फर, ३. टालखी (चुनरिया), ४. पेटीकोट (कहीं-कहीं)।

इसके अतिरिक्त कुछ मुसलमान स्त्रियाँ चुस्त पायजामा तथा कुर्ते पहनती हैं तथा ईसाई स्त्रियाँ फ्राक, जम्फर, साड़ियाँ पहनती हैं।

पुरुषों के वस्त्र

१. टोपलो—टोपी, २. मुन्यासो (पगड़ी), कहीं कहीं इसका प्रचलन बहुत कम है, ३. कुर्त्ता, ४. मिरजे, ५. कोट, ६. सुल्वार (पायजामा), ७. धोती, ८. चूड़ीदार पैजामा, ९. करदोड़ और लंगोट, १०. जँग्यां, ११. दोख (इसका प्रचलन केवल पालसियों (चरवाहों) में ही रह गया है)। १२. कुठागाती—इसका प्रचलन बहुत ही पिछड़े स्थानों में है, सो भी बहुत कम।

बच्चों के वस्त्र

१. झगोलो, २. चोली, (चोली)।

ओढ़ने-बिछाने के वस्त्र

१. गुदमा, २. दोखू, ३. पिछोड़ा, ४. चुगटा, ५. कोटू, ६. कामला, ७. पाखुला-ये सब ऊन के होते हैं। ८. चादरो, ९. दरी, १०. सिखण्डी, (तकिया) ११. ल्याप, १२. गुदलो (गद्दा) ढक्यण ढिसाण (ओढ़ने-बिछाने) के कपड़े होते हैं।

इनकी सिलाई के लिए १. स्यूणो (सूई), २. घागो (धागा), ३. ताकलू (तकली), ४. राँछ (बुनने का यंत्र), ५. कैंची की आवश्यकता होती है।

प्रसाधन की वस्तुएँ

१. चंदन, २. तेल का लेप, ३. पिठैं (रोली), ४. कंगलू (कंघा), ५. दर्पण (सीसा), ६. सुरमा (काजल), ७. मेंदी (मेहन्दी) कहीं कहीं।

वास्तव में गढ़वाल में स्त्रियों के पास श्रृंगार करने का समय नहीं रहता है। अपनी खेती-बाड़ी के काम-धन्धों में वे इतना व्यस्त रहती हैं कि उनका ध्यान श्रृंगार की ओर जाता ही नहीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४. दैनिक आवश्यकता की वस्तुएँ

गढ़वाल कृषि-प्रधान प्रदेश है। यहाँ के प्रायः सभी लोग खेती-बाड़ी करते हैं। इसलिए इनकी आवश्यकताएँ सीमित हैं।

निवास-सम्बन्धी आवश्यकताएँ

कूड़ो (मकान)

गढ़वाल में मकान बनावट की दृष्टि से पाँच प्रकार के होते हैं :—

१. तिबारी, २. म्वींमुंडा, ३. डंड्याला, ४. एकहरा, ५. बन्द मकान। तिबारी और डंड्याला में केवल सहन पर खड़ी की गयी लकड़ी के रंग-रूप से फर्क आ जाता है, अन्यथा दोनों में साम्य है। म्वीमुंडा एक-मंजिला मकान होता है। तिबारी, डंड्याला और बन्द मकान दुमंजले होते हैं। बन्द मकान में सहन पर लकड़ियों के काम के बदले केवल खिड़कियाँ और दरवाजे लगाये जाते हैं। इकहरे मकान में न सहन होता है और न बरामदे।

कूड़ों के माप १५ × १७, १५ × ३५ या १५ × ४५ निश्चित हैं। अब इनमें भी परिवर्तन हो गया है।

कूड़े—मकान के ऊपरी भाग को 'घुर्पलो', कहते हैं, नीचे के भाग को 'काकर'[१]। सतीर (शहतीर), मोरी (रोशनदान), पटड़ाभोराणी या (पट्टियाँ), दार (बल्लियाँ), खदरा (आला), मीर (दरवाजा), संगाल (चौखट), ड़डयाली (उसारा), ठेपरी (ऊपरी भाग), पाल़ (दीवार), क्वणेठीं (कोना), क्वठडी (कमरा), जान्द्रो (चक्की), गैड़ो (पिछला भाग), खलो (आँगन), बौंड (दुमंजिले कमरे), ओबरा (नीचे के कमरे), मेल्लो (फर्श)—ये सब मकान के आवश्यक अंग हैं।

बर्तन

खान पान के वर्तन कर्छलो या कर्छी (कर्छी), ताज (कोंचा), डाडलो (बड़ी कर्छी), पीली (छोटा कोचा), भिजर (झरनी), फूलो या फुल्टो (पतीला), त्पट्या या टोखणी (लोटे), गेड़ू (गेडू), भदोली या कड़े (कढ़ाई), तवा, बाटी

१. ग्रियर्सन ने 'भारत का भाषा सर्वेक्षण' (लिं० स० आफ इंडिया), भाग १, खंड १, पृष्ट ३३४ में घुमन्तु चुहड़ों की बोली में कुढढ (घर) का प्रयोग किया है। शायद गढ़वाली में यह शब्द वहीं से आया हो।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(लोहे का तसला), बार (तांबे का बर्तन तीन-चार मन का), चाशनी (बड़ कढ़ाई), बंठी (पीतल का), गागर, तमाली (छोटी गागर), तौली (तांबे का बड़ा बर्तन), चिमटा, सन्यासू या सिन्सी (संडसो), थकलो (थाली), चालनी (छलनी), मटयाणू (लोहे या खाल का अनाज साफ करने के लिए), कटोरी, गिलास, चमच, परेडो या पर्या, रोडो, कमीली, मापण, मदाण, नतण, कुडला, पारी, परीठी, गबोल्या (मक्खन रखने का), फुरा (गबोल्या से छोटा) ।

अन्न सम्बन्धी बर्तन

पठ्वा कुठार या डाक्या कुठार, कुठार, क्वनी (रिंगाल का), ढक्पोली (छोटा क्वना), कंडो (कंडी), सुप्पो, छावड़ी (अनाज सुखाने के लिए), ओडगो (टोकरी), डलोणो या ढकोला (रिगांल का), पिठार (एक प्रकार सन्दूक), कंडी (चमड़े की), मोठी या पल्ला (रिगांल का), मान्द्रो (धान सुखाने के लिए), चौका (बिछाने और अनाज सुखाने के लिए) ।

खाद्यान्न

अन्न (अनाज), ग्यूं (गेहूँ), साटी (धान), झंगौरी, कोणी, चीणा, मंगणा, बाजरी, जौ, चणा (चना), गहथ, दाल (उड़द), मूंग, मसूर, डाकला (मटर की जाति), लाई (काली सरसों), राडो (पीली सरसों), घर्या सरसों, तिल, जुनडा, कोदो, माछो, मुगरी, मक्की, भंगजीर ।

मसाले

हल्दी (हल्दी), जीरी (जीरा), लसण (लहसुन), धण्या (धनिया), काली मर्च (काली मिर्च), मर्च (मिर्च), सौंफ (सौंप), लवणं (नमक), चूरो (एक प्रकार का स्थानोय मसाला), फरण (दाल छौंकने का मसाला) ।

भोजन के पदार्थ

भात, रोटी (गेहूँ, मंडुवा, जौ, मार्छा), ग्यूराड़ (गेहूँ, जौ, मार्छो मार्घो मिला-कर), छछेड़ो (एक प्रकार की कढ़ी), भौली (कढ़ी), कापलो (कढ़ी), भुजी (हरा साग), कौणी, चीणा, खीर, परसाद (हलवा), स्वाणी (पूरी के प्रकार की), पकोड़ी, गुलगुला, आटो (दूध के साथ पका हुआ गेहूँ का आटा), खिचड़ी, थेपलो (थेपलो साग), कोदो (मंडुवा का हल्का), तोर, गथवाणी (कुलथ का), फेणी (कुलथ), पटुला, छुवलरोटी, बड़डी (बड़ियाँ), आलू, प्याज, केला, पालक, धनिया, मेथी, गोवी, सगोती, कनेल्या, लगेला, कुथहुना, वडधालो, चलो, दोफरया, तोमड़ी, मेती आदि अनेक प्रकार की हरी सब्जियाँ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पाठ-पूजा की सामग्री

धूप, धुपाणों (धूपदानी), घोली या घनेली (घंटी), संख (शंख), घड्याल (घडियाल), भंकोरी, ढोल, चन्दन, पिठाई (रोली), धू (दीपक), गिलास, आचपन, अर्घा (अर्घ्य), चौथरी, मिपादिका, चन्दन खेरी।

खेती के पदार्थ

नसड़ो (हल), वाणो (फल), हथनालो (हत्था), लाट, जुवा या कनेथो, सेला (जुवे पर लकड़ी के), अणा या मेवा, नाड़ी (रस्सी), कपू (लाट का अगला हिस्सा), जोता (रस्सियाँ), मुसला (बैलों के मुँह पर), मया, जोल (मेढ़ा), देदाहनी, कोडा या सेत (बैलों की नाक पर), डिकारो (स्यूछापो), कुलो (कुटला), दाथुडो (दरांति), थमाला, सावलो या सापलो (सबल), सेडगो (छड़ी) हाँकने के लिए।

पशु

गोरु (गाय), वल्द (बैल), भैंसो (भैंस), वागो (भैंसा), बाखरा (बकरी), भेरा (भेड़), खड़ू (भेड़ा), बाच्छीलो (वछिया), थेथडो (कटडी), सांड, घोड़ा, कुक्कर (कुत्ता), विरालो (विल्ली), वोक्षड्या (वकरा), कुखडो (मुर्गी), खच्चर, गधा, गाजी (सभी पशुओं के लिए सामूहिक नाम)।

मरड़ो (जहाँ मवेशी रहते हैं), सन या छानी (छप्पर), साल (गोशाला) गोठ (पन्द्रह-बीस दिन के लिए पशुओं को ले जाते हैं—खेतों में ही कुछ दिन रख कर खाद तैयार की जाती है), बुग्याल् या डांडो (जहाँ गर्मियों में पशुओं को चराने के लिए ले जाते हैं)।

अन्य

पनचक्की

घट (घराट), तली (तला), भेरण (लकड़ी का बना जो घूमता रहता है); पाटा, घेटोडो (लोहे का), वचीलो (लोहे का), पवाड़ा (लकड़ी), ऐरण, सुवा (पत्थर)–मेंड़ के नीचे का, पाजला, अन्नगोण्या (बारीक या मोटा आटा करने के लिए), रेड़ी (जिसमें अनाज भरा जाता है), कोसड़ी (लकडी का, जिससे अनाज पड़ता है), ठोकढण्या (जिसके हिलने से अनाज गिरता है), पनाल (जिससे पानी गिरता है—लकड़ी का), कूल (पानी की गूल), पणतोरी (जहाँ से लगाते और बन्द करते हैं)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

गढ़वाल का प्राकृतिक सौन्दर्य अद्भुत है। 'फ्यूंडार' घाटी (वेली आव फ्लावर्स) के अनेक रंग के फूलों को देखकर नाना प्रकार के रंगों की यहाँ सृष्टि मिलती है। वैसे यहाँ की अनेक प्रकार की वनस्पतियाँ, उनके रूप रंग तीन लोक से न्यारे हैं। इन्हीं के आधार पर यहाँ कुछ रंगों के स्थानीय नाम नीचे दिये जाते हैं।

रंग

१. कालो (काला), २. स्याह (बहुत काला), ३. पिंगलो (पीला), ४. हर्यू (हरा), ५. लाल, ६. भुरू (भूरा), ७. किरमिचो (हलका लाल), ८. आसमानी (हलका नीला), ९. नारंगी, १०. कम्मेल्या (हलका सफेद), ११. दुघखड़ी (बहुत सफेद), १२. मखमली, १३. गगस्याणा (हरा और लाल), १४. गुलाबो (गुलाबी), १५. सुनेरो (सुनहरा), १६. काफल्या (काफ्ल के फल जैसा रंग), १७. डबऱ्यालू (सफेद और काला), १८. भमोऱ्या (कुछ लाल कुछ काला), १९. बुरास्याँ (बुरास के फूल जैसा लाल कुछ हरीतिमा लिये), २०. काही (बहुत हरा), २१. खराणा (कुछ सफेद, कुछ काला), २२. कैरण्य (कुछ सफेद, कुछ लाल), २३. केलिया (हरा तथा कुछ पीलापन), २४. नीलो (नीला), २५. बंगनो (बेंगनी हल्का), २६. बसन्ती, २७. भगोया (जोगिया), १८. मटियाला।

५. आधि-व्याधि तथा अन्ध-विश्वास

गढ़वाल के लोगों का धर्म पर अटूट विश्वास और श्रद्धा है। इसीलिए आधि-व्याधि, छल् (भूत लगना) आदि के निवारण के लिए ग्रहों की शान्ति, देवी-देवताओं की पूजा होती है और देवी-देवता नचाये जाते हैं। प्रायः रोग का कारण देवी-देवताओं का प्रकोप माना जाता है। इसीलिए लोग 'वाक्या' (भविष्यवक्ता) के पास जाते हैं, घड़्याला (देवता नचानेवाले) को बुलाते हैं, मनौती के लिए 'उच्चारणा' (वचन) रखते हैं। बीमार के ठीक होने पर अपने प्रतिज्ञानुसार पूजा-पाठ करते हैं।

रोग व्याधि

मुँडारो, प्यट पिड़ा (पेट का दर्द), कै (उल्टी), खड्ड् (छोटे छोटे दाने निकलना), मकड़ा, जअर (ज्वर), एकन्द्रू (ज्वर; जो एकदिन ठहर कर आता है), चौथू (ज्वर, जो चार दिन के बाद आता है), अदकपल्या (आधे सिर का दर्द), खज्याली (खुजली), दाद, कादे (पैरों पर पानी में ज्यादा रहने के कारण लगती है), ब्योछी (खुजली की जाति), छिरालो (दस्त), प्यट कटे (आँव गिरना), आँखा औणा (आंखों का दुखना), गांड (गलगंड निकलना), दड़जीव (दो जीभें निक-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

लना), दुखणा (छोटी फुनसियाँ), कोढ़, छाला, मृगी, कब्ज, जोका, उस्याण (सूजना), गर्म्या रोग, सुलपिड़ा (जच्चा की आकस्मिक पीड़ा), सूल (आकस्मिक पीड़ा), फाँड भकाणि (अपच), जड़ो (शीतज्वर), खाँसी, जुकाम, पथरी, परमे (प्रमेह), कनपिड़ा (कान का दर्द), दन्त पीड़ा (दाँत का दर्द), सुजाक (उष्ण-वास), दमा, बबासीर।

कड्पट हो जाना, कई बार काम करते करते कई लोग बेहोश हो जाते हैं। यह देवी का प्रकोप माना जाता है। ऐसी रोगी का उपचार तंत्रमंत्र और जादू-टोनों से होता है।

बड़बड़ाना, कभी-कभी अचानक कई लोग अकारण बड़बड़ाने लग जाते हैं। यहाँ तक कि घर की बहू-बेटियाँ सारी लाज छोड़कर खुले आम अनेक प्रकार की बातें करने लग जाती हैं। उसका मूल कारण भी किसी इष्ट देव का रूठ जाना, या किसी दैवी-क्रिया का उल्लंघन करना माना जाता है।

भूत या छल् लगना।

अंग शून्य होना।

आधियों का दूसरा रूप भी मिलता है, जिसका कारण भी दैवी-प्रकोप ही माना जाता है। जैसे :

अतिवृष्टि (बहुत बारिश होना), अनावृष्टि (बारिश न होना), फसल खराब होना, सलौ का आना (टिड्डियों का आना), फलों का कड़ुवा होना, गाड-गदनों का (नदी-नालों) बहाव बदलना, पशुओं का मरना (खुर्या, एक प्रकार की बीमारी) आदि।

अंध-विश्वास

गढ़वाल में कई प्रकार के अंध-विश्वास और उनसे त्राण पाने के भी कई प्रकार के उपाय हैं—

अयाड़, हवा का अजीब-सा रूप होना, प्राकृतिक शक्तियों का चलना;

छल् (भूत लगना), देव्ता (देवता आने पर काँपने लगना);

राँकी—कहीं आकस्मिक तेज रोशनी होना।

६. पशुपक्षी और जीवजन्तु[1]

१. ग्वणी (लंगूर), २. बांदर (बन्दर) ३. स्याल़ (सियार), ४. रिक्क

१. एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिकाः हिमालयः भाग ११, पृ० ५६२-५६३ से कुछ सहायता ली गयी है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

(सफेद रीछ), ४. कालू रिक्क (काला रीछ), ६. जावर रिक्क, ७. तितराला, ८. बण बिली, ९. बाघ, १०. श्येर (शेर), ११. नेवला, १२. लकडबगा, १३. पेव्ड़ा (स्यार की जाति), १३. कोग (जंगली कुत्ता), १५. मारमोट, १६. सोला, १७. खरगोश, १८. जड़ोवू, (बारह सिंगा), १९. हाथी, २०. चितल (चीतल), २१. काखड़, २२. घ्वीड़ (हिरन), २३. सराऊ, २४. पाड़ा, २५. येंर, २६. वरड़्, २७. चंवर गाय (सुरा गाय), २८. सुअर, २९. कस्तूरा (मृग) ३०. थर।

१. गाय-वैल २. भेंस-बागी (भेंस-भेंसा) ३. जूवा (याक), ४. भेडी, ५. चेलपू, ६. खाडु, ७. भेढ़ा, ८. भेरु (भेड़), ९. हुनेसे, १०. घोड़ा, ११. बिल्ली, १२. कुत्ता, १३. गधा।

पक्षी

१. कवा (कौआ), २. चकोर, ३. तीतर, ४. घेंदूडी (गौरैया), ५. मलेऊ (कबूतर), ६. घूगती (फाकता), ७. कुखडो (मुर्गा), ८. कल चिलाड, ९. मुणाल, १०. संटुली (गुर्सल), ११. हेलांस (कोयल), १२. फेतुवा (बुलबुल), १३. कल्हा (तोला), १४. हरिक्स (हारिल), १५. कटाखौरा, १६. करमी वा कुरैड़ी(क्रोंच), १७. हल्दू, १८. राफल पक्की, १९. कफ्फू, २०. नीलरांग (नीलकंठ), २१. शडभार, ०२. दघड, २३. दयड, २४. पतापुरडी, २५. टिटेई (टिटहरी), २६. खंजन, २७. भट्टा-वामणी, २८. फकलारु, २९. चेडू, ३०. ढेसू, ३१. कस्तूरा, ३२. दाण, ३३. प्पूरं, ३४. विटावडारी, २५. केलासी, ३९. हंस, ३७. इलरा, ३८. सुकोव; ३९. गरुड, ४०. चोल, ४१. पतकोसड़ा, ४२. सिकंरा (बाज की जाति), ४३. ऊकांव, ४४. बासा, ४५. घाणिया, ४६. मोर, ४७. उल्लू, ४८. मछमार (बगुला)।

जल जन्तु

१. माछा (मछली), २. डोका (मछली की जाति, उसको खाते नहीं), ३. गडयाल (बडी मछली), ४. गिदली (१ सेर की), ५. घ्यूंरो (१/२ सेर की), ६. घुला (३ सेर की), ७. गेड (सांप की तरह), ८. खसरा (२ सेर से ४ सेर तक की), ९. १०. मछवाग, चोड, ११. मेरा, १२. वडाघूरा।

मधु-मक्षिका

१. म्वारा (शहद की मक्खी), २. अँगूरयाल, ३. चेमाडा या चेमल्डा, ४. खडवेचा, ५. नागमारहा, ६. रिसमारहा, ७. भोरू (भौंरा), ८. मरख्याड़ा (मक्खियां)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

काटने वाले छोटे जीव

१. जूं, २. लीखा, ३. उपाणा, ४. सरसूं (खटमल), ५. जौंक ६. किरमली (छोटी चोटियां), ७. सांप ।

७. सामाजिक वर्ग

गढ़वाल पहले से ही बीठ (ब्राह्मण, राजपूत आदि) और डोम (हरिजन), इन दो वर्गों में विभक्त है। राहुल जी के अनुसार 'बीठ' भी 'खस' और 'अखस' दो भागों में विभक्त हैं। अखस ब्राह्मण और राजपूत अपने को कुलीन समझकर दूसरों को अपने से हीन समझते हैं। फलतः 'खस' लोगों ने अपने को खस कहना ही छोड़ दिया। कुछ लोगों का यह मत है कि खस केवल राजपूतों में ही थे, ब्राह्मणों में नहीं। इसी लिए कहीं-कहीं राजपूतों को आज भी 'खस्या' कहते हैं। मध्यकाल में गढ़वाल में कुछ मुसलमान भी आये और यहीं बस गये। आधुनिक काल में ईसाई धर्म के प्रचार के लिए कुछ ईसाई भी यहाँ आये और प्रलोभन दिलाकर कई डोमों को ईसाई बना लिया। इसलिए आज गढ़वाल में कुछ ईसाई भी मिलेंगे। परन्तु मुसलमान और ईसाइयों की संख्या उँगलियों पर गिनने के लायक है।

व्यवसाय तथा सामाजिक स्थिति के अनुसार वर्ग

गढ़वाल का एकमात्र व्यवसाय खेती-बाड़ी है। वहाँ के बामण (ब्राह्मण), जजमान (यजमान) डोम आदि सभी खेती-बाड़ी करते हैं। व्यापार गढ़वाल में नहीं के बराबर है। छोटे-छोटे पहाड़ी बाजारों में कुछ तो स्थानीय लोग ही (ब्राह्मण, राजपूतादि) और कुछ मैदानी भागों से गये हुए वैश्य (जैन, आदि) लोग दूकानदारी करते हैं। विभाजन के कारण कुछ सिख भी यहाँ आये हैं और छोटा-मोटा व्यापार करते हैं।

बामण (ब्राह्मण)

राहुल जी के अनुसार ब्राह्मणों में खस, और देशी दो प्रकार के ब्राह्मण हैं, यद्यपि आजकल कोई अपने को खस कहने के लिए तैयार नहीं है। ब्राह्मण चार श्रेणियों में विभक्त हैं—

१. सरोला, २. गंगाड़ी, ३. दुमागी और ४. देवप्रयागी। महीधर शर्मा बडथवाल के अनुसार ब्राह्मण— सरोला, गंगाड़ी और नानागोत्री, इन तीन श्रेणियों में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

विभक्त हैं। सरोला और गंगाड़ी मैदानों से आयी हुई ब्राह्मण जातियाँ हैं, जो गढ़वाल में आठवीं या नौंवीं शताब्दी में आयीं। नानागोत्रो ब्राह्मण गढ़वाल के आदिम निवासियों तथा बाहर से आये हुए ब्राह्मणों के सम्मिश्रण से बने हैं। सरोला और गंगोड़ी ब्राह्मणों में केवल इतना अन्तर है कि सरोला जाति के द्वारा पकाया हुआ कच्चा भोजन (दाल-भात) सभी जाति के लोग खा लेते हैं, जब कि गंगाड़ी जाति का यह अधिकार अपने सम्बन्धियों तक ही सीमित है। गंगाड़ियों के हाथ की कच्ची रसोई सरोला नहीं खाते हैं। यद्यपि अब कुछ परिवर्तन हो रहा है।

डॉ० पातीराम के अनुसार ब्राह्मण दो ही प्रकार के हैं—सरोला और गंगाड़ी। कुछ लोग गढ़वाली ब्राह्मणों का वर्गीकरण—१. सरोला, २. गंगाड़ी, ३. दुमागी, ४. पंडा, ५. भैड़ा या भल्डा इस प्रकार से करते हैं। पंडों में, देवप्रयागी श्रेष्ठ माने गये हैं और केदारी निम्न। भेड़ा बिलकुल ही निम्न माने गये हैं। इनके हाथ की कच्ची रसोई कोई भी नहीं खाता है। यह जाति प्रायः शिव के मन्दिरों का 'शिवांश' लेती है। इसीलिए निकृष्ट मानी जाती है।

पेशे के अनुसार ब्राह्मण निम्नलिखित भागों में बाँटे जा सकते हैं—

१. वैद (वैद्य), २. जोतसी (ज्योतिषी), ३. पंडा, ४. पुजारी, ५. पंडित।

वैद—जड़ी बूटियाँ इकट्ठी कर, 'वैदकी' (वैद्यक) का काम करते हैं। इनके पास एक जंगारी (सूत की बनी जालीदार थैली) होती हैं, जिसमें सभी प्रकार के रोगों की दवै (दवाएँ) होती हैं। ये गाँव-गाँव में जाकर अपना कार्य करते हैं।

जोतसी (ज्योतिषी) ज्योतिष का काम करते हैं। जन्मपत्री बरख (पूरे वर्ष का विवरण) बनाते हैं और कहों-कहीं जजमानी भी करते हैं। साथ ही पढ़ाने का काम भी।

पंडा पंडागिरी करते हैं। पुजारी मन्दिरों में पूजा पाठ का काम करते हैं और पंडित जजमानी (यजमानी) का।

औजी

गढ़वाल में औजी दरजी के काम के साथ-साथ वादक का काम भी करते हैं। ढोल-दमौ (दमामा), नगारी (नगाड़ा), सिणे (शहनाई), तुरो, भँकोरी (एक प्रकार का बिगुल), सिंगा (रंण-सिंगा) आदि इनके मुख्य-मुख्य वाद्य यंत्र हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

ल्वार (लुहार)

लुहार जहाँ लोहे की चीजें बनाता है, उसी जगह को 'अणसाला' कहते हैं। लुहार द्वारा कुलो (कुदान्त), सावडो (सब्बल), घणीं (घन), दाथुलो (हँसिया), थमोड़ो (पाटल), न्यणीं (लोहे का छोटा-सा हथियार, लकड़ी आदि काटने के लिए), फवडी (फरुहा), वालो, कुलाडो (कुल्हाड़ा) आदि खेती-बाड़ी में काम आनेवाली वस्तुएँ बनायी जाती हैं।

वादी

गढ़वाल में 'बादी-बदोण' नाचने वाले हैं और इसी प्रकार अपनी आजीविका चलाते हैं। बादी ढोलकी बजाते हैं और बदोण (वादी की स्त्री) ढोलक की तालों पर नाचती है। नाचते समय ये स्त्रियाँ घागरो (घाघरा), सुल्वार (सलवार), कुर्त्ता और फत्वे पहनती हैं और हाथ में रूमाल लेकर नाचती हैं।

कोली

कोली रिंगाल या 'निंगाल' की अनेक वस्तुएँ बनाते हैं। जैसे, वचनी (अनाज रखने का बर्तन), ढकोली (अनाज रखने का छोटा बर्तन), चंगेरे (घास और पत्ते के लिए जालीदार बर्तन), कंडी (कड़ी), सुणीं (छाज), टोखरी (टोकरी), मोठी (धान आदि सुखाने और माँडने के लिए), चीकू (घर में बिछाने के लिए), डलोणी (अनाज मापने एक एक बर्तन) आदि वस्तुएँ बनाते हैं।

धुनार

धुनार पहाड़ी नदियों में साँगो (झूला) लगाते हैं। मछलियाँ मारते हैं।

बाडै

बाडै (चमार) चमड़े के जूते बनाता है। गढ़वाल में प्रायः पुरुष ही जूते पहनते हैं। स्त्रियाँ नहीं के बराबर।

ओड (बढ़ई) बढ़ई का काम करते हैं और साथ ही कुड़े (मकान) भी चिनते (बनाते) हैं।

मुसलमान

—गढ़वाल में चूड़ियाँ बनाने और बेचने का काम करते हैं। कुछ दुकानदारी भी करते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ईसाई

मिशन सन् १८६५ में पौड़ी में कमिश्नर हेनरी रामजे की सुरक्षता में पहले-पहल स्थापित हुआ था। अब कई ईसाई गढ़वाल में प्रसिद्ध व्यापारिक स्थानों में बस गये हैं और ईसाई धर्म का प्रचार करते हैं।

इनके अतिरिक्त गढ़वाल में ठेकेदारी, वकालत आदि पेशों का भी प्रचलन है।

वय के अनुसार

गढ़वाल में वय के अनुसार बीठ (ब्राह्मण और राजपूतादि) और डोम (हरिजन) दोनों में रिश्ते होते हैं। वैसे—नौना-वाला या बाल-बच्चा (बालबच्चे), ज्वान (जवान) और बुड्या या दानू (वृद्ध), ये तीन शब्द प्रचलित हैं। उनके स्वण्यास (नवजात शिशु), बालू (५ साल का बच्चा), नौनू-नौनो (पाँच साल के ऊपर), ज्वान (जवान), बुड्या, वूड या बुडडो (वृद्ध, वृद्धा), दानू या दानी (बहुत वूढ़े) ये सूक्ष्म भेद भी हैं।

८. नाते-रिश्ते

दिदा या दाद्दू (बड़ा भाई), भुला (छोटा भाई), दीदी या दीदि (बड़ी बहन), भुली (छोटी बहन), बौ (भाभी), जेठाण (जेठाणी, जेठानी), द्यूर (देवर), द्यूराणी (देवरानी), ब्वारी या ब्वारी (वहू), ज्यठज्यू या जेठ (जेठ); भुलेब्वारि (छोटे भाई की स्त्री), ब्वै या ब्वई (माँ), बाबा या बुबा (बाप), सास, सुसर, समदि (समधी), समदणि (समधिन), नाना, नानी, स्यालू या मित्र (साला), स्याली (साली), जेठसास (स्त्री की बड़ी बहन), मामा, मामी, फुफु (बुआ), मामा या फुफा (बुआ का पति), मौसा, जोठब्बै (मौसी), नाती, नातिन, पोता या नाती, पोती या नातिन, भांणजु (भानजा), भाणजि (भानजी), भेना (बहनोई), जवैं (दामाद), दादा, दादी, काका (चाचा), काकी (चाची), बड़ा (ताऊ), बड़ी (ताई), भतीजु (भतीजा), भतीजि (भतीजी); मौस्या मां (सौतेली मां), कठबाबु (सौतेली माँ होने पर बाप को कठबाबू कहते हैं), जनानी या ल्वस्यण या कज्याण ब्वारी या भेरवाण या औरत (स्त्री), घरवालों का मालिक या खसम (पति), रांड (विधवा), छोरा (अनाथ), छोरी (अनाथ लड़की)।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिशिष्ट : ख

ग्रियर्सन का भाषा वर्गीकरण-१

संस्कृत अ—बाहरी उपशाखा

(क) उत्तरी-पश्चिमी समुदाय

(१) लहँदा या पश्चिमी पंजाबी (२) सिन्धी

(ख) दक्षिणी समुदाय

(३) मराठी

(ग) पूर्वी समुदाय

(४) उड़िया (५) बिहारी (६) बंगाली (७) असमी

आ—मध्य उपशाखा

(घ) बीच का समुदाय

(८) पूर्वी हिन्दी

इ—भीतरी उपशाखा

(ङ) केन्द्रीय समुदाय

(९) पश्चिमी हिन्दी (१०) पंजाबी
(११) गुजराती (१२) भीली
(१३) खानदेशी (१४) राजस्थानी

(च) पहाड़ी समुदाय

(१५) पूर्वी पहाड़ी या नेपाली
(१६) केन्द्रीय या मध्य पहाड़ी
क. गढ़वाली ख. कुमायूंनी
(१७) पश्चिमी पहाड़ी
क. जौनसारी, ख. सिरमोरी, ग. क्योंठाली, घ. कुल्लुई,
ङ. चमाली

१. ग्रियर्सन : भारत का भाषा सर्वेक्षण, खंड १, भाग १, पृ० २२२ ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

ग्रियर्सन का भाषा वर्गीकरण (२)

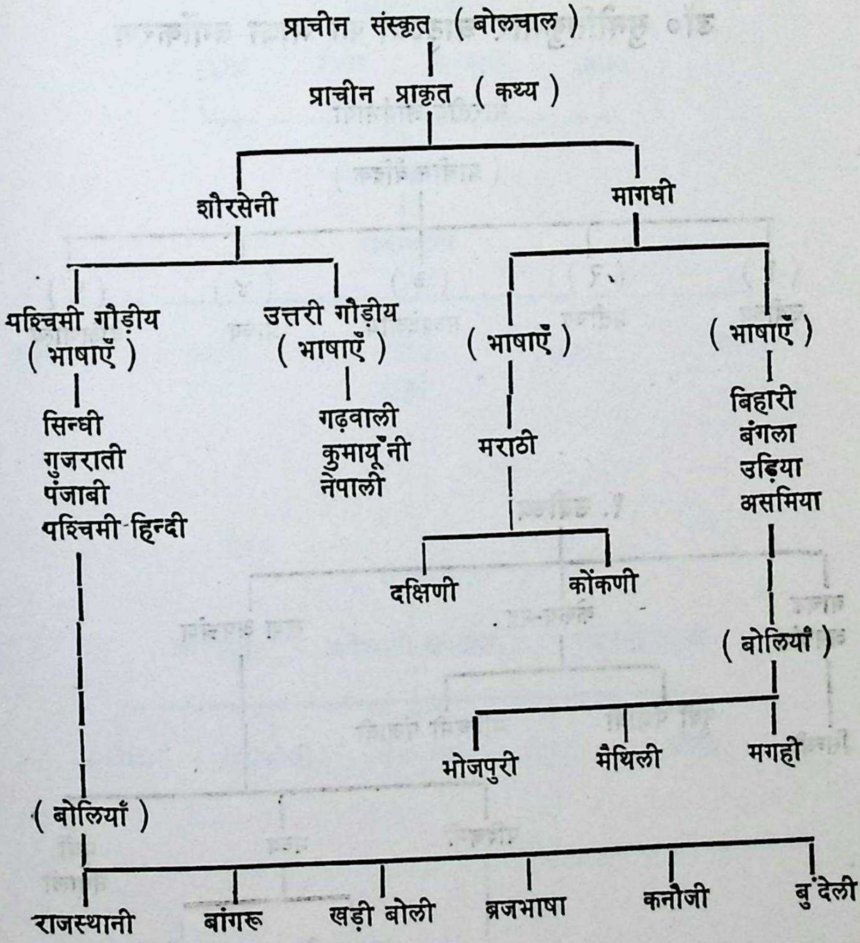

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिशिष्ट : ग

डॉ॰ सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या का भाषा वर्गीकरण

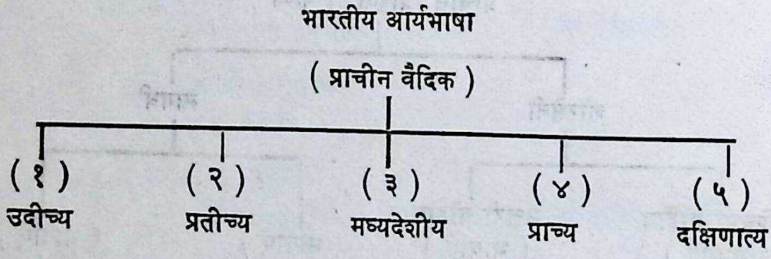

१. उदीच्य

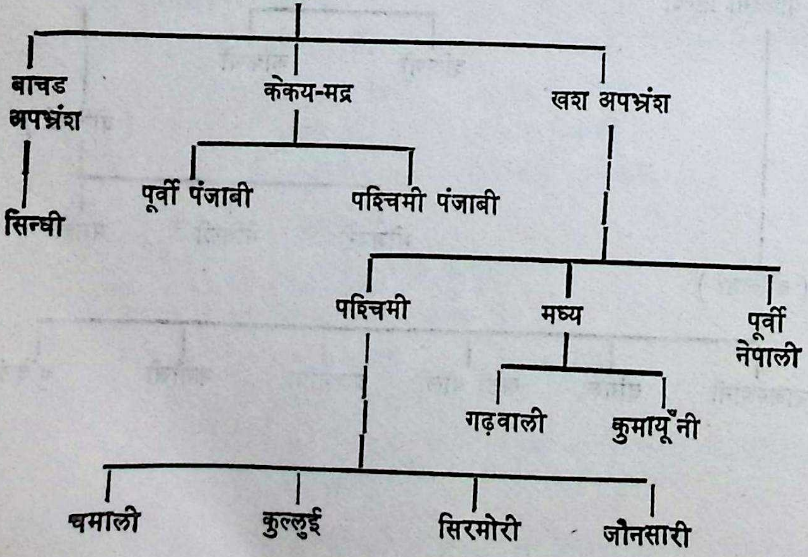

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

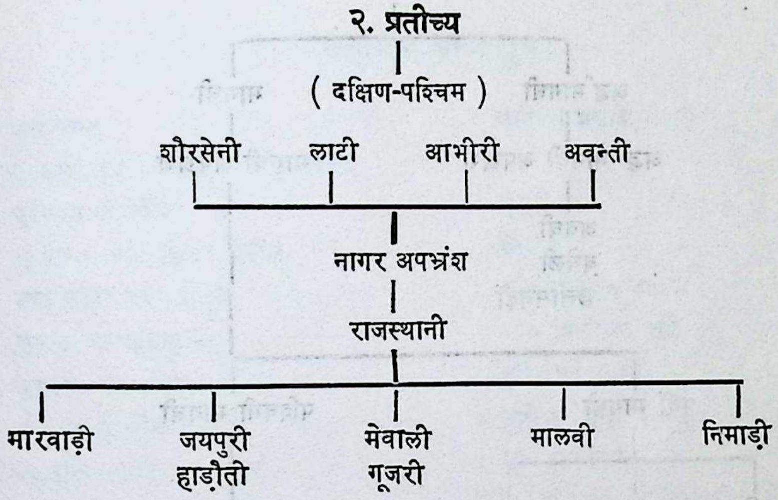

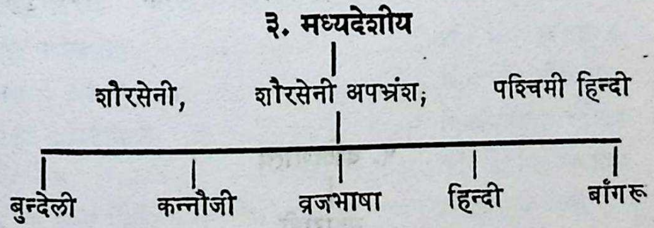

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

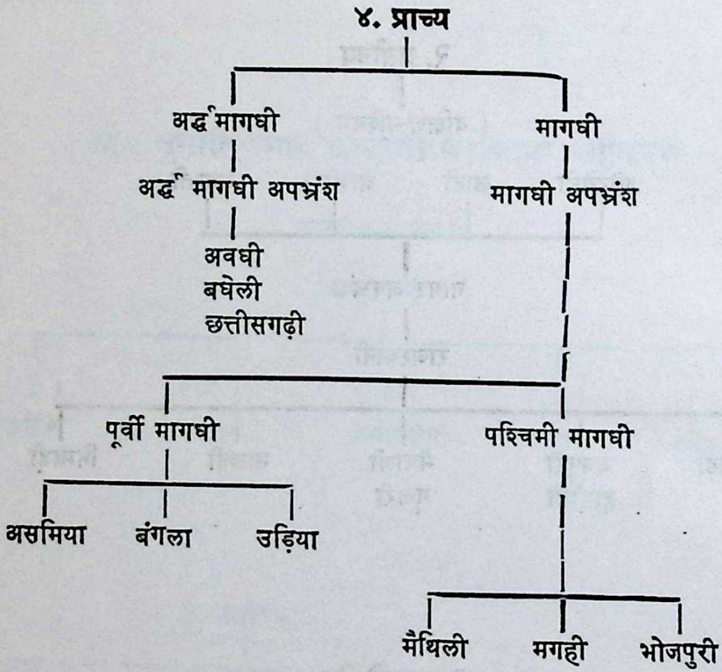

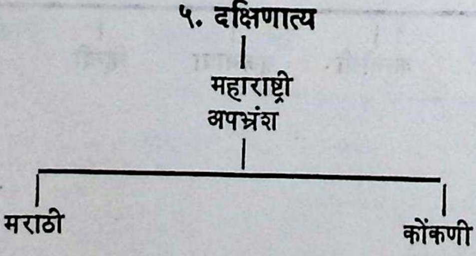

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

परिशिष्ट—घ

सहायक ग्रन्थ-सूची

अध.पतन : भगवती प्रसाद पांथरी
ए कंपरेटिव डिक्शनरी ऑव् नॉन एरियन लैंग्वेजेज : हंटर
ए ग्रामर ऑव हिन्दी लैंग्वेज : केलाग
क्या गोरी क्या सौंली : डॉ० गोविन्द चातक
कुमाऊँ का इतिहास : डॉ० त्रिलोचन पांडे
गढ़वाल का इतिहास : हरिकृष्ण रतूड़ी
गढ़वाल में कौन कहाँ? : महीधर शर्मा बड़थ्वाल
गढ़वाल एंश्येंट एंड मॉडर्न : डॉ० पातीराम
गढ़वाली साहित्य की भूमिका : प्र० सं० डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'
गढ़वाली को नयो कदम : ,, ,, ,,
गढ़वाल गजेटियर : एच० सी० वाल्टन
गढ़वाली पखाणा : शालिग्राम वैष्णव
गढ़वाली लोकगीत : डॉ० गोविन्द चातक
गढ़वाल के लोकनृत्य : शिवानन्द नौटियाल
गढ़वाली कवितावली : विश्वंभरदत्त चंदोला
जंगली फूल : डॉ० गोविन्द चातक
जोनि पर छापु किलै : मोहनलाल नेगी
तिड़का : अबोधबंधु बहुगुणा
तिलु रौतेली : योगीन्द्र कृष्ण दौर्गादत्ति
धरती गाती है : देवेन्द्र सत्यार्थी
नवाण : गिरिधारीलाल कंकाल
निरुक्त : यास्क
नेपाली डिक्शनरी : टर्नर
नौबत : डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

प्राकृतिक भाषाओं का व्याकरण : पिशल (अनु० डॉ० हेमचन्द्र जोशी)
प्रेमी पथिक : तोताकृष्ण गैरोला
फुलकंडो : योगीन्द्र पुरी
बिन्दरा : डॉ० पुरुषोत्तम डोभाल
बुरांस : ,, ,, ,,
भारतीय भाषा विज्ञान : किशोरीदास वाजपेयी
भारतीय आर्यभाषा और हिन्दी : डॉ० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या
भारतीय लोकसाहित्य : श्याम परमार
भारी भूल : जीतसिंह नेगी
भाषा विज्ञान : डॉ० मंगलदेव शास्त्री
भूगोल जिला गढ़वाल : शालिग्राम वैष्णव
मलेथा की कूल : भोलादत्त देवरानी
महाभाष्य : पतंजलि
मोछंग : चक्रधर बहुगुणा
रण मंडाण : अबोध बंधु बहुगुणा
रामी : बलदेवप्रसाद शर्मा
राजस्थानी कहावतें : कन्हैयालाल सहल
लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव् इण्डिया : डॉ० ग्रियर्सन
वसुधारा : सं० हरिदत्त देवरानी
व्रजभाषा : डॉ० धीरेन्द्र वर्मा
वाक्यपदीय : भर्तृहरि
विराट हृदय : शम्भुप्रसाद बहुगुणा
वेदमाता : हरिराम धस्याणा
सदेई : तारादत्त गैरोला
संस्कृति के चार अध्याय : रामधारी सिंह 'दिनकर'
संस्कृत भाषा का भाषाशास्त्रीय अध्ययन : डॉ० व्यास
स्कन्द पुराण : वेदव्यास
सामान्य भाषा विज्ञान : डॉ० बाबूराम सक्सेना
सिंहनाद : भजनसिंह 'सिंह'
सूरपूर्व व्रजभाषा और उसका साहित्य : डॉ० शिवप्रसाद सिंह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हरी दूब	: डॉ० हरिदत्त भट्ट 'शैलेश'
हिन्दी भाषा का इतिहास	: डॉ० धीरेन्द्र वर्मा
हिन्दी भाषा का उद्‌गम और विकास	: डॉ० उदयनारायण तिवारी
हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग	: डॉ० नामवर सिंह
हिमालयन डिस्ट्रिक्ट्स	: ऐटकिंसन
हिलाँस	: भगवतीचरण 'निर्मोही'
हिन्दू सभ्यता	: डॉ० राधाकुमुद मुखर्जी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

१२

शब्दानुक्रमणिका

अंग्रेज–७३
अंग्रेजी–१०,३६,७३,७६,७७
अंछरयों की राणी–१३३
अग्रवाल, वासुदेवशरण–१,३५८
अजयपाल का लेख–२०
अजय पाल, महाराजा–१,१२,२०
'अधःपतन'–१२१
अनार्य–७१
अपभ्रंश –१५,१६,१९,२०,३२,३८,
४४,४७,५७,६३,६९
अमर सिंह थापा-६
अरबी–५८,७३
अरबी-फारसी के शब्द–७३-७५
अलकनंदा–२,३
अलका–२
अवधी–३२,४२,४३,४७,५१,६३,६९
अशोक चल्ल–५
अष्टाध्यायी–७
असुर–५
'आज अलसो छोड़ देवा'–१२२
'आजाद'–१६९
आदिवासी–६,७
आभीर–१९
आभीरादि गिरा–१९
आभीरोक्ति–१९
आर्य–२,४,५,७,१८,६२,६३
आर्यभाषा–१५,१६,१७,१९,२९, ३०,
३३,३७,४४,५४,५७
आर्यावर्त–१८,१९
आस्मिक–७२
'इंडो एरियन एण्ड हिन्दी'–१०
इण्डिया भौन–१८८
'इन्द्रजाल'–१२,२१
उठा गढ़वालियों–८७-८८
उड़िया–३०,४७,७१
उत्तर काशी–१,६,१५
उत्तर बिहार–४
उनियाल, विश्वम्भरदत्त–१२१
उमरा गढ़ी–१८८
उर्दू–३६
ऋग्वेद–४,५,७,३०,६२
'ए कंपरेटिव डिक्शनरी आव् नान-
एरियन लैंग्वेजेज'–७,७१
एकबिसि–१२६
'ए ग्रैमर आव् द हिन्दी लैंग्वेज'–१३,
१६,२०,४३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

एटकिन्सन–४,५,१४
'एतरेय आरण्यक'–७
'एवोल्यूशन आव् अवधी'–१०
औजी–११,२१,१४१,१४५,१५१,
१६५,२६३
औतारु–२६३
औ नमः सिधंग–३०
औरंगजेब–७३
'कंकाल', गिरधारी लाल–१२६,१३०
कख होली मेरी डांडी व कांठी–१३८
कटोर वंश–५
कतियपुर–५
कत्तिउर (कत्यूर)–५,१८८
कत्यूरा–१८८
कत्यूरीवंश–५,६
कद्रू-बनिता–३००–३०६
कन्नौजी–४३
कपिल-६२
'कमल'–११६
'कम्परेटिव गैमर आव् द मॉडर्न
एरियन लैंग्वेजेज'–१०,४२
कश्मीर–१७
कांग्रेस–१७६
कांडपाल, सच्चिदानंद–१२६
कांतिया खाल–१८९
काचल देव–६
कात्यायन–७
काबुल–५
कार्तिकेयपुर (कार्तिकपुर)–५
कालिदास–७१
कालूनी कोट–२०५
काश्गर–४
किन्नर–२,७
किन्नरी भाषा–२
किराँती भाषा–७,७१
किरात–२,३,४,५,७,६२
किरातार्जुनीय–३,७१
कीर्तिनगर–१२७
कुकरेती, सदानन्द-१०७
कुमयु–२
कुमाऊँनी भाषा–८,१६,४३
कुमाऊ १,४,६२
'कुमारसम्भव'–३,७१
कुरि–७१
कुरु पंचाल–४,१८
कुषाण–५
कुसवाली कोट–१९७
कूर्माचल–१
कृष्ण–२६३–२७६
केदार–१५,६२,६३,७०
केदार खंड–१३,७१
कैयट–७
कैलाग–१३,१६,२०,४३,४४
कैसो च भण्डारी तेरो मलेथ ?–१६४
कोंकणी–१६
को जी होलो औंणू–१३३-१३४
कोटनाला, लीलानन्द–८५,८६
कोटला गढ़–२४५
कोठियाल, गोपेश्वर–१३,१२२,१३८
कोल–२,४,७,६२,६३,७१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कोलटा–७,७१
कोली–७,७१
कोहिस्तान–१७
क्या गोरी क्या सौंली–१३९–१४०
खश–२,४,१५,१७,६२,६३,७१,७२
खिमासारी हाट–२१७,२१९
खुदेड़–१२६
खुदेड़ बेटी–११४–११६
खुलपित–१३०;१३१–१३२
खेतान–४
खैरागढ़–१८८
गंगा–७२,१४९–१५०
गंगा कांठा–२०
गंगोत्री–१५,६२,७०
गजे सिंह–१६५
गढ़वाल–१,२,४,५,६,९,१२,१७,१८, १९,४६,६२,६३,७२,७३,१०७, १४१,१६६,१६७,१७५,१७७, १७८,१८०,१८८;१९१,१९२, २६३,३६७
'गढ़वाल'–१४
'गढ़वाल ऐंश्येंट एण्ड माडर्न'–२,१४,६२
'गढ़वाल का इतिहास'–१,१४
गढ़वाल के नाम–१
'गढ़वाल के लोकगीत'–१६८
'गढ़वाल के लोक नृत्य'–१३८
गढ़वाल गजेटियर–१४
गढ़वाल जनपद–१,६,८,११,१५
'गढ़वाल परिचय'–१४
गढ़वाल प्यारो–१३२
'गढ़वाल में कौन कहाँ ?'–३
गढ़वाली–६,७,८,९,१०,११,१२,१३; १५,१६,१७,१८,१९,२०,२१; २४,२७,२८,२९,३०,३१,३२, ३३,३४,३६,३७,३८,४०,४१; ४२,४३,४४,४६,४७,५१,५२, ५३,५४,५५,५६,५७,६०,६२, ६३,६४,६६,६८,६९,७०,७२, ७३,७७,८०,८२,८५,८६,१०६, ११४,११६,१३९,१४०,३५९–३६७
'गढ़वाली'–१५,८५,८६,८७,१०६
गढ़वाली
–उपन्यास–१४०
–कविता–१२६
–कवितावली–८७,८८,८९
–कहानी १२५
–का निबंध–१३,१८,६३,८५,१३८
–की बोलियां–२३–२६
'–को नयो कदम'–१३,१०६,१३८
–गद्य–१०७
'–छन्दमाला'–१०७
–जन साहित्य परिषद्–१३,८५
'–झांकी'–१२६
–पखाणा–१०६
–प्रचार मंडल–११६
–यूनियन–८७
–लोकगीत–१४०
'–लोक साहित्य का विवेचनात्मक अध्ययन'–१४०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

-लोकोक्तियाँ-१०६
'-साहित्य की भूमिका'-१३,१८, २३,६३,७०,८५,१०७,१३८
-साहित्य परिषद्-१२२
-साहित्य मंडल-२१,१४०,१६५
गढ़वाली अखाणा-३५९
गढ़वाली आणा-३६७
गढ़वाली का प्रतिनिधि साहित्य-८५-१४०
१. आरम्भिक काल-८५-८७
२. गढ़वाली युग-८७-१०७
३. समाजसुधार युग या सिंह युग-१०७-११६
४. पांथरी युग-११६-१२२
५. आधुनिक काल या जनसाहित्य परिषद् युग-१२२-१४०
गढ़वाली के उपभेद-२२-२६
श्रीनगरी २२,२४,२५
नागपुरिया-२२,२३
दसौल्यां-२२,२३
बथाणी-२२,२३
राठी-२२,२३
माझ कुम्मैया-२२
सलाणी-२२,२३
टिहरी-२२,२३,२४,२५
जौनसारी-२३,२४,२५
रवांल्टी-२३,२४,२५
गढ़वाली पहेलियां-३६७-३६८
गढ़वाली भाषा-१-८२
अध्ययन की रूपरेखा-६-१४
ऐतिहासिक पृष्ठभूमि-१-६
का विकास-१५-३१
का व्याकरण-३२-६१
की बारह खड़ी-३०
की भूमिका-१-१४
के शब्दस्रोत और अर्थभेद-६२-८२
के स्वर-२७-२९, व्यंजन-२९-३१
गढ़वाली भाषा का व्याकरण-३२-६१
संज्ञा-३२-३३, लिंग-३३-३७, वचन-३७-४०, कारक-४०-४४, क्रिया-४४-४७, काल रचना-४८-५१, वाच्य-५१, विशेषण-५२-५४, सर्वनाम-५४-५७, अव्यय-५७-५९, उपसर्ग-५९, प्रत्यय-६०-६१
गढ़वाली भाषा के शब्द-स्रोत-६२-७७
१. भारतीय आर्य भाषाओं के शब्द-६३-७१, क. वैदिक शब्द-६३-६४, ख. संस्कृत के शब्द-६४-६९, ग. नव्य भारतीय आर्य भाषाओं के शब्द-६९-७१
२. भारतीय अनार्य भाषाओं के शब्द-७१-७२, मुंडा शब्द-७२, द्रविड़ शब्द-७२
३. देशज शब्द-७२-७३
४. विदेशी शब्द-७३-७७, अरबी फारसी के शब्द-७३-७५, तुर्की शब्द-७६, अंग्रेजी शब्द-७६-७७, पुर्तगाली शब्द-७७, फ्रांसीसी शब्द-७७
गढ़वाली लोक-कथाएँ-३१०-३५७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

कथाओं के दस प्रकार–३१०
कथाओं की प्रमुख प्रवृत्तियाँ–३१०–३१३
१. देवी देवताओं की कथाएँ–३१३,
क. नागरजा-३१३–३१५
ख. गंगू–३१५–३१७
ग. जोत्रमाला–३१७–३२०
२. पशु-पक्षियों की कथाएँ–३२०–३२७
क. बाघ-बामण–३२१
ख. स्यार अर रिक–३२१–३२२
ग. स्यार अर हाथी–३२२
घ. बकरी अर बाघ–३२२
ङ. स्यार अर भगवान–३२३
पक्षियों-संबंधी लोककथाएँ–३२३–३२७
क. चकोर–३२३–३२४
ख. चक्रवाक–३२४–३२५
ग. कुरेरी–३२५–३२६
घ. हारिल–३२६–३२७
३. भूत-प्रेत-जसो की कथाएँ–३२७–३२८
क. भूत अर गरीब छोरा-३२७–३२८
ख. भूत अर सात जनानी–३२८
४. परियों की कथाएँ–३२८–३३०
क. परी अर राजकुमार–३२९
ख. आछरी अर पाऽसी ·३२९–३३०
५. वीर बहादुरों की कथाएँ··३३०–३३१
क. माधोसिंह–३३०–३३१
६. हास्यकथाएँ–३३१–३३९
क. चन्दू–३३१–३३४
ख. हाँ-मां-हाँ मिलौण–३३५–३३७
ग. मुरखे कथा–३३७–३३८
घ. चार मूर्ख–३३८–३३९
७. राजारानियों की कथाएँ–३३०–३४७
क. एक छौ राजा–३४०–३४३
ख. पाँच राजकुमार–३४३–३४७
८. जीवजन्तुओं की कथाएँ–३४८–३५२
क. सोने मुंदडी–३४८–३५०
ख. सर्प द्यौ-३५०–३५२
९. उपदेशात्मक कथाएँ–३५२–३५६
क. फकीर की सीख ३५२–३५३
ख. स्थानम् प्रस्थानम्–३५३–३५४
ग. भाग्य अर धर्म–३५४–३५६
१०. तंत्र-मंत्र जादू टोनों की कथाएँ–३५६–३५७
क. फुलदे राणि–३५६–३५७
गढ़वाली लोकोक्तियाँ–३५८–३६६
तुकान्त–३५९-३६४
अतुकान्त–३६४–३६९
गढ़वाली लोकगाथाएँ–१८०–३०९
लौकिक गाथाएँ (पंवाडा)–१८०–२६२
१. जीतू बगड्वाल–१८१–१८८
२. तिलु रौतेली–१८८–१९१
३. जगदेव पंवार–१९१–१९६

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

४. रणू रौत (रावत)–१९७–२०४
५. भानु भौंपेलो–२०५–२१७
६. गढ़ू सुम्भाल–२१७–२२७
७. मालू राजुला–२२७–२३८
९. कालू भण्डारी–२३८–२४४
९. जसी–२४४–२५२
१०. सुरज कौंल–२५२–२६२
पौराणिक गाथाएँ (जागर)–२६३–३०६
१. कृष्ण सम्बन्धी लोक गाथाएँ–२६३–२७६
सिदुवा–२७७–२७८
चन्द्रावली हरण–२७९–२८३
ब्रह्मकौल–२८३–२९२
२. पाण्डव सम्बन्धी लोकगाथाएँ–२९२–२९९
पाण्डव जन्म–२९३–२९५
द्रोपती स्वयंवर–२९५–२९६
नागलोक में अर्जुन–२९६–२९८
ताछुम् ताछुम्–२९८–२९९
कद्रू बनिता–३००–३०६
निरंकार–३०६–३०९
गढ़वाली लोकगीत–८,११,१२,४०,१४१–१७९
१. मांगल–२१,१४१–१५३
आह्वान गीत–१४१–१४४
पूजागीत–१४४–१५१
विवाह गीत–१५१–१५३
२. झुमैलो–१४१,१५३–१५६
झोपती–१५५
लामण–१५५–१५६
३. थड्यागीत या बासन्ती–१४१,१५६–१५८
बासन्ती–१५६–१५७
होरी–१५७–१५८
४. बाजूबन्द–१४२,१५८–१६०
५. खुदेड़–१४२,१६०–१६१
६. चौफला–१४२,१६२–१६५
७. कुलाचार या चैंती गीत–२१,१४२–१६५
८. चौमाशा–१४२,१६६–१६७
९. बारामासा–१४२,१६७–१६८
१०. पट–१४२,१६८–१६९
११. सामयिक गीत–१४२,१६९–१७५
१३. राष्ट्रीय गीत–१४२,१७५–१७९
'गढ़वाली लोकगीत'–१४०
गढ़वाली शब्द गवेषणा समिति–१२२
'गढ़वाली शब्द भण्डार'–१२२
गढ़वाली शब्दों का सूक्ष्म अर्थभेद–७७–८२
गया–२४५
गांधी की पलटन–१७६
गांधी, महात्मा–१६९,१७५–१७६
गारुड़ी–२१
'गिरीश'–१४०
गिलगित–१७
गुजराती–८,३०,३३,३७,४७,६३,६९,७०,७१
गुरुमहिमा–१५०–१५१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDR

गुर्जर–२,६,१६,१९,६२
गैरोला, आत्माराम–८७,८९
,, तारादत्त–९०
,, तोताकृष्ण–१०४
गोपेश्वर–६
गोरखनाथ, गुरु–२१,१४७,२२८,२५२
गोरखा–३
गोरख्याणी–८५
गौं गौं पंचायत करा–१७०–१७१
गोतम–६२
ग्रिम–१०
ग्रियर्सन–६,७,८,१०,११,१२,१३,१५,
१६,१७,१९,२०,२२,२४,६३,
७२,८५
ग्रीक–१०
ग्वाड़ छोड़–२०५
घट थापना–१२–२१
घडियाल्या–११,२६३
घिल्डियाल, गोविन्द प्रसाद–८५
घिल्डियाल, श्रीधरानन्द–१२२
घुड़ागीत–१६९
चन्दौला, भगवती प्रसाद–१२२–१३८
चन्दौला, विश्वम्भरदत्त–८५,८७,८८,
१०६,१३८
चमौली–१,६,१५
चम्बा–१७
चांदगढ़ी–१८८
चाटुर्ज्या, सुनीतिकुमार–२,४,१०,१७,
१८,३१,४०,४३,४५,४७,५०,
६०,७२
चातक, गोविन्द–१२२,१३९,१४०,
१६८
'चार गैल्यों का'–१२२
चित्राल–१७
चूहड़–७२
चेतावनी–८६
चैतीगीत–१६५
चौखुरिया–१८९
चौरंगीनाथ–२१
छैंला–१००–१०१
'जंगली फूल'–१२२
जगतपाल, महाराजा–१२,२०
जगोठ–२
जमलोकी, श्रीधर–१२६
'जयहिन्द'–१०६
जलंधर–२२७
जसी–८९
जाख–२
जाखनी–२
जाखाल–२
जाग–११
जागर–२६३
जिकुड़ी बोलली–१२६
जीतू बगडवाल–१८१–१८८
जुनख्यालि रात च छोरी–१३६–१३७
जेस पर्सन–१०
जैमिनि–६२
जोन्स, सर विलियम–१०
जोरि परछायु किलैं–१२५–१२६
जोशी, हेमचन्द्र–४३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

जौनसार–२,१५५
झा, गंगानाथ–५
टके का ब्याह–१०७
टक्क अपभ्रंश–१५
टर्नर–८,४७
टिहरी–१,६,१२,१५,२१,४७
टीकाराम शर्मा 'कुंज'–२४
ट्रंप–४३
डांडी काँठी–१२६
डूंङो–१०२
डेलब्रुक–१०
डोभाल, पुरुषोत्तम–१२२,१३९
डोम–७,१८,६३,७१
डोमडा–७,७१
ढाक्की–१४१
ढोलमंत्र–१२,१३
'ढोल सागर'–१२,२२
तंत्रमंत्र की भाषा–२२
तपोभूमि–१
ताता लूहागढ़-२५२
ताम्रपत्र–१२,२०
तिड़का–१२६
तिब्बत–१,६३
'तिलु रौतेली'-१२६
तिवारी, उदयनारायण–१६,२०,२८,
    ३०,३२,३८,४२,४३,५७,६०
तुम द्यावता–१३०,१३१
तुमारो घ्यान जागो–१४५
तुर्की–७३
तुर्की शब्द–७६
तू कति चूमण छै ?–१६२–१६३
तैमूर लंग–७३
तोत्छया–६३
त्यरि म्यरि च जोड़ी-१३६
त्रिपाठी, रामनरेश–३६७
त्रित्सु–४,६२
थपलियाल, दामोदर प्रसाद-१२२,
    १२४,१३८
थपलियाल, भवानीदत्त–१०६
'द ओरिजिन एण्ड डेवलपमेंट आव द
    बंगाली लैंग्वेज'–१७,५०
दयानन्द, स्वामी–१८
दरद–१५,१७
दरदिस्तान–१७
दर्शन–६२
दवे, टी० एन०-१६
दानपत्र–१२,२०
दारा शिकोह–७३
दास–४,५
'दिनकर', रामधारी सिंह–५
दिवोदास सुदास–५
'दि संस्कृत लैंग्वेज'–७२
'दीन', बलदेव प्रसाद शर्मा–८९
दीपीकोट–२१७
दीवा जसी ज्योति–१३४–१३५
देघाट–१८९
देनवार–७१
देव प्रयाग–१२,२०,६३,१२७
देवभूमि–१
देवरानी, भोलादत्त–६२,१२६,१२७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

देवलगढ़–१२,२०
देववणको वर्णन–८८
देवस्तुति–१५२
देशज–७२,७३
देहरादून–१,१५,१९७
दौर्गादत्ति, योगीन्द्रकृष्ण–१२६
दौर्गादत्ति, हरिकृष्ण–८६
द्रविड़–२,७,६२,६३,७१,७२
घस्याणा, हरिराम–१८,६२,६३
धामशाह, राजा–१८८
धामी–२६३
धारा नगरी–१९२
धुण–७
धुंयाल–१,१२,२१,१४०,१६५
ध्यानी, केशव–१३२
नगेलो–२६३
नरसिंह–१४७,२६३
नवलीगढ़–२३८
नवांग–१३०
नवाण–१२६
नवार नदी–१८९
नष्ट आर्य–१७
नहाल–७
नाग–२,३,४,७,१९,६२,२६३
नागरजा–२६३–२७६
नागवाणी–१९
नाटच शास्त्रम्–१९
नाथ-१४६
नामवर सिंह–१९
निरंकार–३०६–३०९
निरुक्त–७,८
'निर्मोही,' भगवती शरण शर्मा–११६
निषाद–२
नेगी, उम्मेद सिंह–१२६
नेगी, जीतसिंह–१२२
नेगी, मोहनलाल–१२५
नेगी, श्यामचन्द–१४,१५,२०,२५,७०, ८५,१३८
नेताजी जैहिन्द–१७७–१७८
नेपाल-१,४,१७
नेपाली–८,१६,४३,४७,६३,६९,७०, ७१
नेपाली शब्दकोष–८,४७
नेरु तेरा ही सास–१७६–१७७
नेहरू, जवाहर लाल–१६९,१७५,१७६ १७७
नेहरू, मोतीलाल–१७६
नैथानी, गिरिजादत्त–१०६
नौटियाल, बलदेव प्रसाद–१२२
नौटियाल, शिवानन्द–१३७
'नौबत'–१२२,१२४–१२५
'न्यू टेस्टामेंट'–८५
पंचायत–१६९,१७०
पंछी वंचक–८९
पंजाब–५,२०
पंजाबी–८,६९,७०
पंनाई–२९३
पंनों का सेरा–२९३
पंनों बाड़ी–२९३
पंवाड़ा–११,२२,१८०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

पंवार वंश–१,६
पतंजलि–७,८
'पर्वतीय' हर्ष–१४०
पस्वा–२६३
'पहाड़ी'–१०७,१३८
पहाड़ी हिन्दी–१६
पांखू–१२२
'पाँच फूल'–१२१
पांचाल–४,५
पांचाल देश–१,६२
पांडव–२९२,२९३–२९९
पांडुकेश्वर–५,२९३
पांथरी, भगवती प्रसाद–१८,६३,११६,
१२१,१३८,१३९
पाकिस्तान–१७
पाट–१०
पाणिनि–७
पातीराम–२,१४,६२
पालवंश–५
पाली–३६,६३,६९
पिशाच–१७
पुराण–६२
पुरी, योगीन्द्र–९५,९६
पुर्तगाली–७३
पुर्तगाली शब्द–७७
पुष्पांजलि–१०४
पृथ्वीशाह का लेख–२१
पृथ्वीशाह, महाराजा–१२
पैशाची–१७
पौढी–१,६,१४
प्रद्युम्नशाह, राजा–६
'प्रह्लाद'–१०६
प्राकृत–१५,३०,३८,४४,४७,५७,६३,
६९
'प्राकृत भाषाओं का व्याकरण'–३०,४३
'प्राकृत सर्वस्व'–७
प्रीतमशाह, राजा–१९७
प्रेम गाथाएँ–१८०
प्रेमी पथिक–१०४,१०४–१०६
फारसी–५८,७३
फिरिस्तान–१७
फुरघिड़ड़ी–१२६
'फुलकंडी'–९५
फ्रांसीसी शब्द–७७
बंगला (बंगाली)–८,४०,४७,५१,
६३,६९,७०,७१
बंगाल–४,५,२०
'बंगाली लैंग्वेज : दि ओरिजिन एण्ड
डेवलपमेंट'–४७
बगडवाल–२६३
बघेली–७०
बड़थ्वाल, पीताम्बरदत्त–१०६,३५८,
३५९
बड़थ्वाल, महीधर शर्मा–३
बदरिकाश्रम–१,६२
बदरी–१५,६२,६३,६०
बदरी नाथ–२०
बदल्यूँ च है रे जमाना–१७४
'बनक वंश'–१८
बनारस–२४५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

बरो–७२
बर्बर–१७
बसंत–१५६
बहुगुणा, अबोध बंधु–१२,२१,२२,
  १२६,१३५
बहुगुणा, चक्रधर–२३,६३,१००,१३९
बाँसुली–११६
बाड़ाहाट–५
बाद्यी–१४१
बाबूलकर, मोहन लाल–१४०
बालानाथ–२१
बालेश्वर–५,६
'बासन्ती'–१२१
बिंदरा–१२२,१२३
बिहारी–६९
बीठ–१८,६३
बीम्स–१०,४२,४३,४४
बुंदेली–३७
बुड्या जवाई–९६–९९
बुरांश–१२२
बुरो संग–८६
'बृहत् गढ़वाली नागरी कोष'–११६
बेड़ा–७,७१
बैराट–२२७
बोप–१०
बौ का हात भली रसाण–१६३
ब्रगमान–१०
ब्रजभाषा–३७,४२,४३,४४,५१,६३,
  ६९,७०
ब्रह्मदेश–१,६२
ब्रह्मर्षिदेश–१,५
ब्रह्मावर्त–१,५,६२
ब्राह्मण–१८,६३
ब्लाश–५०
भंडारकर, डॉक्टर–१६
भगत सिंह–१६९
भरतमुनि–१९
भर्तृहरि–७,८
भलासीगढ़–१९१
भानशाह, राजा–१८१
'भारत का भाषा सर्वेक्षण'–७,८,१०,
  ११,१२,१५,१६,१७,२०,२५,
  ६३,७२,८५
'भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी'–२,
  ४,१८,४०,४३,७२
भारवि–७१
'भारी भूल'–१२२,१२३–१२४
भाषाएँ, पहाड़ी–१५,१६,१७,३७,४७
'भाषाविज्ञान'–७,८,९,१०,११,२६,-
  २८,७२
भिलंगना–७
भीमली बाजार–२५३
भील–४,७,६२,६३,७१
भुली–११९–१२०
'भूगोल जिला गढ़वाल'–२
भूटान–४
'भूतों की खोह'–१२१
भूम्याल–२६३
भैरों (भैरवनाथ)–१४८,१४९,२६३
भोजपुरी–४२,५१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

'भोजपुरी भाषा और साहित्य'–१६
भोट (तिब्बत)–१,१८,२५२
मंगल्यानी–१५१
मंडाण (जात)–२६३
मखली–१२२
मछीन्द्रनाथ–२१
मध्यदेश–१८,१९
मध्यदेश की भाषाएँ–१९
'मध्यपहाड़ी भाषा का शास्त्रीय अध्ययन'–१४०
मध्य प्रदेश–७
मनखी–१२४
मनख्या बाघ–१७३
मराठी–८,१६,३०,३३,६९
मलासीगढ़–१९२
मलेथा की कूल–१२६,१२७–१३०
महाभारत–३,४,२१,६२,७१
महाभाष्य–७,८
महाभाष्यप्रदीप–७
महासू–२
मांगल–११
मांगल संग्रह–१०६
मागधी–१६
माधोसिंह–१६४–१६५
मानशाह–१८८
मारछा–६३
मारवाड़ी–७०
मार्कण्डेय–७
मालच्यूल–१२,२०,२१
मालवी–४७
मिरासी–१४१
मिलंगन भौन–१८९
मुंडा–७,७२
मुखड़ी को रंग कनो !–१६३
मुखर्जी, राधाकुमुद–१,५,६२,८१
मुहावरा–१२
मेरी बिचारी–१२०–१२१
मैक्समूलर-१८
मैमन्दा वीर–२१
मोछंग–१००,१०३–१०४
यक्ष (जग्स, जाख)–२,७,६२
यमनोत्री–१५,६२,७०
यास्क–७,८
रख्वाली–१४६
रण मंडाण–१२६
रतूड़ी, चन्द्रमोहन–२०,८७,८८
रतूड़ी, सत्यप्रसाद–११६
रतूड़ी, सत्यशरण–८७
रतूड़ी, हरिकृष्ण–१,१४
रमोली खाल–१८८
रवाई क्षेत्र–७१,१५५
रसेल, लार्ड–३५८
रांडा–१८९
राजपूत–१८,६३
राजपूताना–६२
राजस्थान–६
राजस्थानी–८,१५,२०,२२,३१,३७, ६३,६९,७०
'राजस्थानी कहावतें-एकअध्ययन'–१२
'राजस्थानी भाषा'–३०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

रामी (बाटा गोड़ाई)–८९–९०
रुंदेड़–१२६
रुडौला, हरिकृष्ण दौर्गादत्ति–८५
रुपक, पुराने–१०६
रैबार–९५,१२६
रैमासी–१२६
'ललाम', ललिताप्रसाद–११६
लहंदा–३०
'लांग ब्रज'–१०
'लांग मराठे'–५०
'लिंग्विस्टिक सर्वे आव् इण्डिया'–६, १०,१३,१६,१७,१९,२२
लीलानन्द–१०७
लेख, पुराने–२०,२१
लैटिन–१०
वर्मा, धीरेन्द्र–१०,१६,१८,१९,२०, २७,३०,४२,४३,४८,५०,६०,७६
वसुधारा'–४,६२
'वाक्य पदीय'–७,८
वागाम्मणी सूक्त–७
वागेश्वर–५
वादी–११,७१,१६९
'वार्तिक'–७
वासुदेव–५
'विंघ्य–१८
विट–१८,६३
विदेशी शब्द–७३
विरह–८६
'विराट् हृदय'–२१
विशैल–३०
वीर गाथाएँ–१८०
वीर गाथा काल–२२
वेघा–७१
वेद–५,६२,६३
'वेदमाता'–१८,६२,६३
वेदव्यास–१,३,४
वैदिक–६३
वैदिक काल–१८
वैदिक शब्द–१८
वैदिणी क्षेत्र–५
वैष्णव, शालिग्राम–२,१०६
व्यास–६२
व्यास, भोला शंकर–१६,२७,२८,३०, ३१
शंबर–५
शक–४,५,१९,६२,७१
'शब्दानुशासन'–७
शर्मा, विशालमणि–११६
शास्त्री, बालकृष्ण–१८
शास्त्री, मंगलदेव–७,८,९,१०,११,२६, २८,७२
शाहजहाँ–७३
शिवप्रसाद सिंह–१९,३८
शैलेश, हरिदत्त भट्ट–१३,२३,६३,७०, ८५,१०६,१०७,१२२,१२४,१३८
शौरसेनी–१६,१९,२०
श्यामसुन्दरदास–३५९
श्रमदान–१७१
श्रमदान मा देण हात–१७१
श्रीनगर–७३,१९७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

श्लाइखर–१०
संस्कृत–१०,१८,२०,३०,३२,३३,३६,
३७,४०,४१,४२,४३,४४,४५,
४७,५०,५१,५२,५३,५४,५६,
५७,६०,६१,६३,६४,६९,७२,
८५
संस्कृतकाल–३०
'संस्कृत का भाषा-शास्त्रीय अध्ययन'–
२७,३०,३१
'संस्कृति के चार अध्याय'–५
सकलानी, शशि शेखरानन्द–१०४
सक्सेना, बाबूराम–१०,११
सतपुली मोटर बौंगीन–१७१,१७२
सती, मुरली मनोहर–१२६
सतीश, उमाशंकर-१२६,१४०
सदेई–९०,९१–९५
सपाद लक्ष प्रदेश–६२
सवु कि बौ बदेणि बौ–१३७
सराई खेत–१८९
सलाण–२१८
सलौ–१७४
सल्द मणो महादेव–१८९
सहल, कन्हैयालाल-१२
सांकृत्यायन, राहुल-२,३,४,५,६,१२,
१४,२४,६२,८५
'साइंस आव् लैंग्वेज'–१८
'सामान्य भाषा विज्ञान'–११
सिंघ–१७,१९
सिंघी–८,३०,६३,६९,७०
,, ग्रेमर–४३
सिंहनाद (वीर वधू)–१०७,१०८–११४
सिंह, भजन सिंह–१०७,११४
सिक्के–१३
सिद्ध–१४६
सुदर्शन शाह, महाराजा–८५
सुभाष नेताजी–१६९,१७५,१७७–१७८
सुमन, सपूत–१७७,१७८–१७९
सुलेमान शिकोह–७३
'सूरपूर्व ब्रजभाषा और उसका साहित्य'–
१९
सेन, सुकुमार–४३
सौवीर–१९
स्कंद पुराण -३,६२,७१
स्वात–१७
हंटर–७,७१
हनुमंत वीर–२१
हरिजन–६३,७१
हर्षपुरी–८५,८६
हस्तीदल चौतरिया–६
हार्नली–४३,६०
हिंडवाणी कोट–२०५
हिंदी–८,९,१६,२०,२२,३१,३३,४३,
४४,४५,४६,४७,४८,५४
'हिंदी के विकास में अपभ्रंश का योग'–
१९
'हिंदी भाषा का इतिहास'–१०,१६,१८,
२७,३०,४२,४३,४७,४८,५०,
६०,७६
'हिंदी भाषा का उद्गम और विकास'–
१६,३०,३२,३८,४२,४३,५७,६०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

हिमालय–१,४,६,९,१७,१८,१९, ११५
हिंदू कुश–१७
'हिंदू सभ्यता'–१,५,६२,७१
हितोपदेश–८१
हिमवंत–१
हिमवत–१९
हिमाचल–१
'हिमाचल'–११६
'हिमालयन डिस्ट्रिक्ट्स'–४,५,१४
हिमालय परिचय–२,३,४,५,६,१२,१४, २४,२६,८५
हिलांसी–११६–११९
ह्विटले–१०
हुडक्या–११,१४१,२६३
हुणिया–६३
हूण–२,६२,७१
हेमचन्द्र–७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

वाल्मीकि विद्यापीठ-पुस्तकालय
प. सं. १७८६१

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: MIDF

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu